ग्रहपीठम्
सर्वतोभद्रपीठम्
गणमातृकापीठम्
योगिनीपीठम्
श्री वैष्णव विजय पञ्चाङ्गम्
जम्मूनगरीयाक्षवृत्तीयंसनातनकर्मकाण्डोपेतम्
राजा शुक्रः
मन्त्री शनिः
श्रीसप्तर्षिसंवत्
५०६१
ईस्वीय सन्
१९८५–८६
सम्पादकः
सहायक मण्डलम्
श्रीवेदप्रकाश रैणा
ज्यो. आ. शिक्षाशास्त्री
श्रीरामरत्नशर्मा
ज्यो. आ. शिक्षाशास्त्री
श्रीहरीशकुमार (कांगड़ा)
ज्यो. आ. रिसर्चस्कालर
मुखपृष्ठ निर्माता:
श्रीमूलराज शास्त्री मल्हण
शिक्षाशास्त्री, साहित्याचार्य
श्रीऋषिरत्नशर्म वासिष्ठः
पञ्चाङ्गं जगतां हिताय मुनिभिः सिद्धैर्वसिष्ठादिभि- आर्य - ब्रह्म - वराह - त्र्यंकटमुखैर्बीजैः सकृत् - संस्कृतं
क्षेत्रपालपीठम्
वास्तुपीठम्
वर्तमान व्याख्याता ज्योतिष विभागे–श्रीरणवीर केन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम् शास्त्रीनगरम्, २३, श्रीरघुनाथपुरीजम्मु तविषी
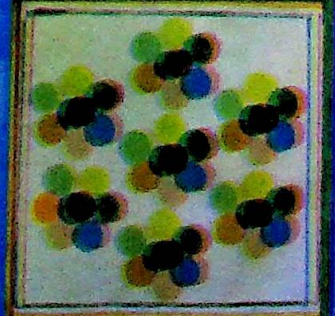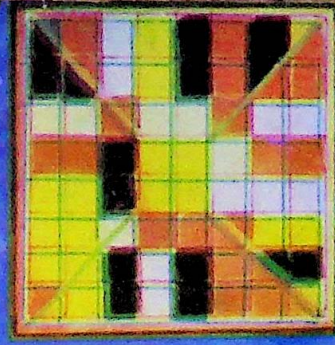
सनातन धर्म संरक्षक त्याग मूर्ति

।। ॐ श्री दत्तात्रेयायगुरवे नमः ।।

अनन्त श्रीभूषित पुण्यधाम्नां महात्मनां पुण्यगिरि स्व नाम्नां प्रसादमासाद्य कृतार्थितोऽहं पञ्चाङ्गलोके बहुद्रव्यसाध्ये ।। दत्तात्रेयकुलभूषण योगिराज परमहंसस्वरूप श्री १०८ श्री पूर्णगिरि जी महाराज (कौघादि मन्दिर निर्माता) द्वारा पञ्चाङ्ग के श्रीगणेश के लिये आशीर्वादस्वरूप ५१०१/- रु० द्रव्य दक्षिणा प्राप्त कर मैं इनके चरण कमलों में सादर कृतज्ञता उपहार करता हूँ।

श्रीमतां चरणोपासक
बिहारिलाल शर्मवासिष्ठः

नाना मन्दिर निर्माता एवं सदा यज्ञ विधाता
सद्गुरु परमहंस श्री १०८ श्री पूर्णगिरिजी महाराज

एवं महाराज जी के चरणकमलों के सेवक समाज द्वारा सहायतार्थ प्राप्त द्रव्य संख्या इस प्रकार है :—

श्री प्रभाशंकर जी शर्मा, टोलटैक्स आफिसर (कठुआवास्तव्य) लखनपुर	६००/- रु०
पं० श्री परमानन्द जी स्वतन्त्रता सेनानी बच्छल	५००/- रु०
पं० श्री राधाकृष्ण जी शिक्षा शास्त्री, कौव	१०१/- रु०
ज्यो० श्री शंकरजी शर्मा थड़ा कलवाल	१०१/- रु०

उक्त महानुभावों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रक्रमणिका

सादर भेंट- श्री श्याम लाल शर्मा जी

आकाशीय मूलतत्वों के आधार पर ही अविच्छिन्न गतिशील सनातन धर्म की प्राचीन महर्षियों ने नींव रखी थी। आकाशीय मूलतत्वों का पञ्जीकृत स्पष्ट रूप ही पञ्चाङ्ग समझें। यदि हम इसे सनातन धर्मावलम्बी जनता-जनार्दन के लिये साक्षात् कल्पद्रुम ही कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। उनकी सूक्ष्मता के लिए समय-२ पर आचार्य लोग सुधार करते ही रहे हैं। यह सुधार केवल भारतीय ही नहीं अपितु पाश्चात्य लोग भी कटिबद्ध होकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्तीय गणित में चमत्कार दिखाते आ रहे हैं। आज तो वे सूक्ष्मता के शिखर पर पहुंच चुके हैं। हमारी सूक्ष्मता में स्थूलता का कारण केवल लाघवार्थ मध्यम गतियों का अवलम्बन है, जैसे—ग्रहलाघव, मकरन्दादि का लोकप्रिय हो जाना। इसी स्थूलता को लक्ष्य कर भारतीय पञ्चाङ्ग सुधार समिति के निर्णयानुसार जम्मू, हिमाचल प्रदेश, पञ्जाबादि में दृग्गणितैक्य सिद्ध पञ्चाङ्गों का सं० २०२० वैक्रम से ही प्रचलन पाया जा रहा है। उसी नूतन एवं सर्वाङ्ग शुद्धसूक्ष्म गणित को आधार मानकर "श्री वैष्णव विजय पञ्चाङ्ग" विद्वत्समाज के उपयोगार्थ गतवर्ष सं० २०४१ वैक्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

आज के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता के दुष्प्रभाव के दबाव के कारण प्राचीन सनातन धर्म सम्बन्धी समूचे कर्मकाण्ड का अनुदिन विकास के स्थान पर ह्रास किस सहृदय व्यक्ति के कोमल हृदय को सशल्य बाधा नहीं पहुंचाता? इसी लक्ष्य को प्रत्यक्ष रखकर महात्माओं में प्रतिष्ठित अनेक यज्ञों के विधाता, प्राचीन भग्नावशेष दुर्गम दुर्गस्थलों में देवालयों के निर्माता, दत्तात्रेयवंश भूषण, अनन्त श्री भूषित श्री पूर्ण गिरि जी महाराज की सहानुभूति पूर्ण सहायता रूपी आशीर्वाद से ही इस सं. २०४२ के पञ्चाङ्ग सम्पादन का श्रीगणेश हुआ।

इसके अतरिक्त वैष्णवसमाजाभ्यर्चित, सत्यसनातनोपासक, संस्कृत छात्र मात्र के अनन्त हित विधायक प्रतिवर्ष विष्णुयाग, रुद्रयाग, चण्डीयाग, देवप्रतिष्ठादि यज्ञों के संचालक महन्त अनन्त श्री बलभद्रदास जी महाराज पुराणी मण्डी, एवं सनातन धर्म ध्वज साधु ब्रह्म समाज हितैषी, सदा वैदिक यज्ञाभिलाषी साक्षात् शिव स्वरूप महन्त अनन्त श्री लोकनाथ जी महाराज श्री रणवीरेश्वर जम्मू इनकी उदारता पूर्ण सहानुभूति ने मुझे सम्पादन कार्य में सदा सचेष्ट रखा। पुस्तकादि के आदान प्रदान में महा मण्डलेश्वर महन्त अनन्त श्री सीतारामजीदास महाराज पुराणी मण्डी का भी मैं सर्वदा आभारी हूं।

इस वैष्णव विजय पञ्चाङ्ग के मूलस्रोत वास्तव में। संस्कृत एवं संस्कृति के प्राण प्रिय श्रद्धेय डा. मण्डन मिश्र जी (निर्देशक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान एवं कुलगुरु लालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली) जिनकी विविध एवं विशालयोजनाओं के अन्तर्गत—विद्यापीठों की स्थापना, सर्वतोमुखी अध्ययनाध्यापन, शोधकार्यादि का संचालन, शास्त्र चूडामणि विभागोद्घाटन, विभिन्न शास्त्रों के मर्मज्ञ आचार्य मूर्धन्य श्री कल्याण दत्त जी ज्यो. आ. जयपुर, श्री श्रीचन्द्रपाण्डेयजी ज्यो. आ. काशी, श्री पूर्णचन्द्रजी ज्यो. आ एवं डा. श्री अनन्तरामजी शास्त्री सा. आ. वै. आ. जम्मू इत्यादि संस्कृत साहित्य साधना सम्पन्न समाज में लब्ध प्रतिष्ठ गुरुचरणों का विद्यापीठों में पुनः प्रतिष्ठापाना एवं डा. शुकदेव जी चतुर्वेदी के तत्वावधान मे सं. २०४० वै. से दिल्ली विद्यापीठीय पञ्चाङ्ग का श्रीगणेश होना आदि मुख्य कार्यकलाप नितान्त श्लाघ्य एवं जगत्प्रसिद्ध हैं।

इन सब के फलस्वरूप हमारे विद्यापीठीय छात्रों में पञ्चाङ्ग निर्माण पद्धति के अध्ययन में प्रवृत्ति जागरण द्वारा २०४१ के पञ्चाङ्ग में श्री वेद प्रकाश रैणा शास्त्री, श्री रामरत्न शास्त्री एवं श्री ऋषि व्रत वाशिष्ठ की सफलता सर्वविदित है। इसके अनन्तर २०४२ के पञ्चाङ्ग में इनकी सहायतार्थ श्री हरीश कुमार शास्त्री ने कटिबद्ध होकर दिनरात एककर एवं श्री सुरेश शास्त्री ज्यो. आ. कांगड़ा, श्री सत्यपाल शास्त्री गजनसू, श्री अटल खजूरिया B.A. शास्त्री नगर, श्री प्रभाकर खजूरिया शिक्षा शास्त्री M.A. व्याकरणाचार्य इत्यादि छात्रों के अदम्य उत्साह से दिनरात घोरपरिश्रम द्वारा

प्रस्तुत पञ्चाङ्ग विद्वज्जनों के करकमलों में समर्पित किया जा रहा है। यद्यपि जनवरी से जून के अन्त तक इसके छपने की कोई भी आशा नहीं थी तो भी मैंने धैर्य से काम लिया। मेरी सहायता के लिये श्री सुदेश जी शास्त्री ज्योतिषाध्यापक को भी दिल्ली में प्राक्रूफ संशोधनार्थ दौड़ धूप में दुर्घटना ग्रस्त होना पड़ा। पञ्चाङ्ग तो जम्मू में छपने के लिये दिया था किन्तु हनुमान जी की पूंछ की तरह फैलता-२ जालन्धर तथा दिल्ली के नारायण लोक तक पहुंच गया। फिर भी ६५ पृष्ठ वापिस अमुद्रित ही घर लौटाने पड़े जो पञ्चाङ्ग में अत्यन्त उपयोगी थे।

इस पञ्चांग में पण्डितोपयोगी सभी दैविककृत्य विष्णुयाग, रुद्रयाग, शान्ति वास्तु, संस्कार विवाह यावत् एवं चातुर्वार्षिक श्राद्ध गतवर्ष की अपेक्षा अत्यधिक परिष्कृत एवं अधिक सुगम स्थापित किया गया है। शेष उपयोगी कर्मकाण्ड अगले वर्ष प्रस्तुत किया जायगा।

इस पञ्चांग में सर्वत्र घड़ी पलों के साथ घण्टे मिण्ट भी प्रस्तुत थे किन्तु पूर्णत: विषय समावेश न हो सकने के कारण दैनिक सूर्योदयकालीन चन्द्र स्पष्ट एवं योग, करण के घण्टे मिण्ट और चन्द्र चार के घटी पल उतारने पड़े। शेष पञ्चाङ्ग आपके प्रत्यक्ष है।

पूज्य गुरुवर डा० अमन्तराम जी शास्त्री एवं विश्वम्भर जी शास्त्री वेदपाठी इन दोनों का मैं सदा आभारी हूँ जिनके चरणों में सहानुभूति पूर्ण सम्मति प्राप्त कर सफलता मिल रही है।

पूज्य गुरुवर श्री पूर्णचन्द्र जी ज्यो. आ. एवं गुरुवर पं० श्री मूलराज जी शास्त्री रैणा जी के चरणों में अध्ययन करके जो कुछ प्राप्त किया है वह भी अविस्मरणीय है। पूज्य गुरुवर स्व० श्री श्रीचन्द्र जी के चरणकमलों को मैं कभी नहीं भूल सकता जिनके कृपा प्रसाद से मैं पञ्चाङ्ग सम्पादन जैसे दुरूह कृत्य विद्वत्समाज को समर्पित कर रहा हूँ। परमादरणीय गुरुवर स्वर्गीय श्री काकाराम जी शास्त्री एवं श्री वाचस्पति जी शास्त्री मेरे संस्कृताध्ययन में पूर्णाधारस्तम्भ रहे हैं जिनके सहयोग से आज मैं गुरुवर श्री वागीश्वर जी की वाक्यावली का किञ्चिद् बोध प्राप्त करता आ रहा हूँ।

अन्त में अपने ज्येष्ठ पितृव्य स्व० पं० धनीराम जी एवं पूज्य पाद दिवंगत पिता जी के चरणों का स्मरण करता हूँ जिनके तपोबल एवं आशीर्वाद के प्रभाव से परमादरणीय गुरुवर श्री गङ्गाराम जी के चरण कमलों को प्राप्त कर सका जिनके कृपाप्रसाद को पाकर आज दत्तात्रय स्वरूप पूज्यपाद अनन्त श्री पूर्णागिरि जी महाराज के चरणों में पहुँच कर पण्डित समाज की सेवा में उद्यत हूँ।

इसके पश्चात् समस्त विद्यापीठीय परिवार को मैं धन्यवाद देता हूँ जिनका साहचर्य पाकर मुझे विद्वत्सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अन्त में मुद्रण व्यवस्थापक गरोवर जी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनके सहयोग से मुझे नवीनानुभूति हुई है।

तत्पश्चात् समग्र परिवार की छत्रछाया स्वरूप पूज्यपाद श्रीमती सीता माता जी के चरण कमलों को धन्यवाद देता हूँ जिनके हार्दिक आशीर्वाद के फलस्वरूप पञ्चाङ्गी द्वितीयाङ्क समर्पण का उत्साह हुआ है। इसके साथ ही प्रात: स्मरणीया पितृष्वसा स्व० श्री जानकी देवी जी को अनन्त धन्यवाद समर्पण करता हूँ जिनकी कृपा पाकर सभी कुमार्गों से बच कर सुमार्ग पर आ जाता रहा हूँ। कृपया पण्डित जन अशुद्धिसंशोधनपूर्वक पंचांग का उपयोग करें।

सम्पादक—

विहारीलाल शर्म वासिष्ठ (खिहाड़ियां)

२३, श्री रघुनाथपुरी जम्मूस्थ:।

★

विषयानुक्रमणिका

(शेष आवरण पृष्ठ ३ पर)

उत्तम (शुद्ध) विवाह मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा. प्र.	मा. ता	वार	नक्षत्र	विवरणम्
वै. ५	अप्रैल १७	बुधे	उभा	ऽ मु।ऽ।।।ऽ।ल. ८. ९
,, १२	,, २४	बुधे	मृग	ऽमं।।।ऽअऽऽ।।ल ११, १२
,, १७	,, २९	चन्द्रे	मघा	ऽरा।।ऽ।।ऽ।ऽ। ल ९, ११
,, १८	,, ३०	भौमे	मघा	ऽरा।।ऽ।।ऽ। । ल नि. ४ (१२।१६) यावत्
,, १९	मई १	बुधे	उफा	।।ऽबु।ऽरोऽ।। ल. गोधूलिः १२
,, २७	,, ९	गुरौ	उषा	।ऽ।।।।।ऽ ल. गोधूलिः ९ श. पूज्यः
ज्ये. ७	,, २०	चन्द्रे	रोहि	।।।।ऽचौ।।।ल. १०,११, १२
,, ८	,, २१	भौमे	रोहि	।।ऽमं।।।ऽचौ।।।ल दि. ४
,, ८	,, २१	भौमे	मृग	।।ऽमं।।।।।।ल १०, ११, १२
,, ९	,, २२	बुधे	मृग	।।।।।।। ल दि. ४ गुरुपूज्यः
,, १६	,, २९	बुधे	उफा	।।।ऽशु।।।।। ल ४ गुरुपूज्यः
,, १६	,, ३०	गुरौ	हस्त	।।।।।।ऽ।ल ९, १२
,, २२	जून ४	भौमे	मू	।।।ऽ ।।।क १०, ११, १२ गु. पूज्यः
,, २९	,, ११	भौमे	उभा	ऽ।।।ऽऽऽ।।ल. दि. ४ रा. १०, ११
,, ३०	,, १२	बुधे	उभा	ऽ।।।।ऽऽ।ल. दि. ४
आषा ९	,, २२	शनौ	मघा	ऽ।।।।ऽऽ।ल. २
,, १०	,, २३	रवौ	मघा	ऽ।ऽवृ।।।।।ल ४, ११
,, ११	,, २४	चन्द्रे	उफा	।ऽ०य।।।'।ल २
,, १७	,, ३०	रवौ	अनु	।ऽ।ऽऽशु ।।।। दिल. ४. ५ गुरुपूज्यः
,, २६	जुलाइ ९	भौमे	उभा	।।।।।।ऽ।ल. ५
,, २६	,, ९	भौमे	रेव	ऽ।।।।ऽ।ल २, ११
,, २७	,, १०	बुधे	रेव	ऽ।।।।ऽ।ल. ४, ६ मं.चं. पूज्यौ:
मार्ग १३	नव २८	गुरौ	रोहि	।।।ऽशुश।ऽ।ल ९, १०
,, १३	,, २८	गुरौ	मृग	।।।।।ऽ।।ल ४,५ गूरु पूज्यः
मार्ग १४	नव. १९	शुक्रे	मृग	।।।।।।।।। ल९,'१०, ११ (२०।३०) यावत्
,, २७	दि. १२	गुरौ	मूला	।ऽ।।ऽ।।। ल ५
,, २९	,, १४	शनौ	उषा	।।।।।।।।।ल १०, गुरुपूज्यः मासान्त

पञ्जाब प्रान्ते विवाह मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा. प्र.	मा. ता	वार	नक्षत्र	विवरणम्
भा. १०	अगस्त२५	रवौ	मूल	।।।।।ऽऽ।ऽल २
,, १२	,, २७	भौमे	उषा	ऽसू।।।।।।।।ल. गोधूलि.दि.६,८ रा. १२,२
,, १७	सित. १	रवौ	उभा	।ऽ।।।ऽ।।ल २, ४
,, १८	,, २	चन्द्रे	रेव	ऽऽ।।।ऽ।।। ल दि २
,, १९	,, ३	भौमे	रेव	ऽऽ।।।ऽ।।ल ६ चं. पूज्य
,, २२	,, ६	भृगौ	रो	ऽवु।।।। ।।ल १२, ४
,, २३	,, ७	शनौ	रो	।ऽ।।ऽअ।ऽ।ल द, १२
,, ३१	,, १५	रवौ	उफा	।।ऽसू।।।।।ल. गोधूलि.

पंजाब द्विगर्त प्रान्तेषु विवाहमुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा. प्र.	मा. ता	वा.	नक्षत्र	विवरणम्
आश्वि ४	सित. १९	गुरौ	अनु	।।ऽरा।।।।।ल ३, ८ गुरु पूज्यः
,, ८	,, २३	चन्द्रे	उषा	।।।।।।।।।ल४
१६	,, २८	शनौ	उभा	।।।ऽसूऽ।ऽऽ.ल ४ पितृपक्षारम्भः
कार्ति ३	अक्तू १९	शनौ	मूला	।।।।।।।ल ८ द्वादशे शनिः पूज्यः
,, ४	,, २०	रवौ	उषा	।।।।।।ऽ।ल १० (१३।१०) पश्चात्
,, ५	,, २१	चन्द्रे	उषा	।।।।।।ऽ।ल ९ (१३।९०) यावत्
,, ९	,, २५	भृगौ	उभा	ऽसू।।ऽऽ मंशु।ऽ।ऽ।ल ४
,, १०	,, २६	शनौ	उभा	ऽसू।।ऽऽमं।ऽ।ऽ'ल गोधूलिः १०, ११
,, १५	,, ३१	गुरौ	रो	।।।।ऽवुशु।।।।ल ९,१०
,, २३	नव. ८	भृगौ	उफा	।।।।ऽ वु शु ।।।। ल ४ ७ में गुरु पूज्यः
,, २४	,, ९	शनौ	उफा	।ऽ।।।ऽऽ।। ल गोधूलि ल १०
,, २४	,, १०	शनौ	हस्त	।ऽ।।।ऽ।।ल ४, गु. पूज्यः ५ शु. पूज्यः
,, २८	,, १३	बुधे	अनु	।।ऽ सूशुगुरा।।ऽ।।ल ९ शनिः पूज्यः

।। महर्षि कात्यायनमते पारस्कर गृह्योक्त विवाह मुहूर्त्ताः ।।
(सं. २०४२ वै)

मा. प्र.	मा. ता.	वार	नक्षत्र	विवरणम्
वै २९	मई ११	शनौ	श्रव	।।ऽ।ऽरोऽ ऽल ४, गुरु पूज्यः
,, २९	,, ११	शनौ	धनि	ऽ।।।।ऽ।ल ९, ११, १२
ज्ये १७	,, ३०	गुरौ	चि	।ऽ।।।ऽ।।ल ४
,, २४	जून ६	गुरौ	श्रव	।।।।।ऽ।ल ११, १२
,, २५	,, ७	शुक्रे	श्रव	।।ऽवृ।।। ।।ऽल ४
अश्वि ९	सित २४	भौमे	श्रव	। ऽवृ।।।।।ल ४, ९ द्वादशे शनिः पूज्यः
कार्तिक ६	अक्टू २२	भौमे	श्रव	।।ऽवृ।।।।।।ल ९ (१३/२७) यावत्
,, १२	,, २८	चन्द्रे	अश्वि	।।।।।।।।ल १०, ५
मार्ग ३	नव १८	चन्द्रे	धनि	।।।।।।ऽ।। ल ४ गु चं. पूज्यः

।। अधम (अशुद्ध) विवाह मुहूर्त्ताः ।। (सं. २०४२ वै.)

मा. प्र.	मा. ता.	वार	नक्षत्र	विवरणम्
चै १०	मार्च २३	शनौ	रेव.	ऽ ऽ।।।।।।ल ४ कुनेत्रमास दोषः
,, १०	,, ,,	शनौ	अश्वि.	।।।।।।ऽ।ल ९, १० कुनेत्रमास दोषः
,, ११	,, २४	रवौ	अश्वि.	।ऽ।।ऽमृ।।। ल ४ भौम रिक्तादोषः
,, १३	,, २६	भौमे	रोहि.	।।ऽ।।।।। ल ५ कुनेत्रमास दोषः
,, १४	,, २७	बुधे	रोहि.	ऽ।।ऽ।।।।। दि ल ४ गुरु पूज्यः रा १० कुनेत्रमास
,, १५	,, २८	गुरौ	मृ	ऽशु।।।।।ऽ।। ल ४ कुनेत्रमासदोषः
,, २०	अप्रै २	भौमे	मघा	ऽवृशऽ।ऽवृ। ऽ।। ल ४ ,, ,,
,, २३	,, ५	भृगौ	हस्त	ऽशु।।।।।ऽऽ। ल दि ४ ,, ,,
,, २४	,, ६	शनौ	चि	ऽसूवृऽ।।ऽ।।ऽ।। ल दि ४ ,, ,,
,, २४	,, ६	,,	स्वा	।।।।।।ऽ।। ल ९, १० ,, ,,
,, २५	अप्रै ७	रवौ	स्वा	।।।।।।ऽ।। लग्नाभावः
,, २८	,, १०	बुधे	मूला	ऽरा ।।।।।ऽ।। ल १०, ११ भद्रादोषः
,, ३०	,, १२	शुक्रे	उषा	ऽवृबृरा।।ऽऽमृ ऽ।। ल ९ मृत्युवाणदोषः

मा. प्र.	मा. ता.	वार	नक्षत्र	विवरणम्
वै २	अप्रै १४	रवौ	धनि	ऽश।।।ऽमृ।ऽ।। ल ८, मृत्युवाणदोषः
,, ५	,, १७	बुधे	उभा	ऽश।ऽ।।।ऽ।ल ८।९ ,, ,,
,, ११	,, २३	भौ	रोहि	।।। ।ऽमृ ।।। ल ९, १० ,,
,, १३	,, २५	गुरौ	मृ	ऽमं।।।।ऽऽ।। लग्नाभावः
,, २८	मई १०	भृगौ	श्रव	।।ऽवृ।।ऽरा।ऽ।। भद्रादोषः
ज्ये १७	,, ३०	गुरौ	हस्त	।।।।।।।ऽ।। ल ४ भद्रादोषः (१६/२५)
,, २६	जून ८	शनौ	धनि	।ऽ।।।ऽऽ ल ५ वैधृति तोषः
,, ३१	,, १३	गुरौ	अश्वि	ऽसू।।।ऽमृ।ऽ।ऽ मृत्युवाणदोषः
आषा १२	,, २५	भौमे	उफा	।ऽ।।।ऽमृऽऽ ल ४ ,, ,,
,, १४	,, २७	गुरौ	चि	ऽश।।।ऽमृऽऽ।। ल ४, ५ मृत्युवाणदोषः
,, १५	,, २८	भृगौ	स्वा	।।।।।।।। ग्रहदूषितनक्षत्रम्
,, १६	,, २९	चन्द्रे	अनु	ऽऽ।ऽरा।ऽशु।।।।। ल ११/१२ राहुवेधः
,, १८	जुलाई १	शनौ	मूला	।।।ऽमं।।ऽ।। भौम वेधः
,, २१	,, ४	गुरौ	श्र	।ऽगु।।ऽमृऽ।। ल ११, वैणदोषः
,, २५	,, ८	चन्द्रे	उभा	ऽ।।।।।ऽ।। भाद्रदोषः
,, ३१	,, १४	रवौ	रोहि	।ऽऽशु।।ऽमृऽऽ।। ल ५, ११ मृत्युवाणदोषः
श्रा ९	,, २४	बुधे	चि	ऽरा।।।।।ऽ।। ल ५, ११ मलमासदोषः
,, १७	अगस्त १	गुरौ	श्र	ऽ।ऽवृ।।।ऽ। ल ५ ,, ,,
,, १७	,, १	,,	धनि	ऽवृश।।ऽसूवृ।।ऽ।। ल ११ ,, ,,
,, १८	,, २	भृगौ	धनि	ऽ।ऽऽ। ऽ।। ल ५ ,, ,,
,, २३	,, ७	बुधे	अश्वि	।ऽ।।।ऽ।।। ल २, ५, ११ ,, ,,
भाद्र ३	,, १८	रवौ	उफा	।।।।।।।। लग्नाभावः
,, ४	,, १९	चन्द्रे	उफा	।।।।।ऽ।।। ,, ,,
,, २३	सित ७	शनौ	रोहि	ऽवृ।।।।।।।। ,, ,,
अश्वि ३	,, १८	भौमे	चि	।।।।ऽमृ।।।। ,, ,,
कार्ति २४	नव ९	शनौ	उभा	।ऽ।।।।ऽऽ।। वैधृतिदोषः
मार्ग २	,, १७	रवौ	उषा	।।।।ऽमृ।ऽ।।मृ. वा. दोषः
,, २	,, ,,	,,	श्रव	।।।।ऽमृ।ऽ।। ,, ,,
,, १९	दिस ४	बुधे	मघा	।ऽ।ऽवृ।ऽमृऽ।। मृत्युवाणदोषः
,, २२	,, ७	शनौ	हस्त	ऽशु।।।।।ऽ।ऽ भद्रादोषः

मा. प्र.	मा. ता.	वार	नक्षत्र	विवरणम्
मार्ग ७	नव २२	मृगौ	उभा	।।।ऽमंऽ।ऽऽ।। दि ल ९, १० पंचभीष्मदोष
,, ८	,, २३	शनौ	रे	ऽ।।ऽमं।ऽ।। ल ३ ,, ,,
,, १२	,, २७	बुधे	रो	।।।।ऽसूश।।ऽ।। ल ५ ,, ,,
पौ. २	दि. १६	चन्द्रे	धनि	।ऽ।।।ऽमृ।ऽ।। ल ५ कुनेत्रमासदोष:
,, ५	,, १९	गुरौ	उभा	।ऽ।।।ऽरा।ऽ।। ,, ,,
,, १९	जन २	,,	उफा	।।।।।।।।। भद्रा ,, ,,
,, २०	,, ३	भृगौ	हस्त	ऽबु।।।ऽमृ।ऽ।। ,, ,,
,, २४	,, ७	भौमे	अनु	।ऽमंऽश।।।।ऽ।। ,, ,,
,, २८	,, ११	शनौ	उषा	।ऽऽगु।।।।ऽ।ऽ ,, ,,
,, २९	,, १२	रवौ	धनि	।।ऽ।।ऽमृ।।।। ,, ,,
माघ २	,, १५	बु	उभा	।।।।।ऽमृ।।।। मृत्यु वाणदोष:
,, ३	,, १६	गुरौ	उभा	।।।।।ऽअ।।।। ल ११
,, ३	,, १६	,,	रे	।।।।।ऽअ।।।। ल ५, ६
,, ४	,, १७	भृगौ	रे	।।।।।।।।। भद्रादोष:
,, ८	,, २१	भौमे	रोहि	।।।।ऽऽरो।।ऽ।। ल ११, ५
,, ९	,, २२	बुधे	मृग	ऽ।।ऽसू।।ऽ।।।। ल ५
,, १४	,, २६	चन्द्रे	मघा	।।।ऽसूबुशुऽवृ।।।। ल ९
,, १७	,, ३०	गुरौ	हस्त	।।।।।ऽरो।ऽ।। ल ५
,, १८	,, ३१	भृगौ	ह	।।।।।।ऽ।। ल १२
फा २	फर्व १३	गुरौ	रे	।ऽसा।।।ऽमृ।ऽ।। मृत्यु वाणदोष:
,, १६	,, २७	बुधे	हस्त	।ऽ।ऽबुऽऽऽ।। भद्रादोष:
,, २३	मार्च ६	गुरौ	ऊषा	।।।।।ऽबु।ऽ।। ल ३, ९
,, २८	,, ११	भौमे	उभा	।।ऽबु।।।।।।। ल ३, १०
,, २९	,, १२	बुधे	रेव	।।।।।ऽमृ।।।। मृत्यु वाणदोष:

आश्विन कृष्णपक्षे (श्राद्धपक्षे) (सं. २०४२ वै)

आ. १४	सित २९	रवौ	उभा	ऽ।।ऽसृ।।।ऽऽऽ।
,, १५	,, ३०	चन्द्रे	रेव	ऽ।।।ऽऽरा।ऽऽऽ।
,, १६	अक्टू १	भौमे	अश्वि	।।।।।।ऽऽ।।
,, १९	,, ४	शुक्र	रोहि	।।।।।ऽरो।ऽ।।
,, २०	,, ५	शनौ	मृग	।ऽ।।।ऽ।ऽ।

द्विरागमन मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वार	मा.	ता.	मा.	ता.	नक्षत्र
वैं.	कृ	११	चन्द्र	वैं.	३	अप्रैल	१५	धनिष्ठा
वैं.	शु	५	गुरौ	,,	१३	,,	२५	मृगशिश
वैं.	,,	११	बुध	,,	१९	मई	१	उफा
ज्ये.	कृ	५	गुरौ	,,	२७	,,	९	उषा
,,	,,	६	शुक्र	,,	२८	,,	१०	उषा
का.	शु.	७	चन्द्र	मार्ग	३	नव.	१८	श्रवण
,,	,,	११	शुक्र	,,	७	,,	२२	उफा
मार्ग	,,	९	गुरौ	,,	१३	,,	२८	रोहि
,,	,,	२	शुक्र	,,	१४	,,	२९	मृग
,,	,,	१२	चन्द्र	,,	२४	दिस.	९	स्वा
,,	शु.	२	शुक्र	,,	२८	,,	१३	पूषा
फा.	,,	२	बुध	फा.	२९	मार्च	१२	उफा

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वा.	मा.	प्र.	मा	ता.	नक्षत्र
चैं.	शु.	२	शनौ	चैं.	१०	मार्च	२३	रेवती
वैं.	कृ.	१०	रवौ	वैं.	२	अप्रैल	१२	श्रवण भौमवेध:
,,	,,	११	चं.	,,	३	,,	१५	धनि शनिवेध:
,,	शु.	५	गुरौ	,,	१३	,,	२५	मृग
,,	,,	७	शनौ	,,	१५	,,	२७	पुन
,,	,,	८	रवौ	,,	१६	,,	२८	९।५५ पश्चात
,,	,,	१२	गुरौ	,,	२०	मई	२	उफा
,,	,,	१३	शुक्रे	,,	२१	,,	३	हस्त
ज्ये.	कृ.	६	,,	,,	२९	,,	१०	उषा १०।५२
,,	,,	७	शनौ	,,	२८	,,	११	श्रवण सूर्यवेध:
,,	,,	८	रवौ	,,	३०	,,	१२	धति शनिवेध:
,,	शु.	२	भौमे	ज्ये.	९	,,	२२	रोहिणी
,,	,,	२	बुधे	,,	९	,,	२२	मृग
,,	,,	४	शुक्रे	,,	११	,,	२४	पुन८।२५भद्रोत्तरं
,,	,,	५	शनौ	,,	१२	,,	२५	पुष्य
,,	,,	१०	बुधे	,,	१६	,,	२९	उफा
,,	,,	११	गुरौ	,,	१७	,,	३०	हस्त ११।४५पर्यन्त
फा	शु.	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मार्च	१२	उभा

अक्षरारम्भ मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वा	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	विवरणम्
ज्ये.	कृ	१२	गुरो	ज्ये. ३	मई १६	रेव	
,,	शु	३	गुरो	,, १०	,, २३	आर्द्रा	(७।४७) यावत
,,	,,	४	शु	,, ११	,, २४	पुन	(८।२५)पश्चात्
,,	,,	१२	शु	,, १८	,, ३१	चि	
आषा	कृ	५	शु	,, २५	जून ७	श्रव	
,,		१०	बु	३०	,, १२	रे	
,,	शु	२	गु	आषा ७	,, २०	पुन	

विद्यारम्भ मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वा	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	विवरणम्
वै.	शु.	५	गुरो	वै. १३	अप्रै २५	मृग	
,,	,,	५	,,	,, ,,	,, ,,	आर्द्रा	
ज्ये.	कृ	५	गुरो	,, २७	मई ९	पूषा	
,,	कृ	१२	गुरो	ज्ये. ३	,, १६	रे	
,,	शु	३	बुधे	,, ९	,, २२	मृग	
,,	,,	३	गुरो	,, १०	,, २३	आर्द्रा	(७।४७) यावत
,,	,,	४	भृगो	,, ११	,, २४	पुन	(८।२५)पश्चात्
,,	,,	११	गुरो	,, १७	३०	हस्त	
,,	,,	१२	भृगो	,, १८	३१	चि	
आषा	कृ	३	बुधे	२३	जून ५	पूषा	
,,	,,	५	भृगो	२५	,, ७	श्रवण	
,,	,,	१०	बुधे	३०	,, १२	रेव	
आषा	शु	२	गुरो	आषा ७	,, २०	पुन	
,,	,,	३	भृगो	,, ८	,, २१	पुष्य	

चूड़ाकरण मुहूर्त्ताः (मुण्डन) (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	लग्न	विवरणम्
वै.	कृ.	११	चन्द्र	वै. ३	अप्रै. १५	धनि	२	(भा.स्टै.टा.)
,,	शु.	५	गुरो	,, १३	,, २५	मृग	३	
,,	,,	१३	शुक्र	,, २१	मई ३	चित्रा	४	
ज्ये.	कृ.	१२	गुरो	ज्ये. ३	,, १६	रेव.	४	
,,	,,	१३	शुक्र	,, 4	,, १७	अश्वि	४,६	
ज्ये.	शु.	२	बुध	,, ९	,, २२	मृग	४	
,,	,,	४	शुक्र	,, ११	,, 24	पुन	४	(८।२५)
,,	,,	११	गुरो	,, १७	,, ३०	हस्त	४	पश्चात्
आषा.	कृ.	५	शुक्र	,, २५	जून ७	श्रव.	४	
,,	शु.	२	गुरो	आषा. ७	,, २०	पुन	४	
,,	,,	३	शुक्र	,, ७	,, २१	पुष्य	४	(९।७)पश्चात्
,,	,,	९	गुरो	,, १४	,, २७	चित्रा	४	
,,	,,	१०	शुक्र	,, १५	,, २८	स्वा		
फा.	शु.	३	गुरो	फा. ३०	मार्च १३	रेव.		आवश्यके

यज्ञोपवीत मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा.	प.	ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	लग्न	विवरणम्
वै.	शु.	५	गुरो	वै. १४	अप्रै. २६	मृग	४	(भा.स्टै.टा)
,,	,,	१२	गुरो	,, २०	मई २	हस्त	४	
ज्ये.	शु.	४	शुक्र	ज्ये. ११	,, २४	पुन		(८।२५)
,,	,,	१०	बुध	,, १६	,, २९	उफा	४	पश्चात्
,,	,,	११	गुरो	,, १७	,, ३०	हस्त	४	
,,	,,	१२	शुक्र	,, १८	,, ३१	चित्रा		
आषाढ़	,,	२	गुरो	आषा. ७	जून २१	पुन	५	
,,	,,	३	शुक्र	,, ८	,, २२	पुष्य	५	
पौ.	,,	६	गुरो	माघ. ३	जन.१६	उभा	११	
,,	,,	७	शुक्र	,, ४	,, १७	रेव.	११	
,,	,,	१२	बुध	,, ७	,, २२	मृग.	११	
माघ	कृ.	५	गुरो	,, १७	,, ३०	उफा	११	(११।११)
फा.	शु	२	बुध	फा. २९	मार्च १२	रेव.	११	पश्चात्

॥ गृहारम्भ मुहूर्त्ताः ॥ (सं. २०४२ वै.)

मा. प. ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	लग्न	विवरण
वै. कृ. ११	चन्द्र	वै. ३	अप्रै. १५	धनि.	३	शनिवेधः
,, शु. ५	गुरो	,, १३	,, २५	मृग.	३	चक्राशुद्धिः
,, ,, ७	शनि	,, १५	,, २७	पुष्य	३	
,, ,, १२	गुरो	,, २०	मई २	उफा	३	
				हस्त.		
ज्ये. शु. ५	गुरो	,, २७	,, ७	उषा.	६	चक्राशुद्धिः
द्वि. श्रा. शु. ३	चन्द्र	भाद्र ४	अग. १७	उभा.	८	
,, ,, ,, १५	शुक्र	,, १५	,, ३०	शत	८	
भा. कृ. ३	चन्द्र	,, १८	सित. २	रे.	८	
,, ,, ११	बुध	,, २७	,, ११	पुष्य	८	चक्राशुद्धिः
का. कृ. ३	गुरो	का. १५	अक्तू. ३१	रोहिणी	७	
मा. कृ. १	गुरो	मार्ग १३	नव. २८	रोहिणी	११	
,, ,, २	शुक्र	,, १४	,, २७	मृग	११	
पौ. कृ. ५	चन्द्र	,, १७	दिस. २	पुष्य		चक्राशुद्धिः
,, ,, १०	शनि	,, २२	,, ७	हस्त		

गृहप्रवेशमुहूर्त्ता (सं. २०४२ वै.)

मा. प. ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र	विवरण
वै. शु. ५	गुरो	वै. १३	अप्रै. २५	मृग.	चक्राशुद्धिः
,, ,, १२	गुरो	,, २०	मई २	उफा	
ज्ये. कृ. २	चन्द्र	,, २४	,, ६	अनु	चक्राशुद्धिः
,, ,, ५	गुरो	,, २७	,, ७	उषा	,,
,, ,, ६	शुक्र	,, २८	,, १०	उषा	,,
,, ,, ११	बुध	ज्ये. २	,, १५	उभा	,,
,, ,, १२	गुरो	,, ३	,, १६	रेव.	
ज्ये. शु. ३	बुध	,, ७	,, २२	मृग.	चक्राशुद्धिः
,, ,, १०	बुध	,, १६	,, २७	उफा	
,, ,, ११	गुरो	,, १७	,, ३०	चित्रा	
,, ,, १२	शुक्र	,, १८	,, ३१	,,	
आषा. कृ. १०	बुध	,, ३०	जून. १२	उभा	
मार्ग. कृ. ७	शुक्र	मार्ग. २१	दिस. ६	उफा	
पौ. शु. ६	गुरो	माघ. ३	जून. १६	उभा	

विपणि मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा. प. ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र
वै. शु ८	रवौ	वै. ६	अप्रै. २८	पुष्य
,, ,, १२	गुरो	,, २०	मई २	उफा
,, ,, १३	भृगो	,, २१	,, ३	चि
ज्ये. कृ. २	चं	,, २४	,, ६	अनु
,, ,, ११	बुधे	ज्ये २	,, १५	उभा
,, ,, ११	भृगो	,, ४	,, १७	अश्वि
ज्ये. शु. १	चन्द्र	,, ७	,, २०	रो
,, ,, १०	बुधे	,, १६	,, २९	उफा

हलप्रवहण वीजवपन मुहूर्त्ताः (सं. २०४२ वै.)

मा. प. ति.	वार	मा. प्र.	मा. ता.	नक्षत्र
वै. कृ १२	भौमे	वै. ४	अप्रै. १६	शत
,, शु ४	बुधे	,, १२	,, २४	मृग
,, ,, ७	भृगो	,, १५	,, २७	पुन
ज्ये. कृ. ९	चन्द्रे	,, ३९	मई १३	शत
,, ,, ११	बुधे	ज्ये. २	,, १५	उभा
,, ,, १२	गुरो	,, ३	,, १६	रेव.
,, शुक्ल ४	भृगो	,, ११	,, २४	पुन
,, ,, १०	बुधे	,, १६	,, २९	उफा. हस्त
,, ,, १२	भृगो	,, १८	,, ३१	चित्रा
आषाढ़ कृ. १०	बुधे	,, ३०	जून १२	उफा
,, ,, १०	गुरो	,, ३१	,, १३	रेव.
,, शु. ३	भृगो	आषा ८	,, २१	पुष्य
,, ,, ९	गुरो	,, १४	,, २७	चित्रा

अथ शान्तिपाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता स ऽ उद्भिदः । देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभिनो निवर्तताम् । देवानाँ सख्यमुपसेदिमावयं देवान ऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् । अर्यमणं वरुणँ सोममश्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ।। तन्नो वातो मयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।।

तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ।।
स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ।।
पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ।।
भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽआदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः ।
नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः ।।

आयुष्यम्वर्च्चस्य ँ रायस्पोष मौद्भिदम् । इदँ हिरण्यम्वर्चस्वज्जैत्रायविशतादुमाम् ।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधय शांतिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिःसामाशान्ति रेधि ।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ।
शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ।।

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ।।
पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् । विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्वा । अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता । द्यौः शान्ति शान्तिरन्तरिक्षँ पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेवशांतिः सामाशांतिरेधि । विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव । यद्भद्रंतन्नऽआसुव । इमारुद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।। एतन्तेदेवसवितर्यज्ञम्प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेन मामव ।। मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति । गणानान्त्वा गणपतिँ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपति हवामहेँ निधीनान्त्वा निधिपतिँ हवामहे वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् । नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवो नमः ।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः । ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ।
ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ।
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः । ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः ।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।
ॐ श्री मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः । ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः ।

ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः । ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः । ॐ अधिदैव प्रत्यधिदेव सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः । ॐ समस्त लोकपालेभ्यो नमः । ॐ वास्तु क्षेत्रपालयोगिनी सर्वतोभद्र पीठाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः । ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः । ॐ श्री राधादामोदराभ्यां नम : । ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामिभ्यो नमः । ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः । ॐ प्रयागादि तीर्थ राजेभ्यो नमः । ॐ त्रित्रिंशतकोटिदेवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्रह्मणेभ्यो नमः । ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायमहाविष्णवे नमः । ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ।

ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः ।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ।
अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्र्यम्बकेगौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थोभगवान् मङ्गलायतनोहरिः ।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलंतदेवलक्ष्मीपतेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि ।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थोधनुर्धरः ।
तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम् ।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिंब्रह्मेशान जनार्दनाः ।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नंकरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।

पवित्रधारणम्—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम् ।

वैष्णवाचमनम्—ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः

हस्तप्रक्षालनम्—ॐ गोविन्दाय नमः । ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः ।

प्राणायामः—ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियोयोनः प्रचोदयात् ।

दिग्बन्धनम्—ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्म कर्मसमारभे ॥
ॐ प्राच्यैनमः, ॐ अवाच्यैनमः ॐ प्रतीच्यैनमः ॐ उदीच्यैनमः
ॐ अन्तरिक्षायनमः ॐ यज्ञभूम्यैनमः ।

विनियोगः—ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसनशोधनेविनियोगः ।

पृथ्वीपूजा—ॐ पृथिव्यै (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम् शरीरे स्नानीयं वस्त्रोपवस्त्रं यज्ञोबीतं एप गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि धूपोदीपश्च नैवेद्यं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि । इति सर्वेषां देवानां कृते सर्वत्र प्रयोज्यम् ।

पृथ्वी प्रार्थना—ॐ पृथिव त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ।

भूम्यां त्रिकोणमण्डलं कृत्वा दूर्वाक्षत पुष्पाणि निधाय कर्म पात्रं न्यसेत् । तत्र कर्मपात्रं पूर्ववद् गंधाद्यैः सम्पूज्य ।

तीर्थाभिमंत्रणम्—ॐ गङ्गेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदेसिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

आत्मसिंचनम्—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

स्मार्ताचमनम्—ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गा विष्णु ॐ गङ्गाविष्णुः

आत्म तिलकम्—ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां भूयास ॅ सुवर्चामुखेन ।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् ॥

अङ्गन्यासः—ॐ मनो वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिरः शिखा-बाहूभ्यां यशोबलम् ।

शिखाबन्धनम्—ॐ उर्ध्व केशि विरूपाक्षि मांस शोणितभोजने ।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये चामुण्डे चापराजिते ।

सूर्यार्घ्यम्—ॐ एहि सूर्य सहस्रो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

ध्यानम्—ॐ ध्येयःसदासवितृमण्डलवर्त्तीनारायणःसरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतं शंखचक्रः ।

दीपार्घ्यम्—ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह ।
प्रसीदमम गोविन्द दीपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम् ।

दीपप्रार्थना—ॐ भो दीप ! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकार निवारक ।
इमा मया कृता पूजा गृह्णतेजो विवर्धय ॥

धूपार्घ्यम्—ॐ वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्य सुमनोहर ।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम् ॥

धूपप्रार्थना—ॐ वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते ॥

विशेषः—एषाऽऽत्मपूजा सर्वकर्मसुप्रयोज्या ।

प्रतिज्ञासंकल्पः—ॐ विष्णु विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो-राज्ञया-प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पेवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकनाम संवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकयने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौशेषेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायांशुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं कायिक वाचिकमानसिक सांसर्गिक चतुर्विधपातकदुरितक्षयद्वारा धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विध पुरुषार्ज प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं क्रियमाणे । विष्णुयाग (रुद्रयाग) कर्मणि सर्वत्र निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये ।

श्री गौरीगणेशपूजा

आवाहनम्—ॐ गणानान्त्वागणपति ॅ हवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपति ॅ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॅ हवामहे वसोमम ।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकाम्पीलवासिनीम् ॥

आसनम्—ॐ वर्ष्मोस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥

पाद्यम्—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥

अर्घ्यम्—ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि ।
आपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमश्याममधुमन्तन्तऽऊर्मिम् ॥

आचमनम्—ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥

स्नानम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥

पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

शुद्धस्नानम्—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ।
एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम् ।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ँ षि तारिषत् ॥

घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम् ॥

मधुस्नानम्—मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमांऽऽअस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥

शर्करास्नानम्—ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्येसन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा ॥
जुष्टङ् गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

उद्वर्तनस्नानम्—ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यरिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥

शुद्धस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

वस्त्रम्—ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः।
तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तुतेजः ॥

चन्दनम्—ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनं स्त्वा मिन्द्रस्त्वा वृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

अक्षतान्—अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी।

पुष्पाणि—ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

दुर्वाङ्कुरम्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती: परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

सुगन्धतैलम्—ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ँ सम्परिपातु विश्वतः।

धूपम्—ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योस्मान्धूर्वंतितन्धूर्वंयम्वयंधूर्वामः।
देवानामसिवह्नितम ँ सस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥

दीपम्—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा ॥

नैवेद्यम्—ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

हस्तप्रक्षालनम्—ॐ अ ँ शुना ते ऽअ ँ शुः पृच्यतां परुषः परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसो अच्युतः ॥

फलम्—ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
वृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व ँ हसः ॥

ताम्बूलम्—उतस्माद् द्रवितस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राव्णः सहोर्ज्जातिरित्रतः स्वाहा।

आरात्तिकम्—ॐ आरात्रिः पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदा ँ सि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः ॥
इद ँ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ॥

पुष्पाञ्जलि—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणायकुर्महे।
समेकामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुवेराय वैश्रवणाय महाराजायनमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायीस्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येष

श्लोकोऽभिगीतो मरुत: परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे ।
आविक्षितस्यकामप्रेर्विश्वेदेवा: सभासद इति ।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्
सम्बाहुम्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एक: ।

प्रदक्षिणा—ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रि: सप्तसमिध: कृता: ।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ।!

विशेषार्घ्य:—ॐ रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राताभव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।
ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नम: विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते ।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।
नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपाय ते नम ।
नमस्ते: रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नम: ।
विश्वरूपस्वरूपायनमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यं विनायक ।।
लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषुसर्वदा ।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव ।
अनयापूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपति: सांग: सपरिवार: प्रीयताम् ।।

यज्ञारम्भेध्वजारोहणपुर:सरं शिलान्यास:

संकल्प—गृहारम्भमुहूर्तोक्तेशुभसमये भूशोधनं कृत्वा ईशानदिग्भागेगणेशं संपूज्य देशकालाद्युच्चार्य करिष्यमाण यज्ञमण्डपाङ्गीभूतसनवग्रहवास्तु पृथ्वी कूर्मानन्तादीनां पूजन पूर्वकं यज्ञमण्डपार्थ शिलान्यास ध्वजारोहणादौ गणपति पूजनं करिष्ये । तत्रादौ गणेशादीन् संपूज्य ध्वजारोहण स्थाने गर्त्तं खनित्वा तत्र गुडतिलतैलञ्च निक्षिप्य षोडशोपचारै: शालिग्राम शिलां सम्पूज्य वैष्णवयागे गरुडाङ्कितं पीतध्वजं घण्टिकाचामरभूषितं सज्जीकृत्य ॐ इदं विष्णुरिति ध्वजालम्भ: (स्पर्श:) ॐ विष्णुरराडइति ध्वजोच्छ्राय: । धामन्ते विश्वभुवनमधिश्रित मन्त्रेण ध्वजपूजनम् ध्वजे गरुडाय नम: । इति विधिवत् संपूज्य :—

दण्डोच्छ्रयणाम् :—ॐ यो मे दण्ड: परायत द्वैहायसोऽधिभूम्यान्तमहं पुनराददे । आयुषेब्रह्मणे वर्च्चसाय । इतिमन्त्रेण दण्डालम्भ: दण्डोच्छ्रयणंञ्च ।
विष्णुसहस्रनाम पाठकं वा वृणुयात् । रुद्रयागेतु वृषभाङ्कितं श्वेतध्वजं सम्पूज्य शिवसहस्रनामजापकं वृत्वा अन्नपूर्णाजापकं च वृणुयात् । यज्ञ मण्डपोक्त भूस्थले पूर्वादिदिक्षु पञ्चाङ्गुलशंकूनमध्ये नवाङ्गुलं शंकुञ्च शंख चक्र गदा पद्म भूषितमारोपयेत् । रुद्रयागे तु त्रिशूलाङ्कित शंकूनामारोपणमुक्तम् ।

शंकुस्थापनमन्त्र:—ॐ विशन्तुभूतलेनागा: लोकपालाश्च सर्वत: ।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकरा: सदा ।।

चतुर्दिक्षु बलिदानान्ते बास्तुपुरुषं विधिवत्संपूज्यपद्मशूलधरां वसुन्धरां ध्यायन् पुष्पाञ्जलिमादाय ।

पृथिव्यावाहनम्—आगच्छसर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि ।
पृथिवब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता ।।
रत्नाकरे विष्णुना त्वं धृतावाराह रूपिणा ।
आगच्छ वरदेधात्रि यज्ञे स्मिन् शुभदायिनि ।।
तत: षोडशोपचारै: पृथ्वीं संपूज्य

प्रार्थना—ॐ जयदेवि जगद्धात्रि जगत्कल्याणकारिणी ।
यज्ञभागं प्रतीच्छस्व सुखार्थं प्रणमाम्यहम् ।।

दर्भै:खातस्थानमार्जनम्—ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशिनी यच्छान: शर्मसप्रथा: ।

पंचगव्यामृतैरभिषिचनम्—ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च ।
सुरायै बभ्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः ॥

ततः पायसापूपादि नैवेद्येन सपरिवारायै भूम्यै बलि समर्पयेत् गुडतैलञ्च प्रक्षिपेत् ।

अभ्रिग्रहणं(खुरपी)ॐ ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् ।

गर्तोल्लेखनम्—ॐ इदमहं रक्षसां ग्रीवा ऽअपि कृन्तामि ।

खनित्र (कुद्दाल) पूजा—ॐ त्वष्ट्रा विनिर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया ।
पूजितोऽसि खनित्र त्वं सिद्धिदोभव मेऽधुना ॥

सूत्रधारपूजा—ॐ नमामि विश्वकर्माणं सर्वसूत्र प्रवर्त्तकम् ।
मण्डपादि प्रसिद्ध्यर्थं सर्वसिद्धि समृद्धिदम् ॥

खननाङ्गपूजा—आधार शक्त्यै नमः, कूर्माय, अनन्ताय, यज्ञभूम्यै, वास्तु-पुरुषाय. इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यश्चं बलिसमर्पयेत् ।

खननम्—ॐ मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहङ्खनामि वः ।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ॥

यवदर्भसिद्धार्थकवपनम्—ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ।

दूर्वाङ्कुरारोपणम्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेणशतेन च ।

सुवर्णवपनम्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्० ।

पुष्पाञ्जलिः—ॐ त्वंदेवि खननार्थं तु मखे पूजां गृहाण मे ।
पूजनाच्छेष कूर्माभ्यां शुद्धां वृद्धिं प्रयच्छ मे ॥

पंचशिलाः पंचगव्यतीर्थं जलादिनां संस्थाप्य कुंकुमादिनोपलिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य नंदादिक्रमेण पद्म, सिंहासन, तोरणच्छत्रे, कूर्म, विष्णुचिह्नैः केवलं स्वस्तिकचिह्नेनवाङ्कयित्वा ॐ आब्रह्मन्० इतिनन्दा ॐ भद्रंकर्णेभिः० इतिभद्रा । ॐ जातवेदसेसु० इति जया । ॐ यमायत्वा० इतिरिक्ता । ॐ पूर्णादर्विपरापत० इति पूर्णा । गन्धादिनासम्पूज्य तासुनन्दादिक्रमेण । ॐ ब्रह्मयज्ञानं० इति ब्रह्म पूजा । ॐ विष्णोरराट्० इति विष्णु पूजा । ॐ तमीशान० इति ईश्वर पूजा । ॐ त्र्यम्बकंयजामहे० महाशिवपूजा च कार्या । इशानदिप्रदक्षिणक्रमेण चतुर्दिक्षुमध्ये च गुड तैलं दत्वा पद्म, महापद्म, शंख, मकर, समुद्रनामकपंचकलशान् संस्थाप्य ईशान्यां वा सर्पाकारां वास्तु प्रतिमांकलशे प्रतिष्ठाप्य ईशानादिषु क्रमशः नन्दादि पंचशिलाः स्थापनीयाः ।

शिलान्यासमन्त्रः—ॐ क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासारयिनोधेहि सुभगे सुवीर्यान् । अश्वावद गोमदूर्जस्वत्पर्णं वनस्पतिरिव । अभितः पूर्यंतां रयिरिदमनु-श्रेयोवसाना ॥ आग्नेयादि क्रमेणापिशिलान्यासः प्रोक्तः ।

प्रार्थना—ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च ईशानश्च सदाशिवः । पञ्चदेवाः शिलास्वातु आयुर्बल यशस्कराः ॥ नन्दाऽऽनन्दप्रदाभूयाद्भद्रा भद्राण्यिच्छतु । जयास्याज्जयदारिक्ता पूर्णा भूयाद्वर प्रदा ॥ ततो दक्षिणान्ते देवान् विसर्ज्य सूर्यार्घ्यं दत्वा प्रमादादिति क्षमापनं पठेत् । ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॥

इतिध्वजारोहणपूर्वकं शिलान्यासः ॥

अथपापघटदानविधिः

तत्र कर्ता पूर्वं दिने कृतैक दृढनियमो ब्रह्मचर्येण रात्रिं नीत्वा द्वितीये दिने प्रातरुत्थाय कृत नित्य क्रियः प्राङ्मुखासन उपविश्याचम्य प्राणानायम्य स्वेष्ट देव गुरु गणपतीन् ध्यात्वा कुशाक्षत जलान्यादाय

संकल्पः—ॐ तत्सद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक गोत्रोऽमुकशर्मा श्री परमेश्वर प्रीति द्वारा नारायण याग संसिद्धचर्थ नाना जन्मार्जित वाङ्मनः कायकृत महापातकोपपातकादि समस्तपापक्षयकामः पापघटदानाङ्गत्वेन गणपतिपूजन पूर्वकं गौर्यादिमातृणां वसोर्धारा सहितानां पूजनपूर्वकं ब्रह्माचार्यादीनां वरणं पुण्याह वाचनं च करिष्ये । इति संकल्प्य तानि प्रोक्तकार्याणि सम्पाद्य ततः स्वगृह्योक्त प्रकारेण स्थण्डिलेऽग्नि संस्थाप्य ब्रह्मोपवेशनादि कुश कण्डिकां चरुं श्रपयित्वा सांगतां कृत्वा ग्रहस्थापनं कुर्यात् तत्स्थान् देवान् संपूज्य सर्वतोभद्रमण्डलं निर्माय मण्डलदेवान् संपूज्ये मध्ये हेमराजतताम्रञ्चान्यतम धातुमयंवा कलश विधिना कलशं संस्थाप्य तदुपरिस्थ पूर्णपात्रंयथाशक्तिपरिमितं ताम्रादि धातुमयं कलशं स्थापयित्वा ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः० इत्यादिना कलशं सम्प्रार्थ्य तस्मिन्घटे पातकानि स्मृत्वा द्रव्यादिना प्रतिपातकं वृतं

सितां वा निक्षिपेत् । तद्यथा—

मनसा दुर्विनीतेन यन्मया पातकं कृतम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेव प्रसादत: ॥१॥

व्रजता तिष्ठता चापि कर्मणा यदुपार्जितम् तत्तिष्ठतु० ॥२॥
परस्व हरणेनापि पातकं यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥३॥
सुवर्णस्तेयजं पापं मनोवाक्काय कर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ॥४॥
रस विक्रयत: पापं ब्रह्मजन्मनि संचितम् । तित्तष्ठतु० ॥५॥
क्षत्रधर्मविहीनेन क्षत्रजन्मनि यत्कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥६॥
वैश्य जन्मन्यपि मया यद्घोरं पातकं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥७॥
शूद्र जन्मनि यत्पापं सततं समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥८॥
गुरुदाराभिगमनात्पातकं यन्मया कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥९॥
अपेयपानसंभूतमाक्षेपात् पातकं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥१०॥
वापीकूपतडागादि भेदनेन कृतं च यत् ।तत्तिष्ठतु० ॥११॥
अभक्ष्यभक्षणेनैव संचितं यच्चपातकम् । तत्तिष्ठतु० ॥१२॥
अवाच्यवादसम्भूतमस्पृश्य स्पर्शनं चयत् । तत्तिष्ठतु० ॥१३॥
वृक्षगुल्म लतादीनां छेदनेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥१४॥
संमूलछेदनाद्यर्थासत्कर्मकरणोद्भवम् । तत्तिष्ठतु० ॥१५॥
परप्रतापसंभूतं पापं यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥१६॥
पर द्रोहेण यत्पापं वाङ्मन: कायकर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ॥१७॥
परस्त्री गमनात्पापं निबन्धेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥१८॥
परापवादजं पापं यन्मयासमुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥१९॥
विधवा गमनात्पापं निबन्धेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥२०॥
मातृसंगमजं पापं मया यत्तु पुरार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥२१॥
स्वसा संगमजं पापं यत्पाप पुंस्त्री संगजम् । तत्तिष्ठतु० ॥२२॥
गोत्रस्त्री गमनेनापि यत्पापं मयि संस्थितम् । तत्तिष्ठतु० ॥२३॥
गोत्रहत्या समुद्भूतं यत्पापं मयि संस्थितम् । तत्तिष्ठतु० ॥२४॥
गर्भपातनजंर्नाना रोगैश्चापि मया कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥२५॥
भ्रूणहत्या समुद्भूतं पापं यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥२६॥

ब्रह्म हत्या समुद्भूतं पापं यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥२७॥
पितुर्वध समुद्भूतं पातकं यन्मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥२८॥
मातुर्बन्धेन यत्पापं मनो वाक्काय सम्भृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥२९॥
भगिनी भार्तृनाशेन कामलोभकृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥३०॥
ज्ञाति ब्रह्मजनस्यापि गर्वात्स्वीकरणात्तु यत् । तत्तिष्ठतु० ॥३१॥
विष प्रदानजं पापं यच्चज्ञाति वधोद्भवम् । तत्तिष्ठतु० ॥३२॥
देश ग्राम गृहाराम दाहत: पातकं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥३३॥
विश्वस्तं सुस्थिरं सुप्तं हत्वा यत्समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥३४॥
भीतं शरणमापन्नमरक्षित्वार्जितं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥३५॥
भोजने ब्राह्मणादीनां विघ्नेन यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥३६॥
ब्रह्मचारियति दैन्यात्किल्विष संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ॥३७॥
कन्या वर विवाहेतु विघ्नेनाऽऽचरितं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥३८॥
पितृ मातृ वियोगेन बालानां यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥३९॥
दाम्पत्य प्रीति विच्छेदाद् यत् कृतं पापसञ्चयम् । तत्तिष्ठतु० ॥४०॥
न्यासापहरणेनैव यत्पापं समुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥४१॥
दुष्टसङ्गप्रसङ्गेन पापं यन्मयि संचितम् । तत्तिष्ठतु० ॥४२॥
वस्त्रोपवस्त्रहरणादन्यथा रोधने च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥४३॥
अश्वजात तृषार्त्तस्यविघ्नाचरणतश्च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥४४॥
स्वस्त्रिया ऋतु संगेन द्वेषाच्च यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥४५॥
पित्रोरर्थे समुद्भूतं पातकं संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ॥४६॥
राजस्त्री गमनेनैव पातकं संभृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥४७॥
राज्ञोवधसमुदभूतं पातकं संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ॥४८॥
चौर्य्येण संचितं पापं मनोवाक्कायकर्मजम् । तत्तिष्ठतु० ॥४९॥
जडोन्मत्तं प्रमत्तं च हतवान् यदहं पुरा । तत्तिष्ठतु० ॥५०॥
परक्षेत्रापहरणां पापं यत् संचितं मया । तत्तिष्ठतु० ॥५१॥
अकामायास्त्रियाचापि व्रतभङ्गेन यत्कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥५२॥
प्रतिश्रुतस्यादानेन यत्पुरासंचितं मया । तत्तिष्ठतु० ॥५३॥
निष्कलमषे जने पापारोपणाद्यत्कृतं मया । तत्तिष्ठतु० ॥५४॥
परापवादिना पापं नि:शंकेन कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥५५॥

देवद्विज प्रसादानां मंजनेन कृतं मया । तत्तिष्ठतु० ॥५६॥
देवता प्रतिमाभङ्ग प्रमादेन कृत च यत् । तत्तिष्ठत० ॥५७॥
आज्ञाभङ्गेन पूज्यानां तर्जनेन वरस्त्रियः । तत्तिष्ठतु० ॥५८॥
विद्यावित्तवयोभिश्चावज्ञानान्मान खण्डनात् । तत्तिष्ठतु० ॥५९॥
शुकशारिक कोशानामन्येषां पशुपक्षिणाम् । तत्तिष्ठतु० ॥६०॥
नीडादीनां च हरणाद्यत्पापं च मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥६१॥
द्विजमित्रगुरुद्वेषात्संचितं यच्च किल्विषम् । तत्तिष्ठतु० ॥६२॥
तीर्थे देवालये वह्नौ विण्मूत्र करणेनयत् । तत्तिष्ठतु० ॥६३॥
लोकवेदविरुद्धस्य सेवनाद्यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥६४॥
साधूनामुपहासेन धर्मतश्चालनेन यत् । तत्तिष्ठतु० ॥६५॥
कूट मान तुलाभिश्च यत्पापं च मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु ॥६३॥
कामात्क्रोधात्तथालोभाद्द्वेषात्साक्ष्ये कृतं च यत् । तत्तिष्ठतु ॥६७॥
वन्दिना सङ्कृतं पापं जन्म जन्मनि संचितम् ' तत्तिष्ठतु० ॥६८॥
कण्डनाद्यवरोधेन मार्गे पापं कृतं च यत् । तष्ठितु० ॥६९॥
वद्धौ च मातृ पितरौ पोष्य वर्ग युतो मया ।
सामर्थ्येऽपि न पुष्टो यत्तत्पापमिह तिष्ठतु ॥७०॥
भ्रष्ट मार्गेण पृष्टोऽहं जानताप्यन्यथा वने ।
अनेन गच्छेति मया पातकं यदुपार्जितम् ॥७१॥
बलेनाबलिनं बद्ध्वामज्जितो यज्जलेमया ।
तीर्थावगाह संकल्प वारणाद्धेतु वादतः ॥७२॥
पुण्यकर्म कृतोत्साद भंजिते नार्जितं च यत् । तत्तिष्ठतु० ॥७३॥
विद्या स्नानं व्रत स्नानं विघ्नितं यत्पुरानया । तत्तिष्ठतु० ॥७४॥
पतिव्रताभिगमनाद्बलेन यदुपार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥७५॥
कुमारी गमनोद्भूतं पातकं यन्मयाकृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥७६॥
अभक्ष्यभक्षणात्पापं यन्मया पूर्वं संचितम । तत्तिष्ठतु० ॥७७॥
इह जन्मनि यत्पापं ज्ञान भ्रंशकरं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥७८॥
कूपाशौच कृतं पापं यन्मयादारुणं कृतम् । तत्तिष्ठतु० ॥७९॥
चिताकाष्ठकृतैर्यूपैर्यन्मया सकृतार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥८०॥
दुष्प्रटप्रतिग्रहोत्पन्नं कामलोभादिभिश्च यत् । तत्तिष्ठतु०॥८१॥

रजस्वलायाः संगेन पातकं यन्मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु ॥८२॥
दिवास्त्रीसेवनेनैव बहुशो यन्मयार्जितम् । तत्तिष्ठतु० ॥८३॥
ज्ञाताज्ञातैरनेकैश्च घटोऽयं संभृतो मया । तत्तिष्ठतु० ॥८४॥
पूर्वजन्मान्तरोत्पन्नैरेतज्जन्म कृतैरपि । तत्तिष्ठतु० ॥८५॥

एवं घृतेनसितया वा प्रतिपातक स्मरणेन घटः पूरणीयः ।

ततो घटं संपूज्य सदीपं घट पूरितं पापकलशाय नमः । गन्धपुष्पादिभिःसंपूज्य ततोब्राह्मणवरणम् ।

संकल्पः—ॐ तत्सद्येत्यादि पापघटं दातुममुकगोत्र ब्राह्मणमेभिर्वरणद्रव्यैस्त्वामहंवृणे ।

हेमाद्रिसंकल्पः—ॐ तत्सद्येत्यादि पठितवान्ते मत्कर्तृकानेक जन्मार्जितज्ञाताज्ञात वाङ्मनः कायकृतपातकोपपातकादिपूरितमिमं घटं गन्धपुष्पार्यचितं अमुक शर्माणं भूदेवं त्वामहं वृणे । संकल्पं ब्राह्मणहस्ते दद्यात् ।

दानप्रतिष्ठा—ॐ अद्यकृत्यैतत्पापघटदान प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यं यथाशक्ति परिमितं अग्निदेवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे इति दद्यात् । कृतेनानेनदानेन पापहा विष्णुः प्रीयताम् इतिवदेत् । ततः प्रतिगृहीतारंब्राह्मणंप्रार्थयेत् ।

प्रार्थना—महेश्वर द्विजश्रेष्ठ जगतस्ताप हारक
त्राहि मां दुःख संतप्त त्रिभिस्तापैः सदार्दितम् ॥१॥
संसार कूपतस्त्वं मां समुद्धर नमोऽस्तुते ।
त्वदन्यो नास्ति मां देवः समुद्धर्तुंक्षमः क्षितौ ॥२॥
लक्ष्मीकान्तेन देवेन त्वादृशोऽपहरः कृतः ।
कथं त्वं मादृशैः पूज्यो भूयस्तु कृपयास्तु तत् ॥३॥

इत्यादि सम्प्रार्थ्य । अन्यदक्षिणादिकंदत्वा विसर्जयेत् ।

दाताशुद्धस्नानं कृत्वा आसनंचोपविश्य ग्रहाहुतिहोमपूर्वकं यथाधिकारम् ॐ इदं विष्णुः विचक्रमे० पूर्णाहुतिं यावत् समापयेत, गोदानान्नदानादीनि दत्वा यथा शक्त्या ब्राह्मणान् भोजयेत् । ततो यथा शक्त्या आचार्यादीनां दक्षिणादानेन संतोष्य प्रांजलिःसन प्रार्थयेत् । तद्यथा—

यजमानः प्रार्थयेत्—सर्वधर्म विवेक्तारो गोप्तारः सकलाद्विजाः । ममदेहस्य संशुद्धिकुर्वन्तु द्विजसत्तमः । मयाकृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातपातकम् । प्रसादः क्रियतामह्यंशुभानुज्ञां प्रयच्छथ ॥ पूज्यैकृतः पवित्रोऽहं भवेयं

द्विजसत्तमैरिति नमेत् । ततः आचार्यादयोऽपि गणधिपंनमस्कृत्येत्यादि रक्षापाठं कृत्वा पुण्याहवाचनंकुर्युः दीर्घायुस्त—इत्यादिना यजमानस्य तिलकंकृत्वा । ॐ सुजातोज्योतिषेति रक्षाबंधनं कुर्युः ।

इति श्रीज्वालासहाय पंडितेन अघोरवास्तव्येन लिखितपापघट-दानविधिः समाप्तः ।

अथसर्वप्रायश्चित्त प्रयोगः

यजमानः—आचार्योक्त प्रायश्चित्त सामग्रीमेकीकृत्य अपराह्ले धर्मशास्त्र-कुशलान् विप्रान् स्वासनेषु सम्पूज्य समौनं सचैलं स्नात्वा क्लिन्नवासोवा यज्ञाहूत विप्रान् प्रदक्षिणी कृत्य बद्धाञ्जलिः संवदेत् ।

प्रार्थना—समस्त सम्पत्समवाप्ति हेतवः समुत्थितापत्कुल धूमकेतवः ।
अपार संसार समुद्रं सेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मण पाद रेणवः ।।१।।
आपद्घनध्वान्त सहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ।
समस्त तीर्थाम्बु पवित्र मूर्तयः पुनन्तु मां ब्राह्मण पादपांसवः ।।२।।
समस्तशास्त्रोक्तविमर्शहेतवः मलीमसोत्तारि विशुद्ध सेतवः ।
आप्तोत्तमज्ञान निदानधेनवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपाद रेणवः ।।३।।
विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः । दर्शनान्मङ्गलावाप्ति-रर्चनात् सर्वसम्पदः । आधिव्याधिहरं नृणां मृत्यु दारिद्र्यनाशनम् । श्रीयशः कीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपंकजम् ।।४।।

सदस्येभ्योगोदानम्—ज्ञाताज्ञातकृतपाप प्रायश्चित्ताङ्गत्वेनेदं गोवृषनिष्क्रयं द्रव्यं सदस्येभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

यज्ञसदस्यकृतप्रश्नः—किन्तेकार्यंवदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज । तत्वतोब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः । अस्माकं चैव सर्वेषा सत्यमेव परं बलम् । यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम् ।। यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्धयसि कर्हिचित् । अतोमिथ्यां च मा वादीः सत्यं वद यथार्थतः ।

प्रायश्चित्तीयजमानः—अमुक नाम्नो मम जन्म प्रभृति अद्यदिनंयावज्ज्ञाता-ज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कायिकवाचिकमानसिकपातकानां निरसनार्थ-मनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः ।।

विप्राणांप्रार्थना—आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भगवद्वंश इदं जगत् । यक्षरक्षः पिशाचादि सदेवासुर मानुषम् ।। सर्वधर्मविवेक्तारोगोप्तारः सकला द्विजाः । मम देहस्यसंशुद्धिं कुर्वन्तु द्विज सत्तमाः ।। मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञात किल्विषम् । प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ ।। पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहंभवेयं द्विजसत्तमैः । अतो मामनुगृह्णन्तु ।

विप्राः—अनुगृह्णीमः ।

विप्राः—अमुकस्य ते ज्ञाताज्ञातकामाकाम सकृत् कायिक वाचिक मानसिक पातकानां निरसनार्थं षडब्दप्रायश्चित्तममुक प्रत्याम्नायद्वारा यथा संख्य गोनिष्क्रयभूतं यथा शक्ति रजत प्रत्याम्नाय द्वारा प्राच्योदीच्याङ्ग सहितं त्वया आचरितव्यं तेन तव शुद्धिर्भविष्यति त्वं कृतार्थो भविष्यसीति त्रिरुपदिशेत् ।।

शिरोमुण्डनम्—अथ प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन शिरोमुण्डनं दन्तधावनं दशविध-स्नानानि च करिष्ये ।

यजमानः शिरसिहस्तंनिधाय—ॐ यानिकानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानिच । केशानाश्रित्यतिष्ठन्ति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ।।

दन्तधावनम्—ॐ आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहिवनस्पते ।। मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये । ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।।

यज्ञभस्मस्नानम्—ॐ अग्निरितिभस्म । ॐ वायुरितिभस्म । ॐ जलमितिभस्म । ॐ स्थलमितिभस्म । ॐ व्योमेतिभस्म ।

यज्ञभस्माभिमन्त्र्य शिरसिमर्दनम्—ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूता-नाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमे अस्तु सदाशिवोम् । ॐ ईशानायनमः शिरसि ।

मुखेभस्ममर्दनम्—ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचो-दयात् । ॐ तत्पुरुषायनमः मुखे ।

हृदिभस्ममर्दनम्—ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्व-शर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्य । ॐ अघोराय नमः इति हृदये ।

गुह्येभस्ममर्दनम्—ॐ वाम देवायनमो ज्येष्टायनमः श्रेष्ठायनमो रुद्रायनमः कालायनमः कलविकरणायनमः । ॐ वामदेवाय नमोगुह्ये ।

पादयोः भस्ममर्दनम्—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमोनमः। भवे-भवे नातिभवे भवस्यमां भवोद्भवायनमः। ॐ सद्योजातायनमः पादयोः।

सर्वाङ्गेषुभस्ममर्दनम्—ॐ प्रसद्यभस्मनायोनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सँ सृज्य-मातृ भिद्दञ्जोतिष्मान् पुनरासह; । ॐ नमः सर्वाङ्गेषु।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ देवसत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

गोमयग्रहणम् स्नानञ्च—गोमयमादाय प्रणवेन दिक्षुदक्षिणभागं तीर्थे चोत्तरभागं प्रक्षिप्य शेषेणस्नानम्ँ अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां रसंवने। तासां वृषभपत्नीनां पवित्रंकायशोधनम्। यन्मे रोगांश्च शोकांश्च पापं मे हर गोमय॥

सूर्यायगोमयदर्शनम्—ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानो ऽअश्वेषुरीरिषः। मानोवीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मंतः सदमित्वाहवामहे।

सर्वाङ्गेषुगोमयस्नानम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणी।
ईश्वरीं सर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम्।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ आपोहिष्टामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन ॐ महेरणायचक्षसे।

तीर्थमृत्तिकाग्रहणम्—ॐ अश्वक्रान्तेरथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके हर मे पापं यन्मयाकायसंचितम्। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिकेहरमे पापं यन्मयादुष्कृतंकृतम्। त्वया हतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते।

सर्वाङ्गेषुमृत्तिका—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाँसुरे।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ देवस्यत्वा सवितु प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्।

गोमूत्रस्नानम्—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।

गोमयस्नानम्—ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टां करीषणीं
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।

पयःस्नानम्—ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवावाजस्यसंगथे।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत् प्रणऽआयुँषितारिषत्॥

घृतस्नानम्—ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि। प्रियंदेवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

कुशोदकस्नानम्—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ एवं पञ्चगव्य स्नानं कृत्वा शुद्धोदकेन स्नात्वा।

जलेऽघमर्षणम्—ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्न स्नातो मलादिव।
पूतंपवित्रेणेवाज्यमापः शुद्धन्तु मैनसः॥ त्रिरावृत्य॥

स्नानांगतर्पणम्—सव्येन प्राङ्मुखः ॐ भूर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भुवर्देवांस्तर्पयामि। ॐ स्वर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्वर्देवांस्तर्पयामि।

कण्ठीकृत्य (निवीतिना)—ॐ भूः ऋषींस्तर्पयामि ॐ भुवः ऋषींस्तर्पयामि ॐ स्वः ऋषींस्तर्पयामि ॐ भूर्भुवःस्वऋर्षींस्तर्पयामि।

अपसव्येन—ॐ भूःपितॄंस्तर्पयामि ॐ भुवः पितॄंस्तर्पयामि। ॐ स्वः पितॄंस्तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः पितॄंस्तर्पयामि।

सव्येन—ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् ॐ गौतमादयऋषयस्तृप्यन्ताम्। इति एकैकमञ्जलिं देवतीर्थेन जले क्षिपेत्। ततधदङ्मुखी भूय।

यज्ञोपवीतंकंठीकृत्य—ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। इति प्रजापति तीर्थेन अञ्जलिद्वयं दद्यात्। ततः दक्षिणमुखः कृष्णतिलोदकैः पितृतीर्थेन।

अपसव्यंकृत्वा—कव्यवाडनलादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम्। ॐ अस्मत्पितृपितामहाः प्रपितामाहास्तृप्यन्ताम्। ॐ अस्मन्मातृपितामही प्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् ॐ अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहास्तृप्यन्ताम्। ॐ अस्मन्मातामहीप्रमातामहीवृद्धमाताप्रमह्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम्।

राजयक्ष्मतर्पणम्—ॐ यन्मया दूषित्तं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः।
तस्य पापस्य शुद्धचर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम्॥ ततस्तीरमागत्य।

तटे जल अञ्जलिनिक्षेपः—ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम्।
स्नानाङ्गतर्पणान्ते स्थले स्नानवस्त्रं निष्पीडच सव्येनाचम्य।

सूर्यार्घः—ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पयमांदेवगृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।

यजमानः—जलाद्बहिर्निष्क्रम्य अहतं श्वेतं सदशं धौतवस्त्रं परिधाय उपवस्त्रं गृहीत्वाद्विराचमेत्। ततो यथाचारं भस्म चन्दनादिना तिलकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनं कुर्यात्।

त्रिकालसन्ध्योपासनम्

आत्माभिषेक:—ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा ।
य: स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सा बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ।।

संकल्प:—ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतावाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बुद्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्माहं प्रात: (सायं) सन्ध्योपासन कर्मकरिष्ये ।

विनियोग:—पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता मेरोरारोहणे (आसनशोधने) विनियोग: ।

पृथ्वी प्रार्थना—ॐ पृथ्वित्वयाधृतालोकादेवित्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां देविपवित्रं कुरु चासनम् ।।

शिखाबन्धनम्—ॐ भूर्भुव: स्व: । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि ।
धियोयोन: प्रचोदयात् ।

आचमनम्—ॐ ऋतंञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततोराञ्यजायत । तत: समुद्रोअर्णव: समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्व: ।

विनियोग:—ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्ण: सर्वकर्मारम्भेविनियोग: । ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाज गौतमात्रिवशिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतो पंक्ति त्रिष्टुबजगत्यश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोग: । ॐ गायत्र्याविश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द: सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोग: । ॐ शिरस: प्रजापतिऋषिस्त्रिपदागायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजु: प्राणायामे विनियोग: ।

प्राणायाम:—ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियोयोन: प्रचोदयात् ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतंब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम् ।

विनियोग:—ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषि: प्रकृतिच्छन्द: सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग: ।

प्रात:आचमनम्—ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्य: पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पन्तु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहमामृत योनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

विनियोग:—ॐ आप: पुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्द: आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग: ।

मध्याह्नाचमनम्—ॐ आप: पुनन्तु पृथिवी पृथिवी पूता पुनातुमाम् ।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातुमाम् ।
यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितंमम ।
सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहं स्वाहा ।

विनियोग:—ॐ अग्निश्चमेति रुद्रऋषि: प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग: ।

सायमाचमनम्—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्य: पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्नापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदलुम्पतु यत्किञ्चिद दुरितं मयि इदमहमाममृत योनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

विनियोग:—ॐ आपोहिष्ठेत्यादि तृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्द: आपो देवता राजसूयावभृथे (मार्जने) विनियोग: ।

मार्जनम्—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुव: ॐ तान ऊर्जे दधातन । ॐ महेरणाय चक्षसे ॐ योव: शिवतमोरस: ॐ तस्य भाजयते हन: ॐ उशतीरिवमातर: ॐ तस्माऽअरङ्गमामव: ॐ यस्य क्षयायजिन्वथ ॐ आपोजन यथा च न: ।

विनियोग:—ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्द: आपोदेवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोग: ।

करस्थजलैर्नासिकायोग:—ॐ द्रुपदादिवमुमुचान: स्विन्न: स्नातो मलादिव

पूतंपवित्रेणेवाज्यमाप: शुन्धन्तुमेनस: ॥

विनियोग:—ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो: भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोग: ।

अघमर्षणं जपेत्—ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्ध्वात्तपसोऽध्य जायत । ततो रात्र्य जायत । तत: समुद्रो अर्णव: । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणिविदध द्विश्वस्यमिषतोवशी । सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवंच पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्व: ।

विनियोग:—ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप छन्द: आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग: ।

आचमनम्—ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुख: । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपोज्योति रसोमृतम् ।

सूर्यार्घ्यम्—ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोन: प्रचोदयात् ।

विनियोग—ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषि: । सूर्योदेवता अनुष्टुछन्द: सूर्योपस्थाने विनियोग: ।

सूर्योपस्थानम्—मध्याह्ने उर्ध्वबाहु: सूर्यमुपतिष्ठेत् ।

ॐ उद्वयं तम सस्परि स्व: पश्यंत उत्तरं । देवं देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतरुत्तिमम् । ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहंति केतव: । दृशे विश्वायसूर्यम् ।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने: आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत । पश्येमशरद: शतं जीवेमशरद: शत ँ श्रृणुयामशरद: शतं प्रब्रवामशरद: शतमदीना: स्यामशरद: शतंभूयश्चशरद: शतात् ।

अङ्गन्यास:—ॐ हृदयायनम: ॐ भू: शिरसे स्वाहा । ॐ भुव: शिखायै वौषट् ॐ स्व: कवचायहुम् ।

ॐ भूर्भुव: स्व: नेत्रात्रयाय वौषट् ॐ भूर्भुव स्व: अस्त्राय फट् ।

विनियोग:—ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता । शुक्लो वर्णो गायत्री जपे विनियोग: ।

ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांस्यग्नि वाय्वादित्यादेवताजपे विनियोग: ।

ॐ गायत्र्याविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछंद: सविता देवता जपे विनियोग: ।

गायत्र्या ध्यानम्—ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेय वसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनै: पुष्पैरलंकारैश्चभूषिता ॥
आदित्यमण्डलास्था च ब्रह्मलोकगथायवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनागताशुभा ॥

विनियोग:—ॐ तेजोसीति देवा ऋषयो गायत्री छंद: शुक्रं दैवतं गायत्र्या वाहनविनियोग: ।

आवाहनम्—ॐ ते जोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि । प्रियं देवानामनाधृष्टं देव यजनयसि ॥

विनियोग:—तुरीय पदस्य विमलऋषि: परमात्मा देवता । गायत्री छंद: गायत्री उपस्थाने विनियोग: ।

गायत्र्युपस्थानम्—ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपद्यसि ।
नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयायदर्शताय पदाय परोरजसेसावदोम् ॥

विसर्जनम्—ॐ उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वत मूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥

अथ प्रायश्चित्ताङ्ग विष्णुपूजाप्रयोग:

संकल्प:—देशकालौ संकीर्त्याऽमुकशर्माहं मम सर्वपापक्षयार्थं श्री विष्णु: प्रीत्यर्थं विष्णुयागादिकर्मण: निर्विघ्नतयासिद्धयर्थं प्राश्चित्ताङ्गत्वेन गणमातृका ग्रहपूजापूर्वकं पुरुषसूक्तेन श्रीमहाविष्णु पूजां करिष्ये ।

विप्राज्ञया—हस्तमात्रं चतुरस्र स्थण्डिल त्रयं कृत्वा प्रथमस्थण्डिलोपरिगणमातृका: सम्पूज्य द्वितीयोपरि ग्रहान् तृतीयोपरि ।

यजमानः—तण्डुलैः अष्टदलं कृत्वा तन्मध्ये कलशस्थापनविधिना ताम्रकलशं स्थापयेत् कलशोपरि पट्टवस्त्रं प्रसार्य तत्र गन्धेन अष्टदलयंत्रं विलिख्य तन्मध्ये तुलसीदलोपरि शालिग्रामप्रतिमां स्वर्णमयीं विष्णुमूर्ति वा अग्न्युत्तारणपूर्विकां स्थापयेत् । तत्र स्वर्णमूर्तिश्चेत्तर्हि मूर्ति पात्रे निधाय प्राणप्रतिष्ठापन विधिना प्राणान् प्रतिष्ठाप्य पुष्पाणि विकीर्य स्वशरीरे विष्णुप्रतिमाङ्गे च पुरुषसूक्तन्यासं कुर्यात् "देवो भूत्वा देवं यजेत्" इति वाक्यात् । ततः न्यासान्ते कलशं शंख घंटे च सम्पूज्य देवं ध्यायन् घंटानादं कृत्वा षोडशोपचारविधिना महाविष्णोः पूजां कुर्यात् । ततः ॐ महाविष्णवे नमः । स्तुतिपाठं समर्प्य ॐ अनेन षोडशोपचार पूजनेन पापहा श्री महाविष्णुः प्रीयताम् । इति परमेश्वरार्पणं कुर्यात् । ततः पुरुषसूक्तेन प्रतिऋचं सन्तर्प्य मन्त्रान्ते सर्वत्र भगवान् पापहा महाविष्णुस्तृप्यताम् । इति तर्पणम् ।

अथ विष्णु श्राद्धम् ।

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्ताङ्गतया विष्णु श्राद्ध सम्पत्तये श्री विष्णूद्देशेन त्र्यधिक युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तंमामान्नं तन्निष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये ।

यजमानः—विष्णु स्वरूपं ब्राह्मणं गन्धादिना सम्पूज्य पापापहश्रीविष्णुप्रीतये विष्णुश्राद्धस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमामान्नं तन्निष्क्रय द्रव्यं वा अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे । एवं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्योदत्वा प्रायश्चित्ताङ्गमादौ गोदानं तन्निष्क्रयद्रव्यं वा दद्यात् ।

प्रत्यक्ष गोदानम्—देश कालौ संकीर्त्य प्रारीप्सित प्रायश्चित्तस्य पूर्वाङ्गतया विहितं गोदानं करिष्ये । इति संकल्प्य । ब्राह्मणं वृत्वा यथा विधि ब्राह्मण पूजनं धेनु पूजनं च कुर्यात् । ततो गोपुच्छे देवर्षि पितृ तर्पणं कृत्वा कांस्य पात्रे गो पुच्छं निधाय दुग्धतिल कुश सुवर्ण युतं कृत्वा दक्षिण हस्तेन गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य मम समस्त पापक्षयार्थं पापहा श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थंमिमां गां सवत्सां सोपस्करां यथाशक्ति विभूषितां रुद्रदैवतां तुभ्यमहंसम्प्रददे । इत्युच्चार्य संकल्पजलयुतं गोपुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् ।

प्रार्थना—यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥

यजमानः—गोदानसाङ्गता सिद्ध्यर्थं विप्राय दक्षिणां दत्वा अनेन गोदान कर्मणा पापापहः श्री महाविष्णुः प्रीयताम् । इति जलमुत्सृजेत् । गोदानासम्भवे यथाशक्ति तन्मूल्यंदेयम् ।

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य प्रायश्चित्त पूर्वाङ्गतया विहितं यथाशक्ति गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यदानमहं करिष्ये । ब्राह्मणं सम्पूज्य देय द्रव्यं गृहीत्वा देशकालौ सकीर्त्य प्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितमिदं गौनिष्क्रयीभूतंयथाशक्ति रजतद्रव्यं तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रायश्चित्तहोमः—तत्रादौ शुद्धमृत्तिकया चतुरस्रं स्थण्डिलंकृत्वा पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्नि स्थापनं कृत्वा ॐ हुं फट् इतिमन्त्रेणक्रव्यादांशं नैऋत्यां दिशिकिंचित्परित्यज्य । ॐ अग्निन्दूतंम्पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवां२ आसादयादिह । इतिमंत्रेण आत्माभिमुखमग्निं स्थापयेत् । अग्निपात्रयोः साक्षतोदकं निक्षिप्य अग्निमुखं कृत्वा ॐ चत्वारिश्रृंगा त्रयोऽअस्यपादाः द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य । त्रिधाबद्धोवृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां२ आविवेश । ॐ विट्नाम्ने अग्निपुरुषायनमः । वायव्यकोणे वहिरग्निं षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । ततःकुशकण्डिकां कृत्वा प्राजापत्यहोमं कुर्यात् ।

प्राजापत्यहोमः—ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । इतिमनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम । इत्याधारौ । ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । एवं सप्तवारान् कृत्वा (अष्टोत्तरशताहुतयो भवन्ति) एवं अष्टोत्तरशताहुती हुत्वा पञ्चगव्य होमं कुर्यात् । तत्र सार्ग्रैः सप्तपत्रकुशैः पञ्चगव्यं गृहीत्वा दशाहुतीर्जुहुयात् ।

ब्रह्मकूर्चहोमः—ॐ इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनीमनवे दशस्या । व्यस्कभ्नारोदसि विष्णवेतेदाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढमस्य

पा॰ सुरे स्वाहा। इदं विष्णवे न मम। ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानोऽश्वेषु रीरिषः। मानोवीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे स्वाहा। इदं रुद्राय न मम। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः। ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तुनः स्वाहा। इदं अद्भ्यो न मम। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। स बुध्न्या ऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं सवित्रे न मम। ॐ स्वाहा इदं परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतयेन मम। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। भूराद्या नवाहुतयः होतव्याः। ततः पूर्णाहुतिं भस्मधारणमेवं प्रायश्चित्त होमं समाप्य। व्रत ग्रहणं करिष्ये इति विप्रान् पृष्ट्वा कुरुष्व इति विप्राज्ञयाऽऽज्ञातः।

पञ्चगव्यप्राशनम्—ॐ यत्त्वगस्थिस्थितं पापं देहे तिष्टति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ प्रणवेन गृहीत्वा प्रणवेनैव सर्वं पञ्चगव्यं पिबेत्।

एतच्च सर्वंग्रामाद्वहिर्नद्यादेस्तीरे नक्षत्रदर्शने कार्यम। व्रतं निशामुखेग्राह्यं वहिस्तारंकदर्शने इति स्मृतिवाक्यात्॥ मुमूर्षोस्तु गृहादावेव कार्यम्। अस्मिन् दिने उपवासः।

अशक्तौ हविष्याशनम्॥ अयं च पञ्चगव्यस्य दशाहुति होमो ब्रह्मकूर्चाख्यपञ्चगव्यपाने सर्वत्र ज्ञेयः। ततो गृहमागत्य प्रायश्चित्तस्य-प्रत्याम्नायानुसारेणानुष्ठीय उत्तराङ्गाणि कुर्यात्।

संकल्पः—अमुक शर्मणो मे जन्मतः अद्यावधि ज्ञाताज्ञात पातकानां निरासार्थं गोनिष्क्रयंरजतदानं प्रत्याम्नायेनाङ्गीकृतस्य षडब्द प्रायश्चित्तस्य संसिध्यर्थमशीत्यधिकशतगोनिष्क्रय भूतं प्रतिकृच्छ्रं निष्कं वा तदर्धं वा तदर्धप्रमाणरजतं वा चन्द्रदैवतं नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

प्रायश्चित्तानुसारेण यथा शक्ति सहस्रं शतं पञ्चाशत पंचविंशति द्वादश संख्याकान् वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। ततो यस्यस्मृत्येत्युक्त्वा परमेश्वरार्पणं कुर्यात्।

स्त्रीणांकृते प्रायश्चित्ते—स्त्रीणां होमः कृताकृतः। करणपक्षे विधवायाः क्षौरान्ते पूर्ववत् कृत्वा अमन्त्रकानि दश स्नानानि। सधवायास्तु संकल्पान्ते दन्तधावनं कृत्वा तूष्णींदशस्नानानि। वस्त्रपरिधानान्ते विष्णु श्राद्धगोदानानि कृत्वा प्रायश्चित्त होमार्थमाचार्यं त्वां वृणे। इति विप्रं वृत्वा पूर्ववत् विप्रद्वारा सर्वं पूर्वाङ्गं कारयित्वा स्वयं पञ्चगव्यं तूष्णीं प्राश्य मुख्य प्रत्याम्नाय द्रव्यं विसृज्योत्तराङ्गानि कारयेत्। होमाभाव पक्षे दशविधस्नानान्ते विष्णुश्राद्धगोदाने कृत्वा विप्रेण पञ्चगव्यं कारयित्वा तूष्णीं पञ्चगव्यं च प्राश्य प्रायश्चित्त द्रव्यं सङ्कल्प्यदत्त्वोत्तराङ्ग विष्णुश्राद्धगोदानदशदानानि कुर्यात्। अथ शूद्रस्य संकल्पान्तमविकृतं प्राग्वत्। ततः क्षौरान्तेऽमन्त्रकदशस्नानानि वस्त्र तिलक धारणान्ते विष्णु श्राद्ध गोदाने कृत्वा विप्रद्वारा पञ्चगव्यं कारयित्वा तूष्णीं पिबेत्। शूद्रेण कपिलायाः पञ्चगव्यानि न पेयानि। नास्यविप्रद्वारा होमः। प्रायश्चित्त द्रव्यं संकल्प्य देवोत्तराङ्गविष्णुश्राद्धगोदानानि दशदानानि च कुर्यात्।

अथ दशमहादानम्

गोदानम्—देशकालौ स्मृत्वा गोदान लभ्यफल प्राप्तिकाम इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्रायशर्मणे सुपूजिताय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

प्रार्थना—यज्ञसाधनभूता या विश्वस्यौघनाशिनी।
विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनया गवा॥

अथ भूमिदानम्—ॐ अद्य॰ गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय षष्ठिवर्षसहस्रवर्षपरिमितस्वर्गे शिवपुरनिवासकामः सर्वपापक्षयकामश्च इमां भूमिं बहुसस्यप्रदां विष्णुदैवतां तुभ्यमहं सम्प्रदे नममेति।

प्रार्थना— सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता।
अनन्तसस्यफलदा: अतः शान्ति प्रयच्छ मे॥
यस्यां रोहन्ति वीजानि काले चैव महीतले।
त्वत्प्रसादाच्च सफलाममसन्तु मनोरथाः॥

तिलदानम्—ॐ अद्य॰ गोत्रायशर्मणे इमान् तिलान् सोमदैवताकान् (विष्णुदैवताकान्) वा सर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति।

प्रार्थना—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

आज्यदानम्—ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे इदमाज्यं विष्णुदैवतं समस्तपापक्षय-कामस्तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति ।

प्रार्थना—कामधेनोःसमुद्भूतं सर्वक्रतुषुसंस्थितम् ।
देवानामाज्यमाहारः अतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

वस्त्रदानम्—ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणेसमस्त पापक्षयकामः इमे वार्हस्पत्ये वाससी तुभ्यमहं संप्रददे नममेति ।

प्रार्थना—शीत वातोष्मसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

धान्यदानम्—ॐ अद्य० गोत्राय शर्मणे इदं धान्यं प्रजापति दैवतं समस्त पापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मिकशिवफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहं संप्रददेनममेति ।

प्रार्थना—सर्वदेव मयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् ।
प्राणिनां जीवनोपायम् अतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

गुडदानम्—ॐ अद्य०मम समस्त पापक्षयपूर्वकं गृहे लक्ष्म्या स्थैर्यसिद्धिकामो गोत्रायशर्मणे सुपूजितायेमं गुडंस्सवयं सोमदैवतं सदक्षिणं तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति ।

प्रार्थना—गुड इक्षुरसोद्भूतो मन्त्राणां प्रणवोयथा ।
दानेनानेनमेतस्य परा लक्ष्मीः स्थिरा गृहे ।

रजतदानम्—ॐ अद्य० मम समस्त पापक्षयपूर्वकशिवविष्णुपितृप्रीति कामो गोत्रायशर्मणे सुपूजिताय इदं रजतं विष्णु दैवतं सदक्षिणं तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति ।

प्रार्थना—प्रीतिर्यतः पितृणां च विष्णु शंकरयोः सदा ।
शिवनेत्रो द्भवं रौप्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

लवणदानम्—ॐ अद्य० मम समस्त पापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामोगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय इदं लवणं सर्व रसोत्कृष्टं सोमदैवतं सदक्षिणं तुभ्यमहं सम्प्रददे नममेति ।

प्रार्थना—यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना ।
शम्भोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

इतिदशमहादानं समाप्तम् ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यन्मया दूषितं देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

अथ स्वास्तिपुण्याहवाचनम्

सपवित्रः पाणिराचम्य स्वात्मपूजां विधाय दिग्बन्धनानन्तरम् ।

प्रतिज्ञासंकल्प—अद्य विष्णुयाग साङ्गतार्थं यज्ञस्य निर्विघ्नता सिद्धयार्थं गणपति-पूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं करिष्ये । तत्रादौ तण्डुलैरष्टदलं कृत्वोक्तविधिना कलशंस्थापयेत् ।

भूमिस्पर्शः—ॐ महीद्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
पिपृतानो भरीमभिः ॥

तण्डुलपुञ्जम्—ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजनपारयामसि ॥

कलशस्थापनम्—ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा ।
निवर्त्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्म्मा विशताद्रयिः ॥

जलपूरणम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽ ऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीत् ॥

तीर्थजलम्—इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमे स च तापरुष्ण्या ।
मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये श्रृणु ह्यासुषोमया ॥

गन्धक्षेपः—ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

सर्वौषधीः—ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा ।
मनैनु बभ्रुणामहं शतंधामानि सप्त च ॥

दूर्वा—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

पञ्चपल्लवाः—ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ॥

सप्तमृत्तिका—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।

यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥

पूंगीफलम्—ॐ या फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥

पंचरत्नम्—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे ॥

सुवर्णखण्डम्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

रक्तवस्त्रम्—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोऽअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो ॥

पूर्णपात्रम्—ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो ॥

श्रीफलम्—ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥

वरुणावाहनम्—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आवाहयामि ।

देवतावहनम्—ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः ।
संगृह्य निर्मितोयेन कलशस्तेन कथ्यते ॥
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः ।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती ॥
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी ।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशेस्थिताः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्जुषतामज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ । कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

कलशस्थदेवपूजा—ॐ कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं । मुखे आचमनीयम् । सर्वांगेषु स्नानीयम् । गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि ।

प्रार्थना—ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसितदाकुम्भविधृतो विष्णुनास्वयम् ।
त्वत्तोये सर्वतीर्थाणिदेवाः सर्वे त्वयिस्थिताः ।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः ।
आदित्यावसवोरुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपियतः कामफलप्रदाः ॥
त्वत्प्रसाददिमं यज्ञंकर्तृमीहे जलोद्भव ॥
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् ।
ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

ततः पुण्याहवाचनम् ॥

कलश स्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य पुण्याह वाचकेभ्यो वेदविद्भ्यो नमः इति वेदविदो विप्रान् गन्धादिभिरभ्यर्च्य प्रधानाचार्यं विशेषवरण द्रव्यैर्वृत्वा वरण द्रव्यच तुष्टयमादाय वरणं कुर्यात् ।

विप्रवरण संकल्पः—ॐ अद्येत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाण विष्णुयज्ञकर्मणः [illegible] कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैः अमुकामुकगोत्रान् ऋग्यजुः सामाथर्व विदो विप्रान् अमुकामुकशर्मणो युष्मान् अहं वृणे ।

विप्रा:—वृता: स्म: । इति विप्रा: प्रतिब्रूयु: ।

वरणमन्त्र:—ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

यजमान:—अवनिकृतजानुमण्डल: कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय कलशंधारयित्वाऽऽशिषं प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना—ॐ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च । त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य: अतोधर्माणि धारयन् तेनायु: प्रमाणेन पुण्यं पुण्याह दीर्घमायुरस्तु ।।३।।

विप्रा:—अस्तु दीर्घमायु: ।३ ।

यजमान:—अपांमध्ये स्थिता देवा: सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ता: शिवा आपो भवन्तु मे ।।

शिवा आप: सन्तु इति विप्र हस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्रा:—सन्तु शिवा आप: ।।३।। इति विप्रा: प्रतियुयु: ।

यजमान:—लक्ष्मीर्वसतु पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्य तथास्तुन: ।।

ॐ सौमनमस्यमस्तु ।।३।। इति विप्र हस्तेषु पुष्पं दद्यात् ।

विप्रा:—अस्तु सौमनस्यम् । इति प्रतिवचनम् ।

यजमान:—अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात् ।

विप्रा:—अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।।३।।

यजमान:—ॐ गन्धा: पान्तु इति विप्र हस्तेषु गन्धं दद्यात् ।

विप्रा:—सौमङ्गल्यं चास्तु ।

यजमान:—ॐ अक्षता: पान्तु इति विप्रहस्तेषुवक्षतान् दद्यात् ।

विप्रा:—आयुष्यमस्तु ।

यजमान:—ॐ पुष्पाणि पान्तु इति पुष्पाणि विप्रहस्तेषु दद्यात् ।

विप्रा:—सौश्रियमस्तु ।

यजमान:—ॐ ताम्बूलानि पान्तु विप्रहस्ते ताम्बूलं दद्यात् ।

विप्रा:—ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमाना:—ॐ दक्षिणा: पान्तु विप्रहस्तेषु दक्षिणां दद्यात् ।

विप्रा:—बहुदेयं चास्तु ।

यजमान:—ॐ सर्वाचितमस्तु विप्रहस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्रा:—अस्त्वर्चितम् ।

प्रार्थना—ॐ दीर्घमायु: शान्ति: पुष्टिस्तुष्टि: श्रीर्यशो—

विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु इति विप्रान् प्रार्थयेत् ।

यजमान:—यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भा: शुभा: शोभना: प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजु: सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषि-सम्मतं समनुज्ञात: पुण्यं पुण्याह वाचयिष्ये । इति वदेत् ।

विप्रा:—वाच्यताम् ३ ।

ऋक:—ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु रस्यं द्रविणोदा: सनरस्य प्रयंसत् ।

द्रविणोदा वीरवती मिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायु: ।।१।।

सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात् ।

सविता न: सुवतु सर्वताति सविता नो रासतां दीर्घमायु: ।।२।।

नवो नवो भवति जायमानो ऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।

भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायु: ।।३।।

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदा: सहते सूर्येण ।

हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदा: सोमप्रतिरन्त आयु: ।।४।।

यजु:—ॐ द्रविणोदा: पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्रा दृतु भिरिष्यत ।।१।।

सवितात्वा सवाना ँ सुवतामग्नि गृहपतीना ँ सोमो वनस्पतीनाम् ।

बृहस्पतिर्वाच ऽ इन्द्रो ज्यैष्ठाचाय रुद्र: पशुभ्यो मित्र: सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम् ।।२।।

न तद् रक्षां ँ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथम् ज ँ ह्येतत् ।

यो बिभर्ति दाक्षायण ँ हिरण्य ँ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स

मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥

उच्चाते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे । उग्र ँ शर्म महिश्रवः ॥४॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभिदेवां २ इयक्षते ॥५॥

५र४ २ ४ ५र २र१र २र १२ १ २
साम:—ॐ देवो ३ वो ३ द्रविणोदाः । पूर्णां वि व ष्ट्वा सिचम् । उ द्वा
१ २र १ ७ १ र २ र १
सिञ्चा र । ध्व मुप वा पृणाध्वम् । आ दि द्वोदेर । व ओ ह ते इ डा
२ १
२ ३ भा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥१॥
५४ ५र र ४र ५र २१ र
अध नो देव सवितः । ओ हो वा । इ ह श्रु धायि । प्रजा वा २ ३
२ र २ १२ २ १
त्सा वीः । सौभगाम् । पराद्रू २ ३ ष्वा ३ । हो बा २ ३ हा । प्निय ँ सू
१ २ १ १ १ १ १
२ ३ ४ ५ वा ६ ५ ६ । दक्षा ३ या २ ३ ४ ५ ॥२॥
२ १ र १ २ १र २ १र १ र
चन्द्रमा आउवा । प्सु वान्ता राउवा । सुपर्णो धाउवा । वतेदिवि न वो
२ १ २ १ २ १ १
हि राउवा । ण्यनायिमा याउवा । पद विन्दाउवा । ति विद्युताः वित्तंमा
२ १
आउवा । स्यरोदा २ ३ सा ३ ४ ३ यि ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥३॥
५ २ २ ४र ५ २ १ २ १
उच्चाता ३ यि जात मन्धसाः । दिवाई सा १ दभू २ । मिया २ ३
२ २१ २ २ २र ३
ददायि । उग्र ँ शर्म्मा । महा २ ३ यि श्रवाउ । वा ३ । स्तौष

१ १ १ १
२ ३ ४ ५ ॥४॥
४ ३ र ४ २ ४र ५ २ १ २ २ १
उ पा ५ ५ स्मै । गा ३ या ३ तानाराः । पा ३ वामा ३ ना । या २ ३
२ १ २ २ १ र ३ २
आ । हुम्मायि । दा ३ वायि । अभिदेवां ँ इया २ क्षताउ ।
१ १ १ १ १
वा २ ३ ४ ५ ॥५॥

अथर्वण: ॐ धातारातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिं निधिपति र्नो अग्निः ।

त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणन्दधातु ॥१॥

येन देवं सवितारम्परिदेवा अधारयन् । तेनेदम्ब्रह्मणस्पते परिराष्ट्राय

धत्तन ॥२॥

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् । भद्राहमस्मभ्यं राजञ्छक

धूम त्वं कृधि ॥३॥

उच्चायतंन्तमरुणं सुपर्णमध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम् । पश्याम त्वा

सवितारं यमाहु रजस्रं ज्योतिर्यदविंददत्रिः ॥४॥

यजमान:—व्रत जप नियम तपः स्वाध्यायशमदम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् इति विप्रान् प्रार्थयेत् ।

विप्रा:—समाहित मनसः स्मः ।

यजमान:—प्रसीदन्तु भवन्तः इति वदेत् ।

विप्रा:—प्रसन्ना स्मः ।

यजमान:—पूर्वोक्त रीत्याऽवनि कृत जानु मण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलि शिरस्या धाय तत्र तमेव कलशं धारयित्वा कलशजलं अन्यस्मिन् पात्रे वक्ष्यमाण प्रकारेण प्रतिवचनं दद्यात् । ॐ शान्तिरस्तु अस्तु इति प्रति-वचनम् पुष्टिरस्तु । ॐ तुष्टिरस्तु ॐ वृद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु

ॐ आयुष्यमस्तु ॐ आरोग्यमस्तु ॐ शिवमस्तु ॐ शिवं कर्मास्तु ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॐ धनधान्यं समृद्धिरस्तु ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॐ इष्ट सम्पदस्तु (द्वितीय पात्रे) अरिष्टनिरसनमस्तु ॐ यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु। (पुनः पात्रे) ॐ यत् श्रेयस्तदस्तु ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॐ उत्तरोत्तरमहर हरभिवृद्धिरस्तु ॐ उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: सम्पद्यन्ताम्। इष्टकामा: सम्पद्यन्ताम् ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवता: प्रीयन्ताम् ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदेवते प्रीयेताम् ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॐ अग्निपुरोगा विश्वदेवा: प्रीयन्ताम् ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणा: प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्मपुरोगा: सर्वेदेवा: प्रीयन्ताम् ॐ विष्णुपुरोगा: सर्वे देवा: प्रीयन्ताम् ॐ महेश्वरी पुरोगा उमामातर: प्रीयन्ताम् ॐ वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणा: प्रीयन्ताम् ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्य: प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम ॐ भगवतीऋद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम ॐ भगवन्तो विघ्नविनायकौ प्रीयेतास् ॐ सर्वा: कुलदेवता: प्रीयन्ताम् ॐ सर्वाग्रामदेवता: प्रीयन्ताम ॐ सर्वा इष्टदेवता: प्रीयन्ताम् ततो जलंवहिर्देशे ॐ हताश्चब्रह्मद्विष: ॐ हताश्च परिपन्थिन: ॐ हताश्च विघ्नकर्तार: ॐ शत्रव: पराभवंयान्तु ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॐ शाम्यन्तु पापानि ॐ शाम्यन्त्वीतय: (पुन: पात्रे) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम् ॐ शिवाआप: सन्तु ॐ शिवा ऋतव: सन्तु ॐ शिवा अग्नय: सन्तु ॐ शिवा आहुतय: सन्तु ॐ शिव: वनस्पतय:सन्तु ॐ शिव: ओषधय: सन्तु ॐ शिवा अतिथय: सन्तु ॐ अहोरात्रे शिवेस्याताम्।

ऋक्—ॐ शंव: कनिक्रदद्देव: पर्जन्यो अभिवर्षत्वोषधय: प्रतिधीयतम्॥ शन्नो द्यावा पृथिवी शम्प्रजाभ्य: शन्नो अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे॥

यजु:—ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म वर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर ऽ इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु: सप्ति: पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा: सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम्॥

साम:—ॐ त्वष्टा ३ ४। नो दैविम्। वचा:। पर्जन्यो ब्रह्मणस्पा २ ३ ती:। पुत्रै भ्रातृभिरदिति र्नू पातु २ ३ ना:। दुष्टारा २ ३ न्त्रा। मेणांवा २ ३ वा २ ४ ३:। ओ २ ३ ४ ५ इ। डा॥

अथर्वण:—ॐ गणास्त्वोपगायन्तु मारुता: पर्जन्य घोषिण: पृथक्। सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवी मनु॥

यजमान:—ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु न:॥
भो ब्राह्मणा: मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य च गृहे करिष्यमाण
अमुक कर्मण: पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात्।

विप्रा:—पुण्याहम् ३।

ऋक्—ॐ उद्गातेव शकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि। वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो न: शकुने भद्रमावद विश्वतो न: शकुने पुण्यमावदे॥

यजु:—ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहिमा॥

र र र १ ५ १र रर र

साम:—ॐ पुनान: सोमा ३ धारा २३४ या। आपो वसानो अर्षस्या

र र ३र १२ २१रर

रत्नधा योनिमृतस्यसा २ यि दसायि। ओ हा ३ उ वा उत्सो देवोहि

२ १२ २ १ २ ४५ ४

रा २ ३ हायि। ओ हा ३ उ वा। ण्य या। ओ ३ हो वा। हो

५ इ। डा॥

अथर्वण:—ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनवो धिया।

पुनन्तु विश्वो भूतानि पवमान: पुनातु मा॥

यजमान:—ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।

ऋषिभि: सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तुन:।

भो ब्राह्मणा: मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मण:

कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात्।

विप्रा:—अस्तु कल्याणम् ३ इति त्रि प्रतिब्रूयु:।

ऋक्—ॐ अग्ना: सोम मस्तमिन्द्र प्रयाहि कल्याणी जाया सुरणं गृहे ते।

यत्रा रथस्य वृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्॥

यजु:—ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्य:। ब्रह्म राजन्याभ्या

शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै

दातुरिह भूयासमयं मे काम: समृध्यतामुपमादो नमतु।

३ र ४ २ ४र५ १ र २१र२ १

साम:—ॐ का ५ या। नश्चा ३ यित्रा ३ आभुवात्। ऊ। ती सदावृध: स।

२ र२ १ २ ३र२ १

खा। औ ३ हो होयि। कया २३ शचायि। ष्ट यो हो ३। हुम्मा २।

१ २

वा २ त्तो ३५ हायि॥

अथर्वण:—ॐ विश्वजित् कल्याण्यै मापरिं देहि। कल्याणि द्विपाच्च

सर्वन्नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च न स्वम्॥

यजमान:—ॐ सागरस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभि: कृता।

सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तुन:॥

भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मण:

ऋद्धिं भवन्तों ब्रुवन्तु। इति वारत्रयं ब्रूयात्।

विप्रा:—ऋद्ध्यताम् ३।

ऋक्—ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयाम वाजमानो मन्त्रं सरथे होपयातम्। यशो न

पक्वं मधुगोष्वन्तरा भूतांशो अश्विनो: कामंमप्रा:॥

यजु:—ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम। दिवम्पृथिव्या

ऽअध्यारुहामा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योति:॥

२रर र १ २१र२ २१र२र १ २

साम:—ॐ औ हो वा।३। अगन्म ज्योति:।३। अमृता अभूमा।३।। अन्तरिक्षं

१र र२रर १ २ २२१र२र १२र र१र

पृथिव्या अध्यारुहाम।३। दिवमन्तरिक्षादध्यारुहाम।३। अविदाम देवान्

१२र१र३ २रर र २र १ र३१११ १

।३। समुदेवैरगन्महि।३। औ हो वा।३।।ए। सुवर्ज्योति २ ३ ४ ५ :॥

अथर्वण:—ॐ ऋधङ् मन्त्रो योनि य आबभूवामृतासु वर्द्धमान: सुजन्मा।

अदब्धासु भ्राजमानो हेवत्रितो धर्तादाधारत्रीणि॥

यजमान:—ॐ स्वस्तिर्या अविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा।

विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तुन:॥

भो ब्राह्मणा: मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मण:

स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात्।

विप्रा:—स्वस्ति ३

ऋक्—ॐ स्वस्ति ऋद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णं स्वस्त्यभिया वा ममेति ।

सा नो अमासो अरणे निपातु स्वा वेशा भवतु देव गोपा ॥

यजु:—ॐ स्वस्तिन ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा: ।

स्वस्तिन स्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पति र्दधातु ॥

२र २र ७ २ १र र

साम:—ॐ त्रातारमिन्द्रमविता । रमी २ ३ न्द्राम् । हवे हवे सुहव ँ शू ।

७ २ १ ७ २ २१

रमी २ ३ न्द्राम् । हुवाई नु शक्रं पुरुहू । तमी २ ३ न्द्राम् । इद ँ

२१ र २१र २ २ ४

स्वस्तिनो मघवा । वा ३ ४ ३ इ । तू ३ वा ५ इन्द्रा ६ ५ ६: ॥

अथर्वण:—ॐ स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते

पुरुषेभ्य: । विश्वं सुभूतं सुविदत्रंनो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्य्यम् ॥

यजमान:—मृकण्डुसूनोरायुर्यद्ध्रुव लोमशयोस्तथा ।

आयुषा तेन संयुक्ता: जीवेम शरद: शतम् । इति त्रिवारं ।

विप्रा:—शतं जीवन्तु भवन्त: ॥

ऋक्:—ॐ शतं जीव शरदो वर्द्धमान: शत हेमन्तान्छतमु वसन्तान् ।

शत मिन्द्राग्नी सविता बृहस्पति: शतायुषा हविषेमं पुनर्दु: ॥

यजु:—ॐ शतमिन्नु शरदो ऽ अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसंन्तनूनाम् ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषता युर्गन्तो: ॥

१र र र २ र १र २१ १र

साम:—ॐ आयु विश्वायु विश्वं विश्वमायुरशीमहि । प्रजान्त्वष्टरधिनिधे

२ १र २१र २र १२र १ ३ ११११

ह्यस्मै । शतञ्जीवेम शरदो वयन्ते २३४५ ॥

अथर्वण:—ॐ आयुरस्मै धेहि जातवेद: प्रजां त्वष्टरधि निधे ह्यस्मै ।

रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतञ्जीवाति शरदस्तवायम् ॥

यजमान:—शिवगौरी विवाहे याया श्रीरामे या नृपात्मजे ।

धनदस्यगृहे या श्री रस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

विप्रा:—अस्तु श्री: ३ ।

ऋक्—ॐ श्रिये जात: श्रिय आविरियाय श्रियंवयो जरितृभ्यो दधाति ।

श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्यासंमिथा मितद्रौ ॥

यजु:—ॐ मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीय । पशुना ँ रूपमन्नस्य

रसो यश: श्री: श्रयताम्मयि स्वाहा ॥

५र ५ १ १ १

साम:—ॐ श्रायन्त इवसू ४ रायम् । विश्वा २ इ दिन्द्रा २ । स्यमा २

१ र२ २र २१२ १ २२१ २र

क्षाता । वासूनि जातो जनिमा । नियोजा १ सा २ । प्रति भागन्नदी

र १ २ १र २ २ १र ३२ १

२ धिम: । प्रा २ ३ ती । भागान्ना ३ दा । हुम् । धिमा ३: । औ

५

२ ३ ४ वा । श्रिये १ ॥

अथर्वण:—ॐ एहयातु वरुण: सोमो अग्नि बृहस्पतिवसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रिय मुप संयात सर्व उग्रस्य चेत्तु: सं मनस: सजाता: ॥

यजमान:—ॐ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।

भगवान शाश्वतो नित्यं नो रक्षतु च सर्वत: ॥

ॐ भगवान् प्रजापति: प्रीयताम् इति उदक त्याग: ।

ऋक्—ॐ प्रजापते नत्व देतान्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते

जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजुः—ॐ प्रजापते न त्व देतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पिता सावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाꣳ स्वाहा ॥

२र १र र र२र १
सामः—ॐ हाउ । ३ । इमाः । ३ । प्रजाः । ३ । प्रजापते । होइ ॥ ३ ॥
र२र २ २र १२ २ १रर
प्रजापते । हा ३ १ उ वा २ । ए । हृदया ३ १ उ । वा २ । प्रजारूपम-
रर २१रर २र २१रर २१ १ १११
जीजने । प्रजारूपमजीजने । प्रजारूपमजीजने । इट् इडा २ ३ ४ ५ ॥

अथर्वणः—ॐ प्रजापते रावृतो ब्रह्मणावर्म णाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च । जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् ॥

यजमानः—आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥

विप्राः—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ३ ।

ऋक्—ॐ स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः संयन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः । रायो वन्तारो वृहतः स्यामास्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् ।

यजुः—ॐ प्रतिपन्था मपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परिद्विषो वृणक्ति विदन्ते वसु ॥

५र २र १२१ २रर३ ५र३२
सामः—ॐ त्यमूषू । वाजि । ना ३ ४ ५ म् । देवजूता २ ३ ४ ५ सहोवा-
२१ २ २ ३४५ २ ५ २
नान्ता । रुता ३ । रꣳ रथानाम् । अरिष्टना २ ३ ४ इभीम् । पृतना
२३र५ २ १ र २
३ ४ ३ जमाशुम् । स्वस्त । या ३ । तार्क्ष्यमिहा ३ ४ ३ हू ३ वा ५
इ मा ६ ५ ६ ॥

अथर्वणः—ॐ वेदः स्वस्तिद्रुघणः स्वस्तिः परं शुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति । हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम् ॥

यजमानः—अत्र प्रधान देवाय महाविष्णवे नमः विष्णुः प्रीयताम् ।
इति कलश जलं अधःस्थित पात्रे पूर्ववत् क्षिपेत् ॥
ॐ स्वस्ति पुण्याहवाचन कर्मसमृद्धिरस्तु । इति त्रिः ।

विप्राः—ॐ अस्तु समृद्धिः ।

अभिषेकः—चतुः स्वस्ति पयः पञ्च विष्णोः षट् द्वादश देवताः
प्रातः षट्, पञ्चभगः, पञ्चैन्द्रैः, पञ्चवारुणैः ।
षड्वातैः, शान्तिरष्टौ, जपान्मृत्युर्विनश्यति ॥ (संस्कारगणपति)

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा० पुनातु ।। ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषु पयो० पुनातु ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे० पुनातु ॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो० पुनातु ॥ ॐ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुतरुद्रꣳ हुवेम ॥ पुनातु ॥ ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवा ददन्नः । भगप्रणो जनय गोभिरश्वैर्भगं प्रन्नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ पुनातु ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे० पुनातु । ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ० पुनातु । ॐ समुद्रायत्वा वातायस्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्यायत्वा वाताय स्वाहा । अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा शिमिदायत्वा वाताय स्वाहा ॥ पुनातु ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः० पुनातु ॐ यतोयतः समीहसे ततो नोऽभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॐ शान्तिः ३ ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ।

विप्राः—अस्त्वमृताभिषेकः ।

विप्र दक्षिणा—ॐ अद्य पुण्याहवाचन साद्गुण्यार्थमिमां दक्षिणां प्रजापति दैवतांकाममुकामुकगोत्रेभ्योऽमुकशर्मभ्यऽऋग्यजुः सामाथर्वविद्भ्यो विप्रेभ्यो

विभज्य दातुमहमुत्सृजे न मम ।

आचार्य दक्षिणा—ॐ अद्य कृतैतत्पुण्याहवाचन सांगता सिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां प्रजापति दैवताकां यथा नाम गोत्राय आचार्याय दातुमहमुत्सृजे ॥

आयुष्यतिलकम्—ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै च त्वां खनाम्यहम् । अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥

आशीर्वाद:—ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रावसव: समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञै: । घृतेन त्वं वर्धयस्व सत्या: सन्तु यजमानस्य कामा: ।

मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तथा ॥

ॐ श्रीवर्च्चस्वमायुष्यमारोग्य माविधात्पवमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायु: ॥

अनेन पुण्याहवाचन कर्मणा भगवान् विष्णु: प्रीयताम् ।

॥ शुभमस्तु ॥

॥ अथ नान्दी श्राद्धम् ॥

अथ प्रयोगादौ—अत्र निखिल निबन्ध सारभूत निर्णयस्तु धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेदारम्भे गर्भाधान संस्कारादौ द्रष्टव्य: । अत्र स्वधाशब्दस्थाने स्वाहा शब्द: सव्येनैव सर्वा: क्रिया: । प्रति पार्वणं युग्मा एव ब्राह्मणा: । विवाहादिमङ्गलकर्माङ्गे । वृद्धिश्राद्धे कुशास्थाने दूर्वा: यज्ञादि कर्माङ्गे तु अमूलादर्भा: । दूर्वा दर्भाश्च युग्मा एव पूर्वाह्ण: काल: प्रदक्षिणं कर्म तथा चात्र प्रकृतिभूतपार्वणवदेव दैवेप्राङ्मुखा: पित्र्येचोदङ्मुखा: विप्रा: समुपवेशनीया: न तु दैव धर्मत्वेन सर्वे प्राङ्मुखा: किन्तु ब्राह्मण पंक्ति निवेश: प्रागुपक्रम: पश्चादपवर्ग: आभ्युदिके प्रदक्षिणमुपचार: इति सूत्र बोधितत्वात् ।

सङ्कल्प:—ॐ अद्य विष्णुयाग सांगतार्थं पितृणां तृप्त्यर्थं मगणगणेशमातृकापूजनपूर्वकं नान्दीश्राद्धं करिष्ये । ॐ गणेश्वराय नम: इति स्वस्तिवाचनपूर्वकं गणेशं सम्पूज्य । ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो: नम: । इति यथा लब्धोपचारै: षोडश मातृका पूजनं कृत्वा घृतं मातृकाश्चसम्पूज्या: । तद्यथा

अथ गौर्यादि षोडश मातृकानां पूजनमावाहनञ्च

गौरी—हेमाद्रितनयां देवीं वरदां वरदप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाह्याम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदीद्विपदीसाचतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥

पद्मा—सुवर्णा त्वां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्य पूजितां देवीं पद्मामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथ: सूर्यश्च आरोहणम्वरुणं मित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिंदितिं च मित्रोसिवरुणोसि ॥

शची—उत्पलाक्षी सुदशनां शचीं कुण्डलधारिणीम् ।
देवराजप्रियां भद्रां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ कदा चनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चसिदाशुषे उपोपेन्नुमघवन्भूयऽइन्नुतेदानन्देवस्यप च्यतऽआदित्येभ्यस्त्वा ॥

मेधा—विवस्वतकरं पुल्लमवर्ततां पद्म वासिताम् ।
बुद्धि प्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ मेधाम्मे वरुणोददातुमेधामग्नि: प्रजापतिर्मेधामिन्द्रश्च वायुश्चमेधान्धाता ददातुमे स्वाहा ॥

सावित्री—जगत्स्रष्टां जगद्धात्रीं यशीरूपेण संविताम् ।
ॐ काराक्षीं भगवतीं सावित्रीमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना ॐ—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोन: प्रचोदयात् ॥

विजया—दैत्यपक्षक्षयकरीं देवानां चाभयप्रदाम् ।
गीर्वाणवन्दिता देवीं विजयामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ विज्यं धनु: कपर्दिनो विशल्योबाणवां ॅ उत । अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधि: ।

जया—विश्वभद्रं जयारिक्तां रक्ताम्बरधरां सदा ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ।
तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥

देवसेना—मयूरवाहनारुढां शक्तिखड्गधनुर्धरीम् ।
आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥

प्रार्थना—ॐ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ँ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्
देवानां ँ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवानआयुः प्रतिरन्तुजीवसे ॥

स्वधा—कव्यमादायसततंपितृभ्यो या प्रयच्छति ।
पितृलोकार्चितान्देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥

स्वाहा—हविर्गृहीत्वा सततन्देवो माया प्रयच्छति ।
स्वर्गलोकार्चितास्वाहासमागच्छममाध्वरे ॥

प्रार्थना—ॐ स्वाहायज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहाद्यावापृथिवीभ्यां ँ स्वाहावातादारभे स्वाहा ॥

मातृ—भूतग्राममिदं कृत्स्नयया उत्पादितं पुरा ।
त्रैलोक्यपूजितां देवीं मातृरावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तु । विश्व ँ हृरि प्रप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वाशिवा ँ शग्मामपरिदधेभद्रं वर्णपुष्यन् ॥

लोकमातृ—आवाहयेल्लोकमातृः जगत्पालनसंस्थिताम् ।
शक्राद्यैर्वन्दितां देवींतंत्रयैश्च सुरैरपि ॥

प्रार्थना—ॐ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टञ्चमे पुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेक्षितञ्चमे नञ्चमे क्षुच्चमेयाज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

धृति—नमस्तु ष्टिकारीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् ।
सर्व कामसमृद्ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्मक्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

पुष्टि—प्रणता इमे लोकेस्मिन्पुत्रपुष्टिसुखप्रदा ।
भक्तेभ्यश्चापिवरदाविद्युज्ज्वालार्ककुण्डला ॥

प्रार्थना—ॐ तत्वायामित्र ह्मणावन्दमानस्तदा शास्तेयजमानोहविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरुश ँ समानआयुः प्रमोषीः ॥

तुष्टि—आवाहयामितां तुष्टिं सर्वलोकेषु पूजिताम् ।
सन्तोषभावनादींश्च रक्षणायाध्वरे मम ॥

प्रार्थना—ॐ बृहस्पतेपरिदीयारथेन रक्षोहामित्रा ँ ऽ अपबाधमानः । प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधाजयन्नस्माकमेध्यविताराथानाम् ॥

आत्मकुलदेवी—तामात्मादिहितां देवीं सर्वे काम फलप्रदाम् ।
वंश रक्षाकरीं गोत्रीं देवीमावाहयाम्यहम् ॥

प्रार्थना—ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा । अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥

ततः हस्तयो पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ गौरीपद्माशचीमेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधास्वाहामातरो लोकमातरः ॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्चषोडश ॥

ततो मनोजूतिरिति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य हस्तयोः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा-ॐ गौर्यै नमः, ॐ पद्मायैः, ॐ शच्यैनमः, ॐ मेधायै नमः, ॐ सावित्र्यै, ॐ विजयायै०, ॐ जयायै, ॐ देवसेनायै नमः, ॐ स्वधायै० ॐ स्वाहायै, ॐ मात्रे नमः, ॐ लोकमात्रे नमः, ॐ हृष्ट्यै नमः, ॐ पुष्ट्यै० ॐ तुष्ट्यै ॐ आत्मकुलदेव्यै नमः ।

अथ वसोर्द्धारा पूजनम्

आग्नेयां काष्ठ फलके कुङ्कुमादिना बिन्दुकरणेनाल ङ्करणं कृत्वाऽगामिमन्त्रं पठन् घृतेन सप्तधाराः प्राक् संस्था उदकसंस्था वा कुर्यात् ।

घृतेनसप्तधारा करणम्—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा ।

गुडेनैकीकरणम्—ॐ कामधुक्षः ॥

[illegible]यो घृतमातृभ्य एव च ।
गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थं प्रसाधिकाः ॥

श्री:—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूना ँ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।

लक्ष्मी:—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥

धृति:—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै-रङ्गैस्तुष्टुवां ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

मेधा—ॐ मेधाम्मे वरुणोददातुमेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥

स्वाहा—ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

प्रज्ञा—ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥

सरस्वती—ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञंवष्टुधिया वसुः ॥

ॐ मनोजूतिरित्यनेन प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना—ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

नतः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ श्रियैनमः, ॐ लक्ष्म्यै०, ॐ धृत्यै०, ॐ मेधायै०, ॐ स्वाहायै०, ॐ प्रज्ञायै० ॐ सरस्वत्यै नमः ॥

सामूहिक प्रार्थना—ॐ यदङ्गत्वेन भोदेव्यः पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेनक्रतूद्भवम् ॥

अथवा, ललितादि सप्तमातृकाभ्यो नमः । वसोः पवित्रमसि० इत्यावाह्य ॐ ललितायै, उमायै, गौर्यै, अम्बिकायै, सलिलाश्रयायै, भगाह्वै भगाक्ष्यै नमः । इति सर्वोपचारैः सम्पूज्य

प्रार्थना—ललिता च उमागौरी अम्बिकासलिलाश्रया ।
भगाह्वी च भगाक्षी च सप्तैताघृतमातृकाः ।

एवं पञ्चोङ्कार पूजनम्—

पञ्चोङ्कारेभ्यो नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः, गायत्रीदेव्यैनमः, गोवर्धनेश्वरायनमः, पृथिव्यै नमः, यज्ञपतये नमः, एवं पञ्चोङ्कारान् सम्पूज्य ।

प्रार्थना—ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्धनेश्वरः ।
पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पञ्चोङ्कारान्नमाम्यहम् ॥

आयुष्यमन्त्रजपः—ॐ आयुष्यं वर्च्चस्य ँ रायस्पोष मौद्भिदम् ।
इद ँ हिरण्यं वर्चस्वजैत्रायाविशतादुमाम् ॥

॥ अथ वृद्धिश्राद्धारम्भः ॥

यजमानः—कृतमंगलस्नानः माङ्गलिक वस्त्र भूषित उत्तराभिमुखः शुभासने चोपविश्याचम्य ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु इत्यादि न्यास विधिं विधाय प्राणानायम्य स्वदक्षिणभागे भूमौ गन्धादिना चतुष्कोण मण्डलं कृत्वा तत्र शङ्खचक्रे लिखित्वा गन्धाक्षत पुष्पाणि तूष्णीं प्रक्षिप्य तत्रासनार्थं दूर्वाङ्कुरत्रयं संस्थाप्य तदुपरि कर्मपात्रं पात्रे पवित्रं पवित्र स्थाने दूर्वाङ्कुरत्रयं—

कर्मपात्रेपवित्रक्षेपः—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
देवीरापो ऽअग्रेगुवोऽ अग्रे पुवोग्रऽइममद्य यज्ञपति ँ सुधातु यज्ञपतिं युवम् ॥

जल प्रक्षेपः—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तुनः ।

यव प्रक्षेपः—ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ।
गन्धादीनि तूष्णीं प्रक्षिप्य कर्मपात्रं सम्पन्नम् इति यजमानः ।

विप्राः—सुसम्पन्नम् । तेन जलेन आत्मानं सम्भारांश्चसंप्रोक्षयेत् ।

अभिषेकः ॐ यद् देवा देव हेडनं देवा सचकृमावयम् अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः ।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेना ँ सिचकृमावयम् । वायुर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः ।
ॐ यदि जाग्रद् यदि स्वप्न एना ँ, सिचकृमावयम् । सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः ।

आत्माभिषेकः—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो ऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः । ॐ पुण्डीकाक्षाय नमः ।

देव गायत्री—ॐ देवताभ्यो देवताभ्यो देवताभ्यो नमो नमः ।

नमः स्वाहायै स्वाहायै स्वाहायै च नमो नमः ॥

दक्षिणकट्यां नीवीबन्धनम्—ॐ सौमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म-यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ।

यवदूर्वाभिर्दिग्बन्धः—ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशम् ।
तथा बर्हिषदः पान्तु यामीं मे पितरः स्थिताः ॥
प्रतीचीमाज्यपाः पान्तु उदीचीमपि सोमपाः ।
विदिशश्च गणाः सर्वे रक्षन्त्वर्यमघोपिवा ॥
रक्षो भूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ।
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ॥
यवा रक्षन्तु दितिजान् दर्भा रक्षन्तु राक्षसान् ।
पंक्ति वै श्रोत्रियो रक्षेदतिथिश्च सर्वं रक्षकः ॥

ततो गायत्री मन्त्रेण कर्मपात्रजलमभिमन्त्र्य तेन जलेन शूद्रादि दृष्टि निपातात् संघर्षणादि दोषाद् आमान्नादीनां पवित्रतास्तु । इतिसम्प्रोक्ष्य ।

स यव दूर्वाभिः सङ्कल्पः—ॐ तत्सदद्य पितृ पितामह प्रपितामहानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानां देवानां तथा च मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानां देवानां विष्णु यागाङ्गत्वेन सांकल्पिक विधिना सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव पूर्वकमाभ्युदयिक श्राद्ध करिष्ये । तत उत्तर वृद्धया यव जलान्यादाय ।

विश्वेदेवेभ्यः आसन दानम्—ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादित्रय सपत्नीक मातामहादित्रयाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा भू र्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा । वृद्धि वृद्धि श्रियै । इत्यासनं २ वा ४ । तदुपरि स यव जलत्यागं कुर्यात् । ततः पश्चिम वृद्धया यव जलान्यादाय ।

पित्रादिभ्यः आसनदानम्—ॐ तत्सदद्य पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखा देवाः सांकल्पिकाभ्युदयिके इदमासनं सुखासनं स्वाहा । वृद्धि वृद्धि श्रियै । इत्यासनं २ वा ४ । तदुपरि [illegible]

माता महादिभ्यः आसनदानम्—ॐ तत्सदद्य मातामह प्रमातामह वृद्ध-

इदमासनं सुखासनं स्वाहा । वृद्धि वृद्धि श्रियै । इत्यासनं २ वा ४ तदुपरि सयव जलं त्यजेत् ।

देवानां पादप्रक्षालनम्—ॐ नान्दीमुखाः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः सांकल्पिकाभ्युदयिके इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः वृद्धिः । २ वा ४ ।

पित्रादि पाद प्रक्षालनम्—ॐ तत्सदद्य पितृ पितामह प्रपितामहा नान्दीमुखा देवाः सपत्नीका सांकल्पिकाभ्युदयिके इदं वः पाद्य पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः वृद्धिः २ वा ४ ।

मातामहादि पादप्रक्षालनम्—ॐ तत्सदद्य मातामह प्रमातामह वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखा देवाः ॐ भू र्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धि वृद्धि २ वा ४ ।

आसनो परिपूजा मन्त्रः—ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तः रक्षन्ति सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽस्वप्नजौ सत्र सदौच देवौ इति गंधादिकं समर्प्य ।

देवेभ्यो गंधादिदानम्—ॐ तत्सदद्य सपत्नीक पित्रादित्रय सपत्नीक मातामहादित्रय श्राद्ध संबन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः आसनार्चन विधौ इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूल धौतोपवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

पित्रादिभ्यो गंधादिदानम्—ॐ तत्सदद्य पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखा देवाः आसनार्चन विधौ इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूल धौतोपवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

मातामहादि गन्धादिदानम्—ॐ तत्सदद्य मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकानां नान्दी मुखा देवाः आसनार्चनविधाविप्राणि गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य ताम्बूल धौतपोवस्त्रकमण्डलूपपात्रासनादीनि यथां विभागं विभज्य वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

आसनोपरि पूजा—ॐ सप्तऽऋषयः । ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्धयतामुपमादो नमतु ॥ इति मन्त्राभ्यां आसनोपरिपूजां कृत्वा। आसनामुपरिष्ठादन्नं संस्थाप्य। अत्राभ्युदयिके पक्वान्नाभावे आममन्नं तदभावे हिरण्यं तदभावे ब्राह्मण भोजनं पर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतं द्रव्यमिति धर्म सिन्धुः।

देवानां परिवेषणम्—ॐ तत्सद्य सपत्नीक पित्रादि त्रय सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा आसनार्चनविधौ—इदमान्नं पक्वं वा सोपस्करं यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

पित्रादीनां परिवेषणम्— ॐ तत्सद्य पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखाः देवाः आसनार्चनविधाविदमामान्न पक्वं वा सोपस्करं यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धि : वृद्धिः श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

मातामहादीनां परिवेषणम्— ॐ तत्सद्य मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकानान्दी मुखा देवा आसनार्चन विधाविदमामान्नं पक्वं वा सोपस्करं यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धिः वृद्धिः श्रियै ॥ २ वा ४ ॥

देवानां दक्षिणासंकल्पः— ॐ तत्सद्य सपत्नीक पित्रादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः तथा सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध सम्बधिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः अमुककर्माङ्गत्वेन कृतस्याभ्युदयिकस्य कर्मणः फलप्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इयं दधिककंन्धु निष्क्रयिणी दक्षिणा यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै २ वा ४ ॥

पितृणो क्षिणासंकल्पः—ॐ तत्सद्य पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीका नान्दी मुखाः सपत्नीकानान्दी मुखादेवा तथा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः नान्दी मुखा देवाः अमुक कर्माङ्ग त्वेनकृतस्याभ्युदयिककर्मणः सादगुण्यार्थं इदं द्राक्षामलयवमूलनिष्क्रयिणी दक्षिणा यथा विभागं वो नमः स्वाहा वृद्धि वृद्धि श्रियै । ४ । ८ ॥

आत्मतिलकम्—सत्यानुष्ठान निरताः सर्वदा यज्ञ वुद्धय।
पितृमातृपराश्चैवमन्त्वस्मत्कुलजानराः ॥

विशेष पूजा—आयुः प्रजांधनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानिच।
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नणां प्रीतापितामहाः ॥

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्ति पुष्टि वलंश्रियम्।
पशु सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात्पितृपूजनात् ॥

अथाक्षय्योदकस्थाने दद्यात् क्षीर यवादिकम्। इतिस्मृतिवचनात्।

क्षीरं यवो कदानम्—नान्दी मुखाः सत्य वसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।
पितृपितामह प्रपितामहागोत्राः सपत्नीकाः नान्दी मुखाः प्रीयन्ताम्।

आशिषोग्रहणम्—गोत्रन्नो वर्द्धताम्। अभिवर्द्धतां वो गोत्रम्। दातारो नोभिवर्द्धताम् वर्द्धन्तां वोदातारः ॥ वेदाश्चनोभिर्द्धन्ताम्। अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः ॥ सन्ततिर्नोभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वः संततिः ॥ श्रद्धा च नो माव्यगमत्। माव्यगमद्धः श्रद्धा ॥ बहुदेयञ्च नो ऽस्तु। अस्तुवो बहुदेयम् ॥ अन्नञ्चबहुभवेत्। भवतुवोबह्वन्नम् ॥ अतिथींश्चलभामहै। लभतां वो ऽतिथयः ॥ याचितारश्चनः सन्तु। सन्तु वो याचितारः ॥ मा च याचिष्मकञ्चन। मायाचेथाः ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः ॥

देवगायत्री—ॐ देवताभ्यो देवताभ्यो देवताभ्यो नमोनमः ॥
नमः स्वाहाहै स्वाहायै स्वाहायै च नमो नमः। इति त्रिर्जपेत्।

देवविसर्जनम्—ॐ वाजे वाजे वतवाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृताऽऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबतामादयध्वं तृप्यता यातपथिभिदेवयानैः।

अनुव्रजनम्—ॐ आमावाजस्य प्रसवोयगम्यादेमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे।
आमागन्तां पितरोमातरश्चा मा सो मो ऽअमृतत्वेन गम्यात्।

पूर्णतावाक्यानि—इदमाभ्युदायिकं श्राद्धं विधिहीनं देशहीनं कालहीनं वाक्यहीनं श्रद्धाहीनं दक्षिणाहीनं च यत् कृतम्।
तत्सुकृत मस्तु यन्नकृतं तत् श्रीविष्णोः प्रसादाद् ब्राह्मणानाञ्च वचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥

विप्राः ॐ अस्तु परिपूर्णम्। त्रिर्ब्रूयुः।
ॐ तद्विष्णोः परमं पद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥
यस्य स्मृत्वा च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु। न्यूनंसम्पूर्णतां यातु सद्योवन्दे तमच्युतम्। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः।
ॐ गोविन्दाय नमः।

आचार्य ॰क्षिणा—ॐ तत्सदद्य० अमुककर्माङ्गतया कृतस्याभ्युदयिकश्राद्धस्य साङ्गफलाप्तये इदं हिरण्यं दक्षिणात्वेनामुकशर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे नमम ।

सूर्यार्घ्यदानम्—ॐ ह्रँ सः ।

क्षमाप्रार्थना—कामतो ऽकामतो वापि यत्करोमि शुभाशुभम् । तत्सर्वं त्वयि सन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम् ॥ इति जलम् ।

आसनवन्दनम् विशेष: - आसत्यलोकादापातालादालोकालोकपर्वतात् । ये सन्ति ब्राह्मणाः पुण्यास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ न च स्मरेद्‌ऋषिच्छन्दः श्राद्धे वैतानिके मखे । अतोनात्र ऋष्यदि स्मरणम् ॥

शुभमस्तुतराम् ॥

अथ ब्राह्मणवरणम्

ततो यजमानः अस्मिन् विष्णुयागकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुममुकगोत्रामुकशर्माणं ब्राह्मण मेभिर्गन्धाक्षत ताम्बूल सुवर्णपवित्रासनकमण्डलु धौतोत्तरीय वासोभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । एवं ब्रह्माणादीन् विप्रान् वृत्वा सम्पूज्य । ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोति० इत्यादिना विप्रदक्षिणकरेषु रक्षासूत्रबन्धनम् । (प्राक्कुण्डे ऋग्वेदिनावृत्विजौ याम्यकुण्डेयजुर्वेदिनौ । प्रत्यक्कुण्डे सामगौ । उत्तरकुण्डेऽथर्वाणौ) तत एवमेवाष्टौ चतुरो वा द्वारपालान् वृणुयात् ॥ तत एकैक वेदिकौ द्वौ द्वौ जापकावेकैकं वा पूर्वादिदिशिवृणुयात् । पंचकुण्डी पक्षेत्वष्टौ होतारः । अष्टौ जापकाः । अष्टौ द्वारपाला गुरुश्चैवंपञ्चविंशतिऋत्विजो भवन्ति । अत्राशक्त । अष्टौ होतारश्चत्वारो जापकाश्चत्वारो द्वारपाला गुरुश्चेति सप्तदश । अत्राप्यशक्तो चतुरोहोतॄंश्चतुरो द्वारपालांश्चतुरो जापकान्गुरुंचेति त्रयोदश । अत्राप्य सामर्थ्येह्यकाग्नि विधिना कर्मकर्तुमाचार्यं ब्रह्माणं च द्वौ । ततः आचार्यादीनां समस्त विप्राणां मधुपर्कविधिना पूजा प्रयोगो विधेयः । अर्थात् यज्ञे महाऋत्विजः ... भवति ततः यजमान कृताः ।

जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः ।
देवानां चपितृणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम् ।
रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञेव्यवस्थिताः ॥
ब्राह्मणाजंगमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
येषां वाक्योदकेनैवशुद्धयन्ति मलिनो जनाः ॥
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ।
सर्वकर्मरतानित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा ।
यद्वाक्यामृत संसिक्ताऋद्धिं यान्ति नर द्रुमाः ॥
अंगीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषाः ।
यथोक्तनियमैर्युक्तामंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥
यत्कृपा लोचनात्सर्वाऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ।
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ॥
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ।
अदुष्टभाषिणो नित्यं मा सन्तु परनिन्दकाः ॥
ममापि नियमाह्येते भवन्तु भवतामपि ॥

आचार्य प्रार्थना—मन्त्रमूर्तिभवन्नाथ संसारोच्छेदकारक ।
साङ्गं कर्मयथामेस्यात् तथा कुरु हि भूसुर ॥
संसारभय भीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः ।
प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति ॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ॥
सुप्रसादेन कर्तव्यं शान्तिकं विधि पूर्वकम् ॥

आचार्यो निम्नान् नियमान् विप्रेभ्यो यजमानेभ्यश्च श्रावयेत्—
क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
देवपूजाऽभिरतश्चैव सन्तोषः स्तेयवर्जनम् ॥
उपवीती बद्धशिखो धीरो मौनी दृढव्रतः ।

नैकवस्त्रोनान्तरालेन द्वीपेनार्द्रवाससा ।
नकुर्यात्कस्यचित्पाद्यां कण्डून्मीलनवर्जितः ।
अवैधं नाभ्यधः स्पर्शं कर्मकालेन कारयेत् ।
न पदापादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ ॥
न चासमाहितमना न च संश्रावयन् जपेत् ।
न च क्रमन्न च हसन्न पार्श्वानवलोकयन् ॥
जप काले न भाषेत नान्यानि प्रेक्षयेद्बुधः ।
न कम्पयेच्छिरो ग्रीवं दन्तानैव प्रकाशयेत् ॥
न द्रुतं नापि विश्रान्तं क्रमान्मंत्रं जपेत्सुधीः ।
क्रोधं मोहं क्षुतां निद्रां निष्ठीवनविजृम्भणे ।
दर्शनं च श्वनीचानां वर्ज्जयेज्जपकर्मणि ।
पादप्रसारणं नैव कांस्य पात्रे न भोजनम् ॥
श्रद्धोत्साहौ मनः स्थैर्यं त्रिकालं देवतार्चनम् ।
जपहोमादिषु नरमन्यं नाकारणात् स्पृशेत ॥
अनालस्यं सौमनस्य हिंसा शान्तिरेव च ।
मन्त्राधिष्ठातृदेवानां ध्यानं धारणमर्थतः ॥
पवित्रपाणिस्तिलकी ताम्बूलपरिवर्जनम् ।
असूयाद्वेषद्रोहेर्ष्या प्रहासपरिवर्जनम् ॥
मञ्चखट्वादिशयनं प्रातराहारवर्जनम् ।
परस्परमनिन्दां च न क्षौरं नातिभोजनम् ॥
निरर्थकं न संलापो नाङ्गानां चालनं मुधा ।
स्नानं त्रिषवणं चैव गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥
वैश्वदेवं तथातिथ्यमर्थकासनसंस्थितिः ।
प्रियावाणी प्रसन्नत्वं तत्तन्मंत्रार्थचिन्तनम् ॥
आचार्यकथने स्थेयान्न प्रतिग्रहमाचरेत् ।
हविष्याशीमिताहारी लोभदंभविवर्जितः ॥
अत्वरः सकलान मन्त्रान् जपे होमे प्रयोजेत् ।
दूरतः सन्तयजेत्सर्वं मादकद्रव्यसेवनम् ॥

न यज्ञमण्डपे हस्तपादप्रक्षालनं क्वचित् ।
नान्यं प्रतिनिधिं कुर्यान्न पर्युषितभुग्भवेत् ॥
वर्तमाने जपादौ च लघुशङ्कादिकं त्यजेत् ।
कृतेऽपि तत्क्षणं वस्त्रमन्यद्धृत्वासनं भजेत् ॥
मृगीमुद्रामुपाश्रित्य यथार्थं हुतमाचरेत् ।
न स्यूतवासा नोष्णीषी नापि पारक्य वस्त्रभृत् ॥
अभ्यङ्गोन्मर्दने नैव सदा साधुमना भवेत् ।
अकौटिल्यं च स्वाध्यायं तितिक्षामार्जन भवेत् ॥
आदिष्ट समये कुर्यात् गमनागमने बुधः ।
जृम्भादीनाभ्यधः स्पर्शेनिमित्ते ऽप उपस्पृशेत् ॥
यद्वा सर्वोपघातेषु संस्मरेद्विष्णुमव्ययम् ।
पालयेद्यज्ञभाग्विद्वान द्रढिम्नानियमानिमान् ॥
अज्ञानादथवा मोहात्प्रच्यवेताध्वरेषुयत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यदिति श्रुतिः ॥

अथवरुणश्राद्धम्

ततो वरुण श्राद्धार्थं नानानाम गोत्रान् अमुकशर्मणोविप्रान् विष्णुयागाङ्गीभूतवरुण श्राद्धे युष्मानहं वृणे । वृताः स्म इति प्रतिवचनम् ।

संकल्पः—अद्येत्यादि वृतानां ब्राह्मणानामासनाद्यर्चनमहं करिष्ये । वरुणश्राद्धे वरुणरूपेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इमानि आसनपाद्यार्घ्याचमनगन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्य यज्ञोपवीत वस्त्रालङ्कारादीनि ब्राह्मणेभ्यो नम इति दद्यात् । प्राजापत्यान्युपवीतानि बार्हस्पत्यानि वस्त्राणि अग्निदेवताकानि सुवर्णनिर्मित्तानि कुण्डलाद्यलङ्कारादीनिताम्बूलादीनि मधुपर्कपात्रादीनि वरुणरूपेभ्यः समस्त ब्राह्मणेभ्यः स्वाहा सम्पद्यताम् ॥

अथ जलयात्र'प्रयोगः

यजमानः सपत्नीकः सुप्रक्षालितपाणिपादः पुत्रपौत्रादिबान्धवयुक्तः सन् दधिमधुघृतदुग्धशर्करागन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्य पूंगीफलताम्बूलानां दक्षिणां ताहय पूजोपहाराः सुदृढ कनककुंभाः पञ्चरत्नानि

पञ्चपल्लवदूर्वा आर्द्रचूर्णक श्रीहि माषाश्चपक्वाः । ततः सुवासिनी-भिः जीवत्पुत्रीभिः पतिव्रताभिः मोहादि दोषरहिताभिः सर्वब्राह्मण-सुहृत्सहितः सन् ध्वजपताकालंकृतानि गजरथाश्वादीनि अन्यानि च नरयानानि चतुरस्रविमानानि शिविकादीनि शकटादीनि वा समारुह्य शंखभेरीमृदंगादि चतुर्विधवादित्र वादितदिङ्मण्डलो मागधचार-णादि प्रगीतवंशप्रशस्तिः सन् वाद्यादि वैदिकमन्त्रघोषेण च नदीतडागादौ गच्छेत् । तत्रस्थण्डिलत्रयकरणम् । एकं गणेशाम्बिकयोः स्थापनार्थं यजमानस्याग्रे । द्वितीयं तदग्रे तृतीयं द्वितीयादुत्तरत । वितस्तिमात्रांतरे प्रथम तृतीये हस्तमिते द्वितीयं द्विहस्तमात्रं कृत्वा अद्येत्यादि देशकालौ स्मृत्वा ।

संकल्पः— मम सपत्नीकस्य आयुरारोग्यैश्वर्यादि वृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थममुक विष्णुयाग कर्मांगत्वेन जलयात्रा कलशानां जलमातृकाणां वरुणस्य गणेशाम्बिकयो स्थापनप्रतिष्ठा पूचनाद्यर्चनमहं करिष्ये । इति संकल्प्य रक्तवस्त्रोपरि तण्डुलैः पद्मं कृत्वा तदुपरि नवकलशानां स्थापनम् । तत्राष्टदिक्षु अष्टौ कलशान् नवमकलशं प्रधानं मध्ये च स्थापयेत् । ततः आनोभद्रा० इत्यादि शान्ति सूक्तं (रात्रिवर्ग) पठेत् । स्थापित कलेशु वरुणं संपूज्य तीर्थान्यावाहयेत् ।

तीर्थावाहनम्—आगच्छन्तु महाभागाः समुद्राः सरितो ह्रदाः ।
प्रभासं पुष्करं चैव विशाला विरजागया ॥
कुरुक्षेत्रं प्रयागं भद्राकर्णं पृथूकम् ।
गंगा च यमुना चैव ब्रह्मपुत्रा सरस्वती ॥
गोदावरी पयोष्णी च नदी चर्मण्वतीतथा ।
शतद्रुः पुष्करश्चैव शोणश्चैवमहानदः ॥
तुंगभद्रा च सिंधुश्च पारावारस्तथैव च ।
क्षिप्रा वेत्रवती चैव पुण्यो जंबूनदस्तथा ॥
विपाशा कौशिकी चैवनदी दुःस्वप्ननाशिनी ।
स्वर्णरेखा महीचैव मध्यं रुद्रमहालयम् ॥
विष्णुपदं महातीर्थं गंगासागर संगमः ।
अर्घतीर्थं महापुण्यं कुशावर्तं तथैव च ॥
भृगुकुत्सं कर्दमालं शक्तिभेदोरि संगमः ।
एवमादीनि तीर्थानि यानि संति धरातले ॥
आयान्तु तानि सर्वाणि कलशेषु समंततः ।
आवाहयामि तीर्थानि पूजार्थं यागमण्डपे ॥

यजमानः—कलशान् स्पृष्ट्वा कुर्यात् ' ततः कलशोपरि शरावेषु तण्डु-लैर्नव अष्टदलानि कृत्वा तेषु जलमातृः स्थापेत् । तत्रादौ यजमानाग्रे स्थंडिलोपरि अष्टदलं कृत्वा तत्र गणेशाम्बिकेस्थापयेत् तद्यथा ।

गणेशावाहनम्—एहि भालघृतबालसुधांशो विघ्नवारण विदारण सिंह ।
एकदन्त विपदंतकरत्नं श्रीगणेशजगदीशनमस्ते ॥

ॐ गणानान्त्वेति आवाह्य संपूज्य ततः प्रार्थयेत् ।

गौरीमावाहनम्—ॐ प्रणम्य मातरं देवीं सुशांतां शुभलक्षणाम् ।
विष्णुयाग सिद्धयर्थमावाहयेदम्बिकामिह ।

जलमातृकास्थापनम्—पूर्वादिक्रमेणाष्टकुम्भोपरि जलमातृणांमावाहनम् ।

जलमातृकाणां नामानि पूर्वकुंभोपरि उर्णम—
ऊर्मिर्लक्ष्मीजलापाना वारुणी जलवासिनी ।
आयगा च क्रमेणैव सप्तैता जलमातरः ॥
महार्णवे समुद्भूतां कल्लोलांदोलवर्द्धिनीम् ।
मोहयन्ती जगत्सर्वमूर्मिमावाहयाम्यहम् ॥
आगच्छ वरदे देवि जलमातर्नमोऽस्तुते ।

आवाहनम्—ॐ वृष्ण ऊर्मिरसिराष्ट्रदा राष्ट्रं मे वेहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि । वृष सेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥

आग्नेयकुंभे—पद्मासनसमासीनां पद्महस्तां हरिप्रियाम् ।
अम्भोधितनयां देवीं लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥
आगच्छ वरदे देवि जलमातर्नमोस्तुते ।

लक्ष्मीमावाहनम्—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण ॥

दक्षिणकुंभोपरि—प्रलयान्ते महाघोरे एकोदधिकृतां महीम् ।
अंबुमूर्तिधरां देवीं जलमावाहयाम्यहम् ।
आगच्छवरदे देवि यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौभव ।

जलमावाहनम्—ॐ द्युभिरक्तुभिः परिपातमस्मानरिष्टेरश्विना सौभगेभिः ।
तन्नो मित्रो वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौ ॥

नैर्ऋतकुम्भे—चतुरशीति संख्याका जंतवो योनि संभवाः ।
मायाधाराः कृतास्तस्मात्पानामावाहयाम्यहम् ॥

पानमावाहनम्—ॐ अन्तरामित्रावरुणाचरन्ती मुखं यज्ञानामभिसंविदाने ।
उषासावा ँ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्ययोमाविहसादयामि ।

पश्चिमकुम्भे—वरुणस्य प्रियां देवीं पावनीं भुवनत्रये ।
सर्वाभरणशोभाढ्यां वारुणीमावाहयाम्यहम् ॥
आगच्छ वरदे देवि विशुद्धजलवासिनि ।

वरुणावाहनम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य-ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

वायव्यकुम्भे—जलजंतून्विना नैव यानि तीर्थानि सर्वतः ।
आवाहयामि तां देवीं विशुद्धां जलवासिनीम् ॥
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ।

जलवासिन्यावाहनम्—ॐ अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रन्दानायचोदयावाचं । विष्णु ँ सरस्वती ँ सवितारंञ्चवाजिन ँ स्वाहा ।

उत्तरकुंभे—रसातलंच पातालं यया व्याप्तंचराचरम् ।
जगदाधारभूतां चापगामावाहयाम्यहम् ॥
आगच्छवरदेवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ।

आपगामावाहनम्—ॐ अग्नऽइन्द्रवरुणमित्रदेवाः शर्धः प्रयन्तमारुतो त विष्णो उभाना सत्यारुद्रोऽधम्नाः सरस्वती जुषन्तः ।

ऐशानकुंभे—शुद्धोदधिसमुद्भूतां शुद्धवर्णजलप्रियाम् ।
शुद्धयर्थं जलकुम्भानां शुद्धमावाहम्यहम् ॥
आगच्छगवरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौभव ।

शुद्धामावाहनम्—ॐ होतायक्षद्वनस्पतिमभिह्विपिष्टतमयारभिष्टयारशनया-धित । यत्राश्विनोश्छागस्यहविषः प्रियाधामनि यत्र सरस्वत्या-मेषस्यहविषः प्रियाधामानि यत्रेन्द्रस्य ऽऋषभस्य हविषः प्रियाधामानि यत्राग्नेप्रियाधामानि यत्र सोमस्य प्रियाधामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्ण-प्रियाधामानि यत्र सवितुः प्रियाधाभानि यत्र वरुणस्य प्रियाधामानि यत्र वनस्पते प्रियापाथा ँ सि यत्र देवानामाज्यपानं प्रियाधामानि यत्राग्रेहोतुः प्रियाधामानि तत्रैतान् प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपावस्तक्षद्र-भीयसे इव कृत्वीकरदेवं देवोवनस्पतिर्जुषता ँ हविहोतर्यज ॥

मध्यकुम्भोपरि—आगच्छ जलदेवेशजलनाथ ह्यपांपते ।
तव पूजां करिष्यामि कुंभेऽस्मिन्सन्निधौभव ॥

वरुणावाहनम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य-ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमातीत् ।

जीवमातृणां नामानि कुंभस्योत्तरतः—
मत्सी कूर्मी जलौका च दुर्दरी जलगोधिका ।
मकरी तन्तुकी चैव सप्तैता जीवमातरः ॥

मध्ये—रसातलसमुत्पन्ने मत्स्यदेवि महार्णवे ।
मातंगि च प्रियेकृष्णे जीवमातर्नमो ऽस्तुते ॥

मत्स्यावाहनम्—ॐ समुद्राय शिशुमारानालभतेपर्जन्याय मण्डूकानद्भ्यो मत्स्यानमित्रायकुलीपगाम् वरुणायनाक्रान् ।

पूर्वपत्रे—ह्रदे कूर्म्मसमुत्पन्नां गंभीरां चैव कर्मणि ।
पाताल जल संस्थाने जीवमातर्नमो ऽस्तुते ॥

कूर्म्मीआवाहनम्—ॐ को ऽसिकतमोलिकस्यासिकोनामासि । यस्य तेनामा-मन्महियंत्वासोमेनातीतृपाम् ॥ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिस्या ँ सुवीरो-वीरैः सुपोषः पोषैः ।

आग्नेयकोणे—श्वेताभ्रेवैसमुत्पन्नां जन्तुके जीवचारिणीम् ।
उत्पत्तिः सर्वभूतानां जीवमातर्नमोऽस्तते ॥

जलौक्यावाहनम्—ॐ यस्यास्ते घोर आसन जुहोम्येषां बंधानामवसर्जना-ययान्त्वाजनो भूमिरिति प्रमंदते निऋ तित्वाहं परिवेदविश्वतः ।

दक्षिणपत्रे—कालाभ्रशिखराकारा विद्युतेजा च दुर्दरी ।
अर्द्धमाकाशसंस्थाने जीवमातर्नमो ऽस्तुते ॥

दुर्दरी आवाहनम्—ॐ द्वारोदेवीरन्वस्यविश्वेव्रतादद्न्ते अग्नेः । ऊरुव्यच-सोधाम्नापत्यमाना: ।

नैऋत्यपत्रे—गोधिके गोसमुत्पन्ने सस्रग्दाम विभुषिते ।
सर्वाधारधरे देवि जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

जलगोधिकाऽऽवाहनम्—ॐ गोमदूषुणा सत्या अश्वावद्यासमश्विनावर्तिरुद्रा-नृपाय्यम् ।

पश्चिमपत्रे—नमस्ते देव देवेशि मकरेमदमर्दिनि ।
आश्रये सर्वभूतानां जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

मकरी आवाहनम्—ॐ मापोमोषधोर्हि ँ सीः धाम्नो धाम्नो राजंस्ततो वरुणनोमुञ्च । यदाहुरघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुणनो मुञ्च ।

वायव्यपत्रे—अन्धकार समुत्पन्ने तंतुके निर्मिते शिवे ।
दीप्तिरूपे त्रिभुवने जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

तंतुकी आवाहनम्—ॐ याते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते वभूवतेधनुः । तयास्मान् विश्व-तस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ।

उत्तरपत्रे—सर्वाधार धरे देवि कर्करि जीवमातृके ।
आश्रये सर्वभूतानां जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

कर्करी आवाहनम्—ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः । पुनन्तु विश्व ँ हिरिप्रं प्रवहंति देवी रुदिदाभ्यः शुचिम्यः पूतएमि ।

ईशानपत्रे—नमस्ते देव देवेशि सर्पिणिमदमर्दिनि ।
सर्वाधारधरेदेवि जीवमातर्नमोऽस्तुते ॥

सर्पिणी आवाहनम्—ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे-येदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।

अथ स्थलमातृका स्थापनम्

मध्य कलशस्य दिक्षु विदिक्षु च स्थलमातृकास्थापनम् ॥

स्थलमातृकानामानि—उमा लक्ष्मीर्महामाया पानदेवी तथैव च ।
वारुणी निर्मला गोधा: [illegible]

पूर्वादि क्रमेण नाममंत्रैः स्थापनम्— ॐ उमामावाहयामि स्थापयामि । ॐ लक्ष्मीमावाहयामि० । ॐ महामायामावाहयामि० । ॐ पानदेवी-मावाहयामि० । ॐ वारुणीमावाहयामि० । ॐ निर्मलामावाहयामि० । ॐ गोधामावाहयामि० ।

प्रतिष्ठापनम् ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमंदधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ । स्थापित-देवता गणेशप्रमुखाः सर्वाः सकलशाः जलमातरः स्थलमातरश्चसुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

नाममंत्रेण पूजनम्—ॐ श्री गणेशायनमः । ॐ अम्बिकायै नमः । ॐ लक्ष्मै नमः । ॐ जलायैनमः । ॐ पानायै नमः । ॐ वारुण्यै नमः । ॐ जल-वासिन्यै नमः । ॐ आपगायै नमः । ॐ शुद्धायै नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ मध्यकलशेभ्यो नमः ।

अत्रादि पूजनम् - पूर्वकलशाय क्षीरोदधदिव्यभोगसमन्विताय इदमत्रादि-पूजनम् । दक्षिणकलशाय स्वादूदकायसर्व फलप्रदायइदमात्रादिपूजनम् । पश्चिमकलशाय क्षीरोदकाय दिव्यभोगसमन्विताय इदमत्रादि पूजनम् । उत्तरकलशाय दध्युदकाय सर्वसमृद्धियुक्ताय इदमत्रादि पूजनम् । मध्य-कलशाय षड्रसोदकाय सर्वज्ञानमयाय इदमत्रादि पूजनम् ।

स्थंडिले जीवमातृ पूजनम्—ॐ मत्स्यै नमः । ॐ कूर्म्यै नमः । ॐ जलौकिका-यै नमः । ॐ दुर्दर्य्यै नमः । ॐ जलगोधिताय नमः । ॐ मकर्य्यै नमः । ॐ तन्तुक्यै नमः । ॐ सर्पिण्यै नमः ।

स्थलमातृ पूजनम्—ॐ उमायै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ महामायायै नमः । ॐ पान देव्यै नमः । ॐ वारुण्यै नमः । ॐ निर्मलायै नमः । ॐ गोधा-यै नमः ।

मध्यकलशे वरुणस्य बिशेष पूजनम्

मंत्राक्षरन्यासः स्वशरीरे—ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ रुं वरुणाय जलाधिपतये कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ णां वरुणाय जलाधि-पतये मध्यमाभ्यां नमः । ॐ यं वरुणाय जलाधिपतये अनामिकाभ्यां नमः । ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ मं वरुणाय जलाधि-

पतये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवमेव हृदयादिन्यासं कुर्यात् एवं अंगन्यासं कृत्वा पूर्वबीजामानि सं पूज्य मध्ये वेदम्।

अंगन्यासः—ॐ शन्नो देवीराभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्र वन्तु नः वरुणस्य हृदयाय नमः। ॐ स्योनापृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः वरुणस्य शिरसे स्वाहा। ॐ आपोहिष्ठा-मयो भुवस्तान ऊर्ज्जेदधातन। ॐ महे रणाय च क्षसे। ॐ योवः शिवत-मोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिवमातरः। तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथाचनः वरुणस्य शिखायै वौषट् ॐ इमम्मे वरुणस्यश्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके। वरुणस्य नेत्रत्रया-यवौषट्। ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्। वरुणस्य अस्त्रायफट्।

कलशेजपः पूर्वाग्नेयकलशयोः ऋग्वेदिजपः—ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनि विशमानाः। इन्द्रो यः वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह् मामवन्तु। ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हव मद्या चमृडय। त्वामवस्युरा चके ॐ वरुणं वो० ॐ प्रमित्राय०।

दक्षिणानैऋति कलशयोर्यजुर्वेदिनः—ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा। सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा। शिमिदायत्वा वाताय स्वाहा। ॐ समुद्रादूर्मिम्मधुमां २ ऽउदारदुपा ँ शुना समभृतत्वमानट्। घृत-स्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्य नाभिः स्वाहा। ॐ उक्षा समुद्रो ऽअरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पत्यन्तौ। ॐ समुद्रंगच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव ँ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रेगच्छ स्वाहा छन्दा ँ गच्छ स्वाहा द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत-सतनमासीद। ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्। इति यजुर्वेदिजपः।

पश्चिमवायुकलशयोः साम—ॐ पवित्रं तेविततं०। ३ ॐ पयः साम ॐ गायत्री। इत्यादि सामवेदिनः पठेत्।

उत्तरेशानकलशयोः—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतय शय्योर-विस्रवन्तुनः। ॐ अथर्व शिखा इत्यादि अथर्व वेदिनः पठेत्।

प्रार्थना—यादः पृष्ठि समारूढ पाशहस्तमहाबल।
पाहि यज्ञमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तुते॥

वरुणोपवेशनपद्मपत्राणिपूजनम्—ॐ पूर्वपत्राय नमः। ॐ आग्नेयपत्रायनमः। ॐ दक्षिण पत्रायनमः। ॐ नैऋतपत्रायनमः। ॐ पश्चिमपत्रायनमः। ॐ वायव्य पत्रायनमः। ॐ उत्तरपत्रायनमः। ॐ ईशान पत्रायनमः। इति।

वरुणपूजा—आवाहयामि देवेशं वरुणं जल नायकम्।
यादः पृष्ठसमारूढं पाशहस्तं महाबलम्॥
आगच्छ जलदेवेश कुंभेऽस्मिन् सन्निधौभव।

वरुणावाहनम्—ॐ तत्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुश ँ समान ऽआयुः प्रमोषीः। ॐ वरुणस्यो-त्तम्नमसि० ॐ वरुणायनमः। इति श्वेतगन्धाक्षतपुष्प धूपदीप नैवेद्य ताम्बूल नानाफल दक्षिणाभिः संपूज्य नारिकेरेणार्ध्यं दद्यात्।

अर्घ्यम्—श्वेताभ्र शिखराकार सर्वभूतहिते रत।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनायनमोऽस्तुते॥

प्रार्थना—नदी सागरमाश्रित्य कलशेषु समाश्रित।
प्रसादं कुरु मे देवमदीये यागमण्डपे॥
अभ्यर्थितो मयाभक्त्या परिवार समन्वित।
सान्निध्यं भवदेवेशमदीये यागमण्डपे॥
गृहाण ब्रह्मणा सेव्य प्रसादं कुरु मे अपः।
संपूज्य बहुधा भक्त्या मन्त्रमेतमुदीरयेत्॥

वरुणमंत्राः पठनीयाः—ततो जलसमीपे गत्वा ॐ वरुणरूपि वैश्वानराय नमः। इत्यग्निं जलमध्ये गंगादिभिः सम्पूज्य प्राथ्य स्रुवेण जले आज्य-होमः कुर्यात्। ॐ आपो अस्मान्० ॐ आपो हिष्ठा० ॐ वरुणस्योत्तम्भन० ॐ इमम्मेवरुण० ॐ अग्नये० स्वाहा। ॐ सोमाय०• स्वारा। ॐ सवित्रे० स्वाहा। ॐ पूष्णे० स्वाहा। ॐ बृहस्पतये०। ॐ इन्द्राय०। ॐ पोषाय०। ॐ श्लोकाय०। ॐ अंशाय०। ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्म्यः स्वाहा। ॐ उदकाय०। ॐ तिष्ठं तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानायस्वाहा। ॐ कूप्याय०। ॐ सूद्याय०। ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय०। ॐ समुद्राय०। ॐ सरिद्भ्यः स्वाहा।

बलिदानम्—मुद्गमाषचणकभक्तकोद्रयवादि वलिद्रव्याणि पात्रे संस्थाप्य ॐ बलिद्रव्यायनमः। गंधादिभिः संपूज्य वक्ष्यमाणमन्त्रैर्मत्स्यादिभ्यः।

जलेवलिं क्षिपेत्—ॐ यस्यकूर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धयात्वम्।

तस्मैदेवाऽअधिब्रुवन्त्वयं च ब्रह्मणस्पतिः।
वलिगृह्णन्तु ते देवा येकेचिज्जलमाश्रिताः।
वुभुक्षितान्नहीनाश्च कृपणाजलवासिनः॥
दस्यवः सिंह शार्दूल ग्रन्ये ये जलमाश्रिताः।
भूतप्रेतपिशाचाश्चये केचिद्वरुणालयाः॥
तृप्तास्ते मे श्रियं दद्युर्विघ्नान्रक्षन्तु सर्वदा।
वलिं गृह्णं त्विमे देवा आदित्या वसवस्था॥
मरुतोऽथाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाग्रहाः।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचा मातरो नगाः॥
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।
शाकिन्यो यज्ञ वेतालायोगिन्या पूतनाशिवा॥
जृंभकाः सिद्धगन्धर्वा माला विद्याधरा नगाः।
जगतां शांतिकर्त्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः॥
मा विघ्नं मा च मे पापं संतु परनिंदकाः।
सोम्याभवन्तु तृप्ताश्च भूताः प्रेताः सुखावहाः॥

हस्तौ प्रक्षाल्य आचामेत्।

पठेत्—ॐ समुद्रंगच्छ०। ॐ समुद्रोसि०। ॐ समुद्राद्रूर्मि०। ॐ उक्षासमुद्र० ॐ पंचनद्य०।

प्रार्थना—प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्ववैरिनिषदन।

पवित्रं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।
ज्ञानतोऽज्ञानतोवापि यांवन्विधिरनुष्ठितः।
तत्सर्वंत्वत्प्रसादेन संपूर्णं भवतु प्रभो॥
त्वमापो योनिः सर्वेषां देवदानव रक्षसाम्।
स्वेदजोद्भिज्जजातीनां रसानां पतये नमः॥
प्रसादं कुरु देवेश आगच्छ यज्ञमण्डपे।
अर्घ्यार्चितोमयाभक्त्या परिवारैर्जलाधिप॥
सान्निध्यं कुरुदेवेश पवित्रे यज्ञमंडपे।

इन्द्रादिदशदिग्पालेभ्यः बलिदानम्—

ॐ इन्द्रादिदशदिग्पालेभ्यो नमः। इतिगन्धादिभिः पूजांकृत्वामाषभक्तवलीन् दद्यात्। पूर्वे इन्द्रायनमः, इन्द्रानुचरेभ्योनमः इमं वलिं समर्पयामि। आग्नेय्याम्। अग्नेनमः अग्न्यमुचरेभ्यो नमम: इमं वलिं समर्पयामि। दक्षिणे यमायनमः यमानुचरेभ्योनमः इमं वलिं समर्पयामि। नैऋत्याम्। ॐ नैऋतयेनमः निऋत्यनुचरेभ्यो नमः इमं वलिं समर्पयामि। पश्चिमे। ॐ वरुणायमः वरुणानुचरेभ्योनमः इमं वलिं समर्पयामि। वायव्याम्। ॐ वायवे नमः वायोरनुचरेभ्यो नमः इमं वलिं समर्पयामि। उत्तरे। ॐ कुवेरायनमः कुवेरानुचरेभ्यो नमः इम वलिं समर्पयामि। ऐशान्यांम्। ॐ ईशानायनमः ईशानचरेभ्यो नमः इमं वलिं समर्पयमि। ईशानपूर्वयोर्मध्ये। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणोनुचरेभ्यो नमः इमं वलिं सुमर्पयामि। निऋंति वरुणयोर्मध्ये। ॐ अनन्तायनमः। अनन्तानुचरेभ्योनमः इमं०।

बलिदानमंत्रम्—ॐ ये देना सोदिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्य। अप्सुक्षितोमहिनैकादशस्थते देवासो यज्ञमिमंजुषध्वम्। इति वलिं दद्यात्। ततः यस्यस्मृत्या इत्यादिकर्मपूर्तिकामोविष्णुं स्मृत्वा। आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा यथाशक्ति ब्राह्मणानभोजयेत्।

कलशाभिषेकम्—उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० तान् कलशान सुवासिन्यः सौभाग्य-

वत्योन येयु :। ततो मार्गे वारुणमंत्रान् शाकुन सूक्तं पवमान सूक्तं शांति-सूक्तं च पठन् चतुष्पथे क्षेत्रपालाय बलि दद्यात्। चत्वरे किंचिद्भूमि-मुपलिप्य दर्भानास्तीर्य पाषाणं तत्र संस्थाप्य ॐ क्षेत्रपालायनमः। इति षोडशोपचारै संपूज्य माषमुद्गभक्त सुगन्धितैल रक्तवस्त्रादियुतं बलि गृहीत्वा।

क्षेत्रपाल प्रार्थना—ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालय भासुर नेत्र ज्वाला मुख अवतर कपिलउर्ध्वकेशललज्जिह्वशत्रून्छिधिभिधि इति। बलि दत्वा प्रत्यागच्छेत्। हस्तोपादौ प्रक्षाल्य आचम्य आचाय ब्राह्मणैसह मण्डपे आगत्यसर्वान्कुम्भाना मुद्धृत्यतत्तीयं मणिके क्षिपेत।

॥ इति जलयात्रा समाप्ता ॥

अथ वर्द्धिनीकलशस्थापनम्

यजमानः—देशकालौ सङ्कीर्त्य हस्ते जलाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य सर्वविधकल्याणार्थं महाविष्णुयागाङ्गतया (महारुद्राङ्गतया) यज्ञप्रवेशकर्तुं वर्द्धिनीकलशदेवतानां पूजन स्थापनं च करिष्ये। इति संकल्प्य पीठोपरि अक्षतादिन अष्टदलं विधाय तत्र कलश स्थापनविधि पूर्वक वर्द्धिनी कलशं संस्थापयेत्। ततः हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा।

वर्द्धिन्यावाहनम्—ॐ वर्द्धिन्यैनमः। ॐ ब्रह्मणेनमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ विष्णवेनमः। ॐ मातृभ्योनमः। ॐ सागरेभ्योनमः। ॐ मह्यैनमः। ॐ गङ्गादिनदीभ्योनमः। ॐ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः। ॐ गायत्र्यैनमः। ॐ ऋग्वेदायनमः। ॐ यजुर्वेदायनमः। ॐ सामवेदायनमः। ॐ अथर्व-वेदायनमः। ॐ अग्नयेनमः। ॐ आदित्येयो नमः। ॐ एकादशरुद्रेभ्यो-नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ गन्धर्वायनमः। ॐ ऋषयेनमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवेनमः। ॐ धनदायनमः। ॐ यमाय नमः। ॐ धर्माय नमः ॐ शिवाय नमः। ॐ यज्ञाय नमः। ॐ विश्वेभ्यो-देवेभ्योनमः। ॐ स्कन्दायनमः। ॐ गणेशायनमः। ॐ यक्षायनमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वनो त्वरिष्टं। यज्ञ समिमंदधातु विश्वे देवास ऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ। इति सर्वोपचारैः संपूज्य।

प्रार्थना—वर्द्धिनि त्वं महाभागा सर्वतीर्थोदान्वितते।
अतस्त्वं प्रार्थये देवि भव त्वं कुलवर्धिनी ॥

इति वर्द्धिनी कलश स्थापनविधिः।

यजमानः—जलयात्रातः समानीतानां वर्द्धिनीत्याख्य नवकलशानां यज्ञमण्डपस्य मध्यवेद्याः पश्चिमेदिग्भागे वारुणमण्डल पार्श्वे समुपविश्य संकल्पं कुर्यात्।

संकल्पः—अहं महाविष्णुयागांगत्वेन वर्द्धिनीत्याख्य नवकलशानां वारुणमण्डला-धिष्ठातृ देवानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

ॐ दिक्षु विदिक्षु पूर्वादिक्रमेणाष्टसु आरासुप्रदक्षिणक्रमेण स्थितेभ्यः सूर्यादि नवग्रहेभ्यो: लोकपालेभ्यश्च नमः। ॐ वायुसोमान्तरालमारभ्य अन्त-रालासु यथा क्रमं अष्ट वसुभ्यो नमः। एकादशरुद्रेभ्यो नमः। द्वादशादि-त्येभ्यो नमः। अश्विभ्यां नमः। विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। पितृभ्यो नमः। यक्षेभ्यो नमः। भूतनाशेभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। सोमादि अष्ट-पत्रेषु स्कन्दादि नवदेवेभ्यो नमः। ॐ स्कंदायनमः। ॐ दक्षाय नमः। ॐ दुर्गायैमम:। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायैनमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्योनमः। ॐ वरुणाय नमः। उत्तरादितः क्रमेण केसरमूलेषु ब्रह्मादि अष्टदेवेभ्यो नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ अम्बिकायै नमः। ॐ सावित्र्यैनमः ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ भूतग्रामायनमः। ॐ भैरवे नमः।

तद्बाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादितः सोमादिसमीपे अष्टायुधदेवानामा-वाहनम। ॐ गदायैनमः। ॐ त्रिशूलायनमः। ॐ वज्रायनमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गायनमः। ॐ पाशायनमः। ॐ अंकुशायनमः। तद्बाह्येरक्तपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गौतमादि अष्टदेवे-भ्यो नमः।

आवाहनम्—ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपायनमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठायनमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः।

तद्वाह्ये कृष्णपरिधौपूर्वादित: क्रमेण ऐन्द्र्यादिभ्यो नमः।

आवाहनम्—ॐ ऐन्द्र्यै नमः । ॐ कौमार्यै नमः । ॐ ब्राह्म्यै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ चामुण्डायै नमः । वैष्णव्यै नमः । कौवेर्यै नमः । ॐ वैनायक्यै नमः ।

सूर्याद्यावाहितदेवतानां प्राणप्रतिष्ठापनं पूजनं च ।

ॐ मनोजूति० इतिप्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

प्रार्थना—ॐ वर्द्धिनित्वं महाभावो सर्वतीर्थोदकेनान्विते ।
त्वत्तोयेन प्रपूर्येऽहं भव त्वं कुलवर्द्धिनी ॥

वर्द्धिनी कलशेषु मत्स्यादिजलमातृणामणिमासिद्धिभ्यो नमः ॥

कलश प्रार्थनम्—कलशस्यमुखे विष्णु० इति प्रार्थनां कुर्यात् ।

हस्ते जलमादाय अनेन वर्द्धिनि कलशस्थापनकर्मणा महालक्ष्मीः प्रीयताम् इति वर्द्धिनी कलशस्थापनम् ।

अथ मण्डपप्रवेशम्

ततः मण्डपस्थलं संप्राप्य संभारान् गृहीत्वा सुवासिनीर्ब्राह्मणांश्च पुरस्तात् कृत्वा वाद्यघोषादि सहिताः सपरिकरः सम्पूर्ण कुम्भोयजमानः ।

यजमानस्य: मण्डपप्रदक्षिणा—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टु वा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः । प्रदक्षिणीकृत्य मंडपस्य पश्चिमद्वारमागत्य पाणिभ्यां चार्घ्य पात्रं आदाय शांतिपाठः पठेत् । ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमो-घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत ँ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः । ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये । वागोजः सहोजोमयि प्राणापानौ । ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः० इत्यादिकं सम्पूर्णशान्त्याध्यायानि पठेत् । द्वारदेशेऽर्घ्यंदद्यात् ।

ध्यानम्—ॐ पृथिवीं चतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठोऽपरि स्थिताम् पद्मशंखचक्र त्रिशूलकरां विहसितां सुप्रसन्नां गोरूपधरां सवत्सां वसुंधराम् ।

प्रार्थना—ॐ आगच्छदेवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणः ।
पृथ्वी त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिनन्दिता ॥
भूतधात्री रत्नगर्भा विपुला सागराम्बरा ।
अस्मिन्यज्ञे महादेवि विघ्नंविध्वंसयाम्बिके ॥

पुष्पाञ्जलि—ॐ यज्ञभूम्यै नमः । इति पूर्वोपचारैः सम्पूज्य ।

प्रार्थना—ॐ उद्धृतासि वराहेण विष्णुना शतबाहुना ।
दंष्ट्रा मेलीलया देवि यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम् ॥

शेष प्रार्थना—ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुनाशंकरेण च ।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कंदेन श्रवणेन च ॥
यमेन पूजिता देविधर्मं वृद्धिजिगीषया ।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्चधनं रूपं च पूजिता ॥
गृहाणार्घ्यं च मेदेवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥

इति यज्ञभूम्यै अष्टाङ्ग अर्घ्यंदत्वा साष्टांग प्रणिपत्य कूर्मं पूजयेत् । ॐ कूर्मासनायनमः इति रजतमयं कूर्मं संपूज्य । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनुः । ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सपभ्यो नमः । ॐ शेषासनाय नमः इति शेषं सम्पूज्य यज्ञमण्डपस्य पश्चिमद्वारेण प्राविशेत् । होमद्रव्यः प्रवेशः पूर्वद्वारेणादानद्रव्य प्रवेशो दक्षिण द्वारेण । दानार्थाग्निप्रतिष्ठार्थान्संभारानुत्तरद्वारेद्वारेण प्रवेशयेत् । तत आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपांल्लाजामिश्रितान्गृहीत्वादिग्रक्षणं कुर्यात् ।

दिग्क्षणमन्त्रः—ॐ रक्षोहणंवलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे निष्टचोयममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानोयमसमानो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्य्यम संबंधुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि । रक्षोहणौवोवलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्र क्षोहणो वो वलगहनो वनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनो वस्तृणामिर्वैष्णवान्रक्षोहणौवां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवीरक्षहणौ वां वलगहनौ पर्य्यूहामिवैष्णवी वैष्णवमसिवैष्णवास्त्य । रक्षसाम्भागोसिनिरस्त ँ रक्ष इदमह ँ रक्षोभितिष्ठामीदमह ँ रक्षोवबाध ऽइदमह ँ रक्षोधमन्तमो नयामि । घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां बायो-वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृते उऽर्ध्वनभसंमारुत-

ङ्गच्छतम् । रक्षोहाविश्वाचर्षणि रभियोनि मयोहते । द्रोणेसधस्थमासदत् ।

अपसर्पंतुतेभूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तुशिवायाज्ञया ।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे ।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थे तत्रगच्छतु ।
भूतप्रेतपि शाचा द्याअपक्रामन्तु राक्षसाः ।
स्थानादस्माद्व्रजंत्वन्यत्स्वीकरोमि भुव त्विमाम् ।
भूतानि राक्षसा वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तुशान्तिकं तु करोम्यहम् ।

एतैर्मन्त्रैरीशानादिसर्वदिक्षुश्वेतसर्षपान् विकीर्य देवाआयान्तुयातुधाना अपयान्तु, विष्णो देवयजनं रक्षस्व इति रक्षां कृत्वा पञ्चगव्येन कुर्लमण्डपभूमि यज्ञ संभारांश्च प्रोक्षयेत् । प्रायश्चित्तोक्त प्रकारेण पञ्चगव्यकरणम् । प्रणवेन पञ्चगव्यमालोड्य वारुण मंत्रै यज्ञभूमि प्रोक्षयेत् ।

यज्ञभूप्रोक्षणम्—ॐ हिरण्य वर्णाः शुचयः पावकाया सुजातः कश्यपोया-स्विन्द्रः । अग्नियागर्भंदधिरेविरूपास्तान आपः श ँ स्योना भवन्तु । या सां देवादि विकृण्वं तिभक्षं या अंतरिक्षे बहुधा भवन्ति । यः पृथिवी पयसोदंतिशुक्रास्तान आपः श ँ स्योनाभवंतु । शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तनुवोपस्पृशतत्वचं मे । सर्वा ँ अग्नि ँ रप्सुदोहुवेवो मयि वर्चो वलमोजोनिधत्त । ततः पावनसूक्तं जपेत् ।

यजमानः—हस्तप्रमाणं चतुरस्रं चतुरंगुलोच्चं स्थंडिलं कृत्वा ।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवींदृ ँ ह पृथिवीम्माहि ँ सीः । पृथ्वीकूर्मानंत-देवताभ्यो नमः इति मन्त्रै षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

पुष्पाञ्जलिः—स्वास्तिवाचनं कृत्वा ।

अथ वास्तु पूजनम्

मंडपैनैर्ऋत्य कोणे रचितं वास्तुमण्डलं तत्समीप उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ।

संकल्पः—ॐ अद्य विष्णुदेव प्रतिष्ठा कर्मणि वास्तुपूजा कर्माऽहं करिष्ये ।

चतुर्दिक्षुशंकुरोपणम्—वास्तुमण्डल चतुष्कोणेऽश्वोदुम्बरस्य वा लोहस्य शंकु-चतुष्टयमीशानादिप्रदक्षिणेनारोपयेत् ।

मन्त्रः—ॐ विशंतुभूतलेनागा लोकपालाश्च सर्वतः ।
मंडपे ऽत्रावतिष्ठंतु ह्यायुर्वलकराः सदा ॥

ततः शंकूनां पार्श्वे रोपणक्रमेण माषभक्तदध्योदनेनवलिदानम् ।

ईशानेवलिदानम्—ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्येतत्समाश्रिताः । वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णंतुसततोत्सुकाः ।

आग्नेय्याम्—ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः । वलि तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।

नैऋत्ये—ॐ नैऋत्याधिपतिश्चैव नैऋत्यां येचराक्षसाः । वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णंतुमं त्रितम् ।

वायव्याम्—ॐ वायव्याधिपतश्चैववायव्यां ये च राक्षसाः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमम् ।

सुवर्णशलाकया—ॐ लक्ष्मै नमः । ॐ यशोवत्यै नमः । ॐ कान्तायै नमः । ॐ सुप्रियायै नमः ।

रजतशलाकया—ॐ विमलायै नमः । ॐ श्रियै नमः । ॐ सुभगायै नमः । ॐ सुमत्यै नमः ।

पुष्पादीनांवानवरेखा—ॐ सुमत्यै नमः । ॐ इडायै नमः । पश्चादारम्यप्राक् पर्यंता: रेखाकार्याः । ॐ धान्यायै नमः । ॐ प्राणायै नमः । ॐ विशालायै नमः । ॐ स्थिरायै नमः । ॐ भद्रायै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ निशायैनमः । ॐ विरजायै नमः । ॐ विभवायै नमः । दक्षिणतः आरम्य उत्तरपर्यन्ताः नवरेखाकार्याः ।

शिखिमन्त्रः—ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं० । शिखिने नमः ।

पर्जन्यमंत्रः—ॐ शन्नोवातः पवता ँ शन्नस्तपतुसूर्य्यः । शन्नः कनिक्रदेवः पर्जन्योऽभिवर्षंतु । पर्जन्याय नमः ।

जयन्तः—ॐ मर्म्माणि वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वराजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु । ॐ जयन्ताय नमः ।

इन्द्रः—ॐ आयातिन्द्रोवस उपनं ऽइहस्तुतः सधमादस्तुशूरः । वावृधानस्त विषीर्यस्य पूर्वी द्यौर्नक्षत्रमभिभूति पुष्यात् । ॐ इन्द्राय नमः ।

सूर्यः—ॐ वण्महाँ२ ऽअसि सूर्यवडादित्यमहाँ२ । ऽअसि महस्ते सतो-महिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२ असि ॐ सूर्याय नमः ।

सत्याय—ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणाश्रद्धा-माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते । ॐ सत्याय नमः ।

भृशः—ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः । विशस्त्वासर्वा वांछन्तुमात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् । ॐ भृशाय नमः ।

आकाश—ॐ या बांकशामधुमत्यमश्विना सूनृतावती । तया यज्ञमिमिक्षितम् । उपयाम गृहीतो स्यश्विभ्यां त्वैषते योनिमाध्वीभ्यांत्वा । ॐ आकाशाय नमः ।

वायुः—ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये । ॐ वायवे नमः ।

पूष्णः—ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येमकदाचन । स्तोतारस्तऽइहस्मसि । ॐ पूष्णे नमः ।

वितथः—ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वन्तन्महि त्वंमद्ध्या कर्तो विततं ँ संजभार । यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै । ॐ वितथायनमः ।

गृहक्षतः—ॐ अक्षन्नमीमदंतह्यवप्रिया ऽअधूषत । अस्तोषस्वभानवोविप्रा-नविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी । ॐ गृहक्षतायनमः ।

यमः—ॐ यमायत्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहाधर्माय स्वाहाधर्मः पित्रे । यमायनमः ।

गन्धर्वः—ॐ गंधर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । मित्रावरुणौत्वोत्तरतः परिधत्तांध्रु-वेणधर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । ॐ गन्धर्वाय नमः ।

भृंगराजः—ॐ सौवीवलाकाशार्गः सृजंयः शयाण्डकस्तेमैत्राः सरस्वत्यैशारि, पुरुषवाक्श्चवाविद्धीमीशाईलोवृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक् । ॐ भृंगराजाय नमः ।

मृगः—मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावत आजगंथा परस्याः । सृकं ँ सं ँ शायपविमिग्मतिग्मं विशत्रूताढिविमृधोनुदस्व । ॐ मृगायनमः ।

पितृन्—ॐ उशंतस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशतऽ आवह पितृन्ह-विषेऽअत्तवे । पितृभ्यो नमः ।

दौवारिकः—ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थेअन्यान्यावत्समुधापयेते । हरिरन्यस्यां भवति स्वधावान्छुक्रोअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः । ॐ दौवारिकायनमः ।

सुग्रीवः—ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठादिव ँ रुद्राऽउपश्रिताः । तेषां ँ सहस्रयो-जनेवधन्वानितन्मसि । ॐ सुग्रीवाय नमः ।

पुष्पदंतः—ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्य-श्चवो । नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्य-श्चवो नमः । ॐ पुष्पं दताय नमः ।

वरुणः—ॐ इमम्मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके । ॐ वरुणायनमः ।

असुरः—ॐ यमश्विनानमुचेरासुरादधिसरस्वत्यसुनोदिद्रियाय । इमन्त ँ शुक्रं-मधुमंतमिंद ँ सोमं ँ राजानमिहभक्षयामि । ॐ असुरायनमः ।

शेषः—ॐ याऽइषवोयातुधानानां ये वा वनस्पतीं १ रनु । ये वा वटेषुशेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ शेषायनमः ।

पापः—ॐ एतत्ते रुद्रावसं तेन परोमूजवतोतीहि । अवततधन्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहि ँ सन्नः शिवोतीहि । ॐ पापाय नमः ।

रोगः—ॐ द्रापेऽअंधसस्पते दरिद्रनीललोहित । आसाम्प्रजानामेषां पशूनाम्माभे-रोङ्मोचनः किंचनाममत् । ॐ रोगाय नमः ।

अहिर्बुध्न्यः—ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः । हस्त-घ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ँ संपरिपातु विश्वतः । ॐ अहिर्बु-ध्नाय नमः ।

मुख्यः—ॐ भवतत्यधनुष्ट्व ँ सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखा शिवोनः सुमनाभव। ॐ मुख्यायनमः।

भल्लाटम्—ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमती:। यथाशमसद् द्विपदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्नातुरम्। ॐ भल्लाटाय नमः॥

सोमम्—ॐ सोम ँ राजानमवसेग्निमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णु ँ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पति ँ स्वाहा। ॐ सोमाय नमः।

सर्पम्—ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममेरजा ँ सि। योऽअस्कभायदुत्तर ँ सधस्थंविचक्रमाणस्त्रेधोरुगायोविष्णवे त्वा। ॐ सर्पाय नमः।

अदितिः—ॐ हिरण्यरूपमुषसोव्युष्ठावयः स्थूणमुदिता सूर्यस्य। आरोहथो वरुणमित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिञ्च। ॐ अदितयेनमः।

दितिः—त्वमग्ने वीर वद्यशसो देवश्च सविताभगः। दितिश्चाति वार्यम्। ॐ दितये नमः।

अपः—ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणायचक्षसे। ॐ अद्भ्यो नमः।

अपांवत्सः—ॐ आतेवत्सोमनोजमत्परमाचित्सधस्त्यात्। अग्नेत्वांकामयागिरा। ॐ आपवत्सायनमः।

अर्यमा—ॐ यदद्यसूरऽउदितेनागा मित्रोऽअर्यमा। सुवाति सविताभगः। ॐ अर्यम्णे नमः।

सावित्रः—ॐ हस्तऽआधाय सविता विभ्रदभ्रि ँ हिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्योतिनिचाय पृथिव्याऽअद्ध्याभरदानुष्टुभेनच्छं दसाङ्गिरस्वत्। ॐ सावित्राय नमः।

सविता—ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। ॐ सवित्रे नमः।

विवस्वान्—ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन्नमत्स्व। श्रदस्मैनरो वचसेदधातनयदाशीर्दादंपतीवाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायतेविंदतेवस्वधा विश्वाहारएपधते गृहे। ॐ विवस्वते नमः।

विबुधाधिपः—ॐ सबोधिसूरिर्म्मघवावसुपते वसुदावन्। युयोद्ध्यस्मद्द्वेषा ँसिविश्वकर्मणे स्वाहा॥ ॐ विबुधाधिपाय नमः।

जयंतः—ॐ अषाढंयुत्सुपृतना सुपप्रि ँ स्वर्षामप्स्वांवृजतस्य गोपाम्। भरेषुजा ँ सुक्षिति ँ सुश्रुव संजयं तं त्वामनुमदेमसोम। ॐ जयन्तायनमः।

मित्रः—मित्रोन ऽ एहि सुमित्रधइंद्रस्योरुमाविशदक्षिणमुशन्नुशतं ँ स्योनः स्यानम्। स्वानभ्राजांघारेबंभारेहस्तकृशानवेतेवः सोमक्रयणास्तन्रक्षद्ध्वंमावोदभन। ॐ मित्राय नमः।

राजयक्ष्म—ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽउपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसिनाशनी। ॐ राजयक्ष्मणेनमः।

रुद्रः—ॐ अवरुद्रमदीमह्यवदेवंत्र्यम्बकम्। यथानोवस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानो व्यवसाययात्। ॐ रुद्रायनमः।

पृथ्वीधरः—ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः। ॐ पृथिवीधरायनमः।

ब्रह्मा—ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरचोवेनआवः। सबुध्न्या ऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विवः। ॐ ब्रह्मणेनमः।

ईशानेचरकी—ॐ यन्तेदेवी निर्ऋ तिरानबंधपाशंग्रीवास्व विचृत्यम्। तन्ते विष्याम्यायुषोनमध्यादथैतम्पितुमद्धिप्रसूतः। नभोभूत्यैयेदं चकार। ॐ चरक्यैनमः।

विदारी अग्निकोणे—ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वपरायाधिकल्पिनमास्कंदाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमंतकाय गोघातंक्षुधेयोगां विकृतं तं भिक्षमाणा ऽउपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्। ॐ विदार्यै नमः।

पूतना नैर्ऋतिकोणे—ॐ इन्द्रस्यक्रोडो दित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवो दित्यैभसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीततानभ ऽउदर्येण चक्रवाकौमस्ताभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभरुपलान्प्लीह्नावल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवंती ह्रदान्कुक्षिभ्या ँ समुद्रमुदरेणवैश्वानरभस्मना। ॐ पूतनायै नमः।

पापराक्षसी वायु कोणे—ॐ यस्यास्ते घोर ऽआसं जुहोम्येषाम्बंधानामवसर्जनाय। यांत्वा जना भूमिरितिप्रमंदते निर्ऋतिंत्वाहं परिवेदविश्वतः।

ॐ पाप राक्षस्यै नमः ।

स्कंदः पूर्वस्याम्—ॐ यत्रबाणाः संपतंति कुमारा विशिखा ऽइव । तन्न इन्द्रो-बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहाशर्मयच्छतु । ॐ स्कन्दाय नमः ।

अर्यमा दक्षिणस्याम्—ॐ यद्वसु ऽउदितेनागामित्रो ऽअर्यमा । सुवाति स-वितामगः । ॐ अर्यम्णे नमः ।

जृंभकः पश्चिमे—ॐ हिंकारायस्वाहा हिंकृतायस्वाहा क्रंदते स्वाहा क्रंदायस्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथायस्वाहा । गंधाय स्वाहा घ्राताय स्वाहानिविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गतेस्वाहा सीनायस्वाहा शयानाय-स्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजतेस्वाहा प्रबद्धायस्वाहा विजृम्भ-मानायस्वाहा विचृतायस्वाहा स ँ हानायस्वाहोपस्थितायस्वाहायनायस्वाहा प्रायणायस्वाहा । ॐ जृंभकायनमः ।

पिलिपिच्छउत्तरे—ॐ कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः कि ँ स्विदासीद्बृहद्वयः । कास्विदासीत्पिलिपिलाकास्विदासीत्पिशंगिला । ॐ पिलिपिच्छायनमः ।

इन्द्रः पूर्वे—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ इन्द्रायनमः ।

अग्निः आग्नेयाम्— ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवया सिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ सिप्रमुमुग्ध्य-स्मत् । ॐ अग्नयेनमः ।

यमः याम्ये—ॐ यमा यत्वा मङ्खायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे । देवस्त्वा सविता-मध्वानक्तु पृथिव्याः स ँ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि । ॐ यमायनमः ।

निऋतिः नैऋत्याम्—ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि-तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु । ॐ नैऋतयेनमः ।

वरुणः पश्चिमे—ॐ वरुणस्योत्तंभनमसिवरुणस्यस्कंभसर्जनी स्थोवरुणस्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदनमासीत । ॐ वरुणायनमः ।

यज्ञम् । वायो ऽअस्मिनृत्सवनेमादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः । ॐ वायवेनमः ।

कुबेरः उत्तरे— ॐ वय ँ सोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ कुबेरायनमः ।

ईशानः ईशान्याम्—ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो यथावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ॐ ईशानायनमः ।

ब्रह्मा ईशान पूर्वयोर्मध्ये—ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासोवृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः श ँ सतेस्तुवतेधायिपज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ२ अवन्तु देवाः । ॐ ब्रह्मणेनमः ।

अनन्तः (निऋति वरुणयोर्मध्ये)—ॐ स्योना पृथिवि नोभवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथा । ॐ अनन्तायनमः । इत्यावाह्य ॐ वास्तुपीठ देवताभ्योनमः ।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वारिष्टं यज्ञ ँ समिमंदधातु । विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ।

पूर्वोक्त कलशस्थापनविधिना ताम्रकलशं संस्थापयेत् तदुपरि-कूर्मकलरूपां सर्पमयीं वा वास्तु प्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधायपट्ट वस्त्रार्धेराच्छाद्य ततस्तं सकलदेवताधिष्ठितावयवमुत्तानमीशानकोण स्थित-शिरसं नैऋत्यकोणस्थितपादं यथाकारं वास्तुपुरुषं ध्यायेत् ।

संकल्पः—ॐ देशकालौ संकीर्त्यास्यांमूर्तौविघातादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं देवता सान्निध्यार्थं च प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये । मूर्ति पात्रे निधाय घृते-नाम्यज्यातदुपरिदुग्धधारां जलधारां च पातयेत् अग्न्युत्तारण सूक्तं वारद्वय पठेत् ।

अग्न्युत्तारणसूक्तम्—ॐ समुद्रस्यत्वावकयाग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽ-अस्मभ्य ँ शिवो भव । ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव । ॐ अपामिदं न्ययन ँ समुद्रस्य निवेशनं । अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ँ शिवोभव ।

हेतयः पावको ऽस्मभ्य ँ शिवोभव । ॐ प्राणदाऽपानदा व्यानदा वर्चोदावरिवोदाः । अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तुहेतयः पावको ऽस्मभ्य ँ शिवोभव ।

ध्यानम्—ॐ आसीत्पूर्वं महादैत्यो वास्तुर्यज्ञापकारकः । सदेवैर्बहुकालेन युद्धे हत्वा महीतले । निपात्यवहुभिर्देवैर्निबद्धश्चस्रुचस्रुकः । ईशानेमस्तको-न्यस्तोनैऋत्ये पादसंपुटम् । जानुनी कूर्परौ कृत्य बाहुयुग्मं तथैव च । वायव्याग्न्यो स्ततो जानुं हृदये चांजलिस्तथा । पदीकृत्य च तस्योर्ध्वं स्वयमुक्ताः सुराः स्थिताः ।

वास्तुनामावलि—ॐ शिखिनेनमः । ॐ पर्जन्यायनमः । ॐ जयन्तायनमः । ॐ कुलिशायुधायनमः । ॐ सूर्यायनमः । ॐ सत्यायनमः । ॐ भृशायनमः । ॐ आकाशायनमः । ॐ वायवेनमः । ॐ पूष्णेनमः । ॐ वितथायनमः । ॐ गृहक्षतायनमः । ॐ गन्धर्वायनमः । ॐ भृंगराजायनमः । ॐ मृगाय नमः । ॐ पितृभ्योनमः । ॐ दौवारिकायनमः । ॐ सुग्रीवायनमः । ॐ पुष्पदन्तायनमः । ॐ वरुणायनमः । ॐ असुरायनमः । ॐ शोषायनमः । ॐ पापायनमः । ॐ रोगायनमः । ॐ अहयेनमः । ॐ मुख्यायनमः । ॐ भल्लाटायनमः । ॐ सोमायनमः । ॐ सर्पेभ्योनमः । ॐ अदित्यैनमः । ॐ अद्भ्यः नमः । ॐ सवित्रायनमः । ॐ जयायनमः । ॐ रुद्रायनमः । ॐ अर्यम्णेनमः । ॐ सवित्रेनमः । ॐ विवस्वते नमः । ॐ विबुधाधिपाय नमः । ॐ मित्रायनमः । ॐ राजयक्ष्मणे नमः । ॐ पृथ्वीधरायनमः । ॐ आपवत्सानमः । ॐ ब्रह्मणेनमः । ॐ वास्तो-ष्पतयेनमः । ॐ चरक्यैनमः । ॐ विदार्यैनमः । ॐ पूतनायैनमः । ॐ पापराक्षस्यैनमः । ॐ अर्यम्णेनमः । ॐ स्कंदायनमः । ॐ जृंभकाय नमः । ॐ पिलिपिच्छायनमः । ॐ इन्द्रायनमः । ॐ अग्नयेनमः । ॐ यमायनमः । ॐ निर्ऋतयेनमः । ॐ वरुणायनमः । ॐ वायवेनमः । ॐ सोमायनमः । ॐ ईशानायनमः । ॐ ब्रह्मणेनमः । ॐ अनन्तायनमः ।

अथ मूर्तिप्राणप्रतिष्ठा

संकल्पः—देशकालो संकीर्त्य अस्याः श्री वास्तु प्रतिमाया घटनादि दोप-परिहारार्थम् अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । मूर्ति घृतेनाभ्यक्तां दुग्धमिश्रितजलधारया सन्तर्पयेत् ।

अग्न्युत्तारणमन्त्रः—ॐ प्राणदा ऽपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः । अन्यांस्ते ऽस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽस्मभ्य ँ शिवोभवा ।

प्राणप्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहम् अस्याः वास्तु प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ।

जीव प्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सो ऽहं अस्या वास्तु प्रतिमायाः जीव इह स्थितः ।

इन्द्रिय प्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्या वास्तु प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणपाणि पादपायूपस्थानि इहैवागत्य चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

नेत्रोन्मीलनम्—ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽअसिचक्षु र्मेदेहि । गन्धादि पञ्चोपचारान् दत्वा संस्कारसिद्धयर्थं षोडश प्रणवावृत्ति कुर्यात् । अनेनास्या वास्तु प्रतिमाया गर्भाधानादि संस्कारान्सम्पादयामि ।

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाःक्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन । ततो वास्तुदेवेभ्यो नाममन्त्रैः बलिदानं दत्वा त्रिसूत्र्या मण्डपं समावेष्टय ॐ कृणुष्व: इत्यादि जलदुग्धधारां दद्यात् ।

अथ मण्डपपूजनम्

संकल्पः—ॐ अद्येतत्सदद्य विष्णु प्रीतिकामः (रुद्रयागे सदाशिव प्रीतिकामः) मण्डप स्तम्भ द्वार तोरणायुध विष्णोः शखचक्रगदापद्म (शिवस्य चतुस्त्रिशूल) दिक्पालध्वजपताका वेदिकास्तंभाणां स्थापनपूर्वकं पूजनमहं करिष्ये ।

स्तम्भखननम्—ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः ।

जलेनसिंचनम—ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च । सुरायै वभ्र्वै मदेकिन्त्वो वदति किन्त्वः ।

दधिषेचनम्—ॐ दधिक्राव्णो ऽकारिषं०

यव प्रक्षेपः—ॐ धानावन्त करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्र प्रातर्जुषस्वनः ।

हिरण्यम्—ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पतिरेक ऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

स्तम्भारोपणम्—ॐ उर्ध्वं ऽऊषुणऽऊतये तिष्ठादेवो न सविता । उर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे । नागमात्रे नमः । सर्पेभ्योनमः ।

स्तम्भे सूत्रबंधनम्—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं०

शाखाबंधनम्—ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ।

स्तम्भाभिमंत्रणम्—ॐ यतो यतः समीहसे ततोनो ऽअभयं कुरुशन्नःकुरु प्रजाभ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः ।

कलशपूजनम्—कलश स्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य पूजयेत् । एवमेव सर्वेषां षोडशस्तम्भानां स्थापनं कुर्यात् । मण्डपान्तर्गत ऐशानीतः आरभ्य मध्यस्थांश्चतुः स्तभान पूजयेत् ।

१ **सुभद्रस्तंभायनमः**—ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ब्रह्मणेनमः । स्थूणायां ॐ वसुदायैनमः ॐ वास्तुदेवतायै नमः । ॐ ब्राह्मनमः, गंगायै नमः । ॐ उर्ध्वं ऊषुण० नागमात्रे नमः आयङ्गौ० यतो यतः० ।

यह विधि मन्त्र सहित १६ स्तम्भों में ही प्रयुक्त करें ।

इतित्रयोऽपिविधयः सर्वस्तम्भेषु विधेयाः ।

२ **विजयस्तंभाय**—ॐ इदं विष्णु० विष्णवेनमः । स्थू० ॐ भद्रायै नमः । ॐ लक्ष्म्यनमः । ॐ नन्दायैनमः । ॐ वैष्णव्येनमः ।

३ **केदारस्तंभाय**—ॐ नमस्ते रुद्र० सदाशिवायनमः । स्थू० ॐ आदित्यैनमः । ॐ गौर्य्यैनमः । ॐ माहेश्वर्यै नमः । ॐ शोभनायै नमः ।

४ **श्रीमतेस्तम्भाय**—ॐ इन्द्र आसान्नेता० इन्द्रायनमः । स्थू० नंदायैनमः । इन्द्राण्यै० । ॐ आनन्दायै०, विभूत्यै० ।

मण्डपाद्बाह्ये वेदिकायां ईशानादि क्रमेणद्वादशस्तंभानां पूजनं कार्यम् ।

१ **महायशः स्तंभाय**—ॐ आकृष्णेनरजसा० द्वारशादित्येभ्योनमः । स्थ० भूत्यै० । सौर्यै० मूर्त्यैमंगलायै नमः ।

२ **मंगलस्तंभाय**—ॐ गणानान्त्वा० ओंगणपतये नमः । सरस्वत्यैनम :, विघ्नहारिण्यै०, जयायै० गणेश्वर्यै ।

३ **गुणस्तंभाय**—ॐ असि यमो ऽस्या० ॐ धर्मराजायनमः । स्थू० ॐ पूर्वसंध्यायै, अंजन्यै, क्रूरायै, नियन्त्र्यै ।

४ **जयस्तंभाय**—ॐ नमोऽस्तु० ॐ शेषायनमः, स्थू० मध्यम संध्यायै० धरायै, पद्मायै महापद्मायै नमः ।

५ **धनदस्तंभाय**—ॐ यदक्रंदः० ॐ स्कन्दायनमः । स्थू० पश्चिम संध्यायै, वल्लर्यै देवसेनायै० । ॐ महाशक्तये नमः ।

६ **कल्याणस्तंभाय**—ॐ आनो नियुद्भिः० ॐ वायवेनमः । स्थू० गायत्र्यै, वायव्यै, प्राणेश्वर्यै, सुषुम्णायै० ।

७ **शुभस्तंभाय**—ॐ इम देवा असपत्न० ॐ सोमायनमः । स्थू० सावित्र्यै, अमृतकलायै, विजयायै, इडायै ।

८ **शांतस्तंभाय**—ॐ तत्वायामि० ॐ वरुणायनमः । स्थू० वृहत्यै, वारुण्यै ॐ पाशधारिण्यै, प्राण शक्तयै० ।

९ **मनोरमस्तंभाय**—ॐ वसोः पवित्रमसि० ॐ अष्ट वसुभ्यो नमः , स्थू० ॐ आदित्यै, मूर्त्यै, अणिमायै, ॐ गरिमायै नमः ।

१० **ऋद्धिदस्तंभाय**—ॐ वय ँ सोमव्रते० ॐ धनदायनमः । स्थू० विनतायै नमः आदित्यायै, लघिमायै, महिमायै ।

११ **सिद्धिदस्तंभाय**—ॐ वृहस्पते० गुरवे नमः । स्थू० ॐ पौर्णमास्यै, अन्तः स्फूर्त्यै, अन्तर्दृष्ट्यै, ज्ञानशक्त्यै ।

१२ **विचित्रस्तंभाय**—ॐ विश्वकर्मण हविषा० ॐ विश्व कर्मणे नमः । स्थू० सिनीवाल्यै, वास्तुदेवतायै, विश्वकर्त्र्यै विज्ञान शक्तयै । अथ पूर्वादि चतुर्दिक्षु तोरणपूजनम् ।

१ **पूर्वे**—ॐ मंगलनाम पूर्व द्वाराय नमः । ॐ अग्निमीले० इति सुदृढाख्याश्वत्थ तोरणाय नमः । तस्य मस्तके पांचजन्य शंखाय नमः (रुद्रयागे मंगलाख्य वैष्णव त्रिशूलाय नमः) । दक्षिण ॐ राहवे नमः । वामे ॐ वृहस्पतये नमः । तत्रकलशं संस्थाप्य तत्र ॐ ध्रुवाय नमः ।

२ **दक्षिणे**—ॐ धर्मिष्ठनामकद्वाराय नमः । ॐ इषेत्वा० सुभद्राख्योदुम्बर तोरणाय नमः तस्य मस्तके सुदर्शन चक्राय नमः । (रुद्रयागे शत्रुघ्नाख्य

रौद्रत्रिशूलायनमः) दक्षिणे सूर्यायनमः वामे अंगारकायनमः। कलशं संस्थाप्य तत्र धरायै नमः।

३ पश्चिमे—ॐ विजयद्वाराय नमः। ॐ अग्नऽआयाहिवीतये० ॐ सुभीमाख्य (सुशर्माख्य) प्लक्षतोरणाय नमः। तस्य मस्तके कौमोदकीगदायै नमः। (रुद्रयागे पुत्रप्रदाख्य ब्राह्मत्रिशूलाय नमः।) दक्षिणे-शुक्राय नमः। वामे बुधायनमः। स्थापितकलशे बाक्पतये नमः।

४ उत्तरे—ॐ कल्याणद्वारायनमः। ॐ शन्नोदेवी०। ॐ सुप्रभाख्य (सुहोत्राख्य) वट तोरणाय नमः। तस्य मस्तके ॐ पद्मायुधाय नमः (रुद्रयागे उत्तमाख्य सौम्यत्रिशूलायनमः) दक्षिणे ॐ सोमाय नमः। वामे ॐ केतुशनिभ्यां नमः। स्थापितकलशे विघ्नवारणाय नमः। इतिपञ्चोपचार पूजनम्।

अथ दिक्पालद्वारपूजा

पूर्वस्यां सुमंगलद्वारे—ॐ त्रातारमिन्द्र० इति इन्द्रमावाह्य। द्वारशाखयोः प्रशान्तशिशिरनामानौ कलशौ संस्थाप्य ॐ ध्रुवायनमः, ॐ अध्वरायनमः। ॐ ऐरावतदिग्गजायनमः। उत्तरांगे गणेशायनमः। वामदक्षिणस्तंभयोः भूर्लोकाय नमः। भुवर्लोकायनमः। कलश द्वये ॐ गंगायैनमः, ॐ यमुनायै नमः। ॐ आदित्यायनमः। ॐ सोमायनमः। दक्षिणवाम शाखयोः धात्रेनमः, विधात्रे नवः। ऊर्ध्वम् उर्ध्वश्रियैनमः। अधः देहल्यैनमः। मध्ये-वास्तुपुरुषायनमः। द्वारस्तम्भयोः गणेशायनमः, स्कंदायनमः। ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा। ॐ अग्निमीले० संपूज्य। द्वारकलशयोः इन्द्राय सामगायत विप्राय बृहते बृहत्। धर्म कृते बिपश्चिते पनस्यवे। इन्द्रं संपूज्य ॐ इन्द्रायाहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः। इति पीतपताका ध्वजौ च समालभ्य। यो मे दण्डः परापत द्वैहायसोऽधिभूम्यान्तमहं पुनरादहे। आयुषे ब्रह्मणेवर्चसाय। इति ध्वजदण्डोच्छ्रयणम्। ततः ध्वजे कुमुदायनमः। पताकायां-हेतुकायनमः। ततः इन्द्राय वलिदानम्। ❀ अग्निकोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य। ॐ पुण्डरीकायनमः। कलशेअग्नये नमः इति अग्निं संपूज्य। ॐ अग्निस्तिग्मेनशोचिषाया सद्विश्वन्यत्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम्। इति रक्तपताकाध्वजौ समुच्छ्राय्य। सांगाय अग्नय वलिदानम् दद्यात्।

दक्षिणस्यां सुधर्म्मिष्ठद्वारे—ॐ असियमो० यममावाह्य। द्वारशाखयोः पर्जन्याशोकनामानौकलशौसंस्थाप्य ॐ सोमायनमः ॐ अद्भ्योनमः। ॐ वामनदिग्गजाय नमः। उत्तरांगे गणेशायनमः। वामदक्षिण स्तंभयोः स्वर्लोकायनमः। महर्लोकायनमः। कलशद्वये ॐ गोदावर्यैनमः। ॐ कृष्णायैनमः। ॐ भौमायनमः। ॐ बुधायनमः। दक्षिणवामशाखयोः ॐ धात्रेनमः, ॐ विधात्रे नमः। ऊर्ध्वम् ऊर्ध्वश्रियैनमः। अधो देहल्यैनमः। देहलीमध्वे वास्तु पुरुषायनमः। द्वारस्तम्भयोः पुष्पदंताय नमः, कपर्दिनेनमः, यजर्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा० इति संपूज्य। द्वारकलशयोः ॐ यमायत्वा० इति यमं संपूज्य कृष्णपताकाध्वजौ समुच्छ्रयेत्। सांगाययमाय बलिदानम्। ❀ नैर्ऋत्य कोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य ॐ कुमुदायनमः ॐ दुर्जयायनमः। कलशे नैर्ऋतये नमः। ॐ मोषुणइन्द्रात्रपृत्सुदेवौ रस्तिहिणते शुष्मिन्नवयाः। महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्याहविष्मतो मरुतो वन्दतेगीः। इति धूम्रपताकाध्वजौ समुच्छाय समालभ्य च निर्ऋतये वलिदानम्।

पश्चिमस्यांजयद्वारे—ॐ इमम्मे० इति वरुणमावाह्य। द्वारशाखयोः संजीवनामृतनामानौ कलशौसंस्थाप्य ॐ अनिलायनमः, ॐ अनलायनमः, ॐ अंजनाख्यदिग्गजायनमः। उत्तराङ्गे गणेशायनमः। वामदक्षिणस्तम्भयोः ॐ जनलोकायनमः। तपोलोकायनमः। कलशद्वये ॐ रेवायैनमः, ॐ तार्प्यै नमः, ॐ वृहस्पतये नमः, ॐ शुक्रायनमः। दक्षिणवामशाखयोः ॐ धात्रेनमः ॐ विधात्रेनमः ऊर्ध्वं ऊर्ध्वश्रियैनमः। अधोदेहल्यै नमः। मध्येवास्तुपुरुषाय नमः। द्वारस्तंभयोः नंदिनेनमः ॐ चण्डायनमः। सामवेदिनौ द्वारपालौवृत्वा ॐ अग्न आयाहिवीतये० इति संपूज्य द्वारकलशयोः ॐ वरुणस्योत्तम्भत० वरुणसंपूजय श्वेतपताकाध्वजौ समुच्छ्राय। ध्वजे शंकुकर्णायनमः। पताकायं क्षेत्रपालायनमः। वरुणाय बलिदानम्। ❀ वायुकोणं गत्वा कलशं संस्थाप्य पुष्पदंतायनमः। सिद्धार्थायनमः। ॐ तववायवृतस्पते त्वष्टुर्ज्जामातरद्भुत। अवा ँ स्यावृणीमहे। वायवेनमः। वायुं संपूज्य पीतपताकाध्वजौ समुच्छ्राय वायवे बलिदद्यात्।

उत्तरस्यां कल्याणद्वारे—ॐ वय ँ सोम० इति आवाह्य । द्वारशाखयोः धनद श्रीप्रदनामानौ कलशौ संस्थाप्य प्रत्यूषायनमः । प्रभासायनमः । इति वसुद्वयंसंपूज्य । ॐ सार्वभौमनामकदिग्गजायनमः । उत्तराङ्गे गणेशाय-नमः । वामदक्षिणस्तंभयोः ॐ सत्यलोकायनमः । ॐ ध्रुवलोकायनमः । कलशद्वये वेण्यैनमः । पयोष्ण्यै नमः । शनैश्चराय नमः । राहवे नमः । दक्षिणशाखयोः धात्रे नमः । विधात्रे नमः । ऊर्ध्वं ऊर्ध्वश्रियै नमः । अधोदेहल्यैनमः । मध्येवास्तुपुरुषायनमः । द्वारस्तंभयोः पार्वतीशायनमः । चण्डेश्वरायनमः । अथर्ववेदिनौ द्वारपालौवृत्वा ॐ शन्नो देवीरभिष्टय० सम्पूज्य द्वारकलशयोः ॐ ह ँ सः शुचिषदसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथि-र्दुरोणसत । नृषद्वरसदृतसदव्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं वृहत् । ॐ कुवेरायनमः । इति रक्तपताकाध्वजौ समुच्छ्राय समालभ्य च कुवेराय-यक्षराजायबलिं दद्यात् । ❀ **ईशानकोणं** गत्वा कलशं संस्थाप्य तत्र सुप्रतीकायनमः । ॐ सुमंगलायनमः । ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां । ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोधिपति र्ब्रह्माशिवोम् । इति मंत्रेण ईशानं संपूज्य श्वेतपताकाध्वजौ समुच्छ्रायेत् । ततः ईशानाय बलिं दद्यात् । ततः ❀ ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मयज्ञान० मंत्रेण कलशे ब्रह्माणं संपूज्य रक्तवर्णौ पताकाध्वजौ समुच्छ्राय समालम्य च ब्रह्मणे बलिदानम् । ❀ नैर्ऋतिपश्चिमयो र्मध्यस्थानंगत्वा कलशे अनन्तमावाह्य ॐ नमो ऽस्तु० इति पताकाध्वजौ उच्छ्राय समालभ्य बलिदानं कुर्यात् ॐ भूतनाथाय क्षेत्र-पालाय नमः । ❀ मण्डपमध्ये ॐ ब्रह्मयज्ञानं० मन्त्रेण महाध्वजं संपूज्य वंशेकिन्नरेभ्यो नमः । ॐ इन्द्रस्यवृष्णो वरुणस्य राज्ञआदित्यानां मरुता ँ शर्द्धऽउग्रम महामनसाम्भुवनच्यवानाङ् घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् इति मंत्रेण मंडपमध्ये महाध्वजं स्थापयेत् । तत्र प्राच्यां ॐ गणानान्त्वा० इति गणपतिंसंपूज्य ॐ नमो ऽस्तु रुद्रेभ्यो येदिवियेषा० इति मंडपवाह्ये दिग्वि-दिक्षु रुद्रान् संस्थापयेत तेभ्यो बलिदानम् ।

अथ सर्वभूतेभ्योबलिदानं

विद्याधराप्सरो लोकासुराश्चैव पन्नगाः ।
सपत्नी परिवारश्च प्रतिगृह्णन्तु इमं बलिम् ।
नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्वं नक्षत्रैः परिवारिताः ।
स्थानं चैवपितृणांतु सर्वे गृह्णंतु इमं बलिम् ।
ईशानोत्तरयोर्मध्येक्षेत्रपाला महाबलाः ।
भीमनाभामहादंष्ट्रा सर्वे गृह्णंत्विमं बलिम् ।
येकेचिदिह लोके तु आगताबलि कांक्षिणः ।
तेभ्यो बलि प्रयच्छामि नमकृत्य पुनः पुनः ।
बलिं गृह्णन्तु इमे देवा आदित्यावसवः तथा ।
मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाग्रहाः ।
असुरायातुधानाश्च पिशाचामातरो नगाः ।
शाकिन्यो यक्षबेताला योगिन्यः पूतनाः शिवा ।
जृंभकाः सिद्धगन्धर्वा आद्याविद्याधरा नराः ।
दशैवदिक्पालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ।
सौम्यां भवंतु ते तृप्ता देवासुरगणास्तथा ।
ततो मंडपात्पूर्वस्यां दिशि किंचिद्भूमि-
मुपलिप्य तत्रोपविश्य ।
त्रैलोक्येयानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
ब्रह्माविष्णुशिवैः सार्द्धरक्षां कुर्वन्तु तानि मे ।
देवदानवगंधर्वयक्षराक्षस पन्नगाः ।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ।
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च क्षैत्रपालो गणैः सह ।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वघ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः ।
एवं संप्रार्थ्य श्लोकोक्तदेवान्नाममं त्रै तस्यामेव भूमौ पूजयेत् ।

ॐ त्रैलोक्येभ्यः स्थावरेभ्यो भूतेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्योभूतेभ्यो नमः । ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः शिवाय नमः दानवेभ्यो नमः गंधर्वेभ्यो नमः यक्षेभ्योनमः । राक्षसेभ्यो नमः, पन्नगेभ्योनमः ऋषिभ्यो नमः मुनिभ्यो नमः, गोभ्यो नमः, देवमातृभ्यो नमः, एवं प्रत्येकं संपूज्य भूमौ तेभ्यः बलि ततः पाणिपादौ प्रक्षाल्य यजमानः प्राग्द्वारेण समस्त ऋत्विक्

मंडल परिवृत: मंडपं प्रविश्य महाविष्णु (महाशिवादि) प्रधानदेव समीपं समागत्य उपविश्य मंडपपूजापरिपूर्णतां प्रार्थयेत् ।

मण्डपस्यप्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य श्रीनारायणप्रीतये विष्णुदेवप्रतिष्ठायज्ञकर्मणि एतस्मिन् सर्वतोभद्रमंडले वेदमन्त्रैर्ब्रह्मादिदेवानामावाहनं पूजनं करिष्ये ।

ब्रह्मा—ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरुचोवेनऽआव: । सबुध्न्या उपमा ऽअस्यविष्ठा: सतश्च योनिमसतश्चविव: । ॐ ब्रह्मणे नम: ।

उत्तरेवाप्यां सोमम्—ॐ वय ँ् सोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रत: । प्रजावन्त: सचेमहि । ॐ सोमाय नम: ।

ईशान्यां खंडेन्दौ ईशानम्—ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये । ॐ ईशानाय नम: ।

पूर्वस्यां खंडेन्दौ इन्द्रम्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ् हवे हवे सुहव ँ् शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ् स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र: । ॐ इन्द्राय नम: ।

आग्नेय्यामग्निम्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोअवयासिसीष्ठा: । यजिष्ठो वह्नितम: शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ् सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् । ॐ अग्नयेनम: ।

दक्षिणेवाप्यां यमम्—ॐ सुगन्नु पंथाम्प्रदिशन्न ऽएहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न ऽआयु: । अपैतुमृत्युममृतम्म ऽआगाद्वैवस्वतो नो ऽअभयं कृणोतु । ॐ यमाय नम: ।

नैऋत्यां खण्डेन्दौ निर्ऋतिम्—ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । ॐ निर्ऋतये नम: ।

पश्चिमेवरुणम्—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहर्विभि: । अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश ँ् समान आयु: प्रमोषी: । ॐ वरुणाय नम: ।

वायव्यां खण्डेन्दौ वायुम्—ॐ आनो नियुद्भि: शतिनीभिरद्ध्वर ँ् सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूय पात स्वस्तिभि: सदा न: । ॐ वायवे नम: ।

वायुसोमयोर्मध्ये ऽअष्टवसून्—ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा ऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जनाथां । द्यावा पृथिवीमित्रावरुणौत्वा वृष्ट्यावताम् ।। व्यन्तु वयोक्त ँ् रिहाणां मरुतां पृषतीर्गच्छवशापृश्निर्भूत्वा । दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह । चक्षुष्पा अग्ने ऽचक्षुर्मे पाहि । ॐ अष्टवसुभ्यो नम: ।

सोमेशानोर्मध्ये ईशानम्—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: । बाहुभ्यामुत ते नम: । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नम: ।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्—ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नादित्यासो भवतामृडयन्त: । आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ँ् होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् । ॐ द्वादशादित्येभ्यो नम: ।

इन्द्राग्न्योर्मध्ये ऽश्विनौ—ॐ अश्विना तेजसा चक्षु: प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेंद्रो बलेनेन्द्राय रधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीभ्यां नम: ।

अग्नियमयोर्मध्येविश्वेदेवान्—ॐ विश्वेदेवास ऽआगतश्रृणुता म ऽइम ँ् हवम् । एदं बर्हिन्निषीदत । उपायामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएषतेयोनिर्विश्वेदेवेभ्यस्त्वा देवेभ्य: । सपैतृकविश्वभ्यो देवेभ्यो नम: ।

यमनिर्ऋतयोर्मध्येसप्तयक्षान्—ॐ अभित्यं देव ँ् सवितारमोण्यो: कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ँ् रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम् । उर्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतु: कृपास्व: प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनु प्राणन्तु प्रजास्त्वाम नु प्राणीहि । ॐ सप्तयक्षेभ्यो नम: ।

निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये भूतनागान्—ॐ भूतायत्वानारातये स्वरभि विख्येषन्द्रृ ँ् हन्तान्दुर्य्या: पृथिव्या मुर्वैरन्तरिक्षमन्वेमिपृथिव्यास्त्वानाभौ सादयादित्याऽउपस्थेग्नेहव्य ँ् रक्ष । ॐ भूतेभ्यो नम: ।

तत्रैवसर्पान्:—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवी मनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्योनम: । ॐ सर्पेभ्यो नम: ।

वरुणवायव्योर्मध्येगंधर्वाप्सरस:—ॐ गंधर्वस्त्वाविश्वावसु: परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडित: । इन्द्रस्यबाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडित: । मित्रावरुणौ त्वोत्तरत: परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणाविश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड

ऽ ईडित: । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः । ॐ अयं पुरोहरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्चरथौ जाश्च सेनानिण्यौ पुञ्जिकस्थला चक्रतुस्थला चाप्सरसौ दंक्ष्णवः पशवो हेतिः पौरुषेयोवधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो ऽअस्तुते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यद्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषांञ्जम्भेदध्मः । ॐ अप्सरोभ्यो नमः ।

ब्रह्मसोमयोर्मध्येस्कंदम् — ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महिजातन्ते अर्वन् । ॐ स्कन्दाय नमः ।

तदुत्तरेनंदीश्वरम्—ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सक्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शत ँ सेना ऽजयत्साकमिन्द्रः । नंदीश्वराय नमः ।

तत्रैवशूलः—ॐ कार्षिरसमुद्रस्यत्वा क्षित्या ऽउन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी: । ॐ शूलाय नमः ।

तदुत्तरेकालः महाकालो—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्या ऽउन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी: । ॐ महाकालाय नमः ।

ब्रह्मशायोर्मध्येदक्षादि सप्तप्रजापतीन्—ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यपिता सावस्यपिता वयँ स्यामपतयो रयीणाम् । ॐ प्रजापतिभ्यो नमः ।

ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गाम्—ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके नमा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । ॐ दुर्गायै नमः ।

दुर्गापूर्वे विष्णुम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा । ॐ विष्णवे नमः ।

ब्रह्माग्नयोर्मध्ये स्वधा पितन्—ॐ उदीरतामवर उत्परासउन्मध्यमा पितरः सोम्यासः । असुंय ईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनो ऽवंतु पितरो हवेषु । ॐ पितृभ्यो नमः ।

ब्रह्मयमोर्मध्ये मृत्युरोगान्—ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथायस्ते अन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वतेते ब्रवीमिमानः प्रजा ँ रीरिषो मोतवीरान् । स्यापनमुपलभ्यत । ॐ गदाय नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः । वज्राय ॐ

ब्रह्मनिर्ऋतयोर्मध्ये गणपतिम्—ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवा० ॐ गणपतये नमः ।

ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये आपः—ॐ अपो ऽअद्यान्ववचारिष ँ रसेन समसृक्ष्महि । पयस्वानग्न ऽआगमन्तम्मास ँ सृजवर्च्चसा प्रजया च धनेन च । ॐ ॐ अद्भ्यो नमः ।

ब्रह्मवायु मध्ये मरुतः—ॐ बृहदिन्द्रायगायत मरुतो वृत्रहन्त्यम् । येनज्योतिर जनयन्नृतावृधोदेवन्दे वायजागृवि । ओमरुद्भ्यो नमः ।

ब्रह्मणपादतले कर्णिकाधः पृथ्वीम्—ॐ महीद्यौः पृथिवी चन ऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नोभरीमभिः । ॐ पृथिव्यै नमः ।

तत्रैव गंगादि सरितः—ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णिया । असिक्नियामरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया । ॐ गंगादिसरिद्भ्यो नमः ।

तत्रैव सप्तसागरान्—ॐ मापोमोषधीर्हि ँ सि धाम्नो धाम्नो राजं स्ततो वरुण नो मुञ्च । ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः ।

तदुपरिमेरवे नमः—ॐ मेरवे नमः । उत्तरे ॐ गदायै नमः । ऐशान्याम् ॐ त्रिशूलाय नमः । पूर्वे वज्राय नमः । आग्नेय्यां ॐ शक्तये नमः । दक्षिणस्यां ॐ दंडाय नमः । नैऋत्याम् ॐ खड्गाय नमः । पश्चिमे ॐ पाशाय नमः । वायव्यां अंकुशाय नमः । तद्वाह्ये उत्तरे गौतमाय नमः । ऐशान्यां भारद्वाजाय नमः । पूर्वे विश्वामित्राय नमः आग्नेय्यां ॐ कश्यपाय नमः । दक्षिणे जमदग्नये नमः । नैऋत्यां वशिष्ठाय नमः । पश्चिमे अत्रये नमः । वायव्यां वैष्णव्यै नमः । उत्तरस्यां माहेश्वर्यै नमः । ऐशान्यां दैनायक्यै नमः । ततः मनो जूतिर्जुषता० इत्यने प्रतिष्ठाप्य ।

पुष्पांजलि:—ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ सोमाय नमः, ॐ ईशानाय नमः, इन्द्राय० अग्नये० यमाय०, निर्ऋतये, वरुणाय०, वायवे, अष्टवसुभ्यः एकादश रुद्रेभ्यः० द्वादशादित्येभ्यः० अश्विभ्यां० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो०, सप्तयक्षेभ्यः०, भूतनागेभ्यः, गन्धर्वाप्सरोभ्यः०, स्कन्दाय०, नन्दीश्वराय०, शूलाय०, महाकालाय० ... पंचस्त्री दक्ष ... वायव्यांतरेण्यौ ग्राम्यादेवेभ्यः । दीक्षागुजौ...

शक्तये०, ॐ दंडाय०, ॐ खड्गाय०, ॐ पाशाय० ॐ अंकुशाय०, ॐ गौतमाय०, ॐ भारद्वाजाय० ॐ विश्वामित्राय० ॐ कश्यपाय०, ॐ जमदग्ने, ॐ वसिष्ठाय०, ॐ अत्रये०, ॐ अरुन्धत्यै० ॐ ऐन्द्र्यै नमः ॐ कौमार्य्यै०, ॐ ब्राह्म्यै०, ॐ वाराह्यै०, ॐ चामुण्डायै० ॐ वैष्णव्यै०, ॐ माहेश्वर्य्यै० ॐ वैनायक्यै नमः। एवं सर्वेभ्यो भद्रदेवताभ्यो नाममन्त्रैः पुष्पाञ्जलिसमर्प्यैदेक बलि चोपाहृत्य कलशस्थापन विधिना सौवर्णं राजतं ताम्रमयं वा कलशं स्थापयित्वा वरुणं संप्रार्थ्य तदुपरि प्राणप्रतिष्ठापुरस्सरं प्रतिमां संस्थापयेत् (तत्र सुवर्णमयीं महाविष्णुप्रतिमां महालक्ष्मी प्रतिमां च निम्न प्रकारेण संपूज्य संस्थापयेत्) तत्रादौ विष्णु प्रतिमायां पुरुषसूक्तेनांगन्यासान् विधाय पुरुषसूक्तेनैव नारायणपूजा विधेया।

अथ नारायणपूजा

अथध्यानम्—ध्येयः सदासवितृमण्डल मध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर कुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृत शंख चक्रः॥

आवाहनम्—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्।
सभूमि ँ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। वामकरे

कुसुमासनम्—ॐ पुरुष ऽएवेद ँ सर्वं यद्भूत यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ये नाति रोहति। दक्षिणकरे

पाद्यम्—ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायांश्चपूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि। वामपादे।

अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्ध्वं ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि। दक्षिणपादे।

आचमनम्—ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पुरुषः।
सजातो ऽअत्य रिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः। वामजानौ।

पञ्चामृत स्नानम्—(ॐपञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित्।)

वस्त्रम्—ॐ,तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत। वामकट्याम्

ब्रह्मसूत्रम्—ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः। दक्षिण कट्याम्।

गन्धः—ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये। नाभौ

तुलसीपुष्पाणि—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्।
मुख किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा ऽउच्येते। हृदि

धूपः—ॐ ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरूतदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो ऽअजायत। कण्ठे

दीपः—ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निरजायत। वाम बाहुमूले

नैवेद्यम्—ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्। दक्षिण बाहुमूले

ताम्बूलम्—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ इध्मः शरद्धविः। मुखे

(प्र) दक्षिणा—ॐ सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवायद्यज्ञन्तन्वाना ऽ अबध्नन्पुरुषं पशुम्। ललाटे

पुष्पाञ्जलिः—ॐ यज्ञन यज्ञमयजन्तदेवाः साध्याः सन्ति देवाः।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवा। मूर्ध्नि

विष्णो द्वादशनामस्तवः—
केशवं मार्गशीर्षेसु पौषे नारायणं स्मरेत्।
माधवं माघमासेतु गोविन्दं फाल्गुने जपेत्॥
चैत्रमासे सदाविष्णुं वैशाखे मधुसूदनम्।
ज्येष्ठे त्रिविक्रम विन्द्यादाषाढे वामनं पठेत्॥

श्रावणे श्रीधरं विन्द्याद्धृषीकेशं च भाद्रके ॥
आश्विने पद्मनाभं च ऊर्ज्जे दामोदरं जपेत् ॥
द्वादशैतानि नामानि ऋष्यशृंगो ऽब्रवीन्मुनिः ।
पूजयेन्मासनामानि सर्वान्कामान्समश्नुते ॥
आयुष्मन्तं सुतं सूते यशो मेधा समन्वितम् ॥
धनवन्तं प्रजावन्त धार्मिकं सात्विकं शुचिम् ॥
अनेन पूजनेन महाविष्णुः प्रीयतां न मम ॥

॥ अथ महालक्ष्मीपूजनम् ॥

अथध्यानम्—या सा पद्मासनस्था विपुलकटि तटी पद्म पत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तन भर नमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेम कुम्भैः
नित्यं सा पद्महस्ता वसतु ममगृहे सर्वमांगल्य युक्ता ॥

आवाहनम्— ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम ऽआवह । मूर्ध्नि

पुष्पासनम्—ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् । नेत्रयोः

पाद्यम्—ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रभोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् । कर्णयोः

अर्घ्यम्—ॐ कांसो ऽस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रांज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामि होप ह्वयेश्रियम् । नासिकयोः

आचमनम्—ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि । मुखे

स्नानम्—ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पति स्तव वृक्षो ऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः । कण्ठे

वस्त्रम्—ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे ऽस्मिन् कीर्ति वृद्धि ददातु मे । बाह्वोः

[illegible]—ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।

गन्धः—ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । नाभौ

पुष्पाणि—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां मयि । गुह्ये

धूपः—ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् । पायौ

दीपः—ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानिचिक्लीत वसमे गृहे ।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले । ऊर्वोः

नैवेद्यम्—ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टां पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह । जान्वोः

ताम्बूलम्—ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह । जंघयोः

दक्षिणा—ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्यो ऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् । चरणयोः

पुष्पांजलि:—ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्री कामः सततं जपेत् । सर्वाङ्गे

प्रार्थना—भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महा लक्ष्म्यै नमो ऽस्तु ते ।

अथ द्वादशलिङ्गतो भद्रमण्डल पूजनम्

प्रार्थना—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्ना कल्पोज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

संकल्पः— देश कालौ संकीर्त्य अद्य पुण्य तिथौ मम इह जन्मनि जन्मांतरे च सुख सौभाग्य सम्पतादि फल प्राप्त्यर्थं श्री उमामहेश्वरदेवता प्रीतये रुद्रयज्ञे (मया आचरितस्य अमुक व्रतस्य फल प्राप्ति द्वारा उद्यापनांगभूतं वा) लिंगतो भद्र देवतानां आवाहन प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये । इति संकल्प्य

सर्वत्र १ आग्नेय्यां गणपतये नमः २ नैर्ऋते दुर्गायै० ३ वायव्यां क्षेत्रपालाय नमः ४ ततः भद्रमध्ये सदाशिवाय ५ ततः अष्टदले पूर्वस्यां दिशि-कालाग्निरुद्राय० १ कूर्माय० २ मंडूकाय० ३ आग्नेय्यां वराहाय ४ अनंताय० ५ दक्षिणे पृथिव्यै० ६ स्कंदाय० ७ अंकुराय० ८ नैर्ऋत्यां दिशि नलाय० ७ पद्माय० पश्चिमे पत्रेभ्य० ११ केसरेभ्य० १२ कर्णिकायै० १३ वायव्यां सिंहासनाय १४ पद्मासनाय० १५ उत्तरे धर्माय० १६ ज्ञानाय० १७ वैराग्याय १८ ऐशान्यां ऐश्वर्याय० १९ चिदाकाशाय० २० पद्ममध्ये योगपीठात्मने० २१ ततः कर्णिकोपरिपूर्वेपृथिव्यै० १ दक्षिणे कपिलाय २ पश्चिमे सप्तसरिद्भ्यः ३ उत्तरे सप्तसागरेभ्यः ४ अथ कर्णिका समीपे चत्वारि श्वेतभद्राणितद्देवता स्थापनं पूर्वे १ तत्पुरुषाय० २ दक्षिणे अघोराय ३ पश्चिमे सद्योजाताय० ४ उत्तरे वामदेवाय अथ तत्समीपे कृष्णानि अष्टौ भद्राणि तद्देवता स्थापनमैशान्यक्रमेण ऐशान्यां भगवत्यै० १ पूर्वे उमायै० २ आग्नेय्यां शंकरप्रियायै० ३ दक्षिणे पार्वत्यै० ४ नैर्ऋत्यां गौर्यै० ५ पश्चिमे काल्यै० ६ वायव्यां कौम्यै० ७ उत्तरे विश्वंभर्यै० ८ ततः कृष्णभद्राणामधः अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ईशान्यादि क्रमेण १ ईशान्ये नंदिन्यै० पूर्वेमहाकालाय० ३ आग्नेय्यां वृषभाय० ४ दक्षिणे भृंगकिरीटिने० ५ नैर्ऋत्यां स्कंदाय० ६ पश्चिमे उमापतये० ७ वायव्यां चण्डेश्वराय० ८ उत्तरे सोमसूत्राय० अथ लिंगोपरि श्वेतभद्राणि तद्देवता स्थापनम् ।। १ पूर्वे धात्रे नमः २ दक्षिणे मित्राय० ३ पश्चिमे यमाय० ४ उत्तरे रुद्राय। ततः समीपे लिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणि तद्देवता स्थापनम्। ईशान्य क्रमेण १ ईशान्ये वरुणाय० २ पूर्वे सूर्याय० ३ आग्नेय्यां भगाय० ४ दक्षिणे विवस्वते ५ नैर्ऋते पुरुषोत्तमाय० ६ पश्चिमे सवित्रे० ७ वायव्ये त्वष्ट्रे ८ उत्तरे विष्णवे० ततः द्वादशलिंगदेवता स्थापन पूर्वादि क्रमेण। १ पूर्वे शिवाय० २ एक नेत्राय ३ एक रुद्राय १ दक्षिण मूर्तये० २ श्रीकंठाय० ३ वामदेवाय० १ पश्चिमे ज्येष्ठाय० २ श्रेष्ठाय ३ रुद्राय १ उत्तरे कालाय २ कलविकरणाय ३ बलविकरणाय० ।। अथ श्वेत षोडशवापीदेवतास्थापनम्। ईशान्यादि क्रमेण १ अणिमायै० २ महिमायै० ३ लघिमायै० ४ गरिमायै० ५ प्राप्त्यै० ६ प्राकाम्यायै० ७ ईशितायै० ८ वशितायै० ९ ब्राह्म्यै० १० माहेश्वर्यै० ११ कौमार्यै० १२ वैष्णव्यै० १३ वाराह्यै० १४ इंद्राण्यै० १५ चामुंडायै० १६ चण्डिकायै० ततः वापी समीपे अष्टौ रक्त भद्राणि तद्देवता स्थापनम् ।। ईशान्यादिक्रमेण ।। १ असितांग भैरवाय० २ रुरुभैरवाय ३ चंडभैरवाय० ४ क्रोधभैरवाय० ५ उन्मत्तभैरवाय० ६ कालभैरवाय० ७ भीषणभैरवाय० ८ संहारभैरवाय० अथ अष्टौ वल्ली देवता स्थापनमीशान्यादि क्रमेण ।। १ घृताच्यै २ मेनकायै० ३ रंभायै ४ उर्वश्यै० ५ तिलोत्तमायै० ६ सुकेशायै० ७ मंजुघोषायै० ८ अप्सरायै ततः मण्डलमध्ये परिधि समीपे शृंखला देवतास्थापनमाग्नेय्यादि क्रमेण ।। १ आग्नेय्यां भवाय० २ शिवाय० ३ रुद्राय० ४ पशुपतये० ५ उग्राय० ६ महादेवाय० ७ भीमाय० ८ ईशानाय० ९ वासुकये १० ततः नैर्ऋत्यां परिधि समीपे शृंखला देवताः ।। १ तक्षकाय० २ कुलीराय० ३ कर्कोटकाय० ४ शंखपालाय० ५ कम्बलाय० ६ अश्वतराय० ७ वैन्याय ८ अंगाय० ९ हैहयाय० १० अर्जुनाय० ।। ततः वायव्ये दशशृंखला देवताः ।। १ शाकुन्तलाय० २ भरताय० ३ नलाय० ४ रामाय० ५ सार्वभौमाय० ६ निषधाय० ७ विन्ध्याचलाय० ८ माल्यवते० ९ पारियात्राय० १० सह्याय ।। ततः ईशान परिधि समीपे दश शृंखला देवता स्थापनम् ।। १ हेमकूटाय० २ गंधमादनाय० ३ कुलाचलाय० ४ हिमवते ५ रैवताचलाय० ६ देवगिरये० ७ मलयाचलाय० ८ कनकाचलाय० ९ पृथिव्यै० १० अनंताय० इति शृंखला देवताः ।। अथ चतुर्दिक्षुखंडेंदु देवता स्थापनमीशानादि क्रमेण ।। १ ईशाने अश्विनी कुमाराभ्यां० आग्नेय्यां विश्वेदेवेभ्यो० ३ नैर्ऋते पितृभ्यो० ४ वायव्यां नागेभ्यः० ततः मंडलाद्बहिः प्रथमं सत्वपरिधौ पूर्वादि क्रमेण देवताः ।। १ पूर्वे इंद्राय० २ अग्नये० ३ यमाय० ४ निर्ऋतये० ५ वरुणाय० ६ वायवे० ७ कुबेराय ८ ईश्वराय० ९ ब्रह्मणे० १० अनंताय० तद्बहिः रजः परिधौ पूर्वादि क्रमेण देवताः ।। १ पूर्वे वज्राय० २ शक्तये० ३ दंडाय० ४ खड्गाय० ५ पाशाय० ६ अंकुशाय० ७ गदायै० ८ त्रिशूलाय० तद्बहिस्तमोमय

कृष्ण परिधौ पूर्वादि क्रमेण देवता: ।। १ पूर्वे कश्यपाय० २ अत्रये० ३ भरद्वाजाय० ४ विश्वामित्राय० ५ गौतमाय० ६ जमदग्नये० ७ वसिष्ठाय० ८ अरुंधत्यै० ।। ततः १ पूर्वे ऋग्वेदाय० २ दक्षिणे यजुर्वेदाय० ३ पश्चिमे सामवेदाय० ४ उत्तरे अथर्ववेदाय० एवं देवता: संस्थाप्य षोडशोपचारै: संपूज्य सांबसदाशिवप्रतिमां पूर्वोक्त क्रमेण

प्राण प्रतिष्ठा पुरस्सरं—तांतु प्रधानदेवतां मंडलमध्ये कलशे परि संस्थाप्य पूजयेत् । इति शम् । ततो गणेशाम्बिकयो: पूजांकृत्वा

अथ शिवार्चनम्

नंदीश्वर पूजा—ॐ आयँङ्गौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुर: । पितरञ्च प्रयन्त्स्व: ।

प्रार्थना—ॐ प्रतुव्वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभ: पत्वा । भरन्नग्निम्पुरीष्यमा-पाद्यायुष: पुरा ।

वीरभद्र पूजा—ॐ भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्ये मा क्षभिर्यजत्रा: । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु: ।

प्रार्थना—ॐ भद्रो नो ऽअग्निराहुतोभद्रारातिः । सुभग भद्रो ऽअध्वर: । भद्रा-ऽ उत प्रशस्तय: ।

कार्तिकपूजनम्—ॐ यद्क्रन्द: प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बा हू ऽ उपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्वन् ।

प्रार्थना—ॐ यत्र बाणा: सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव । तन्न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ।

कुबेरपूजा—ॐ कुविदङ्गयवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनु पूर्वं वियूय । इहे हैषाङ्कणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति ।

प्रार्थना—वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषुविभ्रत: । प्रजावन्त: सचेमहि ।

ेतिमुख पूजा—असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ँ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय-स्वाहा दिवापतये स्वाहा ।

प्रार्थना—ओजश्चमे सहश्चम ऽ आत्मा च मे तनूश्चमे शर्म च मे वर्म च मेङ्गानि च मे स्थीनि च मे परू ँ षि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मेयज्ञेन कल्पन्ताम् ।

आत्म नो ऽङ्गन्यास:—

या ते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी ।
तया नस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।। शिखायाम् ।।
असिमन्महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽ अधि ।
तेषा ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।। शिरसि ।।
असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम् ।
तेषा ँ सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि ।। ललाटे ।।
वय ँ सोम व्रते तव मनस्तनूषुविभ्रत: ।
प्रजावन्त: सचेमहि ।। भ्रुवोर्मध्ये ।।
त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।। नेत्रयो:
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा ।।
ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा ।। तृतीयनेत्रे ।।
नम: स्रुत्याय च पथ्याय च नम: काट्याय च नीप्याय च
नम: कुल्याय च सरस्याय च नमोनादेयाय च वैशन्ताय च ।। कर्णयो: ।।
मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिष: ।
मानो वीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्त: सदमित्वाहवामहे ।।
नासिकयो: ।।
अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानांमुखा शिवो न: सुमनाभव ।। मुखे ।।
नमोवञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो
नमो निषङ्गिण ऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो
नम: सृकायिभ्योजिघा ँ सद्भ्योमुष्णताम्पतये नमो
नमो सिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नम: । ग्रीवायाम् ।।
नीलग्रीवा: शितिकण्ठादिव ँ रुद्रा ऽउपश्रिता: ।

तेषा ँ सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ कण्ठदेशे ॥
नमस्त ऽआयुधायाना तताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥ बाह्वोः ॥
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ हस्तयोः ॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वं जायचापरजाय ।
नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च ॥ अंगुलिषु ॥
नमः पर्णाय च पर्णं शदाय च नम ऽ उद्गुरमाणाय चा
भिघ्नते च नम ऽआखिदते प्रखिदते च नम ऽ इषु कृद्भ्यो
धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ँ हृदयेभ्यो ।
नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥ हृदये ॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रात पतिभ्यश्च वो
नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो
विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ पृष्ठे ॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र ँ हेतयो ऽन्यमस्म न्निवपन्तुताः ॥ । उदरे ॥
नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च ।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ दक्षिणकुक्षौ ॥
द्रापे ऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहितः ।
आसाम्प्रजानाम्मेषां पशूनामार्मेर्मा रोङ्मोचनः ॥ वामकुक्षौ ॥
हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ नाभौ ॥
मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव ।
परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्ति
वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ कट्याम् ॥
शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तुमामाहि ँ सीः ।
निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषायसु प्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥
लिंगे ॥

इमा रुद्राय तवसेकपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ गुह्ये ॥
इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय
भागम्प्रजावतीरन मीवाऽअयक्ष्मामावस्तेन ऽईशत
माघश ँ सोध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥
वृषणयोः ॥
मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् ।
मानो वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥ ऊर्वोः ॥
एषते रुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व ।
स्वाहैषते रुद्रभाग ऽआखुस्ते पशुः ॥ जान्वोः ॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय नमः पूर्वजाय च
नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥ जंघयोः ।
नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च ।
नमो वृद्धाय च सवृधे च नमो ग्र्याय च प्रथमाय च ॥ गुल्फयोः ॥
ये पथाम्पथि रक्षय ऽऐल बृदा ऽआयुर्युधः ।
तेषा ँ सहस्र योजने ऽव धन्वानि तन्मसि ॥ पादयोः ॥
अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्चयातु धान्योधराचीः परासुव ॥ कवचे ॥
नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च बरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमोदुन्दुभ्यायचाहनन्याय च ॥ अस्त्रे ॥
विज्यंधनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवां २ उत ।
अनेशन्नस्ययाा इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ धनुषि ॥
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिषा ऽइव ।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु ॥ वाणे ॥
विकिरिद्द्रविलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र ँ हेतयो ऽन्यस्मिन्निव पन्तुताः ॥ खड्गे ॥
य एता वन्तश्च भूया ँ सश्चदिशो रुद्रावितस्थिरे ।

तेषा ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ दिग्बन्धनम् ॥

एवं न्यासविधिं विधाय शिवो ऽहम् इति भावयेत् ।

एवमेव शिवलिंगे ऽपि न्यासविधिं कुर्वीत् ।

ततः षोडशोपचारैः शिवार्चनं कुर्यात् ।

आवाहनम्—मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ।
मानो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रिया स्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥

पुष्पासनम्—या ते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तन्वाशन्त मयागिरिशन्ताभिचाक शीहि ॥

पाद्यम्—यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ँ सीः पुरुषञ्जगत् ॥

अर्घ्यम्—शिवेन वचसात्वगिरिशाच्छावदामसि ।
यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना ऽअसत् ॥

आचमनम्—अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराची: परासुव ॥

स्नानम्—असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैन ँ रुद्रा ऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशो वैषा ँ हेईमहे ॥

पयः स्नानम्—आप्या यस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवावाजस्य सङ्गथे ॥

शुद्धस्नानम्—देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

दधिस्नानम्—दधिक्राव्णो अकारिषं०

शुद्ध स्नानम्—देवस्यत्वा सवितुः०

घृतस्नानम्—घृतवतीभुवना नामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमधुदुघे सुपेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरेभूरिरेतसा ॥

शुद्धस्नानम्—देवस्यत्वा० असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैन ँ रुद्रा ऽ अभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे ।

शर्करा स्नानम्—स्वादुः पवस्वदिव्यायजन्मन स्वादुरिन्द्रायसुहवी तुनाम्ने । स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां २ ऽअदाभ्यः ।

शुद्धस्नानम्—असौयो:० देवस्यत्वा०

पुनराचमनीयम्—अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दव्योभिषक् ।
अहीश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यों धराची: परासुव ॥

वस्त्रम्—ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासो ऽअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो ।

कटिवस्त्रम्—नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे ।
अथो ये ऽअस्य सत्वानो ऽहन्तेभ्यो करन्नमः ॥

यज्ञोपवीतम्—प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्चते हस्त ऽइषवः पराताभगवो वप् ॥

गन्धम्—युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
विहोत्रादधे वयुना विदेक इन मही देवस्यसवितुः परिष्टुति स्वाहा ॥

अक्षत—अक्षन्नमीदन्तह्यप्रिया ऽअधूषत । अस्तोषतस्वभानवो विप्रान विष्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी ॥

पुष्प—विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ । ऽउत ।
अनेशन्नस्याऽ इषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधि ॥

बिल्वपत्रम्—नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ याते हेति मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥

दीप—परिते धन्वनो हेति रस्मावृणक्तुविश्वतः ।
अथो य ऽ इषुधिस्तवारे ऽ ऽअस्मिनिधेहि तम् ॥

नैवेद्यम्—अवतत्यधनुष्ट्व ँ सहस्राक्षशते षुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना असत् ॥

आचमनम्—अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो देव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुध न्यो धराची: परासुव ॥

मुखवासः—नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥

ताम्बूलम्—नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउ द्यगुरमाणाय चाभिघ्नते च नमः ऽआखिदते प्रखिदते च नमः ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ँ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो

विक्षिप्तकेभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥

दक्षिणा—हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ।
सदाधारपृथिवीन्द्यामुते मांङ्कस्मै देवाय हविषा विवेम् ॥

ध्यानम्— शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥
नीलग्रीवं शशांकांकं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
व्याघ्र चर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिंगलजटा शिखामुद्योत कारिणम् ॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्द्धधारिणम् ।
दिव्य सिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुव-क्षरमव्ययम् ॥
सर्वव्यापिनमीशानमेवं वै विश्वरूपिणम् ।
गौरी चतुर्भुजां चण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्वलाम् ॥
पद्मदर्पणहस्तां च वरदाभय हस्तकाम् ।
दिव्यवस्त्रपरीधानां दिव्यालङ्कारभूषिताम् ॥
प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्सङ्गे तु वा-त: ।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥

पुष्पोदकेनतर्पणम्—ॐ भवं देवं तर्पयामि । ॐ शर्वं देवं तर्पयामि । ॐ ईशानं देवं तर्पयामि । ॐ पशुपतिदेवं तर्पयामि । ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि । ॐ उग्र देवं तर्पयामि । ॐ भीमं देवं तर्पयामि । ॐ महान्तं देवं तर्पयामि । ॐ देव देवं तर्पयामि । ॐ ज्येष्ठाय नमः । पुनराचमनीयम् । ॐ श्रेष्ठाय नमः । मधुपर्कः । मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कपः । मधुपर्क प्रदानेन प्रीतोभव महेश्वर । ॐ कालाय नमः गन्धः । ॐ कलविकरणाय नमः पुष्पाणि ॥ ॐ सर्वभूतदमनायनम नमः धूपः ॥ ॐ मनोन्मनाय नमः दीपम् । ॐ भवोद्भवाय नमः नैवेद्यम् ।

पुष्पाञ्जलयः—ॐ भवाय देवाय नमः । ॐ शर्वाय देवाय नमः । ॐ ईशानाय देवाय नमः । ॐ पशुपतये देवाय नमः । ॐ रुद्राय देवाय नमः । ॐ उग्राय देवाय नमः । ॐ भीमाय देवाय नमः । ॐ महते देवाय नमः ॥ ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ॐ उग्रायवायुमूर्तये नमः । ॐ भीमाया ऽऽकाशमूर्तये नमः । ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नमः । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः । एवं सम्पूज्य ततःसहस्रघटैः स्नपनम् ।

अथ अग्निस्थापनम्

त्रिभिःकुशैःपरि समूहनन्—ॐ यद्देवाः देवहेडनन्देवासश्चकृमावयम् । अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः ॥ इतित्रिभिः कुशैः परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां सम्परित्यजेत् । पूर्वतः प्राक्समारभ्यक्रमेणैव तु दक्षिणे उदीच्यां च समूह्यान्ते ईशान्यां तान्परित्यजेत् ॥ हलायुधः ॥

गोमयोदकेनोपलेपनम्—ॐ मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो गोषुमानो ऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥ इतिगोमयोदकेनोपलिप्य ।
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
एकमेकं पावनीयं मांगल्ये सर्व कर्मणि ॥ शांडिल्यः ॥

स्रुवेण स्फ्येन वा प्रागग्रउत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लेखनम्—ॐ त्वां वृत्रेष्विन्द्र-सत्पतिं तरस्त्वां काष्ठा सर्वतः सत्वान्नश्चित्र । वज्रहस्तधृष्णुया महस्त-वानो ऽअद्रिवः शामश्व ँ रयमिन्द्र संकिरसत्रावाजन्न जिगेयुपे ॥ इति त्रिरुल्लिरव्य
स्वर्मर्त्यश्चपाताला त्रिरुल्लिख्यो ल्लेखनात् ।
वैश्वानरः स्थितो यश्च होमे तत्र समागतः ॥ हारीतः ॥

उल्लेखनक्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां पांशूद्धरणम्—ॐ वजुङ्गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्वधामदेव सवितः परमस्यां पृथिव्या ँ शतेन पाशैर्यो ऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मस्तमतो मामौक् ॥ इत्यनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां

मुद्धृत्य ।

अंगुष्टः पुष्टिदः प्रोक्तोऽ नामिकाधनदायिनी ।

द्वाभ्यां समुद्धृतारेखा यजमानशुभावहः ॥ संवर्तः ॥

जलेनाभ्युक्षणम्—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ तत्र तूष्णीं कांस्य पात्रस्थ वह्नि प्रत्यङ्मुखं समाधाय ।

कृतयुगे स्वर्ण पात्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ।

द्वापरे रीति पात्रञ्च कलौ कांस्यं प्रशस्यते ॥

अग्न्याधानम्—ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह ॥

अग्नि पूजा—ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयता तिथिम् । अस्मिन हव्या जुहोतन ॥

कुंडमेखला पूजा—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ब्रह्मणे नमः । ॐ इमारुद्राय० रुद्राय नमः ।

समिदाधानम्—ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः तज्जानन्नग्नऽआरोहाथानो वर्द्धया रयिम् ॥

योनिपूजा—ॐ अम्बे ऽअम्बिअ०

नाभिपूजा—नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः । जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोस्मि विशिराजा प्रतिष्ठितः ॥

कण्ठ पूजा—नीलग्रीवाः शिति कण्ठा०

विश्वकर्म पूजा—ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणो रवध्यम् ।

तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥

मेखला पूजा ॐ इयंदुरुक्तं परिवाधमाणा वर्णं पवित्रं पुनतीम ऽआगात् ।

प्राणा पानाभ्यां बल मादधाना स्वसा देवि सुभगा मेखलेयम् ॥

अग्निपूजनम्—ॐ चत्वारिश्रृंगा स्त्रयो ऽअस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो ऽअस्य ।

त्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां २ आविवेश ॥

प्रार्थना—ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।

हिरण्यवर्णममलं विशुद्ध सर्वतोमुखम् ॥

सर्वतः पाणिपादंतत् सर्वतोऽक्षि शिरो मुखम् ।

वैश्वानरोमहानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ॥

अथ ग्रहाणामावाहनं पूजनं च

ऐशान्यां वस्त्राच्छादिते पीठे नवग्रहमण्डलं विलिख्य सूर्यादि नवग्रहान् अधि देवता प्रत्यधि देवता पञ्चलोककपालदशदिक्पाल वास्तोष्पति क्षेत्र पाल सहितानावाहयेत् । तद्यथा—

सूर्यः—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

चन्द्रः—ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ँ सुवदध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै विश ऽएष वो ऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ॥

भौमः—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ।

अपा ँ सि जिन्वति ॥

बुध—ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जा गृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ँ सृजेथा मयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

बृहस्पति—ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।

यद्दीदयच्चवस ऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

शुक्रः ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धसऽ इन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु ॥

शनिः—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।

शं यो रभि- स्रवन्तु नः ॥

राहुः ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कयाशचिष्ठया वृता ॥

केतुः—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

अथ ग्रहदक्षिण पार्श्वेऽधिदेवतास्थापनम्

त्र्यम्बकं—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

उमा—ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ।
इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ।

स्कन्द:—ॐ यदक्रन्द: प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥

विष्णु:—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्वणमसि विष्णवे त्वा ॥

ब्रह्मा—ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर ऽ इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीर्धेनुर्वोढा नड्वानाशु: सप्ति: पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्ययजमानस्य वीरो जायता निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम् ।

इन्द्र:—ॐ स जोषा ऽ इन्द्र सगणो मरुद्भि: सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँ रपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो न: ।

यम:—ॐ असि यमोऽअस्याऽऽदित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेनसमया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणिदिवि बन्धनानि ।

काल:—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽ उन्नयामि । समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरषधी: ॥

चित्रगुप्त—ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।

अथ प्रत्यधिदेवतास्थपनं ग्रहाणां वाम पार्श्वे

अग्नि:—ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २ आसादयादिह ॥

जलम्—ॐ आप: प्रणीत भेषजं वरू थं तन्वे मम । ज्योक् च सूर्यदृशे ॥

पृथिवी—ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छान: शर्मसप्रथा: ।

विष्णु:—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँ सुरे स्वाहा ॥

इन्द्र:—ॐ इन्द्रऽआसन्नेता बृहस्पति दक्षिणा यज्ञ: पुर ऽ एतु सोम: ।
देव सेनानामभिभञ्जन्तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।

इन्द्राणी—ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीष: । पूषासि घर्मायदीष्व ।

प्रजापति:—ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु वयँ स्याम पतयो रयीणाम् ।

सर्प:—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ।

ब्रह्मा—ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत: सुरुचोवेनऽआव: ।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठा: सतश्चयोनि मसतश्च विव: ।

अथ ग्रहणामुत्तरे लोकपालानां स्थपनम्

गणपति:—ॐ गणानान्त्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिँ हवामहे वसोमम । आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम् ।

अम्बिका—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।

वायु:—ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ।

नभ:—ॐ घृतं घृतपावान: पिबत वसां वसापावान: पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिश: प्रदिश ऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्य: स्वाहा ।

अश्विनी—ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञंमिमिक्षतम् ।

अथ मण्डल बाह्ये इन्द्रादि दशदिक्पालानामावाहनम्

इन्द्र:—त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रँ हवे हवे सुहवँ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र: ।

अग्नि:—ॐ त्वं नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषँ रक्षमाणास्तव व्रते ।

यम:—ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्म: पित्रे ।

नैर्ऋति:—ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।

वरुण:—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमा नस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि: ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशँ समान आयु प्रमोषी: ।

वायु—ॐ आनो नियुद्भि: शतनीभिरध्वरँ सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ।
वायो ऽअस्मिनन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न: ।

सोम:—ॐ वयँ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रत: । प्रजावन्त: सचेमहि ।

ईशान:— ॐ तमी शानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये ।

ब्रह्मा—ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोष: । य: श ॅ सते स्तुवतेधायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँ ऽअवन्तु देवा: ।

अनन्त—या ऽ इषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीँऽ रनु । ये वा वटेषु शेरते तेभ्य: सर्पेभ्योनम: ।। ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्यरश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ।।

वास्तु:—ॐ वास्तोष्पते प्रति जानी ह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवान: । यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

क्षेत्रपाल:—ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यस्माद्वैश्वा नरात्पुर ऽ एतारमग्ने: । एमेनमवृधन्न मृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवा: ।।

प्रार्थना—ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशि प्रियाणां वो ऽ हविषमूर्ज ॅ समग्रभमुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् । सम्पृ चौ स्थ: संमा भद्रेण पृङ्क्त विपृ चौ स्थो विमा पाप्मना पृङ्क्तम् ।। मनोजूति रिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारै: संपूजयेत् । ततो ग्रहवेदीशाने कलशस्थापन विधिना रुद्र कलशं संस्थाप्य ॐ असंख्याता० इति मंत्रेण असंख्य रुद्रानावाह्य पूजयेत् । तत: केचन ग्रहाणां पार्श्वे शेषादीनामपि पूजनं कुर्वन्ति तथाहिरवे: पूर्वे ॐ शेषाय नम: । सोमस्याग्रे ॐ वासुकये नम: । भ्रधोत्तरे ॐ कर्कोटकाय नम: । वृहस्पतेरग्रे ॐ पद्माय नम: । शुक्रोत्तरे ॐ महापद्माय नम: । शनि पश्चिमे ॐ शंखपालाय नम: । राहुपुरत: ॐ कालाय नम: । केतुपुरत: ॐ कुलिशाय नम: ।

बहि: पूर्वे—ॐ अश्विनी आदि सप्त नक्षत्रेभ्यो नम: तत्रैव ॐ विष्कम्भादि सप्त योगेभ्यो नम: । ॐ बव बालव करणाभ्यां नम: ॐ सप्तद्वीपेभ्यो नम: । ॐ ऋग्वेदाय नम: । बहिर्दक्षिणे—पुष्यादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नम: । धृत्यादि सप्तयोगेभ्यो नम: ।

पश्चिमे—ॐ कौलव तैतिलकरणाभ्यां नम: । ॐ सप्तसागरेभ्यो नम: । ॐ यजुर्वेदाय नम: । ॐ स्वात्यादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नम: । ॐ वज्रादि सप्त योगेभ्यो नम: । ॐ गर वणिज करणाभ्यां नम: । सप्त पातालेभ्यो नम: । ॐ सामवेदाय नम: ।

उत्तरे—ॐ अभिजिदादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नम: । ॐ साध्यादि षड्योगेभ्यो नम: । विष्टि करणाय नम: । ॐ भूरादि सप्त लोकेभ्यो नम: । ॐ अथर्व वेदाय नम: ।

वायव्याम्—ॐ ध्रुवाय नम: । ॐ सप्त ऋषिभ्यो नम: ।

यथावकाशम्—ॐ नदीभ्यो नम: । सप्तकुलाचलेभ्यो नम: । ॐ अष्टवसुभ्यो नम: । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः । ॐ द्वादशादित्येभ्यो नम: । ॐ एकोनपंचाशन्मरुद्भ्यो नम: । ॐ षोडश मातृकाभ्यो नम: । ॐ षड् ऋतुभ्यो नम: । ॐ द्वादश मासेभ्यो नम: । द्वयनाभ्यां नम: । ॐ पंचदशतिथिभ्यो नम: । ॐ षष्ठि संवत्सरेभ्यो नम: । ॐ सुपर्णेभ्यो नम: । ॐ नागेभ्यो नम : । ॐ सर्पेभ्यो नम: । ॐ यक्षेभ्यो नम: । ॐ गन्धर्वेभ्यो नम: । ॐ विद्याधरेभ्यो नम: । ॐ अप्सरोभ्यो नम: । ॐ रक्षोभ्यो नम: । ॐ मनुष्येभ्य: नम: ।

प्रार्थना—यत्कृतं पूजनं देवभक्ति श्रद्धा विवर्जितम् ।
परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायका: ।।
आदित्यादि ग्रहा: सर्वे नानावर्णा: पृथग्विधा: ।
सुप्रसन्ना प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ।।

अथ योगिनी पूजनम्

आग्नेय्यां पीठे रक्त वस्त्राच्छादिते पूर्वभागे त्रीणि त्र्यस्राणि विलिख्य तेषु कलशत्रयं विधिना संस्थाप्य तदुपरि सौवर्णी तिस्र: प्रतिमा: कृताग्न्युत्तारणा: संस्थाप्य महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीरावाह्य षोडशोपचारै: संपूजयेत् । तदग्रे कोष्ठेषु वक्ष्यमाणा देवीरावाहयेत्—ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेद: । स न: पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता त्यग्नि: ।। ॐ दिव्य योगिन्यै नम: । ॐ महायोगिन्यै नम: । ॐ सिद्ध योगिन्यै नम: । ॐ गणेश्वर्यै नम: । ॐ प्रेताक्ष्यै नम: । ॐ डाकिन्यै नम: । ॐ काल्यै नम: । ॐ कालरात्र्यै नम: । ॐ निशाचर्यै नम: । ॐ झंकार्यै नम: । ॐ रौद्रवेताल्यै नम: ।

ॐ मूतल्यै नमः । ॐ भूत डंबर्य्यै नमः । ॐ उर्ध्वकेश्यै नमः । ॐ विरूपाक्ष्यै नमः । ॐ शुष्कांग्यै नमः । ॐ नरभोजिन्यै नमः । ॐ भट्टार्यै नमः । ॐ वीरभद्रायै नमः । ॐ धूम्राक्ष्यै नमः । ॐ कलह प्रियायै नमः । ॐ राक्षस्यै नमः । ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः । ॐ विश्वरूपायै नमः । ॐ भयंकर्यै नमः । ॐ चंडिकायै नमः । ॐ वीर कौमार्यै नमः । ॐ वाराह्यै ॐ मुंडधारिण्यै नमः । ॐ सासूर्यै नमः । ॐ रौद्र भ्रंकार भाषिण्यै नमः । ॐ त्रिपुरांतकाय नमः । ॐ भैरव ध्वंसिन्यै नमः । ॐ क्रोध दुर्मुख्यै नमः । ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः । ॐ खट्वांग्यै नमः । ॐ दीर्घलंबोष्ठ्यै नमः । ॐ मालिन्यै नमः । ॐ मंत्रयोगिन्यै नमः । ॐ कालाग्निग्रहण्यै नमः । ॐ चक्रिण्यै नमः । ॐ कंकाल्यै नमः । ॐ भुवनेश्वर्यै नमः । ॐ कटवर्यै नमः । ॐ कटिन्यै नमः । ॐ रौद्र्यै नमः । ॐ यमदूत्यै नमः । ॐ करालिन्यै नमः । ॐ घोराक्ष्यै नमः । ॐ कामुंडयै नमः । ॐ काक दृष्ट्यै नमः । ॐ अधोमुख्यै नमः । ॐ मुंडाग्रधारिण्यै नमः । ॐ व्याघ्र्यै नमः । ॐ किकण्यै नमः । ॐ प्रेत भाषिण्यै नमः । ॐ कालरूपायै नमः । ॐ कामाख्यै नमः । ॐ उद्गिरण्यै नमः । ॐ योग पीठिकायै नमः । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ एकवीरायै नमः । ॐ कालराज्यै नमः । ॐ पीठिकायै नमः ।

इत्यावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ।

अथ क्षेत्रपाल पूजनम्

वायव्यां श्वेतवस्त्राच्छादिते पीठे चतुरस्रं विलिख्य सप्तसप्तदलानां सप्तकमलानि कृत्वा अथवा तिर्यङ्मार्ग्यां पार्श्वमार्ग्यां च सूत्र द्वन्द्वं समानान्तरालं दद्यात् । एवं समानि नव कोष्ठानि विद्यन्ते । मध्य कोष्ठे अष्टदलं विलिख्य कलशं संस्थाप्य पूर्णपात्रे कृताग्न्युत्तारणं सौवर्णं क्षेत्रपाल ॐ नमोस्तुसर्पेभ्य इत्यावाह्य स्थापयेत् । पूर्वादि कोष्ठेषु षट्दलानि संपाद्य उत्तरेशानयोः कोष्ठयोस्तु सप्तदलानि कुर्यात् । ॐ अजराय नमः । ॐ आपकुम्भायनमः । ॐ इन्द्रस्तुतयेनमः । ॐ ईडाचाराय नमः ॐ उक्तसंज्ञायनमः । ॐ ऊष्मादायनमः । ॐ ऋषिसूदनाय नमः । ॐ ऋमुक्ताय नमः । ॐ लृप्तकेशाय नमः । ॐ लृपकायनमः । ॐ एकदंष्ट्राय नमः । ॐ ऐरावतायनमः । ॐ ओघबन्धवे नमः । ॐ औषधेशायनमः । ॐ अंजनाय नमः । ॐ अस्त्रवाराय नमः । ॐ कंवलाय नमः । ॐ खरुखानलाय नमः । ॐ गोमुखाय नमः । ॐ घंटानादाय नमः । ॐ ङमनसे नमः । ॐ चण्डवारणाय नमः । ॐ छटाटोपायनमः । ॐ जटलायनमः । ॐ झंगीवाय नमः । ॐ ञडवराय नमः । ॐ टंकपाणये नमः । ॐ ठानबंधवे नमः । ॐ डामराय नमः । ॐ ढक्कारवायनमः । ॐ णावार्णवायनमः । ॐ तडिद्देहाय नमः । ॐ थिरायनमः । ॐ दन्तुरायनमः । ॐ धनदाय नमः । ॐनतिक्तकान्ताय नमः । ॐ प्रचण्डकायनमः । ॐ फट्कारायनमः । ॐ वीर संधाय नमः । ॐ भृंगाय नमः । ॐ मेघभासुरायनमः । ॐ युगांताय नमः । ॐ रौद्रवायनमः । ॐ लंबोष्ठायनमः । ॐ वसवाय नमः । ॐ शूकनंदाय नमः । ॐ षडालायनमः । ॐ सुनाम्ने नमः । ॐ हुंकाय नमः । इति अजरादिक्षेत्रपालानावाह्य मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ।

अथ पञ्चाङ्गाधिष्ठातृदेवपूजनम्

वारदेवताः—ॐ मृत्युञ्जयाय नमः १ ॐ गौर्यै नमः २ ॐ स्कंदाय० ३ ॐ विष्णवे० ४ ॐ ब्रह्मणे० ५ ॐ इंद्राय० ६ ॐ धर्मराजाय० ७ ॐ आदित्यादि वाराधिष्ठातृ देवेभ्यो नमः ।

तिथिदेवाः—ॐ अग्नये० १ ॐ वायवे० २ ॐ इंद्राय० ३ सोमाय२ ४ ॐ अदित्यै० ५ ॐ इंद्राण्यै० ६ ॐ मरद्भ्यः० ७ ॐ बृहस्पतये० ८ ॐ अर्यम्णे० ९ ॐ धात्रे० १० ॐ इन्द्राय० ११ ॐ वरुणाय० १२ ॐ यमाय० १३ ॐ रुद्राय० १४ ॐ चन्द्राय० १५ ॐ इन्द्राग्नीभ्यां० १ ॐ सरस्वत्यै । २ । ॐ मित्राय । ३ । ॐ निर्ऋत्यै । ४ । ॐ अग्निषोमाभ्यां । ५ । ॐ सर्पेभ्यः । ६ । ॐ विष्णवे । ७ । ॐ पूष्णे । ८ । ॐ त्वष्ट्रे । ९ । ॐ इन्द्राय । १० । ॐ वरुणाय । ११ । ॐ यम्यै । १२ । ॐ द्यावापृथिवीभ्यां । १३ । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः । १४ । ॐ पितृभ्यः । । ३० । ॐ तिथि देवताभ्यो नमः ॥

नक्षत्र देवाः—ॐ दस्रनासत्याभ्यां नमः १ ॐ धर्मराजायनमः २ ॐ अग्नये नमः ३ ॐ प्रजापतये० ४ ॐ सोमाय० ५ ॐ रुद्राय० ६ ॐ अदित्यै० ७ ॐ बृहस्पतये० ८ ॐ सर्पेभ्यः० ९ ॐ पितृभ्यः० १० ॐ भगाय० ११ ॐ अर्यम्णे० १२ ॐ सवित्रे० १३ ॐ वृद्धश्रवसेऽइन्द्राय (त्वष्ट्रे) १४ ॐ वाताय० १५ ॐ इंद्राग्नीभ्यां० १६ ॐ मित्राय० १७ ॐ इंद्राय १८ ॐ निर्ऋतये० १९ ॐ अद्भ्यः० २० ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः० २१ ॐ ब्रह्मणे० २२ ॐ विष्णवे० २३ ॐ अष्टवसुभ्यः० २४ ॐ वरुणाय० २५ ॐ अजैकपदे० २६ ॐ अहिर्बुध्न्याय० २७ ॐ पूष्णे० २८ ॐ अश्विन्यादि साभिजिन्नक्षत्राधिष्ठातृ देवेभ्योनमः।

योगाधिदेवाः—ॐ यमाय नमः १ ॐ विष्णवे० २ ॐ चन्द्रमसे० ३ ॐ ब्रह्मणे० ४ ॐ बृहस्पतये० ५ ॐ रक्षोभ्यः ६ ॐ इंद्राय० ७ ॐ अद्भ्यः० ८ ॐ सर्पेभ्यः० ९ ॐ जातवेदसे० १० ॐ आदित्येभ्यः० ॐ भूम्यै० १२ ॐ वायवे० १३ ॐ सोमाय० १४ ॐ वरुणाय० १५ ॐ गणेश्वराय० १५ ॐ रुद्राय० १७ ॐ वैश्रवणाय० १८ ॐ त्वष्ट्रे० १९ ॐ मित्राय० २० ॐ स्कन्दाय० २१ ॐ सावित्र्यै० २२ ॐ लक्ष्म्यै० २३ ॐ गौर्यै० २४ ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां २५ ॐ पितृभ्यः० २६ ॐ दित्यै० २७ ॐ विष्कम्भादि सप्तविंशति योगाधिष्ठातृ देवेभ्यो नमः।

करणाधिदेवाः—ॐ इंद्राय नमः १ ॐ ब्रह्मणे० २ ॐ मित्राय० ३ ॐ अर्यम्णे० ४ ॐ पृथिव्यै० ५ ॐ श्रियै० ६ ॐ यमाय० ७ ॐ बवादिसप्तकरणेभ्यो नमः। ॐ कलये नमः० १ ॐ नंदीश्वराय० २ ॐ सर्पेभ्यः ३ ॐ वायवे० ४ ॐ शकुनादि चतुष्करणधिष्ठातृ देवेभ्यो नम।

सूर्यराश्यंश (सौरतारिका) देवाः—ॐ ब्रह्मणे नमः १ ॐ प्रजापतये० २ ॐ स्वर्गेश्वराय० ३ ॐ अस्त्राय० ४ ॐ तरुभ्यः ५ ॐ मृगाय० ६ ॐ सोमाय० ७ ॐ कालाय० ८ ॐ अग्नये० ९ ॐ आकाशाय० १० ॐ वासोभ्यः ११ ॐ सूर्याय० १२ ॐ इन्द्राय० १३ ॐ गोभ्यः १४ ॐ निर्ऋतये० १५ ॐ सावित्र्यैः १६ ॐ स्कंदाय० १७ ॐ भवाय० १८ ॐ पितृभ्यः १९ ॐ वरुणाय० २० ॐ दिग्भ्यः० २१ ॐ मरुद्भ्यः० २२ २३ ॐ सरस्वत्यै० २४ ॐ ह्रियै० २५ ॐ कुबेराय २६ ॐ पर्वतेभ्यः० २७ ॐ पृथिव्यै० २८ ॐ वेद पुरुषाय० २९ ॐ परम पुरुषाय० ३० ॐ सौर राशिगत त्रिंशदंशाधिष्ठातृ देवेभ्यो०। ॐ पञ्चाङ्गाधिष्ठातृ देवेभ्यो नमः पाद्यादिभिः संपूज्य (रत्नकोषे)

प्रार्थना—ॐ तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं चन्द्र एव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥ कर्म कांड प्रदीपे॥
अंतः संकल्पे तिथिवार नक्षत्र योग करण गोत्र मंत्रादि ज्ञानाभावे सर्वत्र विष्णुः विष्णुः विष्णुः इति प्रयोगो विधेयः।

अथ ऋषि पूजनम्

मंडलस्योत्तरस्यां ध्रुवारुन्धती सहितान् सप्तर्षीन् संपूज्य दक्षिण तश्चागस्त्य महर्षि पूजनं विधेयम्।,

ध्रुवावाहनम्—ॐ जज्ञानं सप्तमातरो वेधामशासत श्रिये।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतयत॥

प्रार्थना—ॐ ध्रुवराजो महा प्राज्ञः पंच वर्षो महातपः।
ऋषीणां प्रवरः श्रेष्ठः स ध्रुवः प्रीयतां मम॥

ऋषीणामावाहनम्—ॐ सप्त ऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापः स्वपतो लोक मीयु स्तत्र जागृतो ऽ स्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ॥

प्रार्थना—ॐ कश्यपो ऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः।
जमदग्निर्वशिष्ठश्चारुन्धत्या ऽऽयुष्य वर्धकाः॥

अगस्त्यावाहनम्—ॐ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजा मपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम॥

प्रार्थना—ॐ दक्षिणा ऽऽशापते देव नमस्ते कलशोद्भव।
विन्ध्याचल महावेगरोधकाय नमो नमः।
वाताऽऽतौ भक्षितौ येन येन पीतो महोदधिः।
लंकायां दक्षिणे द्वारे कुम्भयोने नमोऽस्तुते॥

अथ कुशण्डिका

ब्रह्मवरणम्—ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णु कर्तव्यामुकनिमितकहोमकर्मणिकृता

कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्मकर्तुंममुकगोत्रमुक शर्माणमेभि: पुष्पचंदन तांबूल वासोभि ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

ओं अमुक गोत्रोऽहं कर्तव्यामुककर्म निमित्तहोमकर्मण्यमुक गोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमेभि: पुष्पचंदन तांबूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे ।

वृतो ऽस्मि इति प्रतिवचनम् ओं यथाविहितं कर्म कुरु करवाणि इति

ब्रह्मासनम्—हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्नि सन्निधावासनांतरे ।

आवाहनम्—ओं आवहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ।
कमण्डलुधरं हस्ते कुशकेतुं कुशायुधम् ।
वेदशास्त्र पुराणज्ञमागमोक्तविदं तथा ॥
यजमानस्य यज्ञस्य ब्रह्मत्वं रक्षको भव ॥

ब्रह्मो पवेशनम्—ओं ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

ब्रह्मध्यानम्—ओं ब्रह्माणं रक्तवर्णाभं पीत वस्त्रैरलंकृतम् ।
चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं सस्रुवं स्रचि हस्तकम् ॥

प्रार्थना—ओं ब्रह्माणि मतय श ँ सुतासः शुष्म इति प्रवृतो मे ऽअद्रिः ।
आशासते अतिहर्यन्स्युक्थे माहरी वहतस्तानो ऽअच्छ ॥

प्रणीताग्रहणं जलेन पूरणं च—ओं आपो हिष्ठा०

ब्रह्मणो मुखावलोकनम्—ओं कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥

ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ।
ततः परिस्तरणम् । बर्हिष श्चतुर्थभागमादाय ।

आग्नेयादीशानान्तम्—ओं अग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥

ब्रह्मणोग्निपर्यन्तम्—ओं इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मावस्तेनऽईशतमाघश ँ सो ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।

नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्—ओं अग्नऽआयाहिवीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्—ओं शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये शंयो रभिस्रवन्तु नः ॥

पात्रासादनम्—अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशिपवित्रछदनार्थंकुशत्रयंपवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तरगर्भित कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम् । उपयमनार्थं वेणीरूप कुशत्रयम् समिधस्तिस्रः पालाश्यः स्रुवः स्रुक् आज्यम् षट्पंचाशदुत्तरमुष्टिशत द्व्यावच्छिन्नं तण्डुलपूर्णपात्रम् पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्वपूर्व दिशि क्रमेणोत्तरोत्तरमासादनीयानि ततः ।

पवित्रच्छेदनम्—ओं पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ इति मन्त्रेण पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रेच्छित्वा प्रादेशमितपवित्रकरणम् सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां द्वाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणी पात्रस्यसव्य हस्त करणम् अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणं ततः प्रोक्षणी जलेन यथा सादित वस्तु सेचनम् । ततोऽग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात् । आज्य-स्थाल्यामाज्य निर्वापः ततः ।

आज्याधिश्रयणम्—ओं इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽईशत माघश ँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ इति मन्त्रेणाज्याधि श्रयणम् । ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिण क्रमेण पर्यग्नि करणम् । ततः

स्रुव प्रतपनम्—ओं त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूर मिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र ः । इति मन्त्रेण स्रुव प्रतपनं कृत्वा संमार्जन कुशानामग्रैरन्तरतो मूले बाह्यतः

स्रुव संमार्जनम्—ओं अनिशितोऽसिसपत्नक्षिद्वाजिनन्त्वावाजे ध्यायै सम्मार्ज्मि ।
इति मन्त्रेण स्रुवं संमार्जनं कृत्वा प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य

स्रुव प्रतपनम्—ओं प्रत्युष्ट ँ रक्षः प्रत्युष्टा ऽरातयो निष्टप्त ँ रक्षो निष्टप्ताऽरातयः । उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥ इति मन्त्रेण पुनस्त्रिप्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यमग्ने प्रदक्षिणं कारयित्वा वतार्य आज्ये प्रोक्षण्युत्पवनम् । ततोऽवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । ततः उपयमन कुशान् वाम हस्ते कृत्वा उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृतावताः समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रक्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्र करेण

प्रोक्षण्युदक ग्रहणम्—ओं तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता ऽआप स प्रजापतिः ॥
इति मन्त्रेण प्रोक्षण्युदकं गृहीत्वा सपवित्र करेण प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिण क्रमेण

अग्नि पर्युक्षणम्—ओं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् । इति मन्त्रेणग्नि पर्युक्षणं कृत्वा

प्रणीपात्रे पवित्रे निधानम्—ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । इति मन्त्रेण प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वा रब्धः समिद्धतमे ऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिर्जुहुयात् । तत्र तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थित हुतावशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः । ओं प्रजापतये स्वाहा । ओं इन्द्राय स्वाहा । इत्याघारौ । ओं अग्नये स्वाहा । ओं सोमाय स्वाहा । इत्याज्य भागौ ततो व्याहृति होमः ओं भूः स्वाहा इदमग्नये । ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे । ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय । ओं भूर्भुवः स्वः इदं प्रजापतये नमः ।

वरदाहुतिः—ओं गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे० स्वाहा
ओं अम्बे ऽअम्बि के ऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन० स्वाहा

विष्णु होमः—ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्० स्वाहा

ब्रह्मा होमः—ओं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः० स्वाहा

रुद्रहोमः—ओं नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः० स्वाहा

लक्ष्मीहोमः—ओं श्री श्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रै० स्वाहा

सरस्वती होमः—ओं पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधियावसुः स्वाहा, ओं ओंकाराय स्माहा ओं ब्रह्मणे स्वाहा, ओं गोवर्धनेश्वराय स्वाहा ओं पृथिव्यै स्वाहा, ओं यज्ञेश्वराय स्वाहा ।

मातृका होमः— ओं गौर्येस्वाहा, ओं पद्मायै, ओं शच्यै, ओं मेधायै, ओं सावित्र्यै, ओं विजयायै, ओं जयायै, ओं देवसेनायै, ओं स्वधायै, ओं स्वाहायै०, ओं मातृभ्यः, ओं लोकमातृभ्यः, ओं हृष्ट्यै, ओं पुष्ट्यै, ओं तुष्ट्यै ओं आत्म देव्यै स्वाहा ।

सप्तमातृका—ओं ललितायै०, ओं उमायै०, ओं गोर्यै०, ओं अम्बिकायै०, ओं सलिलायै०, ओं भगाह्यै० ओं भगाक्ष्यै स्वाहा । याज्ञिकसप्त मातृकानां

मातृकहोमः—ओं श्रियै स्वाहा, ओं लक्ष्म्यै, ओं धृत्यै, ओं मेधायै, ओं स्वाहायै, ओं सरस्वत्यै स्वाहा ।

नवग्रह होमः—ओंसूर्याय स्वाहा (अर्क समिधा) ओं चन्द्रमसे स्वाहा (पलाशः) ओं भौमाय (खदिर) ओं बुधाय स्वाहा (अपामार्ग) ओं बृहस्पतये स्वाहा (पिप्पलः) ओं शुक्राय स्वाहा (उदुम्बर) ओं शनैश्चराय स्वाहा (शमी) ओं राहवे स्वाहा (दूर्वा) ओं केतवे स्वाहा (कुशा)

अधिदेवताः ओं त्र्यम्बकाय स्वाहा, ओं उमायै०, ओं स्कन्दाय०, ओं विष्णवे०, ओं ब्रह्मणे० ओं इन्द्राय०, ओं यमाय०, ओं कालाय०, ओं चित्रगुप्ताय स्वाहा (पलाशः)

प्रत्यधिदेवः—ओं अग्नये स्वाहा, ओं अद्भ्यः, ओं पृथिव्यै०, ओं विष्णवे०, ओं इन्द्राय स्वाहा ओं इन्द्राण्यै०, ओं प्रजापतये, ओं सर्पेभ्यः, ओं ब्रह्मणे स्वाहा (पलाशः)

पञ्चलोकपाल—ओं विनायकाय स्वाहा, ओं दुर्गायै०, ओं वायवे०, ओं अकाशाय स्वाहा, ओं अश्विभ्यां स्वाहा (पलाशः)

दिक्पाल—ओं इन्द्राय स्वाहा, ओं अग्नये०, ओं यमाय०, ओं निऋर्तये, ओं वरुणाय०, ओं वायवे ओं कुबेराय०, ओं ईशानाय०, ओं ब्रह्मणे०, ओं अनन्ताय०, ओं वास्तोष्पतये स्वाहा ओं क्षेत्रपालाय स्वाहा (पलाशः)

ऋषिहोम:—ओं सप्तर्षिभ्योऽरुन्धती सहितेभ्य: स्वाहा । ओं ध्रुवाय० ओं अगस्त्यायस्वाहा । अनेन होमेन सूर्यादि नवग्रहाधिदेव प्रत्यधिदेव पञ्चलोकपाल दिक्पाल वास्तु क्षेत्रपालाश्च प्रीयन्ताम् न मम ।

विशेष—सर्वेषां ग्रहाधिदेव प्रत्यधिदेव पञ्चलोकपाल दशदिक्पालानां वैदिक मन्त्रा: पूर्वमेव लिखिता: । तत्र स्वाहाकारं योजयित्वा प्रतिदेवम् एका, अष्टौ ८, अष्टाविंशति २८, अष्टोत्तरशतं १०८ वाऽऽहुतयो यथासंभवं देया: । । ओं सर्वतो भद्र मण्डलाधिष्ठातृ देवेभ्य: स्वाहा । ओं वास्तु मण्डलाधिष्ठातृदेवेभ्य: स्वाहा । ओंदिव्ययोगिन्यादिचतुष्षष्टियोगिनीभ्य: स्वाहा । ओं अजरादिपञ्चाशत क्षेत्रपालेभ्य: स्वाहा । तत: पुरुष सूक्तेन ओं नारायणाय स्वाहा श्री सूक्तेन च ओं महालक्ष्म्यै स्वाहा इति मन्त्र द्वारा सम्पुटितेन व्रतोद्यापन प्रतिष्ठादौ पायसेन होम: कार्य: ।

अथ लक्ष्मीनारायणसूक्तयोरङ्गन्यास:

लक्ष्मीध्यानम्—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभि: स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितै: स्नापिताहेमकुम्भै:,
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतुगृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥

विष्णुध्यानम्—सशंख चक्र सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्र सरसीरुहेक्षणम् ।
सहार वक्ष: स्थलकौस्तुभं श्रियं नमामि विष्णु शिरसा चतुर्भुजम् ॥

सहस्रशीर्षा०	वामकरे	हिरण्यवर्णा	मूर्ध्नि
पुरुषऽएवेद०	दक्षिणकरे	तामआवह०	नेत्रयो:
एतावानस्य०	वाम पादे	अश्वपूर्वा०	कर्णयो:
त्रिपादूर्ध्व०	दक्षिणपादे	कांसोऽस्मितां०	नासिकयो:
ततोविराड०	वामजानौ	चन्द्रांप्रभासां०	मुखे
तस्माद्यज्ञा०	दक्षिण जानौ	आदित्य वर्णे०	कण्ठे
तस्माद्यज्ञा०	वाम कट्यां	उपैतु मां०	बाह्वो:
तस्मादश्वा०	दक्षकट्यां	क्षुत्पिपासा०	हृदि
तं यज्ञं बर्हिषि०	नाभौ	गन्धद्वारां०	नाभौ
यत्पुरुषं०	हृदि	मनस: काम०	गुह्ये
ब्राह्मणोऽस्य०	कण्ठे	कर्दमेन०	पादयो:
चन्द्रमा०	वाम बाहौ	आप: सृजन्तु०	ऊर्वो:
नाभ्याऽआसी०	दक्ष बाहौ	आर्द्रां पुष्करिणीं०	जान्वो:
यत्पुरुषेण०	मुखे	आर्द्रांय: करिणी०	जङ्घयो:
सप्तास्या०	नेत्रयो:	तांमऽआवह०	चरणयो:
यज्ञेन यज्ञ०	मूर्ध्नि	य: शुचि:०	सर्वाङ्गे

ब्राह्मणोऽस्य एवं कर्दमेन० हृदयादि अंगुष्ठादिकरन्यासांश्च कुर्यात् ॥

पुरुष सूक्त श्री सूक्त रुद्र सूक्तानामङ्गन्यास कारिका—

पुरुष सूक्तस्य—
हस्तयो: पादयोर्जान्वो: कटयोर्नाभौ हृदि क्रमात ।
कण्ठे बाह्वोर्मुखे नेत्रे मूर्ध्निकर्मगतो न्यसेत् ।

लक्ष्मीसूक्तस्य—मूर्धाक्षि कर्णनास- गलदोर्हृदयनाभि गुह्येषु ।
पायूरू जंघाचरणेषु न्यसेदृच: क्रमेण ॥

विष्णु यागे आहुति संख्याप्रमाणम् (क्वचित्प्राञ्च:)

प्रचलितविष्णुयागे	१६०००	—	१६००००
महाविष्णु यागे	१६००००	—	३२००००
अतिविष्णु यागे	३२००००	—	४८००००

यत्र होमात्मको यागो वैष्णव: पाप नाशन: ।
तत्र लक्षं सहस्राणि षष्ठिश्चाहुतयो: स्मृता: ॥ १६००००
लक्षं त्रयं सहस्राणां विंशतिर्जुहुयात्तत: ।
तं महाविष्णुयाग प्रवदन्ति मनीषिण: ॥ ३२००००
यत्राशीति सहस्राणि तथा लक्षचतुष्टयम् ।
आहुतीनां मता संख्या अतिविष्णु ब्रुवन्ति तम् ॥ ४८००००

ॐ अथ रुद्रयागे आहुति संख्या प्रमाणम् ॐ

रुद्रयागे १८११ आहु० लघुरुद्रे १९९२१ आहु०
महारुद्रे २१९१३१ ,, अतिरुद्रयागे २४१०४४१ ,,
एकस्मिन्नमके १६१ आहुतय:
एवं साङ्ग रुद्रादि यज्ञस्याहुति स्पष्टीकरणमथ: —

मन्त्राः	रुद्रे	लघुरुद्रे	महारुद्रे	अतिरुद्रे
ओं यज्जाग्रतः०	१	११	१२१	१३३१
सहस्रशी०	१	११	१२१	१३३१
अद्भ्यः०	१	११	१२१	१३३१
आशुः०	१	११	१२१	१३३१
विभ्राड०	१	११	१२१	१३३१
नमस्ते०	१७७१	१९४८१	२१४२९१	२३५७२०१
वाजश्च०	११	१२१	१३३१	१४६४१
ऋचं वाचं०	२४	२६४	२९०४	३१९४४

पञ्चाङ्गाधिष्ठातृ:—ओं वर्तमान मासाय स्वाहा। ओं वर्तमान मासदेवतायै स्वाहा। ओं वर्तमान तिथये स्वाहा। ओं वर्तमान तिथि देवतायै०। ओं वर्तमान वाराय०, ओं वर्तमान वारदेवतायै०, ओं वर्तमान नक्षत्राय०, ओं वर्तमान नक्षत्र देवतायै० ओं वर्तमान योगाय० ओं वर्तमान योग देवतायै० ओं वर्तमान करणाय० ओं वर्तमान करणदेवतायै०, (यथा सम्भवं प्रत्येकं तिथि नक्षत्रवारादिभ्यः स्वदेवता सहितेभ्यो जुहुयात्। ओं मृत्युञ्जयाय०, ओं अश्विनी नक्षत्राय० ओं प्रतिपत्तिथये० ओं अग्नये० ओं रविवाराय० ओं नासत्यदस्राभ्यां (अश्विनी कुमाराभ्यां) ओं विष्कम्भ योगाय० ओं यमाय० ओं बव करणाय०, ओं इन्द्राय स्वाहा।

सरस्वती होमः—ओं पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम॥

अथ उत्तर पूजा

संकल्पः—ओं अद्येत्यादि अमुक होम कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं गणपत्यादि मण्डल स्थापित देवनामुत्तर पूजनं करिष्ये।

पूजनम् ओं गणानान्त्वा०॥ ओं अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके०। ओं ग्रहाऽऊर्जाहुतयोव्यन्तो विप्राय मतिम् तेषां विशिप्रियाणां वोहऽइषमूर्जं, समग्रभम्। ओं गणेशादि मण्डल स्थापित सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः गन्धादिभिः संपूज्य।

ऋग्वेदपाठः—ओं अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

यजुर्मन्त्रः ओं इषेत्वो र्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्। प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामा वस्तेनऽईशत माघश ँ सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौस्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।

साममन्त्रः— ओं अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।

अथर्वमन्त्रः ओं ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥

प्रार्थना—ओं ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारिभानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सलोकपालाः शुभदा भवन्तु॥

ततो होमस्य दशांशं तर्पणं यथा—ओं अमुक देवं तर्पयामि नमः। तर्पण स्य दशांशं मार्जनं यथा ओं अमुकं देवं मार्जयामि नमः। ततो हुत शेषं हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं०

प्रायश्चित होमे विनियोगः—ओं त्रिव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निभरद्वाज प्रजापतयः ऋषयः अग्निवायुसूर्य प्रजापतयो देवता गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहत्यः छंदासि प्रायश्चिताज्य होते विनियोगः।

ओं भूः स्वाहा, इदमग्नये। ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे। ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। ओं भूर्भुवः स्वः इदं प्रजापतये न मम।

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽ अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ सिप्रमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ओं सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीकं ँ सुहवो न ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा।

इदमग्नये अयसे ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणायाग्नीस्याम्०। ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमँ श्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणायादित्यादितये। ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०।

बलिदानम्—ओं सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यो गणेश सहिताभ्यो गौर्यादिषोडशमातृकाभ्यः श्री सहिताभ्यः सप्तमातृकाभ्यश्च सदीपं पायसापूपादि बलिं समर्पयामि। भो भो सगणेशा मातृका दिशं रक्षत बलिं भक्षत दीपं पश्यत मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्य सपरिवारस्याऽऽयुष्कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्योनिर्विघ्न कर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सगणेशामातृकाः प्रीयन्ताम्।

ओं साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेव प्रत्यधिदेव लोकपाल (वास्तु योगिनी, सर्वतोभद्रमण्डल) सहितेभ्यः सूर्यादिनव ग्रहेभ्यो सदीपं दधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो भो मण्डलाधिष्ठातृदेवा दिशं रक्षत बलिं भक्षत बलिं पश्यत मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याऽऽयुष्कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारो वरदाभवत। अनेन बलिदानेन सर्वे मण्डलाधिष्ठातृदेवाः प्रीयन्ताम्। ततः वंश पात्रादौ सदीपं दधिमाषभक्त बलिं सिन्दूर कज्जलध्वजादियुतं परिकल्प्य —ओं सांगाय सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकाय भूतप्रेत पिशाच डाकिनीगणसहिताय सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो भो क्षेत्रपाल। क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम (यजमानस्य) सपरिवारस्याऽऽयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्न कर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम। ततो यजमानमस्तकोपरि भ्रामयित्वा शूद्रादि द्वारा क्षेत्रादौ प्रेषणीया तत्पृष्ठे द्वारं यावद् दुग्धजलं क्षिपेत्।

जलप्रक्षेपः—ओ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते० प्रोथाय० गन्धाय० घ्राताय० निविष्टाय० उपविष्टाय० सन्दिताय० वल्गते स्वाहासीनाय० शयानाय० स्वपते० जाग्रते० कूजते० प्रबुद्धाय० विजृम्भमाणाय० विचृत्ताय स्वाहा सँ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा वायणाय स्वाहा।

पूर्णाहुतिः—ओं मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः।

इति सङ्कल्प्य रक्तवस्त्रावेष्टितं नारिकेलफलं वा ओं पूर्णाहुत्यै नमः।।

इति तंचोपचारैः संपूज्य उत्थाय—

मन्त्रः—ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः।। समुद्रादूर्मिर्मधुमां २ ऽउदारदुपाँ शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्य नाभिः स्वाहा।। इदमग्नये न मम वैश्वानराय। ततः स्रुवेण वसोर्द्धारां जुहुयात्—

मन्त्रः—ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोःपवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा।

प्रार्थना—ओं श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।

तेजऽआयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

ततः स्रुव बिलपृष्ठेन कुण्डाद् विभूतिं गृहीत्वा दक्षिणा ऽनामिकया त्र्यायुषकरणम् ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। ओं कश्यपस्य त्र्यायुषमितिग्रीवायाम्। "यद्देवेषु त्र्यायुषं" इति दक्षिणबाहुमूले। तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्" इतिहृदि बाहुमूले च। (सौभाग्यवती स्त्रीणां हस्ताङ्गुष्ठे)।।

ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्या ऽऽज्यस्य संस्रवप्राशनं यजमानः कुर्यात् पश्चादाचमनं हस्तप्रक्षालनम्।

पूर्णपात्रदानम्—ओं अद्यकृतैतद् अमुकहोमकर्मणि ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुक शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ततो ब्रह्म ग्रन्थि विमोकः। ततः पवित्रे गृहीत्वा प्रणीता जलेन— ओं सुमित्रिया न आपः ओषधयः सन्तु" इति शिरः संमृज्य "दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्म" इत्यैशान्यां सपवित्रं सजलं

प्रणीतापात्रं न्युब्जी कुर्यात् । ततः स्तरणक्रमेण बहिरुत्थाप्य—आज्येनावघार्याग्नौ जुहुयात्—

ओं देवागातु विदो गातु विल्वा गातु मित मनसस्पत ।
इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इतिबर्हिर्होमः ॥

श्रेयः सम्पादनम्—ओं ततः आचार्यः अद्येत्यादिकृतस्य अमुककर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये । भवन्नियोगेन मया अस्मिन् कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्व तदुत्पन्नं यच्छ्रेयः तद् अमुना साक्षतेन सजलेन पूगीबलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । प्रतिगृह्यताम् । यजमानः—प्रतिगृह्णामि । तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव । 'भवामीति' प्रति वाच्यम् ॥

दक्षिणासंकल्पः—ओं. अद्य कृतस्य अमुक कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो सूक्तपाठकेभ्यो मन्त्र जापकेभ्यो हवन-कर्तृ यो ऽन्येभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

विप्रभोजः—ओं. कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च यथा सङ्ख्याकान् भूदेवान् यथा काले भोजनान्ते तेभ्यो दक्षिणां दास्ये । तत आचार्यशिष्यादानं गोदानं च दद्यात् ॥

पीठदानसंकल्पः—ओं० गणपत्याद्यावाहित-देवताभ्यो नमः । इति गन्धादिभिः पञ्चोपचारैः सपूज्य ओं० अद्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं च इदं प्रधानपीठं प्रहपीठ मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणासहितमाचार्याय दातुम्यमहं सम्प्रददे ॥

छाया पात्रदानम्—ओं० यजमानः एकस्मिन् कांस्यपात्रे स-सुवर्णं स-दक्षिणाकं च आज्यं संस्थाप्य आत्ममुखवलोकयेत्—

मन्त्रः—ओं० रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु । ऋतस्य प्रथा प्रीत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्ष यतस्व सदस्यैः ॥

संकल्पः—ओं० तत्सदद्य० ममाऽऽयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं मुखावलोकितमिदं घृतं कांस्यपात्रस्थं प्राजापत्य ममक शर्मणे दातुमहमुत्सृजे ।

प्रार्थना—ओं० याऽलक्ष्मीयंच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्ग समुपस्थितम् ।
वरदत्वं मातयाऽस्व । त्वं भित्रमायुरस्व वर्धय ॥

आज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् ।
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥

भूयसीदानम्—ओं० कृतस्य कर्मणः अपूर्णं पूर्णार्थं भुयसीं दक्षिणां नानानाम गोत्रेभ्यो अन्धपंगुभ्यश्च यथार्थं विभज्यदातुमहमुत्सृजे ॥

गोचारिणी दक्षिणा—ओं० अद्य न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं गोरभावे गोचारिणीं दक्षिणां यथा नाम गोत्रायदातुमहमुत्सृजे । ततः प्रधानदेवस्य आरती, मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः प्रदक्षिणां च कृत्वा

आशीर्वादः—ओं० पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्वसत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च ।
आरोग्यं धन कामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे ॥

ओं० श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥

आयुष्य तिलकम्—ओं. दीर्घायुष्त्वओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥

अभिषेकः—ओं आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः । तस्मा-ऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः । ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ओं यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं करु । शन्नः—कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ॥

पुराणोक्त श्लोकाः—ओं सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासु देवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयायते ।
आखण्डलोनिर्भगवान् यमोर्व निर्ऋतिस्तथा ॥

।। वर्ष फलम् ।।

श्री गणेशाय नमः

ॐ नमताशेष विघ्नौघवारणं वारणाननम्।
करणं सर्व सिद्धीनां दुरितार्णवतारणम्।।

श्री वीरेन्द्र विक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ सप्तर्षि संवत् ५०६१ ईशाब्द १९८५-८६ कल्पादितो गतवर्ष १९७२९४९० सृष्ट्यादितो गतवर्ष १९५५८८५०८६ कलियुगादितो गतवर्ष ५०८६ प्रभवादि ६० सम्वत्सरों में ब्रह्म विंशति के इन्द्र दैवतवान् तृतीय पंच्वर्षीय युगान्तर्गत द्वादश बहुधान्य नामक संवत्सर (सूर्य दैवताक)जिसके वाराही संहिता के अनुसार भुक्त मासादि ७।२९।२।२४ एवं भोग्य मासादि ४।०।५७।३६ आते हैं। इसकी प्रवृत्ति गतवर्ष संवत २०४१ भाद्र कृ. ५ शुक्रवार श्रीष्ट्म् १९।३७ (१३।५०) पर वृश्चिक लग्न में हुई।

अब बहुधान्य संवत्सर से लेकर समस्त वर्ष के होने वाले दस अधिकारियों का फल उपस्थित करते हैं:—

बहुधान्य संवत्सरः बहुधान्य वर्ष में सुभिक्ष, प्रजा प्रसन्न, आरोग्य वृद्धि, एवं शासक गण प्रजा के अनुकूल रहें।

राजा शुक्रः भूमि सस्य सम्पन्न, अतिवृष्टि, गऊएं दुग्ध सम्पन्न स्त्रियाँ पति को प्रसन्न करने में दत्तचित्त रहें।

मंत्री शनिः शनि के मंत्रित्व में शासक वर्ग विनय हीन प्रजा के पीड़ित होने पर भी स्तब्ध रहें। बादल जल न बरसाकर प्रजा को संतप्त करें किन्तु नगरों में कहीं कहीं आर्थिक सौख्य की वृद्धि हो।

सस्येश मंगलः भौम के सस्याधिकारी होने से लालशाली की वृद्धि कंगनी मसूर चना आदि रक्तान्न एवं लालिमा युक्त भूभाग हरे भरे रहें।

धान्येश सूर्यः सूर्य के धान्याधिकारी होने से बादल कम बरसें, माष, मूँगी, तिल एवं स्निग्ध पदार्थ महँगाई की ओर बढें।

मेघेश शुक्रः मेघाधिकारी शुक्र के होने पर आकाश पर मेघमंडली घिरी रहे। वर्षा समय पर हो। विप्र वर्ग के धन की वृद्धि हो। शासक वर्ग प्रजा के हित में संलग्न रहें।

रसेश गुरुः रसाधिकारी यदि गुरुदेव हों तो प्रजा सुखी। तालाब या सरोवर कमलों से अलंकृत रहें। तुष अधिक हों। प्रजा, देव, विप्र एवं गुरुजनों की उपासक हो। शासक वर्ग वाहनादि समस्त सुविधाओं से सम्पन्न हों।

नीरसेश भौमः नीर से पदार्थों का अधिकार मगंल के हस्तगत होने से प्रवाल, मणि रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन ताँबा एवं अन्य रक्त वर्ण के पदार्थ महर्घता लिए आकाश को छुएँ।

फलेश शुक्रः फलों को अधिकार यदि शुक्र को प्राप्त हो तो कोमल कुसुमों की समृद्धि से युक्त वृक्षों की पंक्तियों से सम्पन्न वसुन्धरा प्रसन्न प्रतीत हो। शासक वर्ग नाना प्रकार के मार्ग अपनाकर प्रजा को प्रसन्न देखने में सफल हों। विप्र वर्ग वैदिक स्वाध्याय की ओर तत्पर रहे।

धनेश चन्द्रः वित्त पर चन्द्रमा का अधिकार होने से रस वृद्धि, क्रय विक्रय द्वारा व्यापारी वर्ग धन सम्पन्न हो। वस्त्र शाली पुष्पों की सुगन्धि से सम्पन्न वृक्ष, तेल घी आदि स्निग्ध पदार्थ अधिक हों। शासक वर्ग प्रसन्न रहे।

दुर्गेश शुक्रः दुर्ग का आधिपत्य यदि शुक्र स्वीकार करे तब सुरक्षा अधिकारी सचेत रहें। व्यापारी वर्ग अपने घर के समान प्रजा से स्नेह बढ़ाए। पर्वत, वन निकट एवं दूर से सुहावने लगें।

नवमेघों में आवर्तनाम मेघराज का फलः आवर्त नामक मेघराज के अधिकार में मन्द वृष्टि हुआ करती है।

मेघ चतुष्टयी में द्रोण नामक मेघ राज फलः चारों मेघाधिकारियों में यदि द्रोण मेघ राज निर्वाचित हो जाए तो समय पर वर्षा होने से सुभिक्ष हो।

द्वादश नाग मंडली में सुबुद्ध नागराज फलः शासनाधिकारी सुमति सम्पन्न एवं धैर्य से प्रजापालन में तत्पर रहें। मेघ मण्डली सामान्य बरसे।

रोहिनी का वास तट परः तट पर रोहिणी के आने से वृष्टि उत्तम हो।

वर्ष का वास धोबी के घर में: धोबी के घर वर्ष के निवास होने से भी वृष्टि उत्तम हुआ करती है।

वर्ष का वाहन मण्डूकः मण्डूक यदि समय का वाहन हो तो अति वृष्टि होने से कहीं कहीं जन समुदाय को हानि भी पहुँचे।

वर्ष का नाम भाद्रपदः भाद्रपद गौरव वर्ष होने पर प्रजा योग क्षेम सम्पन्न आरोग्य से युक्त, धन धान्य से समृद्ध, सुभिक्ष आसाम्राज्य एवं अति वृष्टि हो।

नूतन वर्ष प्रवेश लग्नम्ः संवत् २०४१ चै० कृ० ३० गुरुवार श्रीष्ट २७।४ घटयादि सिंह लग्न में नववर्ष प्रवेश हो रहा है।

मेषार्क प्रवेश लग्न (जगल्लग्न)ः संवत् २०४२ वै० कृ० ९ शनिवार श्रीष्ट घटयादि ३४।० भा०स्टै०टा० १७।४२ पर तुला लग्न में भगवान श्री सूर्यनारायण जी मेष राशि में संक्रमण कर रहे हैं।

आर्द्रा प्रवेश लग्नः संवत् २०४२ आषा० शु० तृतीयोत्तर चतुर्थी शुक्रवार पुनर्वसु नक्षत्र

व्याघात योग वणिजकरण में श्रीष्ट घट्यादि ४६।२२ भा०स्टै०टा० २४।० के समय कुम्भ लग्न १०।२३।५८।२७ पर आर्द्रा नक्षत्र में जगन्नियन्ता सूर्यनारायण जी प्रवेश कर रहे हैं।

पञ्चांगवश आर्द्रा प्रवेश फल निम्नांकित हैं:—

चतुर्थी तिथि: जगन्मोहन में चतुर्थी तिथि रोग प्रद एवं अशुभ कही गई है।

शुक्रवार: शुक्रवार में आर्द्रा प्रवेश शान्तिकारक कहा गया है।

पुनर्वसु नक्षत्र: पुनर्वसु नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश महँगाई की चढ़ाई का द्योतक है।

व्याघात योग: व्याघात में आर्द्रा प्रवेश जन गण का घातक लिखा है।

वणिज करण: वणिज करण में आर्द्रा प्रवेश प्रजा को व्यापारी वर्ग से संतप्त होना पड़ता है।

निशीथकाल: अर्धरात्रि में आर्द्रा प्रवेश प्रजा के लिए क्षेमकारक, सुभिक्ष का सूचक एवं सस्य की सम्पन्नता का सूचक है।

वर्ष की स्तम्भ चतुष्टयी के विषय में विचार: प्रत्येक वर्ष में चार प्रकार के स्तम्भ माने जाते हैं (१) जल स्तम्भ (२) तृण स्तम्भ (३) वायु स्तम्भ (४) अन्न स्तम्भ। यह चारों स्तम्भ वर्ष के आदिम चार मासों के प्रथम दिन निम्न प्रकार योगों से सम्वलित हैं:—

(१) जल स्तम्भ: चै० शु० १ प्रतिपदा का रेवती नक्षत्र के साथ २५ प्रतिशत सम्पर्क है अतः स्तम्भानुसार वर्षा विश्वा ५ होने से स्वल्प वृष्टि हो।

(२) तृण स्तम्भ: वै०शु० १ प्रतिपदा का भरणी के साथ ४६ प्रतिशत के लगभग सम्पर्क होने से तृण विश्वा ९ होने से इसका फल पशुओं के लिए घासादि अनुकूल रहेगा।

(३) वायुस्तम्भ: ज्ये०शु० १ प्रतिपदा का मृगशिरा के साथ सम्पर्क होने से वायु विश्वा शून्य होगी अतः वायु का प्रभाव कम रहेगा अथवा धन धान्यादि के लिए हानि सम्भव है।

(४) अन्न स्तम्भ: आषा०शु० प्रतिपदा का पुनर्वसु नक्षत्र के साथ सम्पर्क का नितरामभाव होने से अन्न विश्वा शून्य बनता है जो अन्न सम्बन्धी विपत्तियों का सूचक है।

वर्षादि विश्वा प्रमाण: वर्षा ९, धान्य ७, तृण ५, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा ७, निद्रा ९, आलस्य १५, उद्यम ९, शान्ति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसोत्पत्ति ९, फलोत्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रम् ३, पाप १३, पुण्य १३, व्याधि ७, व्याधिनाश १७, आचार १३, अनाचार १५, मरण ९, जन्म १५, देशोपद्रव १, देशस्वास्थय ३, चौरोपद्रव ७, चौरोपद्रव शान्ति १५, अग्निकाण्ड ११, उभ्दिज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १३, शलभा ७, मूषका ११, शुक्र १७, सुवर्ण १९, ताम्र ९, स्वचक्र १७, परचक्र १५, वृष्टि १३, अनावृष्टि १७, सोमावत्यमा २, आश्विन तथा फाल्गुन में, भौमवती अमावस्या २, आषाढ़ कार्तिक मन्दवती अमावस्या ३, वैशाख-भाद्रपद एवं माघ में, ग्रहण ५, ३ सूर्य ग्रहण भारत में अदृश्य, चन्द्रग्रहण २, वै० एवं आश्विन संक्रान्ति मुहूर्त्त संख्या ३१५, चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त संख्या ३००। शनि की दृष्टि पश्चिम होने से पश्चिमी देशों के लिए यह कई प्रकार से उपद्रवकारक रहेगा।

।।नववर्षप्रवेशलग्नम्।। ।।जगल्लग्नम्।। ।।आर्द्राप्रवेशलग्नम्।।

जगल्लग्न वशाद् मेषादि राशियों का फल

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख लाभ	मित्रसुख	पुत्र सुख	शत्रु क्षय	स्त्री सौख्य	रोग भीति	धर्म प्राप्ति	धनागम	सुख लाभ	लाभ	शरीर सुख	शुभ व्यय

विन्ध्योत्तरे विमुशोत्तरीय लाभ व्यय चक्रम्

	राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८७	आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
१२३	व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११
	फल	विजय	रोगो-त्पति	कलह	धनहानि	धनहानि	कलह	सौख्य-वृद्धि	विजय	सुख-वृद्धि	विजय	विजय	सौख्य-वृद्धि

विन्ध्यदक्षिणे अष्टोत्तरीय लाभ व्यय चक्रम्

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय ९३	२	११	१४	११	२	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय ११८	८	१४	११	११	११	११	१४	८	१४	८	८	१४
फलम्	लाभ	हानि	धन-हानि	लोकाप-वाद	रोगमय	धन-हानि	हानि	लाभ	सौख्यम्	विजय	विजय	सौख्यम्

काश्मीरादि पर्वतीय प्रान्ते योगिनी मते लाभ व्यय चक्रम्

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय ९६	८	२	११	१४	२	११	२	८	५	१४	१४	५
व्यय १२५	११	१४	११	८	११	११	१४	११	११	११	११	११
फलम्	सौख्याप्ति:	विजय	लोकाप-वाद	लोकाप-वाद	रोगमय	लोकाप-वाद	विजय	सौख्याप्ति:	विजय	हानि	हानि	विजय

संक्रान्ति एवं चन्द्र दर्शनों के मुहूर्तों का योग देखते हुए प्रतीत होता है यह वर्ष समर्घता (सस्तापन) का द्योतक रहेगा। विशोत्तरी अष्टोत्तरी एवं योगिनी तीनों में आय स्वल्प एवं व्यय अधिक होने से समग्र भारत अर्थ संकट ग्रस्त रहेगा।

।।शारदधान्यलग्नम्।।
मीनम् १०।२२(१७।४५)

र. ६।११।३६।४५

।।ग्रैष्मिकधान्यलग्नम्।।
वृश्चिकम् ०।१७(६।२६)

र. ७।२।४०।५७

।।बहुधान्यवर्षप्रवेशलग्नम्।।
वृश्चिकम् ११।२७(१३।५०)

र. ७।९।५८।४९

नव वर्ष प्रवेश लग्नम्: लग्नेश के अष्टम चं०बु०शु० के साथ युक्त होने से एवं पापाक्रान्त होने से यह वर्ष जनता के भाग्य का हानि एवं परस्पर द्वेषवृद्धि के साथ ही दुर्बल एवं मानसिक दोषों से युक्त व्यक्ति आत्महत्या पर तुले रहेंगे।

जगल्लग्न: लग्न में केतु मं०सू० से दृष्ट एवं नीच गुरु से युक्त चन्द्र होने से शासकों की ओर से जनता असन्तुष्ट रहे। आर्थिक समस्या एवं खाद्य पदार्थों के हानि के साथ ही गृहकलह से जनता दुःखी रहे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न: यद्यपि त्रिकोण पापयुक्त एवं चन्द्रमाषष्ठ है। कुम्भ लग्न कभी अच्छा नहीं होता। तो भी वापीयोग होने से प्रजा आर्थिक पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहे। पर्याप्त द्रव्य न मिलने पर भी परिश्रम करते ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्न की हानि से कृषक वर्ग असन्तुष्ट रहे। वर्षा एकदम सूखा एकदम जलथल कर देने वाली होगी। क्योंकि वर्षा या सूखा दोनों समयानुकूल नहीं होंगे।

शारदधान्य लग्न: ग्रह योग बशात् शाली मक्की बजान्न माष इत्यादि की निष्पत्ति: पूर्ण रूप से नहीं हो पायेगी क्योंकि चन्द्र शुक्र के षष्ठ पाप पीड़ित अथवा क्रूर दृष्ट होने से शारदधान्य की वृद्धि में अनेक विघ्न होंवें।

ग्रैष्मिक धान्य लग्न: इसमें भी वृश्चिक लग्न में सू०श० का योग सूखे का द्योतक है किन्तु लग्नस्थ सूर्य के दोनों ओर उभयचरी के शुभ होने से एवं मं०गु० राहु का तालमेल गेहूँ, चना, जौ, सरसों आदि पदार्थ बहुत सी ईतिओं की भीति होने पर भी कुछ पनप पायेंगे।

बहुधान्य प्रवेश लग्न: नव वर्ष प्रवेश लग्न वृश्चिक अपने स्वामी मंगल एवं केतु से युक्त होने से तथा हर्षित उच्च शनि व्यय, स्वस्थ गुरु द्वितीय, केन्द्र में रवि कवि बुध से युक्त होने के प्रभाव से इस वर्ष अन्न वस्त्र एवं वृक्षादि का उत्पादन गत वर्षों की अपेक्षा अधिक होगा। षष्ठ चन्द्रमा होने से जनता रोगों से पीड़ित रहेगी। लग्नेश का राहु केत से सम्पर्क दुर्घटनाओं एवं आन्तरिक दंगों, दस्युओं व चौरों का आतंक बना रहे। किन्तु सूर्य के स्वर्क्षस्थ केन्द्र में शुभ युत होने के कारण शासक वर्ग सब पर काबू पाने में पूर्ण रूप से सफल रहें। इस वर्ष नये नये उद्योगों का उद्घाटन एवं बिजली का उत्पादन क्षति पूर्ति के लिए पर्याप्त हो।

।। शुभमस्तुतराम् ।।

वै० संवत् २०४२ वै०शु० १५ शनी तदनु ४/५ मई १९८५ ई०

ग्रहण मध्य काल	स्थितिकाल	विमर्दकाल	जम्मू-दयात्काल:	चन्द्र-ग्रहणस्य	भा०स्टै०टा०
घ० प० वि०	घ० प० वि०	घ० प० वि०	घ० प० वि०	विवरणम्	घ० मि० सै०
४९।१२।३०	-४।१०।०	------	४५।२।३०	स्पर्शकाल:	२३।४६।०
४९।१२।३०	------	१।१३।२०	४७।४९।१०	सम्मीलनम्	०।५२।४०
४९।१२।३०	------	------	४९।१२।३०	मध्यकाल:	१।२६।०
४९।१२।३०	------	+१।१३।२०	५०।३५।५०	उन्मीलनम्	१।५९।२०
४९।१२।३०	+४।१०।०	------	५३।२२।३०	मोक्षकाल:	३।६।०
------	------	------	८।२०।०	पर्वकाल:	३।२०।०

खग्रासचन्द्रग्रहणम्

मोक्षः प — उ — द — पू — स्पर्शः

खग्रास चन्द्र ग्रहणस्य राशिफलम्

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहण-फलम्	स्त्री-कष्टम्	सुखाप्ति:	चिन्ताप्ति:	वेदना	श्रीप्राप्ति	द्रव्यनाश	देहपीड़ा	आत्म-	द्रव्य-लाभ	सुखाप्ति	मान-हानि:	मृति-भयम्

वै० संवत् २०४२ आश्विन शुक्ल पूर्णिमायां सोमे तदनु २८ २९ अक्तूबर १९८५ ई०

ग्रहण-मध्यकाल	स्थितिकाल:	विमर्दकाल:	जम्मू-दयात्काल:	ग्रहणस्य	भा० स्टै०टा०
घ० प० वि०	घ० प० वि०	घ० प० वि०	घ० प० वि०	विवरणम्	घ० मि० सै०
४०।५७।३०	-४।३०।०	------	३६।२७।३०	स्पर्शकाल:	२१।२४।०
४०।५७।३०	------	०।५४।०	४०।३।३०	सम्मीलनम्	२२।५०।२४
४०।५७।३०	------	------	४०।५७।३०	मध्यकाल:	२३।१२।०
४०।५७।३०	------	+०।५४।०	४१।५१।३०	उन्मीलनम्	२३।३३।३६
४०।५७।३०	+४।३०।०	------	------	मोक्षकाल:	१।०।०
------	------	------	९।०।०	पर्वकाल:	३।३६।०

खग्रासचन्द्रग्रहणम्

प मोक्षः — उ — द — स्पर्शः — पू

खग्रास चन्द्र ग्रहणस्य राशि फलम्

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहण-फलम्	देहव्यथा	आत्म-कष्ट	द्रव्याप्ति:	सुखोदय:	मान-नाश:	मृति-भयम्	स्त्री-क्लेष:	सुख-लाभ:	व्यर्थ-चिन्ता	देहपीड़ा	श्रीलाभ:	द्रव्य-हानि:

संवत् २०४२ वै० में निम्नांकित पाँच ग्रहण होंगे:—

(क) खग्रास चन्द्र ग्रहणम्: वै० प्र० २२ शनिवार ४/५ मई १९८५ ई० (भारत में दृश्य)।

(ख) खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहणम्: ज्ये० प्र० ६ रविवार १९/२० मई १९८५ ई० (भारत में अदृश्य)।

(ग) चूड़ामणि: खग्रास चन्द्र ग्रहणम्: कार्तिक प्र० १२ सोमवार २८/२९ अक्तूबर १९८५ (भारत में दृश्य)।

(घ) खग्रास सूर्य ग्रहणम्: कार्तिक प्र० २७ मंगलवार १२ नवम्बर १९८५ ई० (भारत में अदृश्य)।

(ङ) खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहणम्: चै० प्र० २७ बुधवार ९ अप्रैल १९८६ ई० (भारत में अदृश्य)।

भारत में दृश्य दोनों चन्द्रग्रहणों के सूतकादि निर्णय:—

(क) वैशाख प्र० २२ शनिवार की रात में ११ बजकर ४६ मिनट पर ग्रहण का स्पर्श तथा रात के १ बजकर २६ मिनट पर मध्यकाल एवं आधी रात के बाद ३ बजकर ६ मिनट पर मोक्ष होगा। यह ग्रहण ८ घड़ी २० पल अर्थात् ३ घंटा २० मिनिट लगा रहेगा।

सूतक: इस ग्रहण का सूतक १२ घंटे पहले अर्थात् ११ बजकर ४६ मिनिट पर आरम्भ होकर ग्रहण की समाप्ति तक रहेगा।

खग्रास चन्द्र ग्रहण का राशियों पर प्रभाव: ग्रहण का फल प्रत्येक राशि के लिए ऊपर चक्र में उद्धृत है एवं स्वाती विशाखा के मध्य भाग में ग्रहण होने से दोनों नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति ६ मास तक मानसिक व्यथा एवं हृदय दुर्बलता के शिकार बने रहेंगे।

चन्द्र ग्रहण का विश्वव्यापी प्रभाव: स्वाती नक्षत्र का देवता पवन एवं विशाखा के अधिदेव इन्द्र और अग्नि दोनों होने से प्रचण्ड वायु द्वारा अग्नि का प्रकोप बढ़े एवं इन्द्र के कुपित होने से अकाल वर्षा वज्र (विद्युत) पातादि द्वारा अन्न हानि, नदियों की बाढ़ादि से कई स्थानों में कृषक समुदाय एवं व्यापारी वर्ग को हानि पहुँचे।

(ग) चूड़ामणि खग्रास चन्द्र ग्रहण: यह ग्रहण कार्तिक प्र० १२ सोमवार रात को ९ बज कर २४ मिनट पर आरम्भ होगा। ११ बजकर १२ मिनट पर ग्रहण का मध्य काल एवं पूरे १ बजे मोक्ष होगा। इस प्रकार कुल मिलाकर ९ घड़ी अर्थात् ३ घण्टे ३६ मिनट का ग्रहण होगा।

सूतक: इस चन्द्र ग्रहण में सूतक प्रातः ९ बजकर २४ मिनट पर आरम्भ होकर रात के १ बजे तक रहेगा।

खग्रास चन्द्र ग्रहण का राशियों पर प्रभाव: राशि फल चक्रानुसार जानें। अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति मानसिक व्यथाओं से युक्त एवं हृदय रोगों से पीड़ित रहें। डाक्टर या वैद्य लोगों की औषध का प्रभाव विपरीत होवे। ओप्रेशन (शल्य चिकित्सा) भी अधिक असफल रहे।

ग्रहण का विश्वव्यापी प्रभाव: सीमा प्रान्तों में हलचल, पूर्वी देशों में व्याधि प्रकोप। मेष राशि में होने से अग्नि काण्डादि का भी भय रहे। यह ग्रहण सोमवार के दिन होने से शास्त्रों ने इसे चूड़ामणि ग्रहण की उपाधि दी है। इसमें स्नान दान, मन्त्र पुरश्चरणादि से अनन्त फल की प्राप्ति होती है।

ग्रहणादि में पुत्रवान् गृहस्थी के लिए व्रतोपवासादि निषेध लिखा है।

आदित्य ऽ हानि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
उपवासवतं चैव न कुर्वीत पुत्रवान् गृही।।

बारह राशियों का मासिक फलादेश २०४२

राशि	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	बिगड़े काम बनें, चित्त प्रसन्न, व्यापार में वृद्धि, सम्पत्ति संबंधी मामलों में ध्यान रखें,	गुप्त चिन्तायें, यात्रा, संबंधियों से मनमुटाव, व्यापार साधारण	यात्रा शुभ, व्यापार सामान्य व्यर्थ व्यय, मित्रों द्वारा सहयोग	मित्रों द्वारा सहयोग, उत्साह में वृद्धि, व्यय अधिक, व्यापार सामान्य	संबंधियों से अनबन, मानसिक अशांति, व्यापार मध्यम, यात्रा	व्यय अधिक, नवीन योजनाएं बनें, व्यापार साधारण, शारीरिक कष्ट
वृष	व्यापार में वृद्धि, सन्तान से सुख, विशेष लाभ,	उत्साह में वृद्धि, शुभ कार्यों पर व्यय, व्यापार मध्यम,	शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, यात्रा शुभ, व्यापार सामान्य, झगड़ों से दूर रहें,	शारीरिक कष्ट, यात्रा लाभप्रद, स्त्री से सुख,	झगड़ों से बचें, व्यापार मध्यम बन्धु सहयोग, यात्रा,	मित्रों द्वारा असहयोग, लाभ योग, मानसिक अशान्ति, विवादों से बचें,
मिथुन	शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, व्यापार सामान्य, व्यय में अधिकता,	शारीरिक कष्ट, व्यापार में परिवर्तन, धन लाभ, नवीन योजनाएं बनें,	बिगड़े काम बनें, स्त्री से सुख, धन लाभ परन्तु व्यय अधिक, यात्रा,	शारीरिक एवं मानसिक अशान्ति, व्यय अधिक, व्यापार मध्यम,	नवीन योजनाएं बनें, शारीरिक कष्ट, व्यापार सामान्य,	व्यापार में उन्नति, बन्धु सहयोग, स्वास्थ्य में सुधार
कर्क	यात्रा एवं दौड़ धूप, व्यापार मध्यम, संबंधियों से मन मुटाव	धन लाभ, व्यापार में परिवर्तन ,संबंधियों से सहयोग	व्यापार मध्यम, व्यय अधिक शारीरिक कष्ट, गुप्त चिन्ताएं	संबंधियों से सहयोग, व्यापार में उन्नति, धन लाभ,	व्यापार सामान्य, मानसिक अशान्ति, नवीन योजनाएं, यात्रा,	मान-सम्मान, व्यापार में उन्नति, धन लाभ, व्यर्थ व्यय,
सिंह	नए कार्य बनें, व्यापार सामान्य, शुभ सूचनाएं, स्त्री एवं सन्तान से सुख,	गुप्त चिन्ताएं, स्वास्थ्य में गिरावट, बनते कार्य बिगड़ें,	उत्साह में वृद्धि, धन लाभ, संबंधियों से मन-मुटाव,	व्यापार में कमी, मान-सम्मान, नवीन योजनाएं बनें, चोट का भय	शारीरिक कष्ट, व्यापार सामान्य, गुप्त चिन्ताएं,	मानसिक अशान्ति, व्यय अधिक, व्यापार मध्यम, यात्रा,
कन्या	व्यापार सामान्य, गुप्त चिन्ताएं, शारीरिक कष्ट, मित्रों से , सहयोग,	यात्रा लाभ प्रद, आत्मीय जनों द्वारा सहयोग, व्यापार में वृद्धि	स्त्री एवं सन्तान से सुख, मान-सम्मान, व्यापार में उन्नति	गुप्त-चिन्ताएं, मित्रों द्वारा विश्वासघात, सन्तान द्वारा कष्ट, यात्रा,	व्यापार सामान्य, स्वास्थ्य में सुधार, बन्धु सहयोग,	बन्धु सहयोग, राज्य-सम्मान, व्यापार में वृद्धि, यात्रा लाभप्रद
तुला	धन हानि, व्यर्थ में झगड़े, दौड़-धूप बढ़े, आत्मीयजनों द्वारा विश्वासघात,	शारीरिक कष्ट, यात्रा शुभ, आकस्मिक धन लाभ, मान-सम्मान,	मनोकामना पूर्ण हो, व्यर्थ व्यय, व्यापार सामान्य, यात्रा,	मित्रों द्वारा सहयोग, मान-सम्मान, व्यापार में वृद्धि, यात्रा में लाभ,	व्यापार सामान्य, मित्रों द्वारा विश्वास घात, व्यय अधिक स्वास्थ्य में गिरावट	सन्तान से कष्ट, व्यापार मध्यम, गुप्त चिन्ताएं, यात्रा कष्टप्रद
वृश्चिक	व्यापार में वृद्धि, शुभ सूचनाएं, मान-सम्मान, स्त्री एवं सन्तान से सुख,	व्यापार में वृद्धि मान सम्मान, स्त्री व सन्तान से सुख, झगड़ों से दूर रहें,	शारीरिक एवं मानसिक अशान्ति, यात्रा, व्यापार मध्यम, झगड़ों से दूर रहें,	बिगड़े कार्य बनेंगे, व्यापार में वृद्धि, आकस्मिक धन लाभ, बन्धु सहयोग,	व्यापार मध्यम, बन्धुओं से अनबन, मन अशान्त	व्यापार में वृद्धि, मान-सम्मान बढ़े, यात्रा लाभप्रद, मित्रों से सहयोग, सन्तान से सुख
धनु	भाइयों से लाभ, व्यर्थ व्यय, व्यापार सामान्य, सावधानी की आवश्यकता	व्यापार में लाभ, बिगड़े काम सवरें, यात्रा शुभ,	नवीन योजनाएं बनें, यात्रा शुभ, व्यापार सामान्य, धन लाभ,	मित्रों द्वारा विश्वासघात, व्यर्थ व्यय, यात्रा कष्टदायक, धन हानि,	धन हानि, यात्रा कष्टप्रद, व्यापार मध्यम, दौड़-धूप अधिक हो,	विवाद से बचें, व्यापार में परिवर्तन, धन लाभ, बन्धु सहयोग, यात्रा कष्टप्रद
मकर	स्त्री कष्ट, दौड़ धूप रहे, धन हानि, यात्रा न करें,	व्यापार सामान्य, स्त्री से सुख, मान-सम्मान, बिगड़े काम बनें, व्यर्थ में व्यय,	व्यापार अच्छा, नवीन योजनाएं बनें, मान-सम्मान,	व्यापार में कमी, बन्धु सहयोग, स्वास्थ्य में सुधार	बनते कार्यों में विघ्न, व्यापार मध्यम, स्वास्थ्य में सुधार.	कार्य में सफलता, बन्धु सहयोग, धन लाभ, व्यापार में उन्नति
कुम्भ	व्यापार में लाभ, मानसिक कष्ट, मित्रों द्वारा विश्वासघात	झगड़ों से बचें, गुप्त चिन्ताएं, मानसिक कष्ट, व्यापार में परिवर्तन,	धन लाभ, व्यापार में वृद्धि. संबंधियों से अनबन, व्यय अधिक,	उत्साह में वृद्धि, व्यापार में उन्नति, झगड़ों से दूर रहें,	चिन्ताएं दूर हों, मान-सम्मान बढ़े, आय में वृद्धि.	बन्धु सहयोग, व्यापार में परिवर्तन, यात्रा शुभ, धन लाभ
मीन	बिगड़े काम बनें, व्यापार मध्यम, वृथा विवाद,	मित्रों द्वारा विश्वासघात, धन हानि, व्यर्थ विवाद व्यापार सामान्य	शारीरिक कष्ट, यात्रा, धन हानि, व्यापार मध्यम,	शारीरिक कष्ट, मन अशान्त, व्यय अधिक,	व्यापार सामान्य, गुप्त चिन्ताएं, झगड़ों से दूर रहें.	धन हानि, चोट का भय, मित्रों विश्वासघात, नवीन योजनाएं बनें।

बारह राशियों का मासिक फलादेश २०४२

राशि	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	व्यापार में उन्नति, मान-सम्मान बढ़े, स्वास्थ्य में सुधार,	व्यसन विलासों में रुचि, शरीर पीड़ा, राज्य पक्ष से चिन्ता, व्यवसाय से आंशिक प्राप्ति,	धर्म में प्रवृत्ति, वायु विकार, मित्र से विवाद, गत मास की अपेक्षा लाभ ठीक,	शत्रु भय, लाभ होता रहे, नये कार्य में रुचि, कुछ उलझनें बनें,	लाभ यथावत्, रोग भय, वृथा यात्रा,	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, मान-सम्मान बढ़े, बिगड़े काम बनें।
वृष	व्यापार मध्यम, स्त्री पुत्र द्वारा व्यय, लेन-देन का विवाद, चित्त अशान्त,	दिमागी थकावट, किसी से वृथा विवाद, शत्रु वृद्धि, आय से व्यय अधिक,	किसी नये कार्य को प्रारम्भ करने की योजना, व्यापार मध्यम,	व्यापार में उन्नति, शत्रु पक्ष पर विजय, शुभ कार्यों पर व्यय,	किसी के सहयोग से व्यापार में सुधार, आय में वृद्धि,	लाभ के अवसर मिलते रहेंगे, संतति सुख, मान वृद्धि, यात्रा शुभ
मिथुन	संतति द्वारा अधिक व्यय, लाभ के कारण बनते रहें, मास के उत्तरार्ध में शान्ति,	सम्पत्ति का क्रय, स्त्री सुख, झगड़ों से बचें,	छोटे-छोटे आकस्मिक लाभ, बुद्धि में उदारता, प्रियजनों का समागम,	किसी अप्रिय घटना के आसार, व्यापार में अवरोध, स्वास्थ्य कमजोर,	व्यवसाय में वृद्धि, सुख बढ़े, सहयोग देने वाले मिलेंगे,	यात्रा में लाभ, नेत्रों में पीड़ा रहे, शुभ कार्यों पर व्यय
कर्क	व्यवसाय से लाभ, नये मित्रों से मिलाप, अचिन्तित शुभ समाचार से प्रसन्नता,	बड़े पुरुष का समागम, लाभ का स्रोत चलता रहे, मित्र मिलाप, बन्धु सुख,	मित्रों के सहयोग से विशेष लाभ, स्त्री तथा सन्तान की ओर से सुख,	शरीर में वायु विकार, व्यापार मध्यम, उत्तरार्ध में कुछ लाभ,	यात्रा में विशेष लाभ, व्यापार उत्तम, मन प्रसन्न,	व्यापार में लाभ, घरेलू झंझटों से हैरानी, प्रिय वियोग
सिंह	आशा निराशा में बदले, स्थानान्तर का विचार, मास के उत्तरार्ध में लाभ,	स्वास्थ्य में सुधार, बिगड़े कार्य बनें, व्यापार सामान्य,	घरेलू परिस्थिति बिगड़े व्यापार मध्यम, किसी के सहयोग से उत्साह,	मास फल शुभ हो, नयी योजना के साथ व्यवसाय बढ़ेगा, मान मर्यादा बनी रहे।	कष्टप्रद यात्रा, धन क्षय, अन्तिम सप्ताह में अकस्मात् लाभ, दुःस्वप्न दिखें,	लाभ के लिए नयी योजना, मित्र-बन्धु के सहयोग से लाभ, पुत्र-स्त्री चिन्ता, व्यय विशेष
कन्या	धन हानि, बन्धुओं से अनबन, रोग भय, वृथा खर्च,	गत मास की अपेक्षा लाभ ठीक, मान-सम्मान बढ़े, स्त्री-पुत्र से सुख,	सम्पत्ति संबंधी विवाद से अशान्ति, व्यापार में उन्नति यात्रा लाभप्रद,	व्यापार में उन्नति, अकस्मात् आए हुए कष्ट का उत्साह से मुकाबला करें,	व्यापार में विशेष प्रगति, यात्रा लाभप्रद, बिगड़े कार्य बनें,	यह मास स्वास्थ्य के लिये अशुभ है, यात्रा न करें
तुला	सन्तति सुख, लाभ अच्छा, अकस्मात् यात्रा, बन्धु सहयोग,	जीवन में कुछ मौलिक परिवर्तन हों, आवश्यकता की पूर्ति का लाभ, क्रोध से बचते रहें, प्रेमियों से मिलाप,	व्यवसाय से लाभ, मासान्त में चोट भय, विवाद में विजय, बड़े पुरुष से मिलाप,	स्त्री से सुख, सन्तान से चिन्ता, व्यापार सामान्य, धन लाभ,	मान सम्मान बढ़े, शुभ कार्यों पर व्यय, व्यापार पहले से ठीक,	स्वास्थ्य मध्यम, धन लाभ ठीक, उत्तरार्ध में रोगभय पीड़ा
वृश्चिक	सोचे कार्यों में विघ्न, लाभ में बाधा, यात्रा में कष्ट, वृथा व्यय,	धन्धे की वृद्धि हेतु असफल प्रयास, सिर व नेत्र में पीड़ा, स्त्री से सुख, यात्रा कष्टदायक,	यात्रा में कष्ट होगा, शत्रु हारेंगे, सन्तान की ओर से चिन्ता,	व्यापार सुचारु रूप से चले, बिगड़े काम भी बनें, आय में वृद्धि,	मन में अशुभ संकल्प उठें, राजपक्ष से भय, शारीरिक कष्ट, व्यापार मध्यम,	व्यापार में लाभ, शत्रुओं से भय, नये कार्यों में बाधाएं
धनु	पैसे की चिन्ता, व्यापार में नई समस्या, मित्र से सन्तोष, गुप्त चिन्ताएं	गुप्त शत्रु से सावधान, यात्रा कष्टप्रद, लाभ ठीक,	चित्त में शान्ति, नए कारोबार में पैसा लगाने का विचार, लाभ हो, कामनाएं पूर्ण हों,	स्वास्थ्य में सुधार, श्रम विशेष, लाभ कम, जीवन अव्यवस्थित सा रहे,	व्यापार में उन्नति, सन्तान से सुख, शत्रु पक्ष पर विजय,	स्वास्थ्य में सुधार, व्यापार पूर्ववत्, यात्रा हो,
मकर	देर से उलझा हुआ कार्य बने, धर्म में रुचि, व्यापार ठीक, मित्रों द्वारा असहयोग,	उत्साह में कमी, विरोधियों की प्रबलता, काम में मन न लगे, बन्धुओं से असन्तोष,	सम्पत्ति संबंधी मामलों पर व्यय, चित्त प्रसन्न, व्यापार में उन्नति,	चित्त प्रसन्न, व्यापार में उन्नति, जमीन जायदाद पर व्यय,	स्वास्थ्य में बिगाड़, व्यवसाय में सफलता, मित्रों का सहयोग मिले,	व्यवसायों से लाभ कम, व्यय अधिक होने से तंगी, अचानक चिन्ता
कुम्भ	अशुभ वृत्ति, उदर व मस्तक में पीड़ा, शत्रुभय, निजीजनों से अशान्ति, लाभ मध्यम,	कारोबार में नयी योजना, उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना समाचार, लाभ अच्छा,	शरीर में कृशता, अशांति की वृद्धि, धन की न्यूनता,	व्यापार मध्यम, व्यर्थ व्यय श्रम अधिक, गुप्त चिन्ताएं,	बिगड़े कार्य बनेंगे, स्त्री और सन्तान से सुख, यात्रा कष्टप्रद,	संबंधियों से मनमुटाव, स्त्री-सन्तान से सुख, राज्य से सम्मान, व्यापार उत्तम
मीन	स्वास्थ्य में गिरावट, स्त्री-पुत्र विषयक चिन्ता, लाभ मध्यम तथा दौड़धूप बढ़े,	शोक समाचार से अशान्ति, धनागम पूर्ववत्, अप्रिय स्थितियों का नियंत्रण हो, यात्रा कष्टप्रद	बन्धु सहयोग, बिगड़े कार्य बनें, धन लाभ, व्यापार सामान्य,	मास फल ठीक नहीं, काम में मन न लगे, सफलता के मार्ग में बाधाएं	व्यापार उत्तम, धार्मिक कार्यों पर व्यय, बन्धु सहयोग,	व्यापार में वृद्धि, संबंधियों से अनबन, यात्रा कष्टप्रद

सम्वत् २०४२ विक्रमी का मासिक व्यापारिक फलादेश

वैशाख: वर्षारम्भ में मंगल और राहु की अंशात्मक युति से अनेक योग्य वस्तुओं में कमी रहेगी तथा भावों में उतार चढ़ाव रहेगा। १३ को शुक्र के मार्गी होने के बाद सोना-चांदी तथा रुई के भाव चढ़ेंगे। १९ को मंगल के रोहिणी में प्रवेश से सूती वस्त्रों, घी, रुई आदि में तेजी आयेगी। २२ को चन्द्र ग्रहण से अधिकतर दालों एवं दुग्ध पदार्थों के भाव बढ़ेंगे। गुड़ चीनी आदि के भाव भी बढ़ेंगे। २७ के बाद कुछ कमी होगी।

ज्येष्ठ: संक्रान्ति ३० मुहूर्ती है अतः घी, गुड़, चीनी, तिल तेलादि पदार्थों के भावों में उतार चढ़ाव रहेगा। ८ से मंगल के अस्त होने से गुड़, अलसी, चना, तेल, बाजरा, इलायची, मिर्च, आदि पदार्थों में तेजी आयेगी। परन्तु कपास चावल व रुई में मन्दी रहे। सोने के भाव चढ़ेंगे। १९ को वक्री शनि के तुला में राशि आने से बाजरा में तेजी आयेगी। चावल, ज्वार, अलसी, सरसों, गुड़ आदि पदार्थों में तेजी आयेगी। २१ को वनस्पति वक्री हो जाने से इन में गिरावट आयेगी।

आषाढ़: संक्रान्ति १५ मुहूर्ती है। शनि वासरी होने से तेल, लोहा माषादि में तेजी आयेगी। ७ को बुध पुनर्वसु में तथा ८ को सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में जाने से सूत, कपास, मूंगफली, रुई, अलसी आदि पदार्थों में मन्दी आएगी परन्तु १८ के बाद तेजी आ जायेगी। १४ से सोना, चांदी, पीतल आदि के भावों में अनिश्चितता रहेगी। २२ से सूर्य पुनर्वसु में तथा २३ को बुध आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट होने से चावल व चांदी के भाव मन्दे रहेंगे परन्तु मूंगफली, सरसों, उड़द, गुड़, अलसी आदि में तेजी होगी। ३० से दुग्ध पदार्थों में विशेष तेजी।

श्रावण: ३ श्रावण से अधिक मास प्रारम्भ हो रहा है तथा ४ को सूर्य व ५ को मंगल के पुष्य में आने से चने, जौ, चावल, गुड़, चीनी, शक्कर तेलादि के भाव धीरे-धीरे तेज होते जाएंगे। सोना, चांदी, पीतल आदि में अनिश्चितता रहे। ७ से बुध के सिंह में आने से शेयरों में मन्दी आयेगी। १८ से सूर्य के आश्लेषा में तथा शुक्र के आर्द्रा में प्रवेश से अलसी, सरसों व रसदार वस्तुओं तथा सोना एवं चांदी में तेजी रहे। गुड़, चना, शक्कर, उड़द, रुई आदि में पहले कुछ मन्दी तथा बाद में तेजी आएगी।

भाद्रपद: संक्रान्ति ३० मुहूर्ती है, शेयर मार्किट में स्थिरता रहे, लाल मिर्च, चना, घी, आदि में तेजी होगी। अन्य वस्तुओं के भाव स्थिर ही रहेंगे। १६ को मंगल के तथा १८ को बुध के सिंह में प्रवेश से चांदी, रुई, सोना, तांबा, अलसी, लाल मिर्च आदि में तेजी, गुड़, शक्कर, चीनी के भावों में कमी। शेयर भावों में भी कमी होगी।

आश्विन: संक्रान्ति के दिन ही शुक्र सिंह में तथा शनि वृश्चिक में प्रविष्ट हो रहे हैं अतः लाल मिर्च तथा लाल वर्ण की वस्तुओं तथा सोना, तांबा, गुड़ आदि के भावों में तेजी आएगी। १० से रुई, चावल तथा चांदी आदि के भावों में तेजी आएगी। १७ से बुध चित्रा में प्रविष्ट होने से रुई, सूत, पटसन में तेजी आयेगी। शेयरों के भावों में कामोवेशी के बाद तेजी आयेगी। २० को गुरु के मार्गी होने से चांदी में मन्दी रहेगी। २८ से चावल, अलसी, सरसों के भाव बढ़ेंगे।

कार्तिक: संक्रान्ति ३० मुहूर्ती है तथा इसी दिन मंगल कन्या में प्रविष्ट हो रहा है। इस से कपास, रुई, चांदी के भावों में थोड़ी मंदी रहेगी और सोना, तांबा, अलसी, सरसों आदि में तेजी रहेगी। १३ को बुध अनुराधा में १४ को शुक्र चित्रा में प्रवेश कर रहे हैं। १९ को शुक्र तुला राशि में प्रवेश कर रहा है। अतः सोना चांदी, रुई, चना, सूत, पशु चारा आदि में उतार-चढ़ाव रहेगा। २१ से शनि के अस्त होने से चांदी, लोहा, रुई, सूत, आदि में तेजी होगी तथा शेयर भाव भी बढ़ेंगे। इस के अतिरिक्त जिस्त, स्टील, पटसन आदि के भाव भी तेज होंगे।

मार्गशीर्ष: संक्रान्ति ३० मुहूर्ती है, ३ से बुध वक्री होकर ७ से अस्त हो रहा है। इस से तिल, तेल, घी, गुड़ शक्कर, चांदी के भावों में तेजी रहेगी। सूखे मेवों में भी तेजी रहेगी। १३ से शुक्र वृश्चिक राशि में प्रविष्ट हो रहा है। अतः चांदी, अलसी, रुई आदि

में पहले मंदी पर फिर तेजी आएगी। १७ से सूर्य के ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश से एक सप्ताह के भीतर सोना चांदी, चावल, चीनी, गुड़ आदि के भाव तेज होंगे। १९ से दालों में उतार-चढ़ाव रहेगा। २४ से शनि पूर्व में उदित हो रहा है अतः सभी प्रकार के अनाज एवं शेयरों के भावों में आश्चर्यजनक तेजी आएगी।

पौष: संक्रान्ति ३० मुहूर्ती है, इसी दिन शुक्र पूर्व दिशा में अस्त हो रहा है। तथा भौम स्वाती में प्रविष्ट हो रहा है। ३ से शनि अनुराधा में प्रविष्ट हुआ है अतः सोना, ताँबा, पीतल, केसर, मूंगफली आदि में तेजी आएगी। चांदी में भी तेजी होगी परन्तु ८ से शुक्र के धनु राशि में तथा बुध के ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश से मंदी आ जाएगी। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, गुड़, चावलों के भावों में वृद्धि होगी। १४ से सूर्य के पूर्वाषाढ़ा में आने से गुड़, सरसों, चीनी, तेल, घी, गेहूँ, बाजरा आदि का भाव तेज होगा। १८ से बुध के धनु राशि में तथा शुक्र के पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश से सोना, चांदी, उड़द आदि के भावों में प्रथम अनिश्चितता परन्तु कुछ ही दिनों में तेजी आयेगी। २३ से भौम के विशाखा में आने से रुई, कपास, गेहूँ में तेजी होगी। २७ से अमावस के दिन बुध के पूर्वास्त होने से सभी प्रकार के अनाज तथा सोना, चांदी के भाव प्रथम मन्द तथा बाद में तेज होंगे। २९ को शुक्र के उत्तराषाढ़ा में प्रवेश से सोना, चांदी, गुड़, चीनी के भावों में उतार-चढ़ाव होगा।

माघ: संक्रान्ति १५ मुहूर्ती है। २ से शुक्र मकर में ५ से बुध उत्तराषाढ़ा में ६ से शनि अनुराधा में और ७ से बुध मकर राशि में प्रविष्ट हो रहा है। अतः सूखे मेवों, घी, इलायची, सोना, पीतल, ताँबा, चांदी, तेल, तिलहन आदि के भावों में तेजी आएगी। ९ से भौम वृश्चिक में १० से सूर्य श्रवण में तथा ११ से गुरु कुम्भ में प्रवेश कर रहा है। अतः ११ से सोना, चांदी, ताँबा, पीतल, लोहे आदि धातुओं में मंदी आनी शुरु हो जाएगी। १३ को बुध श्रवण, १५ को भौम अनुराधा में आने से क्रमशः गुड़, सरसों, चना, रुई, तिल, तेलादि पदार्थ तथा ताँबा, पीतल, सोना आदि में उतार-चढ़ाव के बाद तेजी तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी। २० को शुक्र के तथा २१ को बुध के घनिष्ठा में प्रवेश से चांदी, कपास, चावल, उड़द के भाव तेज होंगे। २५ से बुध के कुम्भ राशि में प्रवेश से तिल, अलसी, घी के भाव बढ़ेंगे।

फाल्गुण: संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती है। शुक्र शतभिषा में प्रविष्ट हो रहा है। अतः सोना, चांदी, पीतल, हल्दी, केसर व अनाज के भावों में मंदी आयेगी। ६ को बुध का पश्चिमोदय हो रहा है, ७ को सूर्य शतभिषा में, मंगल ज्येष्ठा में, बुध पूर्वाभाद्रपदा में आ रहा है अतः रुई, घी, कपास, चावल, गुड़, चीनी, सरसों, सोना, चांदी, ताँबा, लोहा आदि में तेजी आने की संभावना है। १६ को बुध के उत्तराषाढ़ा में आने से पीतल, ताँबा, सीसा, स्टील, लोहा, जौ, गेहूँ, गुड़, चीनी, चावल और तेलादि पदार्थों के भाव अस्थिर रहेंगे। १८ से शुक्र के पश्चिमोदय से सोना, चांदी, रुई, घी, तेल के भाव तेज होंगे। २२ को गुरु के पश्चिमोदय से चांदी, रुई तथा तेलादि पदार्थों में कुछ मंदी होगी। २८ को वक्री बुध के उत्तराभाद्रपदा में आने से शेयरों के भाव अस्थिर रहेंगे।

चैत्र: संक्रान्ति १५ मुहूर्ती है, २ को मंगल धनु में, वक्री बुध पूर्वाभाद्रपदा में आने से अलसी, सरसों, गुड़, चावल, चना, जौ, मटर आदि के भाव बढ़ेंगे। ४ से सूर्य के उत्तराभाद्रपदा में तथा रेवती में शुक्र के आने से रुई, कपास, चांदी, चीनी, तथा सफेद रंग की वस्तुओं के भावों में कुछ कमी आयेगी। ६ को वक्री बुध के कुम्भ में प्रवेश तथा ११ को पूर्वोदय से शेयरों के भाव अस्थिर रहेंगे। १५ को शुक्र के मेष राशि में प्रवेश से अलसी, सरसों, मूंगफली, जौ, चांदी के भावों में दो एक दिन मंदी के बाद तेजी आएगी। १९ को बुध के मार्गी होने से अलसी, गुड़, चीनी, मूँग आदि में मंदी आयेगी। शेयर भावों में मंदी आयेगी। २३ से गुरु के शतभिषा में आने तथा २५ को शुक्र के भरणी में आने से शेयरों के भाव कुछ स्थिर होंगे। चांदी में तेजी होगी।

सुदेश कुमार शास्त्री
ज्योतिषाचार्य (फलित व सिद्धान्त)
बी. एड्.
स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पत्रकारिता)

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२२ मार्च से ५ अप्रैल सन् १९८५ ई तक) उ.अ.उ.गो. वसन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ चैत्रशुक्लपक्षः—(१)

तारिख

मु० रा० अं० हि०

आश्लेवा ५७।१८ (२१।१८) सुकर्मा ५६।१२ (२८।५२) वर्षारम्भ से वर्षान्त तक बहुधान्य संवत्सर का संकल्पादि में प्रयोग करें।

जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा०

सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	जम	चैत्र	मार्च	चैत्र	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अ. क. वि.
३०।५	१	शु	३३।१२	१९।५४	उभा	१४।५८	१२।३६	ब्र	५५।३८	किं	०।५	२९	१	२२	९	नव चान्द्रवत्सरारंभः वासन्तिक नवरात्रारम्भः घटस्थापनम्	मीन	६।३७	६।३९	११।७।४३।१४
३०।१२	२	श	३९।४९	२२।३१	रे	२२।४१	१५।४०	ऐं	५८।१६	वा	६।३१	३०	२	२३	१०	पंचक स. २२।४१(१५।४०) चन्द्रदर्शन मु. ३०	मे. (१५।४०)	६।३५	६।४०	११।८।४२।४०
३०।१७	३	सू	४६।३५	२५।१२	अश्वि	३०।३६	१८।४८	वै	६०।०	तै	१३।१३	१	३	२४	११	मन्वादि: ३ मत्स्य जयन्ती ३ गणगौरी ३ भर भे भौमः A	मेष	६।३४	६।४०	११।९।४२।७
३०।२२	४	चं	५३।१३	२७।४९	भ	३८।२९	२१।५५	वै	९।१	वणि	१९।५९	२	४	२५	१२	भ १९।५९(१४।३१) उ. ५३।१३ (२७।४९) या B	वृ (२८।४१)	६।३२	६।४१	११।१०।४१।३०
३०।२७	५	मं	५९।१०	३०।११	कृ	४५।५०	२४।५१	वि	३।३०	बव	२६।१९	३	५	२६	१३	कल्पादि: ५ रामराज्योत्सवः ५ पश्चिमेअस्तो बुधः १४।१९(१२।११)	वृष	६।३१	६।४२	११।११।४०।५३
३०।३२	६	बु	६०।००	उदयान्त	रो	५२।१०	२७।२२	प्री	५।२६	कौ	३१।४४	४	६	२७	१४		वृष	६।३०	६।४३	११।१२।४०।१५
३०।३८	६	बृ	४।०	८।४	मृ	५७।६	२९।१८	आ	६।२९	तै	४।०	५	७	२८	१५	श्रव भे गुरुः १४।० (१२।४)	मि:(१६।२५)	६।२८	६।४४	११।१३।३९।३३
३०।४४	७	शु	७।११	९।२०	आर्द्रा	६०।००	उदयान्त	सौ	६।१९	वणि	७।११	६	८	२९	१६	भ ७।११(९।२०) उ. ३७।५०(२१।३५) या	मिथुन	६।२७	६।४४	११।१४।३८।४९
३०।४९	८	श	८।३०	९।४९	आर्द्रा	०।१६	६।३१	शो	४।४२	बव	८।३०	७	९	३०	१७	राम ९ व्र स्मार्तानां श्री दुर्गा ८ मनसा ८ मेला बाहु (जम्मु) C	क (२४।५५)	६।२५	६।४५	११।१५।३८।२
३०।५४	९	सू	७।४२	९।२९	पुन	१।२१	६।५६	अति	१।२६	कौ	७।४२	८	१०	३१	१८	श्री राम ९ व्र वैष्णवानां यो ६४ पूजा वासन्तिक नवरात्र समाप्ति D	कर्क	६।२४	६।४६	११।१६।३७।१५
३०।५८	१०	चं	४।४४	८।१७	पु	०।१९	६।३१	धृ	४९।४२	ग	४।४४	९	११	अ	१९	भ. ३१।१२(१८।५२) उ. ५७।४०(२९।२७) या E	सि (२१।१९)	६।२३	६।४६	११।१७।३६।२६
तिथिक्षयः	११	चं	५७।४०	२९।२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३१।३	१२	मं	५३।१०	२७।३७	म	५२।३८	२७।२४	शू	४१।५५	बव	२६।४२	१०	१२	२	२०	कामदा ११ व्र पश्चिमेअस्त शुक्रः ४१।३४(२२।५९)	सिंह	६।२१	६।४७	११।१८।३५।३४
३१।८	१३	बु	४५।१२	२४।२५	पूफा	४६।३५	२४।५८	गं	३२।४४	कौ	१९।५०	११	१३	३	२१	प्रदोष १३ व्र रेवती भे बुधः ४३।१०(२३।३२)	सिंह	६।२०	६।४८	११।१९।३४।४१
३१।१३	१४	बृ	३६।१७	२०।५०	उफा	३९।३७	२२।१०	वृ	२२।४३	गर	१०।५१	१२	१४	४	२२	क ३६।१७(२०।५०) उ	क (७।८)	६।१९	६।४८	११।२०।३०।४६
३१।१८	१५	शु	२६।५२	१७।३	ह	३२।१०	१९।१०	ध्रु	१२।१०	वि	१।३८	१३	१५	५	२३	भ १।३८(६।५७) या सत्य १५ व्र. मन्वादि १५ वैशाखस्नानारम्भः	तु २९।४१	६।१८	६।४९	११।२१।३२।४८

A ४६।२५(२५।८) उभाभेसूर्यः १८।१(१३।४६) Bवक्री बुधः ४८।४०(२६।०) C अशोक ८ रेभेशुक्रः १२।४६(११।३१) शुक्रवार्धक्यम् ४१।३४(२२।५९) D रेवतीभेसूर्यः २।४५(७।३०) E वाल्तुपूजा अप्रैल ४

चै शु ८ रात्री श्रीष्टम् १३।५७ (भा.स्टै.टा. १२।०) अयनांशाः २३।३८।५०

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	०	११	९	११	७	०	६
१५	१७	२३	१७	२३	४	२६	२६
५१	१४	१५	०	११	३	४९	४९
५०	३८	२१	३८	१७	२४	५२	५२
५९	४३	३८	१०	३६	१	३	३
१५	०	७	१८	१	५५	११	११
	मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उभा	भ	रे	श्र	रे	उनु	कृ	वि
४	२	८	३	२	१	१	३

कु ८

रा मं १ | सू बु १२ शु | ११ | वृ १० | २ | ९ | ३ | बृ | चं ६ | ४ | ८ | ५ | ७ के

चैत्र शुचिचर्याः चैत्र मास भर में दधि दुग्ध घृत मिष्टान्न त्यागकर हविष्य पदार्थ सेवी होकर एक वंश पात्र में उपर्युक्त वस्तुओं सहित युग्म वस्त्र दान देने से कल्याणपद प्राप्ति हो। चै.शु. १ वत्सरारम्भ में प्रतिपदा सूर्योदय व्यापिनी ग्राह्य है। दो दिन होने पर प्रथम ग्रहण करें। मलमास में भी इसी का ग्रहण करें। इस दिन तैलाभ्यंग से नरक से मुक्ति एवं आरोग्य प्राप्ति होती है। निंबपत्र प्राशन तथा वर्षफल श्रुति का विधान लिखा है। पञ्चांग फल से विष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं। ब्रह्मध्वज पूजन से गृहसुख पूर्ति होती है। सायं व्यापिनी प्रतिपदा के दिन आरोग्य व्रत या विद्याव्रत करना चाहिए। चै.शु. ३ मध्याह्न व्यापिनी तृतीया में गौरीशंकर पूजा से स्त्री बालवैधव्य दोष से मुक्त हो एवं जन्म जन्मान्तर सौभाग्य सन्तति सुख प्राप्ति हो। इसी दिन अरुन्धती व्रत भी करना स्त्रियों के लिए सौभाग्य प्रद लिखा है, चै.शु ८ भवान्युत्पत्तिः के दिन भवानी का दर्शन एवं आठ अशोक कलिका प्राशन करें। मंत्रः त्वामशोक नराधिष्ठ मधुमास समुद्भव, पिबामि शोकसंतप्तो मामशोकं सदाकुरु।। चैशु-९—मध्याह्न व्यापिनी दशमी युक्त ग्रहण करें। दो दिन होतो पर दिन में व्रत विहित है। इस दिन भगवान् श्रीराम स्वर्ण। प्रतिमादि में प्राण प्रतिष्ठापूर्वक षोडशोपचार से पूजा करें। रामनवमी पुनर्वसुयुत हो तो अति पुण्यप्रदा होती है।

अयनांशाः २३।३८।५१ चैत्र शुक्ल १५ भृगौश्रीष्टम् (१४।१५) (भा.स्टै.टा.)

कु १५

मं रा १ | सू बु १२ शु | ११ | १० बृ | २ | ३ | ९ | श ८ | ४ | ६ चं | ५ | ७ के

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	०	११	९	११	७	०	६
२१	२१	१८	१८	१९	३	२६	२६
४६	४१	४५	०	३६	४८	३०	३०
५०	४१	४२	३७	५६	२६	४८	४८
५९	४२	४७	१०	२३	२	३	३
३	४२	४६	६	२	१२	११	११
	मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
रे	भ	रे	श्र	रे	अनु	भ	चि
२	३	१	३	१	१	४	७

ताभसलक्षणः इस पक्ष में साधारण आँधी तूफान एवं कहीं कहीं खण्ड वृष्टिः एवं बूँदाबाँदी हो। मार्च २७, अप्रैल १, ५ में मन्द वृष्टि योग है।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (६ अप्रैल से २० अप्रैल सन् १९८५ ई तक) उ.अ.उ.गो. ग्रीष्मर्तु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ वैशाख कृष्णपक्ष:—(२)

तारिख — हर्षण ५१।१७ (२६।४६)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	मु० ज.उ	रा० चैत्र	अं० अप्रैल	हि० चैत्र	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्र वारः	जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा० सू. उ.	सू. अ.	सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.
३१।२३	१	श	१७।२६	१३।१५	चि	२४।४५	१४।१६	व्या	१।३२	कौ	१७।२६	१४	१६	६	२४	अश्वत्थ पूजा पूर्वोदितः शुक्र ४७।२९ (२५।१७)	तुला	६।१६	६।५०	११।२२।३१।४७
३१।२७	२	सू	८।२०	९।३५	स्वा	१७।४३	१३।२०	वज्र	४९।४	ग	८।२०	१५	१७	७	२५	भ. ३४।६ (१९।५३) उ. ५९।२० (२९।५२) या A	वृ (२९।२७)	६।१५	६।५०	११।२३।३०।४६
३१।३२	३	चं	०।२	६।१५	वि	११।३३	१०।५१	सि	३६।५६	वि	०।२	१६	१८	८	२६	संकट ४ व्र. चन्द्रोदयः ४०।२८ (२२।२५)	वृश्चिक	६।१४	६।५१	११।२४।२९।४४
तिथिक्षयः	४	चं.	५१।५२	२६।५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		० ० ०	०	०	०
३१।३८	५	मं	४७।४३	२५।१७	अनु	६।४६	८।५४	व्य	२४।१८	कौ	२०।६	१७	१९	९	२७	शुक्रवाल्यत्वसमाप्तिः ४७।२९ (२५।१७)	वृश्चिक	६।१२	६।५२	११।२५।२८।३६
३१।४३	६	बु	४३।९	२३।२७	ज्ये	३।४९	७।४२	वरि	१७।४२	ग	१५।२३	१८	२०	१०	२८	भ ४३।९(२५।१७) उ. उभाभे वक्री शुक्र ०।४१(६।२८)	ध ७।४३	६।११	६।५३	११।२६।२७।२९
३१।४८	७	वृ	४०।३२	२२।२३	मू	१।२०	६।४२	प	११।५०	वि	११।३०	१९	२१	११	२९	भ ११।३०(१०।४६) या. पूर्वोदितः बुधः १७।२७(१३।२२)	धनु	६।१०	६।५३	११।२६।२७।२९
३१।५२	८	शु	४०।३	२२।१०	पूषा	१।२०	६।४१	शि	७।५८	वा	१०।६	२०	२२	१२	३०	कृ.भे भौमः २९।४२ (१८।२)	म १२।४८	६।९	६।५४	११।२८।२५।८
३१।५७	९	श	४१।१४	२२।३८	उषा	३।६	७।२२	सि	५।३०	तै	१०।२८	२१	२३	१३	वै	सं. अश्वि मेषे चार्कः ३४।०(१७।४२) मु. ३० पुण्यं मध्याह्नोत्तरम्	मकर	६।८	६।५५	११।२९।२३।५५
३२।२	१०	सू	४४।२	२३।४४	श्र	६।२७	८।४२	सा	४।१८	वणि	१२।२८	२२	२४	१४	२	भ. १२।२८ (११।६) उ. ४४।२ (२३।४४) या B	कु २१।३६	६।७	६।५५	०।०।२२।४१
३२।७	११	चं	४८।१०	२५।२१	ध	११।२१	१०।३७	शु	४।२१	बव	१६।१	२३	२५	१५	३	अगस्त्यास्तः ११।५० (१०।४९) वरुथिनी ११ व्र. स्मार्त्त C	कुम्भ	६।५	६।५६	०।१।२१।२१
३२।११	१२	मं	५३।१९	२७।२४	श	१७।१९	१२।५९	शु	५।१६	कौ	२०।३९	२४	२६	१६	४	वरुथिनी ११ व्र. निम्बार्काणाम्	कुम्भ	६।४	६।५७	०।२।२०।२
३२।१६	१३	बु	५९।१०	२९।४३	पूभा	२४।९	१४।४२	ब्र	६।५६	गर	२६।१२	२५	२७	१७	५	भ ५९।१० (२९।४२) उ	मी ९।१०	६।३	६।५८	०।३।१८।४१
३२।२१	१४	वृ	६०।०० उदयान्त		उभा	३१।३५	१८।४०	ऐं	९।६	वि	३२।२०	२६	२८	१८	६	भ ३२।२० (१८।५८) या मार्गीबुधः २।३ (६।२७)	मीन	६।२	६।५८	०।४।१७।१८
३२।२५	१४	शु	५।३६	८।१५	रे	३९।२२	२१।४६	वै	११।३८	श	५।३६	२७	२९	१९	७	पंचक समाप्तिः ३९।२२(२१।४६)	मे. २१।४६	६।१	६।५९	०।५।१५।५३
३२।३०	३०	श	१२।१०	१०।५२	अश्वि	४७।१३	२४।५३	वि	१४।१८	ना	१२।१०	२८	३०	२०	८	सायनं वृषेअर्कः ७।४५ (९।३) ग्रीष्मारम्भः	मेष	६।०	७।०	०।६।१४।२६

A उभाभे वक्री बुधः ५६।४३(२८।५६)   B पंचक प्रा. ३८।४२(२१।३६) वक्री विशाभे शनिः ३९।३०(२१।५५)   C वैष्णवानाम् श्री बल्लाभाचार्य जयंन्ती ११

वैशाख कृष्ण ८ भृगौ श्रीष्टम् १४।३७(१२।०) मध्याह्न   अयनांशाः २३।३८।५१

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
११	०	११	९	११	७	०	६
२८	२६	१४	१९	१५	३	२६	२६
३९	२९	८	६	३४	२७	८	८
२८	२५	५७	९	४०	५५	३२	३२
५८	४१	२२	८	२८	२	३	३
५०	५४	५५	१८	१८	५४	११	११
	मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रे	भ	उभा	श्र	उभा	अनु	भर	वि
४	४	४	३	४	१	४	२

कु० ८

मं रा १ | सू शु १२ बु | ११ | १० वृ | २ | ३ | चं ९ | ४ | ६ | ५ | ८ श | ७ के

वैशाख परिचर्या: चै. शु. पूर्णिमा या मेष सक्रान्ति से वैशाख स्नानारम्भ पाप नाशार्थ किया जाता है। समग्र वैशाख में स्नान में असमर्थ जन केवल त्रयोदशी से अमा तक तीन दिन में ही पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। स्नान संकल्प:—अद्य वाङ् मन: काय जन्या शेषं पापक्षय पूर्वक विष्णु प्रीत्यर्थ वैशाख स्नानमहं करिष्ये। प्रार्थना:—वैशाख सकलं मासं मेष संक्रमणे रवे:। प्रात: सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन:।। तत्पश्चात् पितृतर्पण अश्वत्थ तर्पण एवं अश्वत्थ परिक्रमा विहित है। विष्णु की त्रिकाल पूजा से पाप क्षय माना जाता है। वैशाख में कांस्य पात्र में भोजन, माँस, मसूर, चनक, कोद्रव इन पाँच वस्तुओं का सेवन वर्जित है। एवं पंखा, जूता, वस्त्र, जल पूर्णघट, ऋतु फल पुष्प सहित दान करें। समर्थवान प्रपा (छबील) लगवाए। प्रपादान मंत्र:—प्रपेयं सर्वसामान्या भूतेभ्य: प्रतिपादिता। एषधर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मक:। अस्य प्रदानात् तृप्यन्तु पितृमातामहादय:।

वायुलक्षण: अप्रैल ७, ९, १३, १९ में बादल चाल एवं बूँदा बाँदी भी हो।

कु० ३०

मं २ | रा | सू १ च | शु बु १२ | ११ | ३ | वृ १० | ४ | ५ | ७ के | ९ | ६ | ८ श

अयनांशाः २३।३८।५३   **वैशाख कृ. ३० शनौ श्रीष्टम् १५।०(१२।०) मध्याह्न**

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
०	१	११	९	११	७	०	६
६	२	१३	२०	१२	२	२५	२५
२९	६	२९	१२	४९	५९	४३	४३
५	४०	१०	५	४५	५८	६	६
५८	४२	१७	८	१०	४	३	३
३३	३०	४७	३	१०	४	११	११
	मा	मा	मा	व	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि	कृ	उभा	श्र	उभा	वि	भ	वि
२	२	४	४	३	४	४	२

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२१ अप्रैल से ४ मई सन् १९८५ ई तक) उत्तरायण दक्षिण गोल ग्रीष्मर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ वैशाख शुक्लपक्षः—(३)

तारिख — मु० रा० अं० हि०   चित्रा ५३।४१ (२७।१५) ध्रुव ५७।५१ (२८।५७)   जम्बू नगरे भारतीयस्टैं०टा०   सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	ई.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	रव्यंश वैशाख	अप्रैल	वैशाख	विवरण में घण्टादि (घा० स्टै० टा०) आनन्द	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३२।३४	१	सु	१८।४४	१३।२८	भ	५४।५७	२७।५७	प्री	१६।५९.	ब	१४।४४	२९	वै २१	९	चन्द्र दर्शनम् मु. १५	मेष	५।५८	७।०	०।७।१२।५५
३२।४०	२	चं	२४।५५	१५।११	कृ	६०।०	उदयास्त	आ	१७।२२	कौ	२४।५५	शा २	२२	१०		वृ १०।४१	५।५७	७।१	०।८।१९।१५
३२।४४	३	मं	३०।३०	१८।८	कृ	२।१०	६।४८	सौ	२१।१९	गर	३०।३०	२	२३	११	त्रैता युगादि ३ कल्पादि ३ श्री परशु राम जन्ती ३ अक्षय ३ A	वृष	५।५६	७।२	०।९।१।५३
३२।४८	४	बु	३५।११	१९।५९	रो	८।४१	१२।४	शो	२२।३९	वणि	३।१	३	२४	१२	मं ३।९(७।८) उ. ३५।११(१९।५९) या सूरदास जयन्ती ४	मि २२।३२	५।५५	७।३	०।१०।८।१७
३२।५३	५	बृ	३८।३३	२१।२०	मृ	१४।४	११।३२	अति	२३।१	ब	७।४	४	२५	१३	आद्य शंकराचार्य जयन्ती ५ मार्गी शुक्रः	मिथुन	५।५४	७।३	०।११।६।४२
३२।५७	६	शु	४०।२९	२२।५	आर्द्रा	१८।५	१३।७	सु	१२।१८	कौ	७।४४	५	२६	१४	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती ६ रेभेबुधः ४३।५४(२३।२७)	मिथुन	५।५३	७।४	०।१२।५।३
३३।१	७	श	४०।४३	२२।९	पुन	२०।३४	१४।६	धृ	२०।२०	ग	१०।४१	६	२७	१५	म. ४०।४३(२२।९) उ. गंगा ७ भरणेसूर्यः १७।४(१२।४२)	क ७।५५	५।५२	७।५	०।१३।३।२३
३३।७	८	सू	३९।१०	२१।३०	पु	२१।२०	१४।२२	शू	१६।४९	वि	१०।१२	७	२८	१६	म. १०।१२ (९।५५) या.	कर्क	५।५०	७।६	०।१४।१।३९
३३।११	९	चं	३५।४२	२०।७	श्ले	२०।१३	१३।५५	गं.	१२।६	बा	७।४०	८	२९	१७	सीता जयन्ती ९	सि १३।५५	५।५०	७।६	०।१४।५९।५८
३३।१५	१०	मं	३०।३३	१८।२	म	१७।२२	१२।४६	वृ	५।४८	तै	३।२१	९	३०	१८	म. ५६।४९(२८।३३) उ.	सिंह	५।४९	७।७	०।१५।५८।१३
३३।२०	११	बु	२३।५८	१५।२३	पूफ	१३।१	११।१	व्या	४९।३२	वि	२३।५८	१०	मई ११	१९	म. २३।५८(१५।२३) या. मोहिनी ११ व. ग्रहणशूलारम्भ B	क १६।२९	५।४८	७।८	०।१६।५६।२५
३३।२३	१२	बृ	१६।१०	१२।१५	उफ	७।२५	८।४८	ह	३९।४९	बा	१६।१०	११	२	२०	प्रदोष १२ व	कन्या	५।४७	७।८	०।१७।५४।३७
३३।२७	१३	शु	७।२९	८।४६	ह	०।४१	६।३५	वज	२९।४१	तै	७।२९	१२	३	२१	म. ५८।२९(२१।९) उ. श्री नृसिंह जयन्ती १४ व.	तु १६।४२	५।४६	७।९	०।१८।५२।४५
तिथिक्षयः	१४	शु	५८।२९	२१।९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०		०
३३।३२	१५	श	४९।५	२५।२३	स्वा	४६।३३	२४।१२	सि.	१९।१९	वि	२३।४१	१३	४	२२	म. २३।४१(१५।१४) या. श्रीसत्य १५ व. कूर्म जयन्ती १५C	तुला	५।४५	७।१०	०।१९।५०।५३

A शिवाजी जयन्ती ३   B मई ५ रोभे भौमः ३५।५०(२०।८)   C वैशाख स्नान समाप्तिः खग्रास चन्द्र ग्रहणम्

वैशाख शुक्ल ८ रवौ श्रीष्टम् १५।२५(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३८।५४

कु ८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
०	१	११	९	११	७	०	६
१४	७	१७	२१	१२	२	२५	२५
१६	४१	४८	९	३३	२७	१७	१७
३८	२४	५३	५१	५२	५४	४०	४०
५८	४१	४९	६	८	४	३	३
१९	४३	४३	४५	३५	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
भ	कृ	रे	श्र	उभ	वि	भ	वि
१	४	१	४	३	४	४	२

वैशाखशुचिचर्याः वैशाख में बसन्त पूजा विहित है। एवं प्रातःकाल पूजा के पश्चात् सूर्यास्त तक विष्णु का जलाधिवासन कराकर रात्रि में अधिवासित जल से सपरिवार मार्जन करने से वर्ष तक रोगादि का भय न हो। वै.शु. ३ तिथि कल्पादि युगादि एवं अक्षयतृतीया के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन समुद्र स्नान से महाफल प्राप्ति होती है अथवा तीर्थस्नान पितृ तर्पण जल पूर्ण कुम्भदान मंत्रः—गन्धोदक तिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम्। पितृभ्यः संप्रदास्यामि ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु।। परशुराम जयन्ती ३—मध्याह्न व्यापिनी तृतीया में भगवान परशु राम जी की षोडशोपचार पूजोपरान्त अर्ध्यदान मंत्रः—ॐ जमदग्निः सुतोवीर क्षत्रियान्तकरः प्रभुः। गृहाणार्ध्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। इस दिन व्रत करने से पुण्य प्राप्ति कही है। वै. शु. ७ में गंगोत्पत्ति मध्याह्न व्यापिनी सप्तमी में गंगा पूजा करें। दो दिन हो तो पूर्वयुत ग्रहण करें। इस दिन स्त्रियाँ गंगा व्रत एवं सहस्रघट दान करें तो पितृमातृ एवं पति के कुल में सात पुरुषों का उद्धार लिखा है। वै. शु. १४ नृसिह चतुर्दशी सायं व्यापिनी होने पर षोडशोपचार द्वारा पूजा के पश्चात् अर्ध्यदान मंत्रः—परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी। गृहाणार्ध्यंमयादत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पतेः।। पूर्व विद्धा पूर्णिमा के दिन कूर्म जयन्ती के दिन व्रत करके कूर्म भगवान की विधिवत पूजा के पश्चात् पाँच या सात घड़ों में स्वर्ण तिलदान करें। चन्द्रग्रहण में चन्द्रविम्बदान से ग्रहदोष दूर होता है। **नाभसलक्षणः** इस पक्ष में आँधी तूफान के साथ वायु चक्र अधिक रहे। कहीं कहीं खण्ड वृष्टि सम्भव है। अप्रैल २४, २८ मई ३ में स्वल्प वृष्टि हो।

अयनांशाः २३।३८।५४ वैशाख शुक्ल १५ शनौ श्रीष्टंम् १५।३७(१२।०) मध्याह्न

कु १५

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
०	१	११	९	११	७	०	६
२०	११	२३	२१	१३	२	२४	२४
६	५०	३३	४७	५७	२	५८	५८
२	३	३७	३८	१२	५७	३५	३५
५८	४१	६६	५	२०	४	३	३
९	१८	४५	५५	३५	१८	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
भ	रो	रे	श्र	उभ	वि	भ	वि
३	१	३	४	४	४	४	२

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (५ मई से १९ मई सन् १९८५ ई तक) उत्तरायण उत्तर गोल ग्रीष्मर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः—(४)

तारीख मु० रा० अं० हि० — घटीमान् ५९।२६ (२९।३०) — जम्मू नगरे भारतीयस्टै०टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	रमजान	वैशाख	मई	वैशाख	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३३।३६	१	सू	४०।१०	२१।४८	वि	३९।३८	२१।३५	व्य	९।१२	बा	१४।३५	१४	१५	५	२३		वृ १६।१६	५।४४	७।१०	०।२०।४९।०
३३।४०	२	चं	३१।५६	१८।३०	अनु	३३।२५	१९।५	प	५०।३	तै	५।५७	१५	१६	६	२४	भ ५८।१२ (२९।०) उ	वृश्चिक	५।४३	७।११	०।२१।४७।४
३३।४४	३	मं	२४।४७	१५।३७	ज्ये	२८।१८	१७।२	शि	४१।५१	वि	२४।४७	१६	१७	७	२५	भ २४।४७(१५।३७) या. संकष्ट ४ व्र. चन्द्रोदयः ४१।५९(२२।३०)	ध १७।२	५।४२	७।१२	०।२२।४५।६
३३।४८	४	बु	१९।५	१३।१९	मू	२४।४१	१५।३३	सि	३४।५६	बा	१९।५	१७	१८	८	२६		धनुः	५।४१	७।१२	०।२३।४३।६
३३।५३	५	बृ	१५।८	११।४३	पूषा	२२।४८	१४।४७	सा	२९।२९	तै	१५।८	१८	१९	९	२७	अश्विमेषे च बुधः २४।३१(१९।२८)	म २०।४३	५।४०	७।१३	०।२४।४१।६
३३।५६	६	शु	१३।०	१०।५२	उषा	२२।४५	१४।४६	शु	२५।३०	वणि	१३।०	१९	२०	१०	२८	भ १३।०(१०।५२) उ. ४२।५७(२२।४६) या. A	मकर	५।४०	७।१४	०।२५।३९।७
३४।०	७	श	१२।५४	१०।४९	श्र	२४।४१	१५।३२	शु	२३।१०	बव	१२।५४	२०	२१	११	२९	पंचकारम्भः ५६।२१(२८।१२) कृत्तिः भे सूर्यः ३।३(६।५२)	कु. २८।१२	५।३९	७।१५	०।२६।३७।२
३४।३	८	सू	१४।४३	११।३२	ध	२८।२८	१७।२	ब्र	२२।१४	कौ	१४।४३	२१	२२	१२	३०		कुम्भ	५।३८	७।१५	०।२७।३४।५७
३४।७	९	चं	१८।१७	१२।५६	शत	३३।५४	१९।११	ऐं	२२।४७	गर	१८।१७	२२	२३	१३	३१	भ ५०।४६(२५।५५) उ	कुम्भ	५।३७	७।१६	०।२८।३२।४९
३४।११	१०	मं	२३।१६	१४।५५	पूफा	४०।३५	२१।५०	वै	२४।२०	वि	२३।१६	२३	२४	१४	ज्ये	भ २३।१६(१४।५५) या. सं. वृषेऽर्कः ३०।२२(१७।४५) B	मी १५।८	५।३६	७।१७	०।२९।३०।४१
३४।१४	११	बु	२९।१०	१७।१६	उफा	४३।३	२४।४९	वि	२६।३३	बा	२९।१०	२४	२५	१५	२	अपराजिता (अपरा, अचला, भद्रकाली) ११ व्रतम्	मीन	५।३६	७।१७	१।०।२८।३४
३४।१८	१२	बृ	३५।३५	१९।४९	रे	५५।५३	२७।५६	प्री	२९।१३	कौ	२।२३	२५	२६	१६	३	पंचक समाप्तिः ५५।५३(२७।५६)	मे २७।५६	५।३५	७।१८	१।१।२६।२२
३४।२१	१३	शु	४२।८	२२।२६	अश्वि	६०।०	उदयान्तं	आ	३१।५८	गर	८।५१	२६	२७	१७	४	भ ४२।८(२२।२६) उ. सावित्रीव्रतारम्भः १३ प्रदोष व्र.	मेष	५।३५	७।१९	१।२।२४।११
३४।२४	१४	श	४८।२६	२४।५७	अश्वि	३।४८	७।६	सौ	३४।३७	वि	१५।२२	२७	२८	१८	५	भ १५।२२(११।४३) या भरणी में बुधः ३०।१७(१७।४१)	मेष	५।३४	७।२०	१।३।२१।५७
३४।२७	३०	सू	५४।६	२७।१२	भ	११।१७	१०।४	शो	३६।४९	च	२१।२२	२८	२९	१९	६	वटसावित्री व्र समाप्तिः ३०	वृ. १४।४६	५।३३	७।२०	१।४।१९।४१

A ग्रहणशूल समाप्तिः रेभे शुक्रः ४५।५९(२४।४)   B मु ३० पुण्यं मध्याह्नोत्तरम्

ज्येष्ठ कृ. रवौ धीष्टम् १५।५५(१२।०) मध्याह्न   अयनांशाः २३।३८।५६

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
०	१	०	९	११	७	०	६	
२७	१७	३	२२	१७	१	२४	२४	
५०	२०	४३	२८	२७	२७	३३	३३	
१९	६	५	६	४९	४२	९	९	
५७	४१	८६	३	३३	५	३	३	
५४	०	३०	५७	१६	६	११	११	
	मा	मा	मा	मा	व	व	व	
	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	
कृ	रो	भ	श्र	रेव	वि	भर	वि.	
१	३	२	४	१	४	४	२	

कु ८

२ मं | रा १ बु सू | १२ शु | ११ चं | ३ | ४ | १० बृ | ५ | ७ के | ९ | ६ | ८ श

अयनांशाः २३।३८।५७   ज्येष्ठ कृ. ३० रवौ धीष्टम् १६।८ (१२।०) मध्याह्न

ज्येष्ठ वविचर्याः इस मास में सूर्यलोक प्राप्त्यर्थ सुवर्ण, आ।८।, आदि का यथेष्ट ब्रह्मा बना कर षोड़शोपचार से पूजा करें। एवं जलधेनुदान से स्त्रियों के पति की आयुवृद्धि हो। ज्ये. कृ. १३ से अमा० तक तीन रात्रि मात्र न्यग्रोध वृक्ष के तले उपवास परायणा पतिव्रता स्त्री सुवर्ण वा मृन्मय सत्यवान सावित्री की प्रतिमा बनाकर फलपुष्प धूपदीप नैवेद्यादि के साथ हरिद्रा, कण्ठभूषण, केसरादि से युक्त युग्मवस्त्र वंश पात्र में रखकर विधिवत् पूजा करें। व्रतारम्भ संकल्प—मम भर्त्तुः पुत्रसहितस्यायुरारोग्यससिद्ध्यर्थं जन्मजन्मान्तरीय वैधव्यदोष निवृत्यर्थ वट सावित्री व्रतमहं करिष्ये। ओंकार पूर्विका देवि! वीणापुस्तकधारिणि!। वेदमातः! नमस्ते स्तु सौभाग्यंत्वं प्रयच्छ मे। वंशपात्र दानमन्त्रः—सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्। तीन दिन उपवास में असमर्थ स्त्री त्रयोदशी को नक्त, चतुर्दशी को अयाचित भोजन, अमावस्या को उपवास करे। तीन वर्ष मात्र सावित्रीव्रत से वैधव्य दोष नहीं होता।

कु ३०

बु १ चं रा | ३ | ४ | सू २ मं | १२ शु | ५ | ११ | बृ | ६ | ८ श | १० | ७ के | ९

सू	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
१	१	०	९	११	७	०	६
४	२२	१४	२२	२१	०	२४	२४
३५	७	३६	५३	४५	५५	१०	१०
१२	६	६	४७	५८	३९	५४	५४
५७	४१	९५	३	४१	४	३	३
४५	२	५१	०	१४	४५	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
कृ	रो	भ	श्र	रे	वि	भ	वि
३	४	१	४	२	४	४	२

नाक्षत्रलक्षण: इस पक्ष में मई ५ से शनि केतु के योग के प्रभाव से कहीं दाह, विद्युत्पात द्वारा कहीं-कहीं दुर्घटना हो। मई १०, १६ को साधारण वृष्टि योग पाया जाता है।

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः—(५)

तारिक — मु० रा० अं० हि०

ज्येष्ठ ५५।१४ (२७।३३) व्यतिपात ५५।३८(२७।४३)

जम्मूनगरे भारतीयस्टै०ग्र० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	शाकन	वैशाख	मई	ज्येष्ठ	विवरण में वण्टावि (भा० स्टै० ग्र०) आनन्द	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३४।३१	१	चं.	५८।५९	२९।९	कृ	१८।५	१२।४७	अति	३८।२७	किं	२६।३९	२९	३०	२०	७	गंगादशहरारम्भः १ अस्तोभौमः ५९।२ (२९।९)	वृष	५।३३	७।२१	१।५।१७।२६
३४।३३	२	मं.	६०।०	उदयान्त	रो	२४।८	१५।११	सु	३९।२४	बा	३१।५	३०	३१	२१	८	सायनं मिथुने अर्कः ७।२३ मृगभे भौमः २।५५ (६।४२)	मि २८।१४	५।३२	७।२१	१।६।१५।८
३४।३६	२	बु.	२।५३	६।४१	मृ	२९।६	१६।११	धृ	३९।३०	कौ	२।५३	रम	ज्ये	२२	९	रम्भा ३ व्र (सायं व्यापिनी)	मिथुन	५।३२	७।२२	१।७।१२।५०
३४।४०	३	बृ	५।४२	७।४८	आर्द्रा	३३।१	१८।४४	शू	३८।४४	ग	५।४२	२	२	२३	१०	भ ३०।४७ (१७।५०) उ लवण ३	मिथुन	५।३१	७।२३	१।८।१०।२९
३४।४३	४	शु	७।१७	८।२५	पुन	३५।४१	१९।४७	गं.	३६।५७	वि	७।१७	३	३	२४	११	भ ७।१७ (८।२५) या रोहि भे सूर्यः ५४।०(२७।६) उमोत्पत्ति ४	क १३।२४	५।३०	७।२४	१।९।८।६
३४।४५	५	श	७।३१	८।३०	पु	३७।१	२०।१९	वृ	३४।६	बा	७।३१	४	४	२५	१२	कृति भे बुधः ५७।५४ (२८।४०)	कर्क	५।३०	७।२४	१।१०।५।४५
३४।४८	६	सू	६।२५	८।४	श्ले	३७।४	२०।२०	ध्रु	३०।१२	तै	६।२५	५	५	२६	१३		सि २०।२०	५।३०	७।२४	१।११।३।२२
३४।५१	७	चं	४।४	७।७	म	३५।५०	१९।४९	व्या	२५।१७	वणि	४।४	६	६	२७	१४	भ ४।४(७।७) उ. ३२।१२(१७।५८) या कृति २ भे वृषे A	सिंह	५।२९	७।२६	१।१२।०।४५
३४।५३	८	मं	०।१९	५।३७	पूफ	३३।१५	१८।४७	ह	१९।१४	वव	०।१९	७	७	२८	१५		क २४।२७	५।२९	७।२६	१।१२।५८।३१
तिथिक्षयः	९	मं.	५५।०	२७।२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३४।५६	१०	बु	४९।११	२५।९	उफ	२९।३२	१७।१७	वज्र	१२।१४	तै	२२।२३	८	८	२९	१६	गंगादशहरा १० गंगा जयन्ती	कन्या	५।२९	७।२७	१।१३।५६।३
३४।५८	११	बृ	४२।३	२२।१८	ह	२४।४३	१५।२१	सि	४।१८	वणि	१५।४३	९	९	३०	१७	भ १४।४३(११।४५) उ.४२।३(२२।१८) या B	तु २६।१६	५।२८	७।२७	१।१४।५३।३५
३५।१	१२	शु	३४।१५	१९।१०	चि	१९।७	१३।७	वरी	५६।२६	वव	८।१३	१०	१०	३१	१८		तुला	५।२८	७।२८	१।१५।५१।६
३५।२	१३	श	२६।४	१५।५४	स्वा	१३।३	१०।४१	प	३६।५८	कौ	०।१२	११	११	जू	१९	जून ६ रोहि भे बुधः ४२।४४(१८।३४)C	वृ २६।४९	५।२८	७।२८	१।१६।४८।३६
३५।५	१४	सु	१७।४७	१२।३४	वि	६।५०	८।११	शि	२७।३१	वणि	१७।४७	१२	१२	२	२०	भ. १७।४७(१२।३४) उ ४३।४६(२२।५७) या श्रीसत्य १५ व्र.	वृश्चिक	५।२७	७।२९	१।१७।४६।३
३५।६	१५	चं.	९।४४	९।२१	अनु	०।४४	५।४५	सि	१८।१७	वव	९।४४	१३	१३	३	२१	ज्येष्ठी १५ मेला शुद्धमहादेव शुद्धि क्षेत्र चनैनी मन्वादिः १५	ध २७।३३	५।२७	७।२९	१।१८।४३।३२

A बुधः ४०।५१(४१।४९) पूर्वेअस्तोबुधः २३।१०(१४।४५) B निर्जला (भीमसेनी) ११ व्र. अश्वि भे मेषे च शुक्रः ३।३०(६।५३) C वक्रीविशा ३ तुलायां शनिः ०।५(५।३०)

ज्येष्ठ शु ८ चौथे ग्रीष्मम् १६।१८(१२।०) मध्याह्न — अयनांशाः २३।३८।५८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१	१	१	९	११	७	०	६
१३	२८	१	२३	२८	०	२३	२३
१४	१२	१०	१४	३१	१५	४२	४२
९	५०	३३	१८	९	५४	१७	१७
५७	४०	१२१	०	४९	३	३	३
३४	१५	२०	५६	१६	५७	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रो	मृ	कृ	श्र	रे	वि	भ	वि
१	२	२	४	४	४	४	२

कु. ८

ज्येष्ठशुविचर्याः ज्ये. शु. ३ पूर्व विद्धा रम्भातृतीया का व्रत नियमपूर्वक सुवर्णमय भवानी की प्रतिमा का विविधोपचार द्वारा पूजा एवं होम दानादि करने से स्त्री जन्मजन्मान्तर सधवा रहती है। ज्ये. शु. ४ तिथि को उमा की उत्पत्ति होने से उमा का विधिवत् पूजन करने से यथेष्ट सिद्धिलाभ हो। ज्ये. शु. १० गंगावतार होने से एवं दस प्रकार के दस योग (१) ज्येष्ठ, (२) शुक्ल (३) १०, (४) बुध, (५) हस्त, (६) व्यतिपात, (७) गर, (८) आनन्दयोग, (९) कन्यास्थचन्द्र, (१०) वृषस्थसूर्य होने पर इसे गंगादशहरा संज्ञा दी गई है। इसी दिन को संवत्सर का मुख माना है। इन योगों में दशमी व्यतिपात मुख्य है। अतः पार्श्ववर्ती नदी या गंगादि में स्नान दानादि के पश्चात् 'ॐ नमो भगवत्यै दश पाप हरायै गंगायै नमो नमः' मन्त्र से भगवती गंगा का पूजन करे तो दश पाप (१) पर वस्तु पर अधिकार, (२) अवैध हिंसा, (३) परस्त्रीसंगम, (४) कटुभाषण, (५) मिथ्याभाषण, (६) पिशुनता, (७) निन्दा, (८) व्यर्थभाषण, (९) अदत्तवस्तु पर अधिकार, (१०) दूसरों का बुरा सोचना, इन से उत्पन्न पाप दूर होते हैं। ज्येष्ठ ११: निर्जला या भीमसेनी का व्रत करने से भगवत्प्राप्ति लिखी है। इसदिन शर्करायुक्त जलकुम्भ दान करने से विष्णुधाम प्राप्ति हो। ज्ये. शु. १५: इसदिन शुद्धि क्षेत्र की यात्रा से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं।

अयनांशाः २३।३८।५९ — ज्येष्ठ शु १५ चन्द्रे ग्रीष्मम् १६।२३(१२।०) मध्याह्न

कु. १५

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१	२	१	९	०	६	०	६
१८	२	१३	२३	३	२९	२३	२३
५९	१४	४१	१९	३६	५०	२३	२३
१३	५३	३	१४	१७	५४	१२	१२
५७	३९	१३०	०	५३	४	३	३
२८	५४	२२	४७	१	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रो	मृ	रो	श्र	अश्वि	वि	भ	वि
३	३	२	४	२	३	४	२

नामसलक्षणः मई २५, जून १, ३ के दिन बूंदाबांदी व जलदघटा छाने के योग है

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (४ जून से १८ जून सन् १९८५ ई तक) उत्तरायण उत्तर गोल ग्रीष्मर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ आषाढ़ कृष्णपक्षः—(६)

तारिख — मु० रा० अं० हि० — शुक्ल ५४।२३ (२७।११) — जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	ई.मि.	नक्षत्र	घ.प.	ई.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	रमजान	ज्येष्ठ	जून	ज्येष्ठ	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३४।८	१	मं.	२१२०	६।२३	मू	५०।४३	२४।४४	सा	९।४०	की	२१२०	१४	१४	४	२२	धनि भे गुरुः १६।२३(११।३०) वक्री गुरुः ४६।२३(२४।०)	धनु	५।२७	७।३०	१।१९।४१।०
तिथिक्षयः	२	मं	५६।१३	२७।१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३४।११	३	बु	५०।४६	२४।४८	पूषा	४७।३२	२४।२०	शु	९।४८	वणि	२३।१६	१५	१५	५	२३	भ २३।१६(१४।४५) उ ५०।५६(२५।४९) या श्रव भे गुरुः A	धनुः	५।२६	७।३१	१।२०।३८।२४
३४।१२	४	बृ	४७।३२	२३।२०	उषा	४५।४७	२३।४९	ब्र	५६।२९	बव	१९।१०	१६	१६	६	२४	संकट ४ व्र. चन्द्रोदयः ४४।५(२३।४)	म ६।१३	५।२६	७।३१	१।२१।३५।५०
३४।१३	५	शु	४६।१६	२३।१३	श्र	४६।१८	२३।५२	ऐं	४७।४९	कौ	१६।३३	१७	१७	७	२५	मृग भे सूर्य ४८।५२(२४।५९) मृगभे बुधः ४१।४(२१।५१)	मकर	५।२६	७।३२	१।२२।३३।१५
३४।१५	६	श	४६।३८	२३।२८	ध	४८।३२	२३।४२	वै	५१।२१	ग	१६।१८	१८	१८	८	२६	भ ४६।३८(२४।५) उ पंचक १७।३९(१२।१९) उ	कु १२।१९	५।२६	७।३२	१।२३।३०।३८
३४।१६	७	र	४९।१४	२४।२४	श	५१।४५	२५।३२	वि	५७।४१	वि	१७।१३	१९	१९	९	२७	भ १७।३८(१२।२९) या आर्द्रा भे भौमः ५२।४०(२६।३०) B	कुम्भ	५।२६	७।३३	१।२४।२८।१
३४।१८	८	सो	५३।१७	२६।१४	पूभा	५६।१६	२७।२२	प्री	४५।१९	बा	२१।१०	२०	२०	१०	२८		मी २२।१४	५।२६	७।३३	१।२५।२५।२४
३४।१९	९	मं	५८।५३	२८।३६	उभा	६०।०	उद्यान्त	आ	५४।५४	तै	२५।४६	२१	२१	११	२९		मीन	५।२६	७।३३	१।२६।२२।४५
३४।१९	१०	बु	६०।०	उद्यान्त	उभा	५।२८	७।३७	सौ	५०।३३	कौ	३१।१६	२२	२२	१२	३०	भ ३१।१६(१७।५७) उ	मीन	५।२६	७।३४	१।२७।२०।५
३४।२०	१०	बृ	३।८	७।६	रे	१२।३४	१०।२८	शो	५४।३४	वि	४।८	२३	२३	१३	३१	भ ४।८(७।५) या पंचक १२।३५(१०।२८) या आर्द्रा बुधः C	मे १०।२८	५।२६	७।३४	१।२८।१७।२६
३४।२१	११	शु	११।२७	१०।१९	अश्वि	२१।६	११।४	अ.	५४।२३	बा	११।२७	२४	२४	१४	आ	योगिनी ११ व्र सं. मिथुनेअर्कः ४७।२२(२४।२३) मु. १५ पुण्य परदिने	मेष	५।२६	७।३४	१।२९।१४।५५
३४।२२	१२	श	१७।३४	१२।२८	भ	३०।३४	१६।१२	सु	५६।२९	तै	१७।३४	२५	२५	१५	२	प्रदोष १३ व्र	वृ २३।३४	५।२६	७।३५	२।०।१२।३
३४।२२	१३	र	२२।५०	१४।३४	कृ	३४।८	१९।१९	धृ	५७।१५	वणि	२२।५०	२६	२६	१६	३	भ २२।५०(१४।३४) उ ५४।५७(२७।२५) या	वृष	५।२६	७।३५	२।१।९।२१
३४।२२	१४	सो	२७।४	१६।१६	रो	४०।१२	२१।४३	शू	५८।११	श	२७।४	२७	२७	१७	४		वृष	५।२६	७।३५	२।२।६।३९
३४।२३	३०	मं.	३०।७	१७।२९	मृ	४५।४	२३।२८	गं	५७।५१	ना	३०।७	२८	२८	१८	५	पश्चिमोदितः बुधः ४६।४८(२४।९)	मि १०।३९	५।२६	७।३६	२।३।३।५५

A १६।२५(१२।०) B मृग ३ मे मिथुनेव बुध ११।५१(६।११) C ४८।५१(२४।४५) भरणी भे शुक्रः ४८।४९(२४।५८)

आषाढ़ कृष्ण ८ चन्द्रे श्रीष्टम् १६।२५(१२।०) मध्याह्न — अयनांशाः २३।३९।१०

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१	२	१	९	०	६	०	६
२५	७	२९	२३	९	२९	२३	२३
४१	२०	८	१६	५८	२३	०	०
५	५५	३४	४१	७	१०	५७	५७
५७	३९	१३२	०	५६	३	३	३
३२	२२	१५	५७	१५	१२	१२	११
	मा	मा	व	मा	व	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मृग	आर्द्रा	मृग	श्र	अश्वि	वि.	भ	वि
१	१	२	४	३	३	३	१

कु ८

३ मं | सू २ बु | शु १ रा | १२ | ४ | चं ११ | ५ | ८ | ६ | ७ के श | ९ | वृ १०

आषाढ़व्रतविचर्याः आषाढ़ में एक भक्त व्रत द्वारा धनधान्य एवं पुत्र पौत्रादि की प्राप्ति लिखी है। एवं वामन भगवान की प्रीति के लिए छत्र, जूता, नमक, आंवला दान करे वा प्रपा दान करे। जो लोग वैदिकसन्ध्या करने में असमर्थ हों उनके लिए वैष्णवसन्ध्या बराहपुराण से उद्धृत करना आवश्यक है किन्तु वैष्णव द्वारा दीक्षित होना भी अनिवार्य है। सुबह एवं शाम के समय हाथ में जलाञ्जलि लेकर सूर्यमण्डल में भगवान विष्णु का दो घड़ी तक ध्यान करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े—ॐ भवोद्भवमादि व्यक्तमद्व यमादित्यं सर्वेदेवा ब्रह्मरुद्रेन्द्रास्ताञ्च कृष्णो यथा सीद् ध्यानयोग स्थिता ते सन्ध्यासंज्ञा वासुदेवं नमन्ति वयं देवमादिमव्यंक्तरूपं कृत्वा चात्मनि देवसंस्था तथापि संसारार्थं कर्म तत्कारणमेव सन्ध्या संस्थाय नारायणाय नमो नमः।। अनेनैव तु मन्त्रेण सन्ध्यां कुर्यान्तु दीक्षिताः। इति वराहपुराणे चतुर्वर्णदीक्षाध्यायः।।

नाक्षत्रलक्षण: जून ७, १२, १८ को बादल की चाल एवं मन्दवृष्टि हो।

अयनांशाः २३।३९।११ — आषाढ़ कृष्ण ३० भौमे श्रीष्टम् १६।२५(१२।०) मध्याह्न

कु ३०

४ | सु ३ चं म बु | २ | शु रा १ | ५ | ६ | १२ | के ७ श | ८ | ९ | ११ | १० वृ

सू	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	२	२	९	०	६	०	६
३	१२	१५	२३	१७	२८	२२	२२
१९	१४	५१	३	४१	५५	३५	३५
३५	५२	२८	१३	११	५५	३१	३१
५७	३९	११८	३	६०	४	३	३
१७	४२	११	४	३	४८	११	११
	मा	मा	व	मा	व	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मृग	आर्द्रा	आर्द्रा	श्र	भर	वि.	भर	वि
३	२	३	४	२	३	३	१

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ आषाढ़ शुक्लपक्षः—(७)

तारिख — मु० रा० अं० हि० — साध्य ५२।१ (२६।१७) — जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	रमजान	ज्येष्ठ	जून	आषाढ़	विवरण में घण्टावि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३५।२४	१	बु	३१।५०	१८।१०	आर्द्रा	४८।९	२४।४२	वृ	५६।२१	कि.	१।१८	२९	२९	१९	६	चन्द्रदर्शनम् मु १५ ग्रैष्मिक नवरात्रारम्भः	मिथुन	५।२६	७।३६	२।४।१।१२
३५।२४	२	बृ	३२।१९	१८।२२	पुन	५०।३	२५।२७	ध्रु	५३।५४	वा	२।१४	स	३०	२०	७	जगन्नाथ रथ यात्रोत्सवः पुन भे बुधः २४।२(१५।३)	कं १९।१९	५।२६	७।३६	२।४।५८।२६
३५।२४	३	शु	३१।३८	१८।६	पु	५०।५१	२५।४८	व्या	५०।३३	तै	२।५	२	३१	२१	८	संकष्ट ४ व्र. सायनं कर्केअर्कः ३१।१७ आर्द्रा भे सूर्यः ४६।२२(२४।०)	कर्क	५।२७	७।३७	२।५।५५।४४
३५।२५	४	श	३०।२	१७।२८	श्ले	५०।४६	२५।४६	ह	४६।३०	वणि	०।५६	३	आ	२२	९	भ ०।५६(५।५०) उ ३०।२(१७।२८)	सिं २५।४४	५।२७	७।३७	२।६।५२।५९
३५।२५	५	सू	२७।२६	१६।२६	म	४९।४१	२४।१०	वज्र	४१।३८	वा	२७।२६	४	२	२३	१०		सिंह	५।२७	७।३७	२।७।५०।१४
३५।२५	६	चं	२३।५३	१५।२	पूफा	४७।४५	२४।३४	सि	३६।३	तै	२३।५३	५	३	२४	११		सिंह	५।२८	७।३७	२।८।४७।३०
३५।२४	७	मं	१९।३९	१३।२०	उफा	४५।८	२३।३१	व्य	२९।५४	वणि	१९।३९	६	४	२५	१२	भ. १९।३९(१३।२०) उ ४७।१०(२४।२०) या पुन ४ भे A	क ६।२०	५।२८	७।३७	२।९।४४।४४
३५।२३	८	बु	१४।४२	११।२१	ह	४१।५१	२२।१३	व	२३।११	बव	१४।४२	७	५	२६	१३	श्री दुर्गा ८ मेला जगन्नाथ गोल (ऊधमपुर)	कन्या	५।२८	७।३७	२।१०।४१।५८
३५।२३	९	बृ	९।४	९।७	चि	३७।५३	२०।३९	प	१५।५५	कौ	९।४	८	६	२७	१४	ग्रैष्मिक नवरात्र समाप्तिः ९ सारिका भवानी पुष्य भे बुधः B	तु ९।२७	५।२९	७।३८	२।११।३९।१३
३५।२२	१०	शु	२।५४	६।३९	स्वा	३३।२८	१८।५३	शि	८।१३	गर	२।५४	९	७	२८	१५	भ २९।४३(१७।२२) उ ५६।३२(२८।६) या हरिशयनी C	तुला	५।२९	७।३८	२।१२।३६।२६
तिथिक्षयः	११	शु	५६।३२	२८।६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३५।२१	१२	श	४९।३२	२५।१८	वि	२८।४६	१७।१०	सि	०।११	बव	२२।५६	१०	८	२९	१६	हरिशयनी ११ व्र वैष्णवानाम्	वृ ११।२८	५।२९	७।३८	२।१३।३३।३९
३५।२०	१३	सू	४२।४४	२२।३६	अनु	२३।५७	१५।५	शु	४३।४९	कौ	१६।५	११	९	३०	१७	प्रदोष १३ व्र आर्द्रा भे भौमः ५२।४०(२६।३०) वृषेशुक्र १९।२(१३।७)	वृश्चिक	५।३०	७।३८	२।१४।३०।५३
३५।१८	१४	चं	३६।१३	२०।१०	ज्ये	१९।२०	१३।१४	शु	३५।५३	ग	९।२५	१२	१०	जु	१८	भ ३६।१३(२०।१०) उ शिवशयनी १५ कोकिला १५ जुलाई ७	ध १३।१४	५।३०	७।३८	२।१५।२८।६
३५।१८	१५	मं	३०।२०	१७।३८	मू	१५।१४	११।३६	ब्र	२८।२७	वि	३।१०	१३	११	२	१९	भ ३।१०(६।४६) या श्रीसत्य १५ व्र. गुरु (व्यास) १५ D	धनु	५।३०	७।३८	२।१६।२५।१७

A कर्के च बुधः ५४।५०(२७।२४) B ५५।६(२७।३१) कृति भे शुक्रः ६।४८(८।१८) C ११ व्र स्मा. मन्वादिः १० + चातुर्मास्यव्रतारम्भः D आषाढ़ी १५ मन्वादिः १५ साय वायु परीक्षा

आषाढ़ शुक्ल ८ बुधे श्रीष्टम् १६।२०(१२।०) मध्याह्न् अयनांशाः २३।३९।२

अयनांशाः २३।३९।४ आषाढ़ शुक्ल १५ भौमे. श्रीष्टम् १६।१५(१२।०) मध्याह्न्

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	२	३	९	१	६	०	६
१६	२१	१०	२२	२	२८	२१	२१
४०	२७	५	९	३	१६	५१	५१
४८	४८	४८	३७	१	२८	०	०
५७	३९	८६	५	६३	२	३	३
११	४६	२४	१	१५	०	११	११
	मा	मा	व	मा	म	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा	पुन	पु	श्रव	कृ	विशा	भर	विशा
३	१	३	४	२	३	३	१

कु ८

बु ४ — सू ३ मं — २ शु — ५ — १ रा — ६ चं — १२ — के ७ — ९ — ११ — ८ — १० बृ

आषाढ़शुक्लविचर्या: देवी भागवत में नवरात्र चार प्रकार के लिखे हैं— आश्विने मधुमासे वा तपोमासे तथा शुचौ। चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात् फलदायकम्।। अर्थात् चैत्र-आषाढ़-आश्विन-माघ के शुक्ल पक्ष में नवरात्र महोत्सव शास्त्र विहित हैं "ज्योतिर्विदाभरणमेंभी मधौ शुचौमाघ इषेयुगक्रमं, सितादिरात्र्या नवरात्रिकं व्रतम्। देवी प्रसादं वशायाविशाखिलैः, कृतं चतुर्वर्गफलप्रदं युगैः।। नवरात्रों में घट स्थापन आश्लेषा पूर्वाभाद्रपद चित्रा व्यतीपात एवं वैधृति में कलश स्थापन न करके दिन के अष्टम मुहूर्त्त (अभिजित्) में कभी भी स्थापन करें तो अखिल समृद्धि प्राप्त हो। आ. शु. २ के दिन जगन्नाथ यात्रा रथोत्सव मनावें। आ. शु. ११ विष्णुशयन उत्सव के लिए पूजोपरान्त -त्वयिसुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। त्वयिप्रबुद्धे बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम्।। इसी दिन द्वादशी व पूर्णिमा को चातुर्मास्य व्रतारम्भ करना चाहिए। चातुर्मास्य में आ शु. १२ का आद्य अनुराधा नक्षत्र के प्रथम पाद का योग होने से हरिवासर माना जाता है। अतः द्वादशी और अनुराधा प्रथम पाद का योग छोड़कर एकादशी व्रतपारण करें। आ. शु. १५ के दिन व्यास भगवान् और गुरुदेव की पूजा करें।

कु १५

४ बु — सू ३ मं — २ शु — ५ — १ रा — ६ — १२ — श ७ के — ९ — ११ — ८ चं — १० बृ

सू	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	२	३	९	०	६	०	६
१०	१७	०	२२	२५	२८	२२	२२
५७	३१	३६	३६	४७	३१	१०	१०
३२	४८	३८	५३	४७	१४	५	५
५७	३९	१००	३	६२	३	३	३
१३	४६	७	५८	०	६	११	११
	मा	मा	व	मा	व	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा	आर्द्रा	पुन	श्रव	भर	विशा	भर	विशा
२	४	४	४	४	३	३	१

नाक्षत्रलक्षण: जून २१, २६, ३० दिनों में कहीं कहीं प्रचण्ड वायु के साथ बिजली की चमक के साथ वर्षा हो।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१९ जून से २ जुलाई सन् १९८५ ई तक) उत्तरायण दक्षिण गोल वर्षर्त्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ शुद्ध श्रावण कृष्णपक्षः—(७)

तारीख: मु० रा० अं० हि० — जम्मूनगरे भारतीयस्टै०य० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	शव्वाल	आषाढ	जुलाई	असाढ	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि
३५।१७	१	बु	२५।२२	१५।४०	पूषा	११।५७	१०।१८	ऐ	२१।४६	कौ	२५।२२	१४	१२	३	२०	अशून्यशयन व्र.	म १६।३	५।३१	७।३८	२।१७।२२।३२
३५।१५	२	बृ	२१।३९	१४।१२	उषा	९।५१	९।२९	वै	१६।१५	ग	२१।३९	१५	१३	४	२१	भ ५०।३६(२५।४६) उ	मकर	५।३२	७।३७	२।१८।१९।४६
३५।१४	३	शु	१९।३४	१३।२२	श्र	९।१९	९।१६	वि	११।४३	वि	१९।३४	१६	१४	५	२२	भ १९।३४(१३।२२) या संकट ४ व्र. चन्द्रोदयः A	कु २१।२५	५।३२	७।३७	२।१९।१६।५८
३५।१२	४	श	१९।१६	१३।१५	ध	१०।३१	९।४५	श्री	८।४६	बा	१९।१६	१७	१५	६	२३		कुम्भ	५।३२	७।३७	२।२०।१४।११
३५।११	५	सू	२०।४९	१३।५३	श	१३।३०	१०।५७	आ	७।१५	तै	२०।४९	१८	१६	७	२४	भ २४।१४(१५।१५) उ ५६।३९(२८।१३) या B	कुम्भ	५।३३	७।३७	२।२१।११।२५
३५।९	६	चं.	२४।१४	१५।१५	पूभा	१८।२१	१२।५३	सौ	७।११	वणि	२४।१४	१९	१७	८	२५		मी ६।२१	५।३३	७।३७	२।२२।८।३७
३५।५	७	मं.	२९।४	१७।१२	उभा	२४।३५	१५।२४	शो	८।२४	बव	२९।४	२०	१८	९	२६	रोहि भे शुक्रः ४२।१७ (२२।२९)	मीन	५।३४	७।३६	२।२३।५।५२
३५।५	८	बु	३४।५९	१९।३४	रे	३१।५४	१८।२०	अति	१०।३१	बा	१।५६	२१	१९	१०	२७	पंचक ३१।५४(१८।२०) या मन्त्रादिः ८	मे १८।२०	५।३४	७।३६	२।२४।३।४
३५।३	९	बृ	४१।१४	२२।५	अश्वि	३९।३४	२१।२५	सु	१३।१६	तै	८।५	२२	२०	११	२८		मेष	५।३५	७।३६	२।२५।०।१९
३५।२	१०	शु	४७।१९	२४।३१	भ	४७।६	२४।२६	धृ	१५।४३	वणि	१४।२०	२३	२१	१२	२९	भ १४।२०(११।१९) उ ४७।१९(२४।३१) या	मेष	५।३५	७।३६	२।२५।५७।३१
३४।५९	११	श	५२।३७	२६।३९	कृ	५३।५२	२७।९	शू	१७।५६	बव	२०।५	२४	२२	१३	३०	कामदा, कमला, कामिका ११ व्र स्मार्तानाम्	वृ ७।९	५।३६	७।३६	२।२६।५४।४७
३४।५६	१२	सू	५६।३८	२८।१६	रो	५९।२३	२९।२२	गं.	१९।२१	कौ	२४।४७	२५	२३	१४	३१	कामदा ११ व्र वैष्णवानिम्बार्काणाम्	वृष	५।३७	७।३५	२।२७।५२।३
३४।५५	१३	चं.	५९।७	२९।१६	मृ	६०।०	उदयान्तं	वृ	१९।४२	गर	२८।४	२६	२४	१५	३२	भ ५९।७(२९।१६) उ प्रदोष १३ व्र श्रावणसोम व्र C	मि १८।१५	५।३७	७।३५	२।२८।४९।१७
३४।५१	१४	मं.	६०।०	उदयान्तं	मृ	३।२३	६।५९	ध्रु	१८।४८	वि	२९।४४	२७	२५	१६	श्रा	भ २९।४४(१७।३२) या सं. कर्केअर्कः १४।६(११।१७) D	मिथुन	५।३८	७।३५	२।२९।४६।३२
३४।४८	१४	बु	०।२	५।३९	आर्द्रा	५।५३	८।०	व्या	१६।४२	श	२९।५६	२८	२६	१७	२	मन्वादिः ३०	क २६।२४	५।३९	७।३४	३।०।४३।४९
तिथिक्षयः	३०	बृ	५९।३१	२९।२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०

A ४१।३८(२२।११) पंचक ३९।४८(२१।२५) उ पुन भे सूर्यः ४७।७(२३।३५) B श्रावण सोमव्रतारम्भः श्लेषे बुधः ३।४८(७।४) C कलियुगादिः १३ कर्के भौमः १९।४२(१३।३०) D मु. १५ पुण्यं १४।०६ यावत्

शुद्ध श्रावण कृष्ण ८ बुधे श्रीष्टम् १६।५(१२।१०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।५

अयनांशाः २३।३९।६ श्रावण कृ. ३० बुधे श्रीष्टम् १६।८(१२।१०) मध्याह्न

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
२	२	३	३	१	९	६	०
२४	२६	२०	२१	१०	२८	२१	२९
१८	४१	३१	२४	३६	१	२४	२५
२४	३१	२६	२०	३३	२४	३४	३४
५७	३९	६६	५	६५	१	३	३
१३	१२	९	५७	१८	४४	११	११
मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
ब	उ	उ	उ	उ	क	ब	ब
पुन	पुन	श्ले	श्ले	रो	वि	भ	वि
२	३	२	४	१	३	१	१

कृ. ८ — बु ४, शु २, सू, मं, चं, १ रा, ५, ६, १२, के ७ श, ८, ९, ११, १० बृ

शुद्ध श्रावणव्रतविचारः श्रावण मास में सोमवार का उपवास वा नक्त व्रत के साथ ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करता हुआ अभीष्ट सिद्धि के लिए शिव पार्वती की प्रतिमा का विधिवत पूजन करने से अनपत्य को पुत्र, दरिद्र को धन एवं विद्यार्थी को विद्या प्राप्ति होवे। इसी मास में विष्णु शिवादि देवताओं का अभिषेक करे शाश्वत पद प्राप्ति हो। श्रावण-भाद्रपद में सभी नदियों का रजस्वला होना शास्त्रों में लिखा है। इसलिए कर्क वा सिंहस्थ सूर्य में नदी स्नान निषिद्ध है। इसके अतिरिक्त श्रावणी (उपाकर्म) प्रेत स्नान ग्रहण स्नान एवं नदीतीर वासी लोगों के लिए रजस्वला नदी में स्नान करने का दोष नहीं लगता। श्रा. कृ. ८ के दिन दशफल व्रत का विधान है। इस दिन से लेकर दस दिन तक यह व्रत चलता है। दशगुणित सूत्र की डोरी बनाकर प्राण प्रतिष्ठा एवं पूजा दस दिन तक मौनपूर्वक व्रत करने से एवं आरम्भ मध्य समाप्ति के दिनों में होम करता हुआ दस वर्ष तक व्रतधारण के पश्चात् उद्यापन करे तो विष्णुधाम की प्राप्ति हो। चातुर्मास्य व्रतधारी व्रतों के लिए श्रावण में शाक, माघ में दधि, आश्विन में दुग्ध, कार्तिक में दाल खाना वर्जित है।

कृ. ३० — ५, सू, ३ चं, शु, ६, मं, बु ४, ७, के श, १, रा, १०, ८, १२, ९, बृ, ११

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
३	३	३	१	९	६	०	६
०	१	२७	२०	१८	२७	२१	२१
५८	१५	१४	४०	१६	५३	३	३
५८	३३	४७	४	५२	४३	१८	१८
५७	३९	४४	६	६५	१	३	३
१५	०	५९	५६	५७	२	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	व	व
ब	उ	उ	उ	उ	ज	ब	ब
पुन	पुन	श्ले	भ	रो	वि	भ	वि
४	४	४	४	३	३	३	१

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१८ जुलाई से ३१ जुलाई सन् १९८५ ई तक) वधिषायन उत्तरगोल वर्षर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ अधिश्रावण शुक्लपक्षः—(९)

तारिख — मु० रा० अं० हि०

उग्र ५७।३१ (२८।४२) व्यतिपात ५८।२८ (२९।३)
ऐन्द्र ५७।२२ (२८।४२)

जम्मू नगरे भारतीयस्टै०टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	शव्वाल	आषढ़	जुलाई	श्रावण	विवरण में घण्टावि (भा० स्टै० टा०) आनन्द	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ	रा. अं. क. वि.
३४।४६	१	बु	५७।३७	२८।४२	पुन	७।१	८।२८	ह	११।३०	कि	२८।४३	२९	२७	१८	३	पुरुषोत्तममासारम्भः	कर्क	५।३९	७।३४	३।१।४१।४
३४।४३	२	गु	५४।३९	२७।३२	पु	६।४६	८।२३	वज्र	९।१२	वा	२६।१४	३०	२८	१९	४	चन्द्रदर्शनम् मु १५ पुष्य भे सूर्यः ४३।३७(२३।७)	कर्क	५।४०	७।३३	३।२।३८।२१
३४।४१	३	शु	५०।५१	२६।१	श्ले	५।३३	७।५४	सि	४।८	तै	२२।५०	जिल	२९	२०	५	पुष्यभे भौमः २७।१६(१६।३५)	सि ७।५४	५।४०	७।३३	३।३।३५।३७
३४।३८	४	सू	४६।३७	२४।१६	म	३।३०	७।५	वरी	५२।११	वणि	१८।४१	२	३०	२१	६	भ १८।४१(१३।१०) उ ४६।२७(२४।१६) या मघाभे बुधः A	सिंह	५।४१	७।३२	३।४।३२।५६
३४।३४	५	चं	४४।३७	२२।२१	पूफा	०।५५	६।४	प	४५।३८	बव	१४।३	३	३१	२२	७	श्रावणसोम व्र. सायनं सिंहेअर्कः ५४।५४	क. ११।४८	५।४२	७।३२	३।५।३०।१४
३४।३२	६	मं.	३६।३२	२०।१९	ह	५४।४९	२७।३८	शि	३८।५३	की	९।६	४	श्रा	२३	८		कन्या	५।४२	७।३१	३।६।२७।३१
३४।२९	७	बु	३१।१५	१८।१३	चि	५१।२७	२६।१८	सि	३१।५७	गर	३।५३	५	२	२४	९	भ ३१।१५(१८।१३) उ ५८।३३(२९।८) या मार्गीशनिः B	तु १४।५८	५।४३	७।३१	३।७।२४।५१
३४।२६	८	बृ	२५।५०	१६।४	स्वा	४७।५८	२४।५५	सा	२४।५५	बव	२५।५०	६	३	२५	१०		तुला	५।४४	७।३०	३।८।२२।१२
३४।२३	९	शु	२०।२२	१३।५४	वि.	४४।३०	२३।३३	शु	१७।५१	कौ	२०।२२	७	४	२६	११		वृ १७।५३	५।४४	७।३०	३।९।१९।३३
३४।१९	१०	श	१५।३	११।४६	अनु	४१।१२	२२।१४	शु	१०।५४	ग	१५।३	८	५	२७	१२	भ ४२।२६(२२।४३) उ मिथुनेशुक्रः ४५।१३(२३।५०)	वृश्चिक	५।४५	७।२९	३।१०।१६।५३
३४।१६	११	सू	९।४९	९।४२	ज्ये	३८।०	२०।५८	ब्र	४।०	वि	९।४९	९	६	२८	१३	भ ९।४९(९।४२) या पुरुषोत्तमा ११ व्र वक्रीबुधः ३३।५(१९।१०)	ध २०।५८	५।४६	७।२८	३।११।१४।१६
३४।१३	१२	चं	४।५०	७।४२	मू	३५।१०	१९।५०	वै	५०।५७	बा	४।५०	१०	७	२९	१४	प्रदोष १३ व्र श्रावणसोम व्र	धनु	५।४६	७।२७	३।१२।११।३६
३४।८	१३	मं	०।१४	५।५३	पूषा	३२।५३	१८।५६	वि	४५।१६	तै	०।१४	११	८	३०	१५	भ ५६।२६(२७।२२) उ	म २४।४६	५।४७	७।२६	३।१३।९।०
तिथिक्षयः	१४	मं	५६।२६	२८।२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३४।५	१५	बु	५३।२९	२७।१२	उषा	३१।२६	१८।२३	प्री	३९।५८	वि	२४।४८	१२	९	३१	१६	भ २४।४८(१५।४४) या श्री सत्य १५ व्र	मकर	५।४८	७।२६	३।१४।६।२५

A ३।३०(७।५) मृगभे शक्रः ४९।४३(२५।३४) B ३५।४३(२०।१०)

अयनांशाः २३।३९।७ अधिश्रावण शुक्ल १५ बुधे श्रीष्टम् १५।३०(१२।०)

अधिश्रावण शुक्ल ८ गुरौ श्रीष्टम् १५।४०(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।७

कु ८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
३	३	४	९	१	६	०	६
८	६	१	१९	२७	२७	२०	२०
३७	२६	२१	४२	११	४९	३७	३७
१०	३३	५७	४	६	५६	५२	५२
५७	३९	११	७	६६	०	३	३
१९	३	४५	१४	१५	१५	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	पुष्य	म	श्र	मृ	वि	भ	वि
२	१	१	३	२	३	३	१

बु ५ — सू ४ मं — ३ — शु २ — ६ — चं श के ७ — रा १ — वृ १० — ८ — १२ — ९ — ११

अधिश्रावण (मलमास) शुचिचर्याः पुरुषोत्तम भगवान् हो मलमास (अधिमास) के स्वामी माने जाते हैं अतः इन्हीं के निमित्त ही व्रत दानादि शास्त्र विहित है। इस मास के आरम्भ से पूर्व शुद्ध श्रावण कृष्ण चतुर्दशी के दिन उपवास नक्त व एक भक्तव्रतों में से किसी एक का नियमपूर्वक कलश स्थापन एवं कलश के ऊपर स्वर्णमय पुरुषोत्तम भगवान् की पूजा करे। यथा सम्भव प्रतिदिन व अष्टमी द्वादशी पूर्णिमा व व्यतिपात योग में काँस्यपात्र में ३३ पूड़े, स्वर्ण, वस्त्र, रत्न, छत्र रखकर उसके साथ ही पाँव का जूता रखकर आठ वसु एकादश रुद्र, द्वादश सूर्य, प्रजापति एवं वषट्कार इन ३३ देवताओं की विधिवत पूजा के साथ उक्त पात्र का दान करें। मन्त्रः—विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपाप प्रणाशनः।

कु १५

५ बु — ३ — शु — मं ४ सू — २ — ६ — के ७ श — १ रा — वृ १० चं — ८ — १२ — ९ — ११

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
३	३	४	९	२	६	०	६
१४	१०	१	१८	३	२७	२०	२०
२१	१८	१३	५६	५७	५१	१८	१८
१५	३६	५२	३	४०	१२	४८	४८
५७	३८	१८	७	६८	०	३	३
२४	४८	३३	१२	४५	२२	११	११
	मा	व	व	मा	मा	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	पुष्य	म	श्र	मृ	वि	भ	वि
४	३	१	३	४	३	३	१

सच्छिद्रा पूप दानेन मम पापं व्यपोहतु।। इस दान का महत्त्व पृथ्वी दान के तुल्य होता है। पूड़े के एक एक छिद्र के अनुसार एक एक हज़ार वर्ष वैकुण्ठ में वास कहा है।

मासलक्षणः जुलाई १८, २५, ३१ के दिनों में विशेष वर्षा के अतिरिक्त कहीं पर जलथल एवं कहीं-कहीं सूखे से जन जीवन सन्तप्त रहे।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१ अगस्त से १६ अगस्त सन् १९८५ ई तक) उत्तरायण दक्षिण गोल वर्षर्तु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ अधिश्रावण कृष्णपक्ष:—(१०)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	तारिख मु० जिल	रा० श्रावण	अं० अगस्त	हि० श्रावण	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचार:	जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० सू. उ.	सू. अ.	सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.
३४।२	१	वृ	५१।४५	२६।३०	श्र	३१।४	१८।१४	आ	३५।४५	वा	२२।२७	१३	१०	१	१७	लोकमान्यतिलक जयन्ती अगस्त ८	मकर	५।४८	७।२५	३।१५।३।४९
३३।५८	२	शु	५१।२७	२६।२४	ध	३२।२	१८।३८	सौ	३२।३७	तै	२१।२३	१४	११	२	१८	पंचक १।२०(६।२१) उ श्लेषे सूर्य ४०।२८(२२।१०) A	कु ६।२१	५।४९	७।२४	३।१६।१।१६
३३।५५	३	श	५२।४३	२६।५५	श	३८।३१	१९।३८	शो	३०।४२	वणि	२१।५१	१५	१२	३	१९	भ २१।५१(१४।३५) उ ५२।४३(२६।५५) या श्लेषा मे B	कुम्भ	५।५०	७।२४	३।१६।५८।४३
३३।५०	४	सू	५५।४४	२८।९	पूभा	३८।३९	२१।१९	अति	३०।७	व	२३।५९	१६	१३	४	२०	संकट ४ व्र. चन्द्रोदय: ३९।२९(२१।३९)	मी १४।५०	५।५१	७।२२	३।१७।५६।११
३३।४७	५	चं	६०।०	उदयान्त	उभा	४४।२०	२३।३५	सु	३०।५०	कौ	२७।४९	१७	१४	५	२१	श्रावण सोम व्र.	मीन	५।५१	७।२२	३।१८।५३।३८
३३।४३	५	मं	०।११	५।५७	रे	५९।९	२६।२०	धृ	३२।२९	तै	०।११	१८	१५	६	२२	पंचक ५९।९(२६।२०) या	मे २६।२०	५।५२	७।२१	३।१९।५१।९
३३।३९	६	बु	५।४८	८।१२	अश्वि	५८।४२	२९।२२	शू	३४।४९	वणि	५।४८	१९	१६	७	२३	भ ५।४८(८।१२) उ ३८।५८(२१।२७) या	मेष	५।५३	७।२०	३।२०।४८।४१
३३।३६	७	वृ	१२।३	१०।४३	भ	६०।०	उदयान्त	गं	३७।२८	व	१२।३	२०	१७	८	२४		मेष	५।५३	७।१९	३।२१।४६।१०
३३।३१	८	शु	१८।१६	१३।१२	भ	६।२१	८।२६	वृ	३९।५२	कौ	१८।१६	२१	१८	९	२५		वृ १५।११	५।५४	७।१८	३।२२।४३।४४
३३।२७	९	श	२३।५४	१५।२८	कृ	१२।३३	११।१९	ध्रु	४१।४२	ग	२३।५४	२२	१९	१०	२६	भ ५६।५(२८।२०) उ श्ले मे भौम ८।२८(९।१७)	वृष	५।५४	७।१७	३।२३।४१।१६
३३।२३	१०	सू	२८।१६	१७।१४	रो	१९।३७	१३।४६	व्या	४२।२६	वि	२८।१६	२३	२०	११	२७	भ २८।१६(१७।१४) या	मि २६।४६	५।५५	७।१६	३।२४।३८।५१
३३।१८	११	चं	३०।५७	१८।१९	मृ	२४।६	१५।३५	ह	४१।४८	बा	३०।५७	२४	२१	१२	२८	श्रावण सोम व्र पुरुषोत्तमा ११ व्र.	मिथुन	५।५६	७।१५	३।२५।३६।२९
३३।१४	१२	मं	३१।४४	१८।३९	आर्द्रा	२७।४१	१७।२	वज्र	३९।४०	कौ	१।३४	२५	२२	१३	२९		मिथुन	५।५७	७।१४	३।२६।३४।६
३३।११	१३	बु	३०।४७	१८।१६	पुन	२६।५५	१६।४४	सि	३६।११	ग	१।२८	२६	२३	१४	३०	भ ३०।४७(१८।१६) उ ५९।२७(२९।२४) या पुन मे C	क १११०	५।५७	७।१३	३।२७।३१।४४
३३।५	१४	वृ	२८।८	१७।१३	पु	२४।४४	१५।५३	व्य	३१।२१	श	२८।८	२७	२४	१५	३१	भारतस्वातन्त्र्य महोत्सव:	कर्क	५।५८	७।१२	३।२८।२९।२४
३३।२	३०	शु	२४।२	१५।३६	श्ले	२१।३१	१४।३६	व	२५।२१	ना	२४।२	२८	२५	१६	भा	पुरुषोत्तममास समाप्ति: वृहत्पंचकारम्भ. स. मघामेसिंहे D	सि १५।५३	५।५९	७।११	३।२९।२७।६

A आर्द्रा मे शुक्र ३२।२(१८।३८) B कर्के च वक्री बुध: १८।३७(१३।१७) बुध: पश्चिमेअस्त: ९।३०(९।३८) C शुक्र: ११।३३(१०।३४) D चार्क: ३४।१३(१९।४०) मु. ३० पुण्य १८।१३ उ.

अधिश्रावण कृष्ण ८ शुक्रे श्रीष्टम् १६।१५(१२।०) मध्याह्न अयनांशा: २३।३९।१०

अयनांशा: २३।३९।११ अधिश्रावण कृष्ण ३० शुक्रे श्रीष्टम् १५।३२(१२।०) मध्याह्न

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
३	३	३	९	२	६	०	६
२२	१६	२५	१७	१४	२८	१९	१९
५८	५	५३	४६	१६	०	५०	५०
२१	३२	५९	४	३८	१३	११	११
५७	३८	४७	७	६८	१	३	३
३२	४६	५७	१५	१८	१५	११	११
	मा	व	व	मा	मा	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले	पुष्य	श्ले	श्र	र्धा	वि	श	स्वा
२	४	३	३	३	३	२	४

कु ८

५ सू ३ शु ६ मं ४ बु २ श चं ७ के १ रा वृ १० ८ १२ ९ ११

अधिश्रावण (मलमास) व्रतचर्या: जिस समय सूर्य मन्दता धारण कर छाया दुगुनी कर ले उसे नक्त कहते हैं। रात्रि भोजन का नाम नक्त नहीं। परन्तु पुत्रवान गृही के लिए रात्रि में नक्त करें, विधवा और सन्यासी के लिए दिन में नक्त करना लिखा है। यदि नक्त तिथि प्रदोष व्यापिनी न हो तो दिन में नक्त कर लेना उचित है। अपूप बान संकल्प:—अद्य पुरुषोत्तम मासि भगवतः प्रसाद द्वारा अनन्त लक्ष्मी पुत्र पौत्रायुरारोग्यादि प्राप्त्यर्थं भूदान जन्य फल प्राप्त्यर्थं श्री नारायण कीर्त्यर्थं एतांस्त्रयास्त्रिंशत् संख्याकसच्छिद्रापूपान् कांस्य पात्र स्थान् द्वितीय कांस्य पात्रेणाच्छादितान् स्वर्ण घृत संयुक्तान् पुरुषोत्तम देवताकान् ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। शुभ कृत्यों का विधान मलमास में वर्जित है किन्तु तीर्थ श्राद्ध, दर्शश्राद्ध, प्रेत श्राद्ध, सपिण्डी, मासिक श्राद्ध एवं नित्य कृत्य करने में कोई दोष नहीं। अशौच समाप्ति मलमास में ही कर लें। मलमास में मृत का श्राद्ध शुद्ध मास में करें, यदि उसी मास में मलमास आ जाए तो मलमास में ही करें, वार्षिक श्राद्ध मलमास में आये तो द्विरावृत्ति करके शुद्ध चतुर्दश मास में करें। अन्य वार्षिक श्राद्ध शुद्ध में ही करें।

कु ३०

५ सू ३ शु ६ ४ बु २ मं चं के ७ श १ रा वृ १० ८ १२ ९ ११

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
३	३	३	९	२	६	०	६
२९	२०	२०	१६	२२	२८	१९	१९
४१	३५	५१	५३	२३	१२	२७	२७
३३	१८	१७	५	५१	३२	५५	५५
५७	३७	२८	६	७०	१	३	३
४१	१४	८	५८	२१	५७	११	११
	मा	व	व	मा	मा	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
श्ले	श्ले	श्ले	श्र	पुन	वि	श	स्वा
४	२	२	३	१	३	२	४

नाक्षसलक्षण: अगस्त १, ६, ११, १५ इन दिनों में विशेष वर्षा के योग हैं। अन्य दिनों में भी बँदाबाँदी कहीं न कहीं होती रहेगी।

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक:१९०७ शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष:-(११)

तारिख — मु० रा० अं० हि०

विशाखा ५७।१२(२८।५६) साध्य ५५।२३(२८।१०) सौभाग्य ५९।८(२९।४५)

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	जिल्काद	श्रावण	अगस्त	भाद्र	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
३२।५७	१	श	१८।५५	१३।३३	म	२१।३१	१४।३६	प	१८।३१	व	१८।५५	२९	२६	१७	२	चन्द्र दर्शनम् मु ३०	सिंह	५।५९	७।१०	४।०।२४।४६
३२।५३	२	सू	१३।१०	११।१२	पूफा	१७।३३	१३।१	शि	११।२	कौ	१३।१०	जि	२७	१८	३		क १८।३६	६।०	७।९	४।१।२२।३०
३२।४८	३	चं	६।४५	८।४३	उफा	१३।१४	११।१९	सि	३।१६	ग	६।४५	२	२८	१९	४	भ ३३।३५(१९।३७) उ श्रावणसोम व्र. पूर्वोदितो बुध:A	कन्या	६।१	७।८	४।२।२०।१६
३२।४४	४	मं	०।२४	६।११	ह	८।५१	९।३४	शु	४७।३७	वि	०।२४	३	२९	२०	५	भ ०।२४(६।११) या नागपंचमी (द्विगर्तभिन्नदेशेषु)	तु २०।४३	६।१	७।७	४।३।१८।०
तिथिक्षय:-	५	म	५३।११	२७।४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३२।४०	६	बु	४८।१२	२५।१९	चि	४।३६	७।५३	शु	४०।१	कौ	२।१७	४	३०	२१	६	कल्कि जयन्ती ६ मार्गीबुध: ३८।३२(२१।३०)	तुला	६।२	७।६	४।४।१५।४९
३२।३५	७	बृ	४२।१३	२२।५७	स्वा	०।३९	६।१९	ब्र	३३।४४	ग	१५।२०	५	३१	२२	७	भ ४२।१३(२२।५६) उ. तुलसीदास जयन्ती ७ शीतल ७ कर्क B	वृ २३।१६	६।३	७।४	४।५।१३।३९
३२।३०	८	शु	४४।२६	२३।५१	अनु	५४।१६	२७।४६	ऐ	२५।५४	वि	१०।२	६	भा	२३	८	भ १०।२(१०।५) या मेलानयनादेवी (चिन्तपूरणी) ८ C	वृश्चिक	६।४	७।३	४।६।११।२९
३२।२५	९	श	४३।३	२३।१८	ज्ये	५१।५२	२६।५०	वै	१९।३०	वा	५।१९	७	२	२४	९		ध २६।५०	६।४	७।२	४।७।९।२२
३२।१९	१०	सू	३३।१०	१९।२१	मू	५०।६	२६।८	वि	१३।३६	तै	१।१०	८	३	२५	१०	भ ५९।२१(२९।४५) उ पुष्य भे शुक्र ३३।८(१९।२०)	धनु	६।५	७।०	४।८।७।१४
३२।१४	११	चं	२५।३२	१६।१९	पूषा	४९।०	२५।४२	प्री	८।११	वि	२५।३२	९	४	२६	११	भ २६।६(१६।३३) या पुत्रदा (पवित्र) ११ व्र.D	धनु	६।५	७।०	४।९।५।१०
३२।१०	१२	मं	२३।३८	१५।३४	उषा	४८।४०	२५।३५	आ	३।२०	वा	२३।३८	१०	५	२७	१२		म ७।३८	६।६	६।५८	४।१०।३।६
३२।६	१३	बु	२२।४	१४।५७	श्र	४९।१७	२५।५०	शो	५५।४७	तै	२२।४	११	६	२८	१३		मकर	६।७	६।५७	४।११।१।२
३२।१	१४	बृ	२१।२६	१४।४३	ध	५०।५२	२६।२९	अति	५३।१०	वणि	२१।२६	१२	७	२९	१४	भ २१।२६(१४।४३) उ ५१।३१(२६।४३) या E	कु १४।६	६।७	६।५६	४।११।५९।३
३१।५७	१५	शु	२१।५७	१४।५६	श	५३।४१	२७।३८	सु	५१।३३	ब	२१।५७	१३	८	३०	१५	हयग्रीव जयन्ती १५ रक्षाबंधन १५ रखड़ी ऋषितर्पणी श्रावणी F	कुम्भ	६।८	६।५५	४।१२।५७।४

A २६।३०(१६।३७) B शुक्र: ४३।२४(२३।२५) C सायन कन्यायामर्क: ११।३१ शरदृतु प्रारम्भ: D अमरनाथ यात्रारम्भे छड़ीपूजा E पंचक १९।५४(१४।६) उ श्री सत्य १५व्र
F मेला अमरनाथ (काश्मीर) पूफा भे सूर्य २३।४२(१५।३८) मघा भे सिंहे च भौम: ५९।५७(३०।८)

अयनांशा: २३।३९।१२

शुद्ध श्रावण शुक्ल ८ शुक्रे श्रीष्टम् १४।५०(१२।०) मध्याह्न

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
४	३	३	९	३	६	०	६
६	२५	१९	१६	०	२८	१९	१९
२६	३	५०	३	३६	२९	५	५
२३	५२	५१	१	५८	३३	३९	३९
५७	३८	२७	६	७०	२	३	३
५१	४८	४	४१	१२	१२	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
म	श्ले	श्ले	अ	पुन	चि	भ	स्वा
२	३	१	२	४	३	२	४

कु ८

शु मं बु — ६ — शा ७ के — सू ५ — ३ — ८ — २ — ९ — चं ११ — १ रा — वृ १० — १२

अयनांशा: २३।३९।१३

शुद्ध श्रावण शुक्ल पूर्णिमा श्रीष्टम् १४।४०(१२।०) मध्याह्न

कु १५

शा ७ के — ६ — सू ५ — शु ४ मं बु — ३ — ८ चं — २ — ९ — ११ — १ रा — वृ १० — १२

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
४	३	३	९	३	६	०	६
१३	२९	२५	१५	८	२८	१८	१८
११	३१	७	१७	५३	४९	४३	४३
१२	१७	३८	१५	११	४६	२४	२४
५८	३८	७२	५	७१	३	३	३
२	०	३७	३९	१८	१८	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
म	श्ले	श्ले	अ	पुष्य	चि	भ	स्वा
४	४	३	२	२	३	२	४

शुद्ध श्रावण शुदि चर्या: अपराह्न व्यापिनी शु. श्रा. शु. २ में समस्त प्रायश्चित्त कृत्य करना उत्तम माना गया है। श्रा. शु. ५ के दिन द्वार के दोनों ओर गोबर द्वारा नाग बना कर घृत दूध दही आदि वस्तुओं द्वारा भक्तिपूर्वक नाग पूजा करें। तत्पश्चात् ब्राह्मण को पूजित कर आठ नागों का आर्शीवाद ग्रहण करें। श्रा. शु. ६ के दिन स्वर्णमय भगवान् कल्कि की प्रतिमा पूजन से भगवद् प्राप्ति सुलभ होती है। श्रा. शु. १२ को भगवान् विष्णु के निमित्त पवित्रारोपण न किया जाय तो वर्षभर के भगवद् आराधन का फल निष्फल हो जाता है। श्रा. शु. १५ के दिन यदि कदाचित् संक्रान्ति ग्रहण या भद्रा हो तो श्रा. शु. ५ को ही श्रावणी (उपाकर्म) कर लेनी चाहिए। भद्रोपरान्त उदय व्यापिनी पूर्णिमा अपराह्न अथवा प्रदोष व्यापिनी हो तो अच्छी रक्षा बन्धन डोरी बना कर उसमें अक्षत, सफेद सरसों, स्वर्ण रख कर सूती या ऊनी रंगे हुए शुद्ध वस्त्र के द्वारा गूंथी डोरी को निम्न मन्त्र से बाँधें—येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामभिवध्नामि रक्षे माचल माचल।
नाभलक्षण: इस पक्ष में भौमशनि का दृग्योग उत्पात सूचक है। अगस्त २०, २२, २५ दिनों में वर्षा योग हैं।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (३१ अगस्त से १४ सितम्बर सन् १९८५ ई तक) दक्षिणायन उत्तर गोल शरदर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ भाद्रपद कृष्णपक्षः—(१२)

तारिख — मु० रा० अं० हि० | वरीयान ५९।५७ (२३।५८) | जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० | सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	मु०	रा०	अं०	हि०	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) ज्ञानम	चन्द्रचारः	सू. उ	सू. अ	रा. अं. क. वि.
३१।५२	१	श	२३।५२	१५।४२	पूभा	५७।५३	२९।१४	धृ	५१।२	कौ	२३।५२	१४	९	३१	१६		मी २२।५०	६।९	६।५३	४।१३।५५।५
३१।४८	२	सू	२७।५	१७।०	उभा	६०।०	उदयान्त	शू	५१।२९	ग	२७।५	१५	१०	सि	१७	सितम्बर ९	मीन	६।९	६।५२	४।१४।५३।१०
३१।४३	३	चं	३१।३४	१८।४९	उभा	३।१४	७।२९	ग	५२।५३	वणि	३१।३४	१६	११	२	१८	भ ३१।३४(१८।४९) उ ५४।२४(२७।५६) या संकष्ट ४ A	मीन	६।१०	६।५१	४।१५।५१।१७
३१।३७	४	मं	३७।१३	२१।४	रे	९।५१	१०।८	वृ	५५।५	बव	४।१७	१७	१२	३	१९	पचक ९।५१(१०।८) या	मेष	६।११	६।५०	४।१७।४७।३१
३१।३३	५	बु	४३।३५	२३।३७	अश्वि	१७।२०	१३।७	ध्रु	५७।४४	कौ	१०।२१	१८	१३	४	२०		वृ २३।२	६।१२	६।४७	४।१८।४५।४१
३१।२८	६	वृ	५०।३	२६।१३	भ	२५।८	१६।१५	व्या	६०।०	गर	१६।४९	१९	१४	५	२१	भ ५०।३(२६।१३) उ चन्द्र (चन्दन) ६ चन्द्रोदयः B	वृ २३।२	६।१२	६।४७	४।१८।४५।४१
३१।२४	७	शु	५६।११	२८।४१	कृ	३२।४७	१९।१९	व्या	०।२०	वि	२३।१३	२०	१५	६	२२	भ २३।१३(१५।२९) या	वृष	६।१२	६।४६	४।१९।४३।५३
३१।१८	८	श	६०।०	उदयान्त	रो	३९।३७	२२।४	ह	२।३५	बा	२८।५०	२१	१६	७	२३	श्रीकृष्णजयन्ती ८ श्रीकृष्णजन्म ८ व्र सर्वेषां दूर्वा ८C	वृष	६।१३	६।४४	४।२०।४२।८
३१।१४	८	सू	१।१०	६।४२	मृ	४५।६	२४।१६	वज्र	३।५९	कौ	१।१०	२२	१७	८	२४	पूर्वेअस्तो बुधः १२।३०(११।१४)	मि ११।१५	६।१४	६।४३	४।२१।४०।२५
३१।९	९	चं	४।४१	८।७	आर्द्रा	४८।५१	२५।४६	सि	४।१२	गर	४।४१	२३	१८	९	२५	भ ३५।७(२०।१७) उ अगस्त्योदयः ४८।५३(२५।४७) D	मिथुन	६।१४	६।४३	४।२१।४०।२५
३१।४	१०	मं	६।१३	८।४५	पुन	५०।३२	२६।२८	व्य	२।५३	वि	६।१३	२४	१९	१०	२६	भ ६।१३(८।४५) या पूफा भे बुधः ३७।४०(२१।१९)	क २०।२२	६।१५	६।४१	४।२३।३७।२
३०।५९	११	बु	५।४२	८।३३	पुष्य	५०।१८	२६।२३	प	५५।२९	बा	५।४२	२५	२०	११	२७	अजा ११ व्र. पश्चिमोदितो बुधः २८।५५(१८।१४)	कर्क	६।१६	६।३९	६।२४।३५।२३
३०।५४	१२	बृ	३।१५	७।३४		४८।११	२५।३३	शि	४९।२८	तै	३।१५	२६	२१	१२	२८	भ ५८।५६(२९।५१) उ. गोवत्सा १२ प्रदोष १३ व्र	सि २५।३३	६।१६	६।३८	४।२५।३३।४५
तिथिक्षयः	१३	बृ	५८।५६	२९।५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३०।४९	१४	शु	५३।१३	२७।३३	म	४३।३५	२४।६	सि	४२।१६	वि	२६।१४	२७	२२	१३	२९	भ २६।१४(१६।४६) या उफा भे सूर्य ८।३(९।२९)	सिंह	६।१६	६।३७-	४।२६।३२।९
३०।४५	३०	श	४६।२१	२४।४९	पूफा	३९।४७	२२।२२	सा	३४।३	च	१९।५२	२८	२३	१४	३०	कुशोत्पाटनी ३०	क २७।४०	६।१७	६।३५	४।२७।३०।३७

A४. चन्द्रोदयः ३७।१३(२१।४) मघा भे सिंहे च मार्गीबृधः ५२।५८(२७।२२) B३९।३९(२२।४) हल ६ श्ले भे शुक्रः ४३।४३(२४।२९) C चन्द्रोदयः ४२।५०(२३।२१) D९ पूर्वोदितोभौमः ५।५(८।१६)

भाद्रपद कृष्ण ८ शनौ श्रीष्टम् १४।२५(१२।०) मध्याह्न्‌ अयनांशाः २३।३९।१४

अयनांशाः २३।३९।१५ भाद्रपद कृष्ण ३० शनौ श्रीष्टम् १४।१७(१२।०) मध्याह्न्‌

कु ८

सू	म	बु	वृ	शु	श	रा	के
४	४	४	९	३	६	०	६
२०	४	७	१४	१८	२९	१८	१८
५६	३६	९	३४	२५	१९	१७	१७
१०	१७	३९	३६	२६	१	५८	५८
५८	३८	१०७	५	७२	४	३	३
१५	०	४२	२	१	१	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पूफा	म	म	श्र	श्ले	वि	भ	स्वा
३	२	३	२	१	३	२	४

(कुण्डली: ६ सू शु ४; के श ७ मं ५ बु; ३; ८; २; ९; ११; १ रा; वृ १०; १२)

भाद्रपदविचर्याः भा. कृ. ६ चन्द्र (चन्दन) षष्ठी व्रत में स्त्रियों के लिए चन्द्रोदय व्यापिनी कही है। दोनों दिन चन्द्रोदय व्यापिनी न हो या दोनों दिन में चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो पंचमी युक्त (पूर्वविद्धा) ही ग्रहण करें। भा. कृ. ७ शीतला के पूजन एवं व्रत में ग्राह्य है। भा.कृ. ८ जन्माष्टमी स्मार्तों के लिए अर्धरात्रि व्यापिनी एवं वैष्णवों के लिए सूर्योदय व्यापिनी कही गई है। अर्धरात्रि बुधवार रोहिणी युक्त हो तो जयन्ती व्रत दोनों के मतानुसार यही ग्राह्य है। कृष्णाष्टमी में कृष्ण पूजा एवं व्रत धारण करने से मानव पाप मुक्त हो जाता है। जो नर-नारी जन्माष्टमी व्रत से वंचित रहे वह जंगली हिंसक योनि में उत्पन्न होता है। उक्त दिन चन्द्रोदय होने पर ॐ क्षीरोदार्णव सम्भूत अत्रि गोत्र समुद्भव। गृहाणार्ध्यं

कु ३०

(कुण्डली: ६ शु ४ चं; श ७ के सू ५ मं बु; ३; ८; २; ९; ११; १ रा; १० वृ; १२)

सू	म	बु	वृ	शु	श	रा	के
४	४	४	९	३	६	०	६
२७	९	२०	१४	२६	२९	१७	१७
४७	२	८	४	५१	४८	५५	५५
१५	१८	५२	५३	४५	१७	४३	४३
५८	३८	११४	३	७२	४	३	३
२८	०	२	४६	४८	४	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उफा	भ	पूफा	श्र	श्ले	वि	भ	स्वा
१	३	३	२	४	३	२	४

शशांकेदं रोहिणी सहितो मम। मंत्र से चन्द्रमा को अर्ध्य देवें। भा.कृ. ३० दिने प्रेत क्रिया, पितृक्रिया मारण क्रियार्थ दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति होकर "हुं फट" मंत्र से कुशा ग्रहण करें। समिधा फूल एवं कुशा ग्रहण में दिन के आठ भागों में से द्वितीय भाग ग्राह्य है। कुशालक्षण: जिसके बीच गर्भ न हो और अग्र भाग हो ऐसी दो दल युक्त प्रादेश मात्र कुशा सर्वत्र ग्राह्य है। प्रत्येक अमा में उखाड़ी कुशा मास भर एवं प्रतिदिन उखाड़ी कुशा उसी दिन काम देती है। एवं कुशोत्पाटनी के दिन की कुशा वर्ष भर देव पितृकार्यों में पवित्र मानी गई है। (पृथ्वी चन्द्रोदय)

मेघलक्षण: सितम्बर २, ६, ९, १३ के दिन आकाश पर मेघ होने पर श्री वर्षा का अभाव रहे।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१५ सितम्बर से २८ सितम्बर सन् १९८५ ई तक) दक्षिणायन उत्तर गोल शरदर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ भाद्रपद शुक्लपक्षः—(१३) तारिख मु० रा० अं० हि० ऐन्द्र ५७।३९(२९।२४)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	जिल्वद	श्रावण	अगस्त	भाद्र	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) आनन्द
३०।३९	१	सू	३८।४६	२१।४९	उफा	३४।१४	२०10	शु	२५।१०	कि	१२।३५	२९	२४	१५	३१	
३०।३८	२	चं	३०।५०	१८।३९	ह	२८।१७	१७।३२	शु	१५।५५	वा	४।४८	३०	२५	१६	आ	चन्द्रदर्शनम् मु ३० सं. कन्यायामर्कः ३३।१०(१९।३५) A
३०।२९	३	मं	२२।५८	१५।३१	चि	२२।२३	१५।१८	ब्र	६।३६	ग	२२।५८	मु	२६	१७	२	भ ४९।१५(२६।२) उ मन्वादिः ३ वराहजयन्ती ३ B
३०।२५	४	बु	१५।३१	१२।३२	स्वा	१६।५३	१३।१५	वै	४८।५८	वि	१५।३१	२	२७	१८	३	भ १५।३१(१२।३२) या ऋषि ५
३०।२०	५	बृ	८।३५	९।४७	वि	११।५६	११।१८	वि	४०।५९	वा	८।३५	३	२८	१९	४	नाग ५ (द्विगर्तहिमाचलयोः) सूर्य ६ स्कन्द ६ मुक्ताभरण ७ C
३०।१३	६	शु	२।३५	७।२४	अनु	७।५४	९।३२	प्री	३३।५६	तै	२।३५	४	२९	२०	५	भ ५७।३४ उ
तिथिक्षयः	७	शु	५७।३४	२९।२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३०१९	८	श	५३।३६	२७।४८	ज्ये	४।५१	८।१९	आ	२७।२३	वि	२५।२६	५	३०	२१	६	भ २५।२६ या राधाजयन्ती ८ महालक्ष्मी व्रतारम्भः D
३०१४	९	सू	५०।४७	२६।४२	मू	२।५०	७।३१	सौ	२१।५४	वा	२२।१	६	३१	२२	७	श्रीचन्द्रजयन्ती ९ (उदासीनसम्प्रदाय)
२९।५९	१०	चं	४९।९	२६।१३	पूषा	२।२	७।१२	शो	१७।२३	तै	१९।४९	७	आ	२३	८	दशावतार १० सायनं तुलायामर्कः ४।७ दक्षिण गो. प्रा. विषुव दिन
२९।५४	११	मं	४८।४०	२५।५२	उषा	२।१९	७।२०	अति	१३।४४	वणि	१८।४४	८	२	२४	९	भ १८।४४(१३।५४) उ ४८।४०(२५।५२) या पद्मा E
२९।५०	१२	बु	४९।१८	२६।८	श्र	३।४४	७।५५	सु	११10	ब	१८।४९	९	३	२५	१०	श्र ३।४४(७।५५) या वामन (श्रवण) १२ व्र विष्णोपार्श्व F
२९।४५	१३	बृ	५१।७	२६।५२	ध	६।१८	८।५६	धृ	९।११	कौ	२०।४	१०	४	२६	११	प्रदोष ३ व्र हस्तभेसूर्यः ४६।२४(२४।५९)
२९।४०	१४	शु	५३।५७	२८।०१	श	९।५४	१०।२४	शू	८।११	ग	२२।२३	११	५	२७	१२	भ ५३।५७(२८।१) उ अनन्त चतुर्दशी व्र हस्तभे बुधः G
२९।३४	१५	श	५७।५८	२९।३८	पूभा	१४।३३	१२।१७	गं	८।०१	वि	२५।४८	१२	६	२८	१३	भ २५।४८(१६।४६) या श्री सत्य १५ व्र प्रोष्ठपदी १५ H

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
कन्या	६।१८	६।३४	४।२८।२९।७
तु २८।२७	६।१९	६।३२	४।२९।२७।३८
तुला	६।२०	६।३१	५।०।२६।१२
वृ २९।३५	६।२०	६।३०	५।१।२४।४४
वृश्चिक	६।२१	६।२८	५।२।२३।११
वृश्चिक	६।२२	६।२७	५।३।२२।१०
०	०	०	०
ध ८।१९	६।२२	६।२६	५।४।२०।३९
धनुः	६।२३	६।२४	५।५।१९।२३
म १३।११	६।२३	६।२३	५।६।१८।५
मकर	६।२४	६।२२	५।७।१६।५१
कु २०।२२	६।२५	६।२०	५।८।१५।४०
कुम्भ	६।२५	६।१९	५।९।१४।२९
मी २९।४६	६।२६	६।१८	५।१०।१३।२२
मीन	६।२७	६।१६	५।११।१२।१७

A मु. ३० पूर्णं १७।१० उपरान्त मघा में सिंहे व शुक्रः ५०।२८(२६।३१) विशा ४ वृश्चिके शनिः ३३।१५(१९।३७) B हरितालिका ३ कलङ्क (पत्थर) ४ पूफा में बुधः ४१।१८(२२।५१) C कन्यायाबुधः २८।४(१७।३५) D ज्येष्ठपूजा पूफा में भौमः ०।५९(६।४६) E ११ व. श्रवणारम्भः २।१९(७।२०) उ F परिवर्तनम् पंचक ३४।५३(२०।२२) उ G ५६।३१(२९।३०) पूफा में शुक्रः ४६।५९(२५।१४) H पितृपक्षारम्भः १५

भाद्र शुक्ल ८ शनी श्रीष्टम् १४।५(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।१६

अयनांशाः २३।३९।१७ भाद्र शुक्ल १५ शनी श्रीष्टम् १३।५२(१२।०) मध्याह्न

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	४	५	९	४	७	०	६
४	१३	३	१३	५	०	१७	१७
३४	२८	१५	४३	२०	२१	३३	२३
२६	१७	५०	२५	४६	१५	२७	२७
५८	३८	११०	१	७३	५	३	३
४१	०	२	५९	०	२१	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उफा	पूफा	उफा	ध	म	वि	भ	स्वा
३	१	२	२	२	४	२	४

कुण्डली ८

ल ७ के | शु ५ मं | श ८ | सू ६ बु | ४ | चं ९ | ३ | १० वृ | १२ | २ | ११ | रा १

भाद्रशुदि दिनचर्याः भा. शु. ३ हरितालिका व्रत में तृतीया पर (चतुर्थी) युक्ता ग्राह्य है। पूर्वविद्धा स्त्रियों के लिए वैधव्य प्रदमानी है। भा. कृ. ३ कज्जली एवं भा. शु. ३ हरितालिका मानी गई है। भा. शु. ४ पत्थर चतुर्थी में चन्द्र दर्शन से मिथ्या कलंक लगता है। अतः यदि चन्द्रदर्शन हो भी जाए तो पूर्व या उत्तराभिमुख होकर "ॐ सिंहः प्रसेन मवधीत सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मारोदीस्तवह्येष स्यमन्तकः" इस मंत्र का जप करने से कलंक निवृत्ति होवे। भा. शु. ५ ऋषि पंचमी पूर्व (चतुर्थी) विद्धा ग्राह्य है एवं नाग पंचमी पर (षष्ठी) युक्ता लेवे। इसमें सूर्योदय व्यापिनी नाग पंचमी में नागपूजा आठ नागों की पूजा "ॐ प्रें कुरु कुल्ये हुं फट् स्वाहा" से गन्ध, पुष्प, दूध, पायस से सन्तुष्ट नाग सात कुलों तक भय नहीं देते। भा. शु. ६ सूर्य षष्ठी में सूर्य पूजान्त पंचगव्य प्राशन करें। भा. शु. ८ दूर्वाष्टमी अगस्त्योदय पहले होने से भाद्रकृष्ण अष्टमी को ही कर लेवें। भा. शु. १२ भगवान वामन की पूजा एवं व्रत रखें। भा. शु. १४ मध्याह्न व्यापिनी अनन्त चतुर्दशी व्रत विशेषतया त्रयोदशी विद्धा लेवें। भा. शु. १५ पित्रादि त्रय का श्राद्ध करने से अक्षय पितृतृप्ति होती है।

कुण्डली १५

७ के | मं ५ शु | श ८ | सू ६ बु | ४ | ९ | ३ | वृ १० | चं १२ | २ | ११ | १ रा

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	४	५	९	४	७	०	६
११	१७	१५	१३	१२	०	१७	१७
२५	५४	४६	३१	५३	५८	११	११
५४	२	५७	४१	४	२२	१२	१२
५८	३७	१०२	०	७२	५	३	३
५६	११	५९	४२	२७	४६	११	११
	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
ह	पूफा	ह	अ	पफा	वि	भ	स्वा
१	२	२	२	१	४	२	४

वायुसञ्चारः सितम्बर १७, २३ में मामूली मेघ मण्डली छाकर कभी ही बरसती है सर्वथा नहीं।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२९ सितम्बर से १४ अक्तूबर सन् १९८५ ई तक) दक्षिणायन दक्षिण गोल शरदृतु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ आश्विन कृष्णपक्षः—(१४)

तारिख — मु० रा० अं० हि० — हस्त ५३।३३(२८।२) शुक्ल ५८।४६(३०।१६) — जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा० — सूर्यवेधकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	मुस्लि. आश्वि.	मु. आश्वि.	लि. आश्वि.	हि.	विवरण में ग्रहचारादि (भा० स्टै० टा०) ज्ञातव्य	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२९।२९	१	सू	६०।०	उदयान्त	उत्रा	२०।११	१४।१५	वृ	८।४६	बा	३०।२१	१३	७	२९	१४		मीन	६।२७	६।१५	५।१२।११।१२
२९।२५	१	च	२।४६	७।३६	रे	२६।४७	१७।१५	ध्रु	१०।११	कौ	२।४६	१४	८	३०	१५	पंचक २७।५१(१७।१५) या	मे १७।१५	६।२८	६।१४	५।१३।१०।११
२९।१९	२	मं	८।५२	१०।१	अश्वि	३४।२३	२०।१३	व्या	१२।१९	ग	८।५२	१५	९	अक्टू.	१६	भ ४२।३(२३।१७) ३ संकट ४ वृ. चन्द्रोदय:A	मेष	६।२८	६।१२	५।१४।९।९
२९।१३	३	बु	१५।१४	१२।३६	भ	४२।७	२३।२१	ह	१४।४३	वि	१५।१४	१६	१०	२	१७	भ १५।१४(१२।३६) या गान्धी जन्मोत्सव: चि भे बुध:B	वृ ३०।९	६।३०	६।११	५।१५।८।१४
२९।९	४	बृ	२१।५७	१५।१७	कृ	५०।२	२६।३१	वज्र	१७।२५	बा	२१।५७	१७	११	३	१८	मार्गी गुरु ४५।१३(२५।०)	वृष	६।३०	६।१०	५।१६।७।१७
२९।४	५	शु	२८।२४	१७।५३	रो	५७।२७	२९।३०	सि	१९।५६	तै	२८।२४	१८	१२	४	१९		वृष	६।३१	६।८	५।१७।६।२४
२८।५९	६	श	३४।७	२०।१०	मृ	६०।००	उदयान्त	व्य	२१।५६	ग	१।२३	१९	१३	५	२०	भ ३४।७(२०।१०) उ	मि १८।५२	६।३१	६।७	५।१८।५।३२
२८।५४	७	सू	३८।३१	२१।५६	मृ	३।५५	६।१९	वरी	२३।१	वि	६।२९	२०	१४	६	२१	भ ६।२९(९।८) या तुलायांबुध: ४३।४५(२४।२)	मिथुन	६।३२	६।६	५।१९।४।४१
२८।४८	८	च	४१।११	२३।२	आर्द्रा	८।५७	१०।८	प	२२।५०	वा	१०।४	२१	१५	७	२२	महालक्ष्मीव्रत समाप्तिः ८	क २९।११	६।३३	६।४	५।२०।३।५५
२८।४४	९	मं	४१।५३	२३।१९	पुन	१२।११	११।२६	शि	२१।११	तै	११।४६	२२	१६	८	२३	उफा भे शुक्रः ३८।३१(२२।२)	कर्क	६।३४	६।३	५।२१।३।११
२८।४०	१०	बु	४०।२८	२२।४५	पु	१३।२५	११।५६	सि	१७।५५	वणि	११।२६	२३	१७	९	२४	भ ११।२६(११।९) उ ४०।२८(२२।४५) या	कर्क	६।३४	६।२	५।२२।२।२६
२८।३५	११	बृ	३७।४	२१।२५	श्ले	१२।३४	११।३७	सा	१२।५८	बव	८।५८	२४	१८	१०	२५	इन्दिरा ११ व चि भे सूर्य १८।२६(१३।५८) स्वा भे बुध:C	सिं ११।३७	६।३५	६।१	५।२३।१।४६
२८।३०	१२	शु	३१।५३	१९।२१	म	९।५५	१०।३४	शु	६।३३	कौ	४।४०	२५	१९	११	२६	सन्यासिना श्राद्धम्	सिंह	६।३६	५।५९	५।२४।१।७
२८।२५	१३	श	२५।९	१६।४०	पूफा	५।३८	८।५१	ब	४९।५४	वणि	२५।९	२६	२०	१२	२७	भ २५।९(१६।४०) उ ५१।१२(२७।५) प्रदोष १३ D	क १४।२०	६।३६	५।५८	५।२५।०।२८
२८।२०	१४	सू	१७।१४	१३।३१	उफा	०।२	६।३८	ऐ	४०।२५	श	१७।१४	२७	२१	१३	२८	पितृ विसर्जनी ३० सकल पितृश्राद्धम्	कन्या	६।३७	५।५७	५।२५।५९।५३
२८।१५	३०	च	८।१२	९।५५	चि	४६।२७	१५।१३	वै	३०।१२	ना	८।१२	२८	२२	१४	२९	सोमवती ३० मातामहश्राद्धम् शारदनवरात्रारम्भः घटस्थापनम्	तु १४।३८	६।३८	५।५६	५।२६।५९।२०

A ३३।६(१९।४३) अक्तूबर १० B २९।३५(२२।२०) C ५६।१०(२८।५९) कन्यायांशुक्रः २०।४८(१४।५६) D उफा भे भौमः ८।१४(९।५४)

आश्विन कृष्ण ८ चन्द्रे श्रीष्टम् १३।३७।३०(१२।०) मध्याह्न — अयनांशा: २३।३९।१८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	४	६	९	४	७	०	६
२०	२३	७	१३	२४	१	१६	१६
१७	३४	४८	३०	५३	४९	४२	४२
२१	१७	५	११	५८	३३	३५	३५
५९	३८	९५	१	७४	६	३	३
१५	०	४२	३	४	४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
ह	पूफा	स्वा	श्र	पूफा	वि	म	स्वा
४	४	१	२	४	४	२	४

क्र ८

के ७ बु — मं ५ शु — श ८ — ६ सू — ४ — ९ — चं ३ — वृ १० — १२ — २ — ११ — रा,१

आश्विन वर्विचर्या: भाद्र शुक्ल १५ से आ. कृ. ३० यावत् पितृ पक्ष महालय नाम से विख्यात है। महालय में विधिवत् श्राद्ध द्वारा पितृगण वर्ष भर तृप्त रहता है। श्राद्ध से प्रसन्न पितरों के आशीर्वाद से अचल लक्ष्मी का सुख सम्पत्ति सन्तति सुख प्राप्त होता है। अज्ञात पितरों का श्राद्ध एकादशी या अमा में करें। श्राद्ध न करने से वीर पुरुष उत्पन्न नहीं होते और न ही लक्ष्मी, पुत्र, आरोग्य, सुख मिलता है। शतायु भी होना असम्भव हो। श्राद्धनिर्णय—एकोदिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में नान्दी श्राद्ध प्रातःकाल दैवक श्राद्ध पूर्वाह्न में, पार्वण श्राद्ध अपराह्न में करें। समय विभाग दिनमान के पाँच भागों के प्रथम भाग प्रातःकाल, द्वितीय भाग संगव, तृतीय भाग मध्याह्न, चतुर्थ अपराह्न, पंचम सायाह्न कहा जाता है। मघायुक्त त्रयोदशी के पुत्रवान् गृहस्थी पिण्ड के बिना मुक्तान्न श्राद्ध करें। महालय में गया श्राद्ध यदि मातापिता के क्षयाह्के दिन किया जाए तो अक्षय पितृतृप्ति होती है। जिस तिथि में मृत्यु हो उसी में श्राद्ध करें। इस मास में हरिद्रा वा कूठ, जटा माँसी चन्दन, गोरोचन आदि से रति वृद्धयर्थ स्नान करना आरोग्य वर्धक माना गया है।

वर्षालक्षण: इस पक्ष में वर्षा के योग न होने पर भी आकाश में मेघ मंडराते दिखाई देंगे।

अयनांशा: २३।३९।१९ — आ. कृष्ण ३० चन्द्रे श्रीष्टम् १३।२५(१२।०) मध्याह्न

कु ३०

बु ७ के — शु — श ८ — चं — ६ — सू — ४ — ५ — ९ — ३ — १० वृ — १२ — ११ — १ रा — २

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	४	६	९	५	७	०	६
२७	२७	११	१३	३	२	१६	१६
१२	५८	४४	४१	३४	३१	२०	२०
५०	१४	४२	३४	२	५०	१९	१९
५९	३८	९१	१	२	७	३	३
२५	३	०	५४	५७	६	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चि	उफा	स्वा	श्र	उफा	वि	भ	स्वा
२	१	२	२	३	४	२	४

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१५ अक्तूबर से २८ अक्तूबर सन् १९८५ ई) दक्षिणायन दक्षिण गोल शरद हेमन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शाकः १९०७ आश्विन शुक्लपक्षः—(१५)

तारिख — मु० रा० अं० हि० — आयुष्मान ५९।४८(३०।३४)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	मुहर्र.	आश्वि.	अक्तू.	आश्वि.	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना
तिथिक्षयः	१	चं	५९।११	३०।१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२८।१०	२	मं	५०।३६	२६।५४	स्वा	३९।२३	२२।२४	वि	१९।३६	बा	२५।१२	२९	२३	१५	३०	चन्द्रदर्शनम् मु १५
२८।५	३	बु	४२।७	२३।३०	वि	३२।४२	१९।४४	प्री	९।२७	तै	१६।१७	सफर	२४	१६	३१	
२८।०	४	बृ	३४।२२	२०।२५	अनु	२६।४३	१७।२१	सौ	५०।४७	वणि	८।५	१	२५	१७	का	भ ८।५(९।५४) उ ३४।२२(२०।२५) या सं. तुलायामर्कः A
२७।५५	५	शु	२७।४३	१७।४६	ज्ये	२१।४७	१५।२४	शो	४२।४७	ब	०।५१	२	२६	१८	२	उपांगललिता ५ व्र.
२७।५०	६	श	२२।२७	१५।४१	मू	१८।११	१३।५९	अति	३५।५६	तै	२२।२७	३	२७	१९	३	सरस्वत्यावाहनम् सरस्वतीशयनारम्भः विशा भे बुधः B
२७।४५	७	सू	१८।४५	१४।१२	पूषा	१६।१९	१३।१०	सु	३०।२२	वणि	१८।४५	४	२८	२०	४	भ १८।४५(१४।१२) उ ४७।४२(२५।४७) या सरस्वतीपूजा
२७।४०	८	चं	१६।३९	१३।२३	उषा	१५।४०	१२।५९	धृ	२६।५	बव	१६।३९	५	२९	२१	५	दुर्गा ८ ज्वालामुखी ८ (कांगड़ा) सरस्वती बलिः महा ९ C
२७।३६	९	मं	१६।१२	१३।१३	श्र	१६।४८	१३।२७	शू	२३।४	कौ	१६।१२	६	३०	२२	६	पंचक ४७।५८(२५।५५) उ मनवादिः ९ बौद्धजयन्ती १० D
२७।३१	१०	बु	१७।२१	१३।४२	ध	१९।२९	१४।३३	ग	२१।१८	ग	१७।२१	७	क्र	२३	७	भ ४८।४१(२६।१३) उ वृहत्पंचक समाप्तिः राष्ट्रिय कार्तिक ८ E
२७।२६	११	बृ	२०।१०	१४।४६	श	२३।३५	१६।१२	वृ	२०।३९	वि	२०।१०	८	२	२४	८	भ २०।१०(१४।४६) या पापांकुशा ११ व्र
२७।२१	१२	शु	२३।५२	१६।१९	पूभा	२८।५२	१८।१९	ध्रु	२०।५७	बा	२३।५२	९	३	२५	९	प्रदोष १३ व्र
२७।१७	१३	श	२८।४५	१८।१७	उभा	३५।४	२०।४९	व्या	२१।५९	तै	२८।४५	१०	४	२६	१०	वृश्चिके बुधः ४९।२६(२६।३३)
२७।१२	१४	सु	३४।२५	२०।३४	रे	४२।१	२३।३६	ह	२३।३८	ग	१।२९	११	५	२७	११	भ ३४।२५(२०।३४) उ पचक ४२।१(२३।३६) या
२७।७	१५	चं	४०।४५	१५।२३	अश्वि	४९।३५	२६।३९	वज्र	२५।४७	वि	७।२९	१२	६	२८	१२	भ ७।२९(९।४९) उ या श्री सत्य १५ व्र भवानी १५ F

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
०	०	०	०
तुला	६।३९	५।५४	५।२७।५८।५१
वृ १४।२३	६।३९	५।५३	५।२८।५८।२०
वृश्चिक	६।४०	५।५२	५।२९।५७।५३
ध १५।२४	६।४१	५।५१	६।०।५७।२९
धनु	६।४२	५।५०	६।१।५७।७
म १९।३	६।४२	५।४८	६।२।५६।४३
मकर	६।४३	५।४७	६।३।५६।२५
कु २५।५५	६।४४	५।४६	६।४।५६।१०
कुम्भ	६।४५	५।४५	६।५।५५।५५
कुम्भ	६।४६	५।४४	६।६।५५।४३
मी १२।१९	६।४६	५।४३	६।७।५५।३०
मीन	६।४७	५।४२	६।८।५५।२१
मे २३।३६	६।४८	५।४१	६।९।५५।१५
मेष	६।४९	५।४०	६।१०।५५।११

A १३।४०(१२।८) मु. ३० पुण्यं २३।४० या कन्यायां भौमः २५।२४(१६।५०) B ४४।४०(२४।३४) हस्त भे शुक्रः २५।२५(१६।५२) C अनु भे शनिः ३९।५१(२२।४०) D सरस्वती विसर्जनम् विजया (दशहरा) १०

F भरतमिलाप स्वा भे सर्यः ४४।१५(२४।२७) सायनं वृश्चिके अर्कः २५।५५ हेमन्त ऋतुः प्रारम्भ F वाल्मीकि जयन्ती १५ शारद १५ कार्तिक स्नानारम्भः खग्रास ५ चन्द्रग्रहणम्

आश्विन शुक्ल ८ चन्द्रे श्रीष्टम् १३।१२।३०(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।२०

अयनांशाः २३।३९।२१ आश्विन शुक्ल १५ चन्द्रे श्रीष्टम् १२।५७।३०(१२।०) मध्याह्न

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
६	५	६	९	५	७	०	६
४	२	२२	१४	१२	३	१५	१५
९	२२	८	०	१४	१६	५८	५८
३४	१४	२३	४८	३	५२	४	४
५९	३८	८५	३	७४	६	३	३
४४	३	४१	१२	१४	४६	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चि	उफा	चि	उ	ह	वि	भ	स्वा
	२	१	२	१	४	१	३

कु० ८

शा ८ — शु ६ मं — ९ — सू के वृ ७ — ५ — १० वृ चं — ४ — ११ — १ रा — ३ — १२ — २

आश्विन शुचिचर्या: आ. शु. १ प्रथम नवरात्र मातृपक्ष का होने से मामा आदि के होने पर भी मातामह का श्राद्ध दौहित्र को करना चाहिए किन्तु पिता के जीवित या स्त्री के गर्भवती होने पर पिण्ड रहित श्राद्ध करें। नवरात्रारम्भ में प्रतिपदा उदय व्यापिनी ग्राह्य है। चाहे वह दो घड़ी मात्र हो। यदि प्रतिपदा द्वितीया से युक्त हो तो प्रथम दिन की ग्राह्य जानें। यदि चित्रा या वैधृति से युक्त हो तो प्रथम पाद को छोड़कर अथवा मध्याह्न के आठवें क्षण अभिजित मुहूर्त में घट स्थापन करे। रात्रि में घट स्थापन निषिद्ध है। नवरात्र दिनों में व्रत देवी पूजा सप्तशती पाठ अखण्ड दीपदान व कन्या पूजन से अभीष्ट सिद्धि हो। आ. शु. ७ से १० तक तीन दिन सरस्वती शयन के माने गये हैं। यह दिन विद्यार्थी के लिए पठन पाठन लेखनादि में वर्जित हैं, इन दिनों में ग्रन्थों की देववत् पूजा करनी चाहिए।

कु० १५

शा बु — शु ६ मं — ८ सू ७ के — ९ — ५ — १० वृ — ४ — चं रा १ — ११ — ३ — १२ — २

सू	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
६	५	७	९	५	७	०	६
११	६	१	१४	२०	४	१५	१५
८	४६	५२	२९	५६	३	३८	३८
६	१३	४३	१६	१८	३८	५६	५६
५९	३८	८०	४	७५	६	३	३
५७	६	१	४	३	१२	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वा	उफा	वि	श्र	ह	अनु	भ	स्वा
२	४	४	२	४	१	१	३

वर्षालक्षण: इस पक्ष में भी वर्षा का योग नहीं पाया जाता।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२९ अक्तूबर से १२ नवम्बर सन् १९८५ ई) दक्षिणायन दक्षिण गोल हेमन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ कार्तिक कृष्णपक्षः—(१६)

तारिख — मु० रा० अं० हि०

विशाखा (५८।५३) (३०।३५) प्रीति ५४।५८(२८।३७)

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	मकर	कार्तिक	अक्तू.	कार्तिक	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अ. क. वि.
२७।३	१	मं	४७।२२	२५।४७	भ	५७।२०	२९।४६	ध्रु	२८।१४	वा	१४।२	१४	७	२९	१३	अनुभे बुधः १८।१९(१४।१०)	मेष	६।५०	५।३९	६।११।५५।९
२६।५८	२	बु	५४।२९	२८।३९	कृ	६०।००	उदयान्त	व्य	३०।४४	तै	२०।४०	१५	८	३०	१४	चि. भे. शुक्रः ७।५८(१०।३)	वृ १२।३४	६।५१	५।३८	६।१३।४९।१९
२६।५४	३	बृ	६०।००	उदयान्त	कृ	५।१०	८।५५	वरि	३३।४४	वणि	२६।३९	१६	९	३१	१५	भ. २६।३९(१७।३१) उ.	वृष	६।५१	५।३७	६।१३।५३।३
२६।४९	३	शु	०।२५	७।२	रो	१२।३३	११।५३	प	३९।९	वि	०।२५	१७	१०	नव	१६	भ. ०।२५(७।२) या संकट ४ व्र. करक (करवा) ४ चन्द्रोदयः A	मि २५।१८	६।५२	५।३६	६।१४।५५।१०
२६।४४	४	श	६।९	९।२१	मृ	१९।२०	१४।३७	शि	३६।३५	वा	६।९	१८	११	२	१७	हस्त भे भौमः २१।४२(१५।३४)	मिथुन	६।५३	५।३५	६।१५।५५।१५
२६।४०	५	सू	१०।५८	११।१८	आर्द्रा	२५।१०	१६।५८	सि	३७।१०	तै	१०।५८	१९	१२	३	१८		मिथुन	६।५४	५।३४	६।१६।५५।२२
२६।३६	६	चं	१४।२८	१२।४३	पुन	२९।३९	१८।४७	सा	३६।३८	वणि	१४।२८	२०	१३	४	१९	भ १४।२८(१२।४३) उ ४५।२५(२५।५) या B	क १२।२३	६।५५	५।३३	६।१७।५५।३१
२६।३१	७	मं	१६।२२	१३।२९	पु	३२।४४	१९।५८	शु	३४।५०	बव	१६।२२	२१	१४	५	२०	अहोई ८ व्र.	कर्क	६।५६	५।३२	६।१८।५५।४१
२६।२७	८	बु	१६।३०	१३।३२	श्ले	३३।४८	२०।२५	शु	३१।३६	कौ	१६।३०	२२	१५	६	२१	विशाखाभे सूर्यः ४।६(८।३५) अस्तः शनिः १३।२०(१२।१६)	सि २०।२५	६।५६	५।३१	६।१९।५५।५२
२६।२३	९	बृ	१४।३५	१२।४८	म	३२।५१	२०।६	ब्र	२६।४७	गर	१४।३५	२३	१६	७	२२	भ ४२।४५(२४।४) उ स्वाभे शुक्रः ४५।३१(२५।११)	सिंह	६।५८	५।३१	६।२०।५६।८
२६।१९	१०	शु	१०।५४	११।२०	पूफा	३०।१६	१९।५	ऐं	२०।३४	वि	१०।५४	२४	१७	८	२३	भ १०।५४(११।२०) या	क २४।४३	६।५८	५।३०	६।२१।५६।२१
२६।१५	११	श	५।२४	९।९	उफा	२६।०	१७।२३	वै	१२।५५	वा	५।२४	२५	१८	९	२४	रमा ११ व्र. ज्येभे बुधः ४६।३६(२५।३८)	कन्या	६।५९	५।२९	६।२२।५६।३९
तिथिक्षय	१२	श	५८।२७	३०।२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	०	०	०	०
२६।११	१३	सू	५०।५१	२७।९	ह	२०।१२	१५।९	वि	४।६	ग	२४।३१	२६	१९	१०	२५	भ ५०।५१(२७।९) उ धनवन्तरि जयन्ती १३	तु २५।५३	७।०	५।२९	६।२३।५७।०
२६।७	१४	चं	४१।२४	२३।३५	चि	१३।४३	१२।३०	आ	४४।०	वि	१५।५६	२७	२०	११	२६	भ १५।५६(१३।२३) या हनुमान जयन्ती १४ नरक १४	तुला	७।१	५।२८	६।२४।५७।२१
२६।३	३०	मं	३२।००	१९।५०	स्वा	६।२४	९।३६	सौ	३३।१५	च	६।४२	२८	२१	१२	२७	दीपावली ३० महालक्ष्मी पूजा ३०	वृ १७।२१	७।२	५।२७	६।२५।५७।५३

A ३३।१४(२०।१०) नवम्बर ११ B चि २ तुलाया शुक्रः २८।२७(१८।१८)

कार्तिक कृष्ण ८ बुधे श्रीष्टम् १२।४०(१२।१०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।२२,

अयनांशाः २३।३९।२३ कार्तिक कृ ३० भौमे श्रीष्टम् १२।२५

सू.	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
६	५	७	९	६	७	०	६
२०	१२	१३	१५	२	५	१५	१५
८	२४	२	१९	२	५	७	७
३४	२६	६	३३	४६	५३	१२	१२
६०	३७	६५	६	७५	२	३	३
१२	४९	१७	१५	०	९	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
वि	ह	अनु	श्र	चि	अनु	भ	स्वा
१	१	४	२	३	१	१	३

कु ८

शा ८ वृ | ६ मं | ९ | ७ सू के शु | ५ | १० वृ | चं ४ | ११ | १ रा | ३ | १२ | २

कार्तिकवदि चर्याः कार्तिक में विष्णु प्रीत्यर्थ प्रतिदिन सायं तिल तेल से आकाश दीप दान करें। एवं हविष्याशी रहें। आकाशदीप दान मंत्रः—दामोदराय नभसि तुलायां तोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमो अनन्ताय वेधसे।। आकाश दीप दान से सौभाग्य लक्ष्मी प्राप्त होती है। **कार्तिक स्नान मंत्रः**—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। ध्यात्वाहं त्वां जनार्दन जलेऽस्मिन् मधुसूदन। इस मास में शालिग्राम पूजा तुलसी पालन अष्टाक्षर मंत्र जाप का विलक्षण महत्त्व है। का. कृ. ६ स्कन्द षष्ठी व्रत से मानव पाप मुक्त वा धनयुक्त हो। का. कृ. १३ धनद त्रयोदशी में सायं अपमृत्यु वा रोग निवृत्त्यर्थ यम की प्रसन्नता के लिए घर से बाहर दीप माला करें। का. कृ. १४ नरक १४ के दिन अरुणोदय में तेलमर्दन वा उबटन स्नान से पूर्व अपामार्ग वा तुंबी सिर पर घुमाकर स्नानोत्तर यम तर्पण एवं प्रदोष में दीप दान द्वारा नरक से मुक्ति हो। का. कृ. ३० लक्ष्मी पूजा संकल्पः—अद्याहं परम विभूति प्राप्ति कामः श्री महालक्ष्मी पूजनमहं करिष्ये। ॐ महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णु पत्नीं चधीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्। ॐ महालक्ष्म्यैनमः। षोडशोपचारैः सम्पूज्य कुबेर पूजा—ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधि पद्माधिपाय च। भवन्तुत्वत्प्रसादान्मे धनं धान्यादि सम्पदः। गृहादिषु दीप दानम्—अग्नि ज्योती रवि ज्योतिश्चन्द्र ज्योतिस्तथैव च। उत्तम सर्व ज्योतीनां दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। सम्पूज्य प्रार्थना—या श्रीः पद्म वनेकदम्ब शिखरे राजगृहे कुञ्जरे श्वेते चाश्वयुते वृषे च युगलें यज्ञे च यूप स्थिते। शंखे देवकुले नरेन्द्रभवने गंगातटे गोकुले या श्रीस्तिष्ठति सर्वदा मम गृहे भूयात् सदा निश्चला।।

कु ३०

शा ८ वृ | च | ६ मं | ९ | के ७ शु सू | ५ | वृ १० | ४ | ११ | रा १ | ३ | १२ | २

सू.	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
६	५	७	९	६	७	०	६
२६	१६	१८	१६	९	५	१४	१४
१०	९	४२	०	४१	५२	४८	४८
१३	१६	२१	५६	१८	३९	७	७
६०	३७	४२	७	७५	२	३	३
२२	४३	४७	१८	०	९	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
वि	ह	ज्ये	श्र	स्वा	अनु	भ	स्वा
२	२	१	२	१	१	१	३

मासलक्षणः इस मास में वर्षा का कोई योग नहीं। केवल नवम्बर ३, ६, १० को बादल चाल व वायु का वेग रहे।

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१३ नवम्बर से २७ नवम्बर सन् १९८५ ई) दक्षिणायन दक्षिण गोल हेमन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ कार्तिक शुक्लपक्षः—(१७)

तारिख: मु० रा० अं० हिं० धृति ५।१४(९।१०) जम्मू नगरे भारतीय स्टै० ट० सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	सफर (मु०)	कार्तिक (रा०)	नवं. (अं०)	कार्तिक (हिं०)	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) आनन	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि
२५।५९	१	बु	२२।३७	१६।५	अनु	५१।३७	२७।४२	शो	२२।३०	बव	२२।३७	२९	२२	१३	२८	अन्नकूटम् १ गोवर्धन पूजागो क्रीड़ा बलिपूजा	वृश्चिक	७।३	५।२६	६।२६।५८।८
२५।५६	२	बृ	१३।३९	१२।३२	ज्ये	४५।१०	१८।२५	अति	१२।७	कौ	१३।३९	३०	२३	१४	२९	चन्द्र दर्शनम् मु. १५ भ्रातृ २ यम २ विश्वकर्म पूजा यम A	ध २५।४	७।४	५।२६	६।२७।५८।३४
२५।५१	३	शु	५।३४	९।१९	मू	३९।२६	२२।५२	सु	२।२६	गर	५।३४	रवि	२४	१५	३०	भ ३२।८(१९।५६) उ ५८।४३(३०।३४) या	धनु	७।५	५।२५	६।२८।५९।३
तिथिक्षयः	४	शु	५८।४३	३०।३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
२५।४७	५	श	५३।२२	२८।२७	पूषा	३५।१८	१३।३५	शू	४६।१५	बव	२५।४८	२	२५	१६	मार्ग	सं. वृश्चिकेअर्कः ०।२६(७।१७) मु. ३० पुण्यं ०।२६(७।१७) या	म २६।५५	७।६	५।२४	६।२९।५९।३२
२५।४५	६	सू	४९।५४	२७।५	उषा	३२।५६	२०।१८	गं	४०।१४	कौ	२१।२२	३	२६	१७	२		मकर	७।७	५।२४	७।१।०।३
२५।४०	७	चं	४९।२९	२६।२१	श्र	३२।३३	२०।८	वृ	३५।५०	गर	१८।५६	४	२७	१८	३	ब ४८।२९(२६।२१) उ बुधोवक्री ५५।५७(२९।३०)	मकर	७।७	५।२३	७।२।०।३२
२५।३८	८	मं	४९।६	२६।४७	ध	३४।७	२०।४७	ध्रु	३३।०	वि	१८।३६	५	२८	१९	४	भ १८।३१(१४।३३) या गोपा ८ यम दंष्ट्रारम्भः B	कुं ८।२२	७।८	५।२३	७।३।१।८
२५।३५	९	बु	५१।३४	२७।४७	श	३७।३३	२२।१०	व्या	३१।३८	बा	२०।६	६	२९	२०	५	कृतयुगादिः ९ परिक्रमा ९ कूष्माण्डी अक्षय ९ विशा भे शुक्रः C	कुम्भ	७।९	५।२३	७।४।१।४४
२५।३१	९	बृ	५५।४३	२९।२७	पूभा	४२।३८	२४।१३	ह	३१।३६	तै	२३।२६	७	३०	२१	६		मी २७।३९	७।१०	५।२२	७।५।२।२०
२५।२८	११	शु	६०।०	उदयान्त	उभा	४९।०	२६।४७	वज्र	३२।३८	वणि	२८।१६	८	३१	२२	७	ब २८।१६(१८।३०) ३ सायनधनुः बेअर्कः १८।२५ पश्चिमेअस्तोबुधः D	मीन	७।११	५।२२	७।६।३।१०
२५।२५	११	श	१।५	७।३८	रे	५६।१५	२९।४२	सि	३४।२६	वि	१।५	९	मार्ग	२३	८	भ १।५(७।३८) या पंचक ५६।१५(२९।४३) या हरि प्रबोधिनी E	मे २९।४२	७।१२	५।२२	७।७।३।४०
२५।२१	१२	सू	७।२२	१०।१०	अश्वि	६०।०	उदयान्त	व्यति	३६।४४	बा	७।२२	१०	२	२४	९	प्रदोष १३ हरिवाधोत्सवः तुलसी विवाह	मेष	७।१३	५।२१	७।८।४।२२
२५।१७	१३	चं	१४।५	१२।५३	अश्वि	३।५८	८।४९	व	३९।९	तै	१४।५	११	३	२५	१०		मेष	७।१४	५।२०	७।९।५।५
२५।१५	१४	मं	२०।५०	१५।३४	भ	११।४७	११।५७	प	४१।३७	वणि	२०।५०	१२	४	२६	११	भ २०।५०(१५।३४) उ ५४।६(२८।५२) वैकुण्ठ १४ श्रीसत्य F	वृ १८।४४	७।१४	५।२०	७।१०।५।४७
२५।१२	१५	बु	२७।२३	१८।१२	कृ	१९।२६	१५।२	शि	४३।४७	बव	२७।२३	१३	५	२७	१२	कार्तिकी १५ भीष्मपंचक समाप्तिः कार्तिक स्नान समाप्तिः	वृष	७।१५	५।२०	७।११।६।३२

A पंचकसमाप्तिः जवाहर जन्म बालोत्सवः ३।५५(८।४८) B पंचक ३।४(८।२२) उ अनु मे सूर्यः १८।४०(१४।३६) C २०।१९(१५।१७) D ४८।२२(२६।४२) E ११ब्र चातुर्मास्य समाप्तिः भीष्मपंचकारम्भः चि मे भौमः २।५(८।२) F १५ब्र अनु मे वक्री बुधः

कार्तिक शुक्ल ८ भौम श्रीष्टम् १२।१०(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।२४

कु ८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
७	५	७	९	६	७	०	६
३	२०	२१	१७	१८	६	१४	१४
१३	३१	१९	४	५	३७	२५	२५
२५	१३	४५	१२	१३	५३	५२	५२
६०	३७	१	७	५७	६	३	३
३३	४९	२४	५४	५२	५८	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
चि	ह	ज्ये	श्र	स्वा	अनु	भ	स्वा
४	४	२	३	४	१	१	३

वृ १०, ९, सू श ८ बु, शु ७ के, मं ६, ११, ५, १२, चं २, ४, १ रा, ३

कार्तिकशुचि दिनचर्याः आमलक वृक्ष के तले देव ऋषि यज्ञ तीर्थादि का निवास कहा है अतः इस मास में आमला की छाया में श्राद्ध एवं उसके पत्र व फलों से विष्णु पूजा के साथ ही आमला के तले ब्रह्म भोजन के पश्चात् स्वयं भोजन करने से अक्षय पुण्य प्राप्ति कही है। समस्त कार्तिक में स्नान के असमर्थ नरनारी त्रयोदशी से पूर्णा तक अवश्य स्नान करें। पूर्वविद्धा प्रतिपदा में प्रातः तैलाभ्यंग जय पराजय परीक्षार्थ द्यूत क्रीड़ा, सायंगो क्रीड़ा, रात्रि में बलिपूजा और दीपोत्सव करें। विष्णु (कृष्ण) प्रीत्यर्थ अन्नकूट करें। तथा ॐ गोवर्धन धराधार गोकुल त्राणकारक। बहुबाहु कृतोच्छ्राय गवां कोटि प्रदो भव।। मंत्र से प्रातः गोवर्धन पूजा करें। का. शु. २: इस दिन यम द्वितीया के उपलक्ष्य में बहिनें भाई की आयु वृद्धि के लिए चित्रगुप्त सहित यम की पूजा करें। भाई बहन के घर जाकर उसके हाथ से टीका लगवा कर बहिन को वस्त्रालंकारादि द्वारा प्रसन्न करें।

नाक्षत्रलक्षणः इस मास में वर्षा का कोई विशेष योग नहीं है। केवल शु. के एवं चं. के योग से कहीं बूंदाबांदी हो सकती है।

अयनांशाः २३।३९।२५ कार्तिक शुक्ल १५ बुधे श्रीष्टम् ११।२२।३०(१२।०) मध्याह्न

कु १५

वृ १०, ९, सू बु ८ श, शु ७ के, मं ६, ११ चं, ५, १२, २, ४, १ रा, ३

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
७	५	७	९	६	७	०	६
११	२५	१५	१८	२८	७	१४	१४
१८	३१	१३	१५	३०	३४	०	०
३३	१	४४	३७	२२	५३	२६	२६
६०	३६	८६	१०	७४	७	३	३
४५	५७	३०	६	५६	०	११	११
	मा	व	मा	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
अनु	चि	अनु	ध	वि	अनु	भ	स्वा
३	१	४	३	३	२	१	३

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२८ नवम्बर से ११ दिसम्बर सन् १९८५ ई) दक्षिणायन दक्षिण गोल हेमन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः—(१८)

अतिगंड ५५।५५(२९।४७)५४।५८(२८।४७)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	तारिख मु० खुल्ल.	रा० मार्ग.	अं० नवं.	हि० मार्ग.	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा० सू. उ.	सू. अ.	सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.
२५।१९	१	बृ	३३।२०	२०।३६	रो	२६।३४	१७।५४	सि	४५।२८	वा	०।२५	१४	७	२८	१३	मृगछोड़ी १ त्रिजयस्नानम् १ वृश्चिक शुक्रः २३।३५(१६।४५)	वृष	७।१६	५।२०	७।१२।७।१९
२५।१७	२	शु	३८।३२	२२।४३	मृ	३३।१	२०।३०	सा	४६।२६	तै	६।२	१५	८	२९	१४		मि ७।१४	७।१७	५।२०	७।१३।८।८
२५।१५	३	श	४३।०	२४।३०	आर्द्रा	३८।४२	२२।४७	शु	४७।८	वणि	१०।५२	१६	९	३०	१५	भ १०।५२(११।३९) उ ४३।०(२८।३०) या	मिथुन	७।१८	५।१९	७।१४।८।५८
२५।११	४	सू	४६।२३	२५।५२	पुन	४३।२६	२४।४२	शु	४६।५१	बव	१४।४९	१७	१०	दिस	१६	संकट ४ व्र. चन्द्रोदयः ३३।२३(२०।४१) दिसम्बर १२ A	क १८।१५	७।१९	५।१९	७।१५।९।४९
२४।५९	५	चं	४८।३४	२६।४६	पु	४७।०	२६।८	व्र	४५।४०	कौ	१७।३०	१८	११	२	१७	ज्येभेसूर्यः ३४।३०(२१।१०) उ	कर्क	७।२०	५।१९	७।१६।१०।४०
२४।५६	६	मं	४९।२०	२७।५	श्ले	४९।१३	२७।२	ऐ	४३।२४	गर	१९।७	१९	१२	३	१८	भ ४९।२०(२७।५) उ	सि २७।२	७।२१	५।१९	७।१७।११।३३
२४।५५	७	बु	४८।४५	२६।५१	म	५०।६	२७।२४	वै	४०।५	वि	१९।१४	२०	१३	४	१९	भ १९।१४(१५।३) या तुलायां भौमः २५।२२(१७।३०)	सिंह	७।२१	५।१९	७।१८।१२।२५
२४।५३	८	बृ	४६।३५	२६।०	पूफा	४९।२८	२७।९	वि	३५।३२	बा	१७।५०	२१	१४	५	२०	कालभैरव ८ यमदंष्ट्रा समाप्तिः पूर्वोदितो बुधः २।१२(८।१५)	सिंह	७।२२	५।१९	७।१९।३३।२०
२४।५०	९	शु	४२।५५	२४।३३	उफा	४७।२२	२६।२०	प्री	२९।४८	तै	१४।५५	२२	१५	६	२१		क ९।१०	७।२३	५।१९	७।२०।१४।१८
२४।४९	१०	श	३७।४५	२२।३०	ह	४३।४६	२४।५५	आयु	२२।५२	वणि	१०।२९	२३	१६	७	२२	भ १०।२९(११।३६) उ ३७।४५(२२।३०) या मार्गीबुधः ५९।५(३१।१०)	कन्या	७।२४	५।१९	७।२१।१५।२५
२४।४८	११	सू	३१।११	१९।५३	चि	३८।५०	२२।५७	सौ	१४।४७	बव	४।३६	२४	१७	८	२३	उत्पन्ना ११ व्र	तु ११।५९	७।२४	५।१९	७।२२।१६।१४
२४।४६	१२	चं	२३।३०	१६।५०	स्वा	३२।४९	२०।३४	शो	५।४२	तै	२३।३०	२५	१८	९	२४	प्रदोष १३ व्र अश्वि भे ४ राहु, स्वा २ केतुश्च ५४।५२(२९।२२) B	तुला	७।२५	५।२०	७।२३।१७।१३
२४।४५	१३	मं	१५।४	१३।२९	वि	२६।८	१७।५४	सु	४५।४४	वणि	१५।४	२६	१९	१०	२५	भ (१५।४) (१३।२९) उ ४०।३९(२४।१२) या	वृ १२।३५	७।२६	५।२०	७।२४।१८।१३
२४।४३	१४	बु	६।१६	९।५८	अनु	१९।९	१५।७	धृ	३५।२२	शकु	६।१६	२७	२०	११	२६	मघेर १४ मेला पुरमण्डल देविका स्नानम् उत्तर वाहिनी C	वृश्चिक	७।२७	५।२०	७।२५।१९।११
तिथिक्षयः	३०	बु	५७।२२	३०।३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	"षष्टितीर्थसहस्राणि तिस्रः कोटयोर्धकोटयः आयान्ति D	०	०	०	० ०

A अनुभे शुक्रः २।३२(८।२०) B उदितः शनिः ४५।१२(२५।३०) C शिवखोड़ी ज्ये भे शुक्रः ३१।३५(२२।५३) D देविका तीर्थे मार्गशीर्षे न संशयः।।"

मार्ग कृष्ण. ८ गुरौ श्रीष्टम् ११।३५(१२।०) मध्याह्न् अयनांशाः २३।३९।२६

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
७	६	७	९	७	७	०	६
१९	०	६	१९	८	८	१३	१३
२४	२९	४	३५	३२	३१	३५	३५
१६	४	४६	४१	३३	५३	०	०
६०	३६	४०	१०	७५	७	३	
४४	५७	२८	१८	४६	०	११	११
	मा	व	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
ज्ये	चि	अनु	श्र	अनु	अनु	भ	स्वा

कु. ८

मार्गशीर्षवदिचर्याः मार्ग में देविका स्नान से शिवलोक प्राप्ति होती है क्योंकि मार्ग में तीन करोड़ पचास लाख साठ हजार तीर्थ देविका नदी में आ जाया करते हैं। इस मास में एक भक्त होकर प्रद्युम्न पूजन वा ब्राह्मण भोजन से आरोग्य प्राप्ति तथा पापों से मुक्ति मिलती है। इस मास में विशाखा नक्षत्र में सूर्य का योग होने पर जब कृत्तिका नक्षत्र में चन्द्रमा आवे तब पद्मक योग होता है। पद्मक योग पुष्कर तीर्थ में स्नान वा गोदान द्वारा अनन्त पुण्य प्राप्ति होवे। मा. कृ. ८: इस दिन भैरव मन्दिर में जाकर उपवास रखें। प्रथम कालोदक तीर्थ स्नान तर्पण रात्रिजागरण से पितृगणों का उद्धार तथा वर्ष यावत विघ्न टल जाते हैं।

जलक्षलक्षणः दिसम्बर ३, ७, ११ के दिन साधारण वर्षा योग है।

अयनांशाः २३।३९।२७ मार्ग कृष्ण ३० बुधे श्रीष्टम् ११।२२।३०(१२।०) मध्याह्न्

कु. ३०

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
७	६	७	९	७	७	०	६
२५	४	५	२०	१६	९	१३	१३
३०	१२	४५	२८	५	१३	१५	१५
४५	४	५०	५१	३१	३२	५५	५५
६१	३६	३३	११	७५	६	३	३
०	२९	२७	३४	५४	३९	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
ज्ये	चि	अनु	श्र	अनु	अनु		

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (१२ दिसम्बर से २७ दिसम्बर सन् १९८५ ई) दक्षिणायन दक्षिण गोल शिशिरर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः—(१९)

तारिख — मु० रा० अं० हि० — उषा ५६।१(३०।७) ग्रुष ५९।२(३१।४) — जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	डी.	मार्ग	दिसं.	मार्ग	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२४।४२	१	वृ	४८।४०	२६।५५	ज्ये.	१२।१०	१२।१९	शु	२५।१९	कि	२२।५६	२८	२१	१२	२७		ध १२।१९	७।२७	५।२०	७।२६।२०।११
२४।४१	२	शु	४१।१०	२३।५६	मू	५।३८	९।४४	गं	१५।१९	बा	१४।५१	२९	२२	१३	२८	चन्द्रदर्शनम् मु. ३०	धनु	७।२८	५।२०	७।२७।२१।१४
२४।४०	३	श	३४।४६	२१।२४	पूषा	०।८	७।३२	वृ	६।२६	तै	७।४५	रा	२३	१४	२९		म १३।५	७।२९	५।२१	७।२८।२२।१८
२४।३९	४	सू	३०।३	१९।३०	श्र	५३।४७	२९।०	व्या	५२।३३	वणि	२।११	२	२४	१५	पौ	भ २।११(८।२२) उ. ३०।३(१९।३०) या. मूल भे धनुंषि A	मकर	७।२९	५।२१	७।२९।२३।२०
२४।३८	५	चं	२७।१५	१८।२४	ध	५३।२८	२८।५४	ह	४७।५५	बा	२७।१५	३	२५	१६	२	श्री बलराम जयन्ती ५ सीताराम विवाहोत्सव: B	कुं १६।५०	७।३०	५।२१	८।०।२४।२५
२४।३८	६	मं	२६।४२	१८।१२	श	५५।२१	२९।३९	वज्र	४५।३	तै	२६।४२	४	२६	१७	३	स्कन्द ६ (शतभिषगो रात्री शिव लिंग दर्शनम्)	कुम्भ	७।३१	५।२२	८।१।२५।३१
२४।३६	७	बु	२७।४५	१८।३७	पूभा	५८।२४	३०।५३	सि	४३।१०	वणि	२७।४५	५	२७	१८	४	भ २७।४५(१८।३७) उ. ५९।३७(३१।२२) या. भानु ७	मी २४।२९	७।३१	५।२२	८।२।२६।३५
२४।३६	८	बृ	३१।२९	२०।७	उभा	६०।०	उदयान्त	व्य	४३।५०	बव	३१।२९	६	२८	१९	५		मीन	७।३१	५।२२	८।३।२७।४०
२४।३६	९	शु	३७।८	२३।२३	उभा	४।५३	९।२९	वरी	४५।२२	बा	४।१९	७	२९	२०	६	कल्यादि: ९ नन्दिनी ९ व्र. ज्ये भे मार्गी बुध: ४२।१२(२४।२६)	मीन	७।३२	५।२३	८।४।२८।४८
२४।३६	१०	श	४३।२६	२४।५५	रे	११।४८	१२।१६	प	४७।२८	तै	१०।८	८	३०	२१	७	पंचक ११।४८(१२।१६) या. सायनं मकरेऽर्क C	मे १२।१६	७।३२	५।२३	८।५।२९।५६
२४।३६	११	सू	५०।२३	२७।४३	अश्वि	१९।३५	१५।२३	शि	५०।१०	वणि	१६।५३	९	पौ	२२	८	भ १६।५३(१४।१९) उ. ५०।२३(२७।४३) या. मोक्षदा D	मेष	७।३३	५।२३	८।६।३१।२
२४।३६	१२	चं	५७।११	३०।२६	भ	२७।३१	१८।३४	सि	५२।२७	बव	२३।५०	१०	२	२३	९		वृ २५।२०	७।३३	५।२४	८।७।३२।८
२४।३७	१३	मं	६०।०	उदयान्त	कृ	३५।८	२१।३७	सा	५४।३५	कौ	३०।२६	११	३	२४	१०	प्रदोष १३ व्र	वृष	७।३४	५।२५	८।८।३३।१८
२४।३७	१३	बु	३।३१	८।५९	रो	४२।५	२४।२५	शु	५६।४	तै	३।३१	१२	४	२५	११	पिशाच मोचन श्राद्धम् मेला पुरमण्डल उत्तर वाहिनी ध्नि E	वृष	७।३५	५।२५	८।९।३४।२८
२४।३७	१४	बृ	९।१	११।१२	मृ	४८।९	२६।५१	शु	५६।५२	वणि	९।१	१३	५	२६	१२	भ ९।१(११।२२) उ. ४१।१७(२४।६) या. दत्तात्रेय जयन्ती F	मि १३।४१	७।३५	५।२६	८।१०।३५।३६
२४।३८	१५	शु	१३।३३	१३।०	आर्द्रा	५३।१५	२८।५३	गं	५६।५४	ब	१३।३३	१४	६	२७	१३	मार्गस्नान समाप्ति: १५ मार्गी १५ मेला जगन्नाथ G	मिथुन	७।३५	५।२६	८।११।३६।४५

A सूर्य: ३६।२(२१।५४) मु ३० पुण्यं परदिने स्वा भे भौम: १२।२९(१२।२९) B ५ पचक २३।२१(१६।५०) उ. C ५१।१३ उत्तरायणं शिशिरर्तु. D ११ गीता जयन्ती ११ मूल भे धनुषि च शुक्र: १३।४९(१३।५) शुक्रवार्धक्यम् १३।१७(२०।५०) E भे गुरु ४४।४०(२५।२७) पूर्वेअस्त: शुक्र: ३३।१४(२०।५२) F १५ श्री सत्य व्र. विशा भे भौम: ५६।६(३०।४८) G ऊधमपुर गोल.

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ गुरौ श्रीष्टम् ११।१३(१२।०) मध्याह्न अयनांशा: २३।३९।२८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
८	६	७	९	७	७	०	६
३	९	१२	२२	२६	१०	१२	१२
३९	८	२७	०	१०	८	५०	५०
५	१	१०	५८	१९	५३	१९	१९
६१	३७	६८	११	७५	७	३	३
५	०	४८	११	१४	३	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ
मू.	स्वा	अनु	श्र	ज्ये	अनु	अश्वि	स्वा
२	१	३	४	३	३	४	२

कु॰ ८

वृ. १० — बु ८ — ११ — ९ सू — ७ के — चं १२ — ६ — १ रा — ३ — ५ — २ — ४

मार्गशीर्षशुविचर्या: मार्गशीर्ष से रवि व्रत आरम्भ कर वर्ष भर करने से सूर्य के अधिष्ठातृ देवता भगवान् विष्णु प्रसन्न होते हैं। काम्य रविव्रत में भक्ष्य पदार्थ मार्गशीर्ष में तुलसी के तीन पत्ते, पौष में घृत दस तोले, माघ में तिल तीन मुट्ठी, फाल्गुन में दधि दस तोले, चैत्र मे मधु दो तोले, वैशाख में गोबर तीन तोले, ज्येष्ठ में जल तीन अञ्जलि, आषाढ़ में काली मिर्च तीन, श्रावण में सत्तू दस तोले, भाद्रपद में गोमूत्र तीन गण्डूष, आश्विन में शक्कर पाँच तोले, कार्तिक में हविष्य भक्षण लिखा है। मा. शु. ५: इस दिन यथेष्ट लब्धोपचार से नाग पूजा करनी चाहिए। मा. शु. ६: इसमें चम्पा षष्ठी के उपलक्ष्य में शतभिषा में चन्द्र का योग होने पर आकाश में शिवलिंग दर्शन होता है। मा. शु. ६: रात के पहले पहर में चाँदी की स्कन्द प्रतिमा का पूजन विधिवत् करें। मा. शु. ९: इस दिन नंदिनी देवी का पूजन तीन रात्रि तक व्रतपूर्वक करने से अश्वमेध यज्ञ फल वा विष्णुधाम प्राप्ति कही है।

नाभसलक्षण: दिसम्बर १४, २१, २५ के दिन वर्षा के साथ ओलों की सम्भावना है।

अयनांशा: २३।३९।२९ — मार्गशीर्ष शुक्ल १५ भृगौश्रीष्टम् ११।१३(१२।०) मध्याह्न

कु॰ १५

वृ १० — बु मं ८ — सू ९ — ११ — ७ के — १२ — ६ — रा १ — ३ — ५ — २ — ४

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
८	६	७	९	८	७	०	६
११	१४	२२	२३	६	११	१२	१२
४८	३	३६	३७	१४	१	२५	२५
०	१	१४	२९	२२	५२	३	३
६१	३७	७२	१२	७७	६	३	३
८	२	२४	४५	५४	४८	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	अ	उ	अअ
मू	स्वा	ज्ये	ध	मृ	अनु	अश्वि	स्वा
४	३	२	१	२	३	४	२

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२८ दिसम्बर से १० जनवरी सन् १९८६ ई) उत्तरायण दक्षिण गोल शिशिरर्तु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ पौष कृष्णपक्ष:—(२०)

तारिक — मु० रा० अं० हि०

चित्रा ५७।५३(३०।४७) मंड ५५।४०(२९।५४)

जम्मू नगरे भारतीय स्टै०टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	खी. उ.	पौष	दिसं	पौष	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचार:	सू. उ	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२४।३८	१	श	१६।५७	१४:२१	पुन	५७।१२	३०।२९	ऐं	५६।१	कौ	१६।५७	१५	७	२८	१४	पुषा मे सूर्य: ४१।१६(२४।७)	क २४।७	७।३६	५।२६	८।१२।३७।५६
२४।३९	२	सू	१९।१६	१५।१९	पु	६०।०	उदयान्तं	वै	५४।२३	ग	१९।१६	१६	८	२९	१५	भ ४९।५४(२७।३४) उ.	कर्क	७।३७	५।२८	८।१३।३९।४
२४।४०	३	च	२०।३३	१५।५०	पु	०।११	७।४१	वि	५१।५९	वि	२०।३३	१७	९	३०	१६	भ २०।३३(१५।५०) या. सकट ४ब्र. चन्द्रोदय: ३१।५४(२०।२३)	कर्क	७।३७	५।२८	८।१४।४०।१६
२४।४१	४	म	२०।५५	१५।५९	श्ले	२।१६	८।३१	प्री	४८।५४	वा	२०।५५	१८	१०	३१	१७		लि ८।३१	७।३७	५।२९	८।१५।४१।२४
२४।४२	५	बु	२०।१९	१५।४५	मघा	३।२६	९।१०	आ	४५।१	तै	२०।१९	१९	११	ज.	१८	जनवरी १ सन् १९८६ ई० मूल भे धनुषि बुध: २६।९(२८।४) A	सिंह	७।३७	५।३०	८।१६।४२।३४
२४।४४	६	बृ	१८।४०	१५।५	पूफा	३।३५	९।३	सौ	४०।१८	वणि	१८।४०	२०	१२	२	१९	भ १८।४०(१५।५) उ ४७।१८(२६।३२) या.	क १५।०	७।३७	५।३१	८।१७।५३।४३
२४।४६	७	शु	१५।५७	१४।०	उफा	२।४२	८।४२	शो	३४।४६	बव	१५।५७	२१	१३	३	२०		कन्या	७।३७	५।३२	८।१८।५४।५२
२४।४७	८	श	१२।११	१२।३१	ह	०।४७	७।५७	अति	२८।२५	कौ	१२।११	२२	१४	४	२१	अष्टकाश्राद्धम्	तु १९।२६	७।३७	५।३२	८।१९।४६।४
२४।४९	९	सू	७।२५	१०।३६	स्वा	५३।५८	२९।१३	सु	२१।१३	ग	७।२५	२३	१५	५	२२	भ ३४।३०(१३।४८) उ.	तुला	७।३८	५।३३	८।२०।४७।१३
२४।५०	१०	चं	१।३६	८।१७	वि	४९।१४	२७।२०	धृ	१३।१५	वि	१।३६	२४	१६	६	२३	भ १।३६(८।१७) या. सफला ११ ब्र. स्मार्तानाम्	वृ. २१।५०	७।३८	५।३४	८।२१।४८।२३
तिथिक्षय:	११	चं.	५४।५९	२९।३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
२४।५२	१२	मं.	४७।५९	२६।४६	अनु	४३।५१	२५।११	शू	४।४२	कौ	२१।२९	२५	१७	७	२४	सफला ११ ब्र. वैष्णवानाम् श्रीबौधायन जयन्ती १२	वृश्चिक	७।३८	५।३५	८।२२।४९।३२
२४।५५	१३	बु	४०।१७	२३।४५	ज्ये	३८।८	२२।५३	वृ	४६।२४	ग	१४।४	२६	१८	८	२५	भ ४०।१७(१३।४५) उ. प्रदोष १३ ब्र.	ध २२।५३	७।३८	५।३६	८।२३।५०।४१
२४।५६	१४	बृ	३२।४५	२०।४४	मू	३२।२४	२०।३६	ध्रु	३७।१०	वि	६।२९	२७	१९	९	२६	भ ६।२९(२३।४५) या.	धनु:	७।३८	५।३६	८।२४।५१।५०
२४।५८	३०	शु	२५।३७	१७।५३	पूषा	२७।३	१८।२७	व्या	२८।१८	ना	२५।३७	२८	२०	१०	२७	उषाभेसूर्य: ४६।८(२६।६) पूषा मे बुध: B	म २३।५८	७।३८	५।३७	८।२५।५२।५८

A पूषा मे शुक ४९।५८(२७।३६) B २४।२२(१७।२३) पूर्वेअस्तोबुध: २५।४०(१७।५४)

पौष कृ. ८ शनौ श्रीष्टम् १०।५५(१२।०) मध्याह्न् अयनांशा: २३।३९।३१

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
८	६	८	९	८	७	०	६
१९	१८	४	२५	१६	११	११	११
५७	५५	०	१८	१७	५०	५९	५९
११	४८	२	३०	१८	३७	३६	३६
६१	३६	८९	१३	७५	६	३	३
९	४५	१	९	१४	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पूषा	चि	मू	ध	पूषा	अनु	अश्वि	स्वा
२	४	२	१	३	३	४	२

कु८

१० बृ | ८ श | ९ सू बु शु चं | ७ के मं | ११ | १२ | ६ | १ रा | ३ | ५ | २ | ४

पौषचर्चा: पौष में वस्त्र व लकड़ी का दान विष्णु एवं शिव प्रीतिवर्धक कहा गया है। पौष में नर्मदा स्नान से अत्यन्त पुण्य प्राप्त होता है। इसी मास में मोत्था कूठ गोरोचन पद्म जटामाँसी आदि औषधी युक्त जल से स्नान करे तो सात जन्म तक निर्धन वा रोगी न होवे। पौष में गृह नगरादि का दान करने का अत्यन्त पुण्य लिखा है। **शनिस्तोत्रम्:** नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते। नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णरूपाय ते नमः। नमस्ते रौद्रदेहाय कालकाय नमो स्तुते। नमस्ते यमसंज्ञाय शनैश्चर नमो स्तुते प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्यमे। इंदस्तोत्रं प्रत्यहं च प्रात: काले सदा पठेत्। सार्धसप्त वार्षिकी पीड़ा निवर्तते।। ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलह प्रिया। अजा मातङ्गिनी चैव महिषी चतुरंगमा। अष्टावेता: शने: पत्न्य: प्रात रुत्थाय चेत्पठेत्। तदा शनैश्चरपीड़ान, भवन्तिकदाचन।। A च शनि

नामसलक्षण: दिसम्बर २९, जनवरी ५, ८, १० को दिन बूंदाबांदी से शीताधिक्य हो।

अयनांशा: २३।३९।३२ पौष कृ. ३० शुक्रे श्रीष्टम् १०।५५(१२।०) मध्याह्न्

कु३०

१० बृ | ८ | ९ शु बु सू | के ७ मं | ११ | १२ | चं ६ | १ रा | ३ | ५ | २ | ४

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
८	६	८	९	८	७	०	६
२६	२२	१२	२६	२३	१२	११	११
४	३४	५९	३७	५०	२६	४०	४०
६	४८	३६	४४	१८	३९	३२	३२
६१	३५	९१	१३	७४	५	३	३
७	५४	१५	४७	१५	४३	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पूषा	चि	मू	ध	पूषा	अनु	अश्वि	स्वा
४	१	४	१	४	३	४	२

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (११ जनवरी से २५ जनवरी सन् १९८६ ई) उत्तरायण दक्षिण गोल शिशिरर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ पौष शुक्लपक्षः—(२१)

तारिख: मु० रा० अं० हि० | परिघ ५८।५७(३१।१२) | जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० | सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	जुम	पौष	जन.	पौष	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) अयन	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२५।१	१	श	१९।१९	१५।२२	उषा	२२।३३	१६।३९	ह	२०।७	बव	१९।१९	२९	२१	११	२८		मकर	७।३८	५।३८	८।२६।५४।६
२५।५	२	सु	१४।१७	१३।२१	श्र	१९।२०	१५।२२	वज्र	१२।५८	की	१४।१७	३०	२२	१२	२९	चन्द्रदर्शनम् मु. ३० पंचक ४८।१८(२६।५७) उ.	कु. २६।५७	७।३८	५।३९	८।२७।५५।१४
२५।६	३	चं	१०।५३	११।५९	ध	१७।४४	१४।४४	सि	७।६	ग	१०।५३	जम	२३	१३	३०	भ ४०।१०(२३।४५) उ. लोहड़ी महोत्सवः A	कुम्भ	७।३८	५।४०	८।२८।५६।२२
२५।९	४	मं	९।२७	११।२४	श	१८।१५	१४।५१	व्य	२।४८	वि	९।२७	२	२४	१४	माघ	भ ९।२७(११।२४) या. सं. मकरेअर्कः २।२९(८।३७) B	कुम्भ	७।३७	५।४१	८।२९।५७।२७
२५।११	५	बु	१०।६	११।४०	पूषा	२०।२८	१५।४९	व	०।४	बा	१०।६	३	२५	१५	२	मकरेशुक्रः ५।७(९।४०)	मी ९।२९	७।३७	५।४२	९।०।५८।३३
२५।१५	६	बृ	१२।५३	१२।४६	उषा	२४।५१	१७।३४	शि	५९।१९	तै	१२।५३	४	२६	१६	३		मीन	७।३७	५।४३	९।१।५९।४०
२५।१८	७	शु	१७।२८	१४।३६	रे	३०।५५	१६।५९	सि	६०।०	वणि	१७।२८	५	२७	१७	४	भ १७।२८(१४।३६) उ. ५०।२०(२७।४५) या. C	मे १९।५९	७।३७	५।४४	९।३।०।४६
२५।२१	८	श	२३।३१	१७।१	अश्वि	३८।१४	२२।५४	सि	०।५४	बव	२३।३१	६	२८	१८	५		मेष	७।३६	५।४५	९।४।१।५९
२५।२३	९	सु	३०।१२	१९।४१	भ	४६।०	२६।०	सा	३।७	कौ	३०।१२	७	२९	१९	६	पूषा मे बुधः ५६।४५(३०।३०)	मेष	७।३६	५।४५	९।५।२।५४
२५।२६	१०	चं	३७।२	२२।२५	कृ	५३।४९	२९।८	शु	५।३३	तै	३।३८	८	३०	२०	७	सायनं कुम्भेअर्कः १६।५८	वृ ८।४८	७।३६	५।४६	९।६।३।५९
२५।३०	११	मं	४३।२१	२४।५६	रो	६०।०	उदयान्तं	शु	७।५६	वणि	१०।२०	९	माघ	२१	८	भ. १०।२०(११।४३) उ. ४३।२१(२४।५६) या. मन्वादिः D	वृष	७।३५	५।४८	९।७।५।०
२५।३३	१२	बु	४८।३५	२७।१	रो	०।५७	७।५८	ब्र	९।३७	बव	१६।७	१०	२	२२	९	वृश्चिके भौमः ३०।४७(१९।५५)	मि २१।१४	७।३५	५।४८	९।८।६।३
२५।३६	१३	बृ	५२।२९	२८।३५	मृ	६।५९	१०।२६	ऐं	१०।२६	कौ	२०।४२	११	३	२३	१०	प्रदोष व्र. १३ श्रव. भे सूर्यः ५२।१०(२८।२३) श्रव भे शुक्रः E	मिथुन	७।३५	५।४९	९।९।७।५
२५।४०	१४	शु	५५।१४	२८।३६	आर्द्रा	११।४७	१२।१७	वै	१०।१७	ग	२३।५९	१२	४	२४	११	भ ५५।१४(२९।२६) उ. अनुभे भौमः ४।५१(९।२९) धनि २ F	क ३।२२	७।३४	५।५०	९।१०।८।४
२५।४०	१५	श	५६।१९	३०।२	पुन	१५।११	१३।३९	वि	९।३	वि	२५।४७	१३	५	२५	१२	भ ९।३(११।११) या पौर्णी १५ माघस्नानारम्भः श्रीसत्य G	कर्क	७।३४	५।५१	९।११।९।५

A उषा भे शुक्रः २५।५२(१७।५९) B मु. १५ पुण्य ४२।२९ या उत्तरायणे C पंचक ३०।१५(१९।५९) या. D ११ पुत्रदा ११व्र राष्ट्रिय माघ उषा २ मकरे च बुध २।१५(९।८)
E ९।४९(८।४३) F कुम्भे गुरु ५३।७(२९।३२) G १५ व्र.

पौष शुक्ल ८ शनौ श्रीष्टम् १११०(१२।०) मध्याह्न अयनांशाः २३।३९।३३

कु ८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
९	६	८	९	९	७	०	६
४	२७	२५	२८	३	१३	११	११
१३	२३	२५	२६	५३	११	१५	१५
२	४२	५४	४८	१८	३९	६	६
६१	३६	९६	१३	७५	५	३	३
४	१८	३४	४३	१२	४५	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	ब	ब
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
उषा	बि	पूषा	ध	उषा	अनु	अश्वि	स्वा
३	३	४	२	३	३	४	२

(कुण्डली: ११; ९ बु; सू; १२; बृ १०; शु; ८ श; रा १; चं; के; मं ७; २; ४; ६; ३; ५)

पौषशुचिचर्याः पौष शुक्ल मकर का सूर्य होने से अथवा पौष शुक्ल एकादशी द्वादशी वा पूर्णिमा के स्नानारम्भ करके कुम्भ की संक्रान्ति माघ शुक्ल एकादशी द्वादशी अथवा पूर्णिमा को समाप्त करे। इसमें अबाल वृद्ध सभी के लिए स्नान विहित है। असमर्थ हो तो उष्ण जल से स्नान करे। इस मास में प्रयागराज में त्रिवेणी स्नान का महत्व शास्त्रों में प्रतिपादित है। कहीं भी प्रयाग का स्मरण करें तो गंगा स्नान फल प्राप्त हो। **पौष में गया श्राद्ध का महत्वः** मीने मेषे स्थिते सूर्ये कन्यायाः कार्मुकेघटे दुर्लभं त्रिषू लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। अधिमासे जन्म दिने अस्ते च गुरुशुक्रयोः न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धमं सिंहस्थे च वृहस्पतौ। इस मास में पितरों के निमित्त तिल दान से पितरों को अक्षय प्राप्ति होती है। पौ. शु. ११ से माघ शुक्ल एकादशी तक मास भर भूशयन निराहार त्रिकाल स्नान त्रिकाल विष्णु पूजा करने से भक्ति एवं पुण्यलाभ होता है।

नक्षत्रलक्षण: जनवरी १३, १९, २४ के दिन साधारण वृष्टि योग बनता है।

अयनांशाः २३।३९।३४ **पौष शुक्ल १५ शनौ श्रीष्टम् १११५(१२।०) मध्याह्न**

कु १५

(कुण्डली: ११ बृ; ९; सू; शु; १२; १० बु; श ८; मं; १ रा; के ७; चं ४; २; ६; ३; ५)

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
९	७	९	१०	९	७	०	६
११	१	६	०	१२	१३	१०	१०
२०	३५	४५	३	४१	४७	५२	५२
२१	४४	४१	४५	२०	२९	५०	५०
६१	३६	९९	१४	७५	४	३	३
०	०	१६	१	१५	४५	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	ब	ब
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
श्र	बि	उषा	ध	श्र	अनु	अश्वि	स्वा
१	४	४	३	१	४	४	२

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२६ जनवरी से ८ फरवरी सन् १९८६ ई) उत्तरायण शिशिर शोल शरवर्तु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ माघ कृष्णपक्ष:—(२२)

सौभाग्य ५९।१६(३१।२१) ज्येष्ठ ५८।४०(३१।६)
हर्षण ५४।४०(२९।२२)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.व.उ.व.	तारिख मु० रा० माघ	अं० जन.	हि० माघ	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) ज्ञानम	चन्द्रचार:	जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० सू. उ.	सू. अ.	सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.
२५।४७	१	सू	५६।५	२९।५९	पु	१७।१९	१४।२९	प्री	६।४६	वा	२६।१७	१४	६	२६	१३		कर्क	७।३३	५।५२	९।१२।१०।१२
२५।५०	२	चं	५५।१	२९।३४	श्ले	१८।१९	१४।५३	आ	३।३४	तै	२५।४०	१५	७	२७	१४	श्रव मे बुध: ७।५८(१०।४५)	सि. १४।५३	७।३३	५।५३	९।१३।११।१२
२५।५५	३	मं.	५३।३	२८।४५	म	१८।२७	१४।५५	शो	५५।०	वणि	२४।९	१६	८	२८	१५	म २४।९(१७।१२) उ. ५३।३(२८।४५)	सिंह	७।३२	५।५४	९।१४।११।५८
२५।५९	४	बु	५०।२३	२७।४१	पूफ	१७।४४	१४।३८	अति	४९।४९	बव	२१।४८	१७	९	२९	१६	संकट ४ ब्र. तिला (भुग्गा) ४ गणेश जयन्ती ४A	क २०।३१	७।३२	५।५५	९।१५।१२।५६
२६।२	५	बृ	४७।६	२६।२१	उफ	१६।२५	१४।५	सु	४४।१०	कौ	१८।४९	१८	१०	३०	१७		कन्या	७।३१	५।५६	९।१६।१३।४९
२६।६	६	शु	४३।२०	२४।५१	ह	१४।३१	१३।२०	धृ	३८।७	गर	१५।१६	१९	११	३१	१८	म ४३।२०(२४।५१) उ.	तु २४।५३	७।३१	५।५७	९।१७।१४।४५
२६।१०	७	श	३९।६	२३।९	चि	१२।१४	१२।२४	शू	३१।४४	वि	११।१८	२०	१२	फर	१९	भ ११।१८(१२।२) या. श्री रामानन्द जयन्ती ७	तुला	७।३०	५।५८	९।१८।१५।३७
२६।१४	८	सू	३४।२३	२१।१४	स्वा	९।२५	११।१५	गं	२४।५६	वा	६।४९	२१	१३	२	२०	अष्टका श्राद्धम सारस्वत ८ धनि मे ४५।५३(२३।२७)	वृ २८।१७	७।२९	५।५९	९।१९।१९।१६
२६।१८	९	चं	२९।१२	१९।१०	वि	६।८	९।५६	वृ	१७।४५	तै	१।५०	२२	१४	३	२१	म ५६।२७(३०।४) उ	वृश्चिक	७।२९	६।०	९।२०।२०।१७
२६।२३	१०	मं	२३।४३	१६।५७	अनु	२।३१	८।२९	ध्रु	१०।२०	वि	२३।४३	२३	१५	४	२२	म २३।४३(१६।५७) या	ध ३९।६	७।२८	६।१	९।२१।१८।९
२६।२७	११	बु	१८।०	१४।३९	मू	२।३७	६।५४	व्या	२।४२	वा	१८।०	२४	१६	५	२३	षट्तिला ११ व्र. धनि मे बुध ४५।३६(२५।४१)B	धनु:	७।२७	६।२	९।२२।१८।५६
२६।३२	१२	बृ	१२।१४	१२।२०	पूषा	५०।४०	२७।४२	वज्र	४७।१९	तै	१२।१४	२५	१७	६	२४	प्रदोष १३ व्र. पश्चिमोदित: बुध: ४२।४७(२४।३३)	धनु:	७।२६	६।३	९।२३।१९।४३
२६।३६	१३	शु	६।४२	१०।६	उषा	४७।१४	२६।१९	सि	४०।३	वणि	६।४२	२६	१८	७	२५	म ६।४२(१०।६) उ. ३४।१३(२१।८) या. धनिष्ठा मे C	म ९।२०	७।२५	६।४	९।२४।२०।१८
२६।४१	१४	श	१।४४	८।६	श्र	४४।३६	२५।१५	व्य	३३।२५	श	१।४४	२७	१९	८	२६	द्वापर युगादि: ३० मौनी ३० मेला प्रयागराज त्रिवेणी D	मकर	७।२४	६।५	९।२५।२१।१३
तिथिक्षय:	३०	श	५७।३८	३०।२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

A चन्द्रोदय: ३४।१५(२१।१४) B गुरुवार्धक्यम् ५१।३(२७।५३) C सूर्य: ४८।५२(२४।५९) धनि ३ मे कुम्भे च बुध: ३७।५१(२२।३४) D संगम कुम्भे शुक्र: ५९।१६(३१।६) अस्तोगुरु: ५१।१०(२७।५६)

माघ कृ. ८ रवौ श्रीष्टम् ११।१५(१२।०) मध्याह्न् अयनांशा: २३।३९।३६

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
९	७	१०	१०	१०	७	०	६
२५	९	१	३	०	१४	१०	१०
३२	५३	०	२२	१५	४७	८	८
५२	३२	७	४९	१४	२४	१९	१९
६०	३४	१०८	१३	७५	३	३	३
४५	५६	१९	५४	१९	२२	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	अ	अ	अ	अ	उ	अ	अ
ध	अनु	ध	ध	ध	अनु	श्रविष	स्वा
१	२	३	४	३	४	४	२

कु. ८

११ बृ सू ९ १२ १० शु मं ८ बु श १ रा ७ चं के २ ४ ६ ३ ५

माघवविचर्या: माघ मास में अरुणोदय काल से सूर्योदय होने से पूर्व प्रयागराज में अथवा प्रयाग मात्र का स्मरण करते हुए किसी भी पुण्य नदी में नित्य स्नान किया जाए तो सात कुलों समेत देव देह की प्राप्ति एवं विष्णु भक्ति का लाभ होता है। माघ स्नान मंत्र: ॐ विष्णवे नम:, गंगायै नम:, दुखदारिद्र्यनाशाय श्री विष्णो स्तोषाय च। प्रात: स्नानं करोम्यद्य माघे पाप प्रणाशनम्। इस मंत्र से स्नान के पश्चात् **सूर्यार्घ्य** मंत्र:—ॐ सावित्रं प्रस वित्रं च परमधामजले मम। त्वत्तेजया परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा। सूर्यार्घ्य के पश्चात् यथा शक्ति ब्रह्मचर्यपालन, भूमिशयन, तिल होम पूर्वक हविष्य भोजन करना पुण्य प्रद कहा है। माघ में तैलाभ्यङ्ग होम के अतिरिक्त अग्नि सेवन निषिद्ध है। माघ में तिल, धेनु, वस्त्र, कम्बल घृत, तेल, लोहा, सुवर्ण, अन्न वा पाँव का जूता इनका दान अक्षय पुण्य प्रद माना है। मा. कृ. ११ षट्तिला एकादशी के दिन तिल मर्दन, तिल स्नान, तिल होम, तिल तर्पण, तिल दान एवं तिल भक्षण करने से मनुष्य पापमुक्त होता है। मौनी अमावस के दिन यदि रविवार श्रवण नक्षत्र व्यतीपात का योग सौ सूर्य ग्रहण के तुल्य अर्धोदय योग माना है जो मेरुतुल्य फलद कहा है।

नाक्षत्रलक्षण: पक्षारम्भ एवं पक्षान्त में साधारण वर्षायोग बनता है।

अयनांशा: २३।३९।३७ माघ कृ. ३० शनौ श्रीष्टम् ११।३०(१२।०) मध्याह्न्

कु. ३०

बु ११ बृ १० ९ श ८ मं १२ सू चं शु १ रा ७ के २ ४ ६ ३ ५

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
९	७	९	१०	९	७	०	६
१९	६	२०	१	२२	१४	१०	१०
२७	२१	२०	५३	४४	२४	२७	२७
५५	३२	१९	१	१४	८	२४	२४
६०	३४	१०५	१८	७५	४	३	३
५३	४६	१५	४८	४९	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
ध	अनु	ध	ध	ध	अनु	श्रवि	स्वा
३	१	४	३	४	४	४	२

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ माघ शुक्लपक्ष:—(२३)

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	ज.उ.अ. (मु०)	माघ (रा०)	फर. (बं०)	माघ (हि०)	विवरण में वण्यादि (भा० स्टै० टा०) शानम	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२६।४५	१	सू	५३।५९	२९।०	ध	४३।२	२४।३७	वरी	२७।३४	कि	२५।४८	२८	२०	९	२७	शैशिर नवरात्रारम्भ: घटस्थापनम् श्री बल्लभाचार्य A	कु १२।५२	७।२४	६।६	९।२६।२१।५८
२६।४९	२	चं	५३।२१	२८।४४	श	४२।५८	२४।३४	प	२२।५३	बा	२३।५०	२९	२१	१०	२८	चन्द्रदर्शनम् मु. १५	कुम्भ	७।२३	६।७	९।२७।२२।४०
२६।५४	३	मं	५३।४४	२८।५२	पूभा	४४।३२	२५।११	शि	१९।२९	तै	२३।२०	ज	२२	११	२९	शत भे बुध: १७।३५(१४।२४)	मी १८।५८	७।२२	६।८	९।२८।२३।२०
२६।५८	४	बु	५६।४	२९।४७	उभा	४७।५८	२६।३२	सि	१७।३०	वणि	२४।४२	२	२३	१२	फा	भ २४।४२(१७।१४) उ. ५६।४(२९।४७) या सं. कुम्भेअर्क: B	मीन	७।२१	६।८	९।२९।२३।५८
२७।३	५	बृ	६०।०	उदयान्तं	रे	५३।१	२८।३३	सा	१६।५६	वव	२७।५३	३	२४	१३	२	शत भे शुक्र: १८।४०(१४।४८) कुन्द ४ तिल ४	मे २८।३३	७।२०	६।९	१०।०।२४।३६
२७।८	५	शु	०।६	७।२२	अश्वि	५९।३३	३१।९	शु	१७।३६	वा	०।६	४	२५	१४	३	श्री बसन्त ५ सरस्वती जयन्ती ५ काम महोत्सव: ५	मेष	७।१९	६।१०	१०।१।२५।१२
२७।१२	६	श	५।३५	९।३२	भ	६०।०	उदयान्तं	शु	११।१८	तै	५।३५	५	२६	१५	४	शुक्रबाल्यत्व समाप्ति: ४९।३८(२७।१०)	मेष	७।१८	६।११	१०।२।२५।४६
२७।१७	७	सू	१२।०	१२।५	भ	७।३	१०।६	ब्र	२१।३६	वणि	१२।०	६	२७	१६	५	भ १२।०(१२।५) उ. ४५।२३(२५।२६) या. C	वृ १६।५३	७।१७	६।१२	१०।३।२६।२०
२७।२२	८	चं	१८।४५	१४।४६	कृ	१४।५३	१३।१३	ऐं	२४।५	व	१८।४५	७	२८	१७	६	दुर्गा ८ भीष्म ८	वृष	७।१६	६।१३	१०।४।२६।५२
२७।२६	९	म	३२।६	१७।१८	रो	२२।२१	१६।१२	वै	२६।१४	कौ	२५।६	८	२९	१८	७	सायन मीनेअर्क: ५३।३३ बसन्तऋतु: प्रा. महानन्दा दुर्गा ९ D	मि २९।३४	७।१५	६।१४	१०।५।२७।२१
२७।३१	१०	बु	३०।२८	१९।२५	मृ	२८।५६	१८।४९	वि	२७।३८	ग	३०।२८	९	३०	१९	८	शतभिषा भे सूर्य: १२।२(१२।३) ज्ये भे भौम: ५३।५७(२८।४९)	मिथुन	७।१४	६।१५	१०।६।२७।५०
२७।३६	११	बृ	३४।१९	२०।५७	आर्द्रा	३४।५	२०।५१	प्री	२७।५६	वणि	२।३७	१०	फा	२०	९	भ २।३७(८।१६) उ. ३४।१९(२०।५७) या जया ११ व्र.	मिथुन	७।१३	६।१५	१०।७।२८।१८
२७।४२	१२	शु	३६।३०	२१।४८	पुन	३७।३८	२२।१५	आ	२६।५७	वव	५।३८	११	२	२१	१०	शत भे गुरु: ५४।११(२९।३१)	क १५।५८	७।१२	६।१७	१०।८।२८।४३
२७।४६	१३	श	३७।०	२१।५९	पु	३९।४४	२३।१	सौ	२४।४२	कौ	६।५८	१२	३	२२	११	प्रदोष १३ व्र.	कर्क	७।११	६।१७	१०।९।२९।७
२७।५१	१४	सू	३५।५६	२१।३२	श्ले	३९।५९	२३।१०	शो	२१।१२	ग	६।४०	१३	४	२३	१२	भ ३५।५६(२१।३२) उ. पूभा भे शुक्र: ५६।३१(३०।९)	सिं २३।०	७।१०	६।१८	१०।१०।२९।३०
२७।५६	१५	चं	३३।३०	२०।३३	म.	३९।५	२२।४७	अ	१६।३६	वि	४।५३	१४	५	२४	१३	भ ४।५३(९।६) या. श्री सत्य १५ व्र. माघी १५E	सिंह	७।९	६।१९	१०।११।२९।५९

A जयन्ती पंचक १३।३९(१२।५२) उ. B ३५।३६(२१।३६) मु. ४५ पुण्यं १९।३६ उ पश्चिमोदित: शुक्र: ४९।३८(२७।११) C मन्वादि: ७ रथ ७ अचला ७ भानु ७ D शैशिर नवरात्रसमाप्ति: पूभा भे बुध: ४४।८(२४।५४)
E माघ स्नान समाप्ति:

माघ शुक्ल ८ चन्द्रे श्रीष्टम् ११।५०(१२।०) मध्याह्न अयनांशा: २३।३९।३८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१०	७	१०	१०	१०	७	०	६
४	१५	१७	५	११	१५	९	९
३८	६	१७	३२	३२	१७	३९	३९
४९	२७	४६	१	३२	४८	४३	४३
६०	३४	११५	१४	७५	३	३	३
४९	४६	४६	४५	४८	३	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
ध	अनु	श	ध	श	अनु	अश्वि	स्वा
४	४	४	४	४	४	३	१

कु ८

१२ बु १० | १ रा | शु ११ बृ सू | ९ | २ चं | ८ मं श | ३ | ५ | ७ के | ४ | ६

माघशुविचर्या: माघ शुक्ल ४ में नक्त व्रत एवं गणेश पूजा तिल मोदक का नैवेद्य एवं स्वयं तिल भक्षण करें। इसी दिन कुन्द पुष्पों से शिव पूजा उपवास वा नक्त व्रत से लक्ष्मी प्राप्त होती है। मा. शु. ५ शैशिर प्रथम नवरात्र से लेकर नवमी पर्यन्त सरस्वती का आराधन जन्म जन्मान्तर विद्या लाभ करवाता है। इन नवरात्रों में पंचमी के दिन बसन्तोत्सव के साथ ही सरस्वती की मूर्ति की पूजा एवं सारस्वत मन्त्र होमसे सरस्वती प्रसन्न होती है। इसी दिन सरस्वती का उद्भव माना जाता है। मा. शु. ७ में सूर्योदय से पूर्व अरुणोदय में स्नान करें। मंत्र: यदा जन्म कृतं पापं यदा जन्मान्तरार्जित मनो वा क्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते चये पुनः।। मा. शु. ८ भीष्म अष्टमी के दिन भीष्मतर्पण मंत्र: ॐ वैयाघ्र पद गोत्राय सांकृति प्रवराय य। अपुत्राय च भीष्माय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे।।

प्रतिपदयुक्त माघ पूर्णिमा के दिन अन्न जल कुम्भ दान से गोदानतुल्य फल प्राप्त होवे।

माघसलक्षण: फरवरी ११, १५, १७ के दिन वर्षा व हिमपात सम्भव है।

अयनांशा: २३।३९।३९ माघ शुक्ल १५ चन्द्रे श्रीष्टम् १२।७।३०(१२।०) मध्याह्न

कु १५

१२ शु १० | १ रा | बृ ११ सू बु | ९ | २ | ८ श मं | ३ | ५ चं | ७ के | ४ | ६

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१०	७	१०	१०	१०	७	०	६
११	१९	२८	७	२०	१५	९	९
३५	७	४८	१३	१८	३६	१७	१७
१०	१२	३०	१	१६	३२	२७	२७
६०	३४	८३	१४	७५	२	३	३
१३	०	४०	४८	०	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
श	अनु	पूभा	शत	पूभा	अनु	अश्वि	स्वा
२	४	३	१	१	४	३	१

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२५ फरवरी से १० मार्च सन् १९८६ ई) उत्तरायण दक्षिण गोल बसन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ फागुन कृष्णपक्ष:—(२४)

तारिख: मु० रा० अं० हि०

वरियान ५५।२२(२९।१८)

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा०

सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	र.उ. (मु०)	फाल्गु (रा०)	फर. (अं०)	फाल्गु (हि०)	विवरण में ग्रह्यादि (भा० स्टै० टा०) ज्ञानना	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि.
२८।१	१	मं	२९।५९	१९।१८	पूफा	३७।१०	२२।०	सु	११।४	वा	१।५२	१५	६	२५	१४	पूभा ४ भे मीने च बुधः ३।१२(८।२५)	क २७।४५	७।८	६।२०	१०।१२।३०।०
२८।६	२	बु	२५।३९	१७।२२	उफा	३४।२८	२०।५३	धृ	४।५१	तै	२५।३९	१६	७	२६	१५	भ ५३।११(२८।२२) उ	कन्या	७।६	६।२१	१०।१३।३०।२३
२८।११	३	बृ	२०।४४	१५।२३	ह	३८।१४	१९।३५	गं	५०।४८	वि	२०।४४	१७	८	२७	१६	संकट ४ व्र. चन्द्रोदयः ३५।१७(२१।१२) उभा भे A	तु ३०।५१	७।५	६।२२	१०।१४।३०।३९
२८।१६	४	शु	१५।२९	१३।१६	चि	२७।४२	१८।९	वृ	४३।३४	वा	१५।२९	१८	९	२८	१७	भ २०।४४(१५।२३) या कल्पादि ३ संकट ४ व्र	तुला	७।४	६।२२	१०।१५।३०।५३
२८।२१	५	श	१०।५	११।५	स्वा	२४।६	१६।४२	ध्रु	३६।१६	तै	१०।५	१९	१०	मा	१८	मार्च ३	तुला	७।३	६।२३	१०।१६।३१।५
२८।२६	६	सु	४।४६	८।५७	वि	२०।३४	१५।१६	व्या	२९।१०	वणि	४।४०	२०	११	२	१९	भ ४।४०(८।५७) उ ३२।१०(१९।५४) या	वृ ३०।५३	७।२	६।२४	१०।१७।३१।१६
तिथिक्षय:	७	सु	५९।३४	३०।५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
२८।३१	८	चं	५४।३०	२८।४९	अनु	१७।१०	१७।५३	ह	२१।५३	बव	२६।५९	२१	१२	३	२०	अष्टकश्राद्धम् पूभा ४ भीनेच शुक्रः ५९।३०(३०।४७)	वृश्चिक	७।१	६।२५	१०।१८।३१।२४
२८।३६	९	मं	४९।४५	२६।५३	ज्ये	१४।३	१२।३६	वज्र	१५।०	तै	२२।८	२२	१३	४	२१	पू भा सूर्य २८।२६(१८।२२)	ध १२।३६	६।५९	६।२६	१०।१९।३१।२८
२८।४१	१०	बु	४५।१९	२५।६	मू	११।७	११।२५	सि	८।१६	वणि	१७।३०	२३	१४	५	२२	भ १७।३०(१३।५८) उ ४५।१९(२५।६) या	धनु:	६।५८	६।२६	१०।२०।३१।३४
२८।४८	११	बृ	४१।२४	२३।३१	पूषा	८।३७	१०।२४	व्य	१।५३	बव	१३।१९	२४	१५	६	२३	विजया ११ व्र. उभा भे शुक्रः ३९।३२(२२।४६)	म १६।११	६।५७	६।२७	१०।२१।३१।३६
२८।५१	१२	शु	३८।६	२२।१०	उषा	६।४०	९।३६	प	५०।२६	कौ	९।४१	२५	१६	७	२४	वक्री बुधः २४।७(१६।३०)	मकर	६।५६	६।२८	१०।२२।३१।३८
२८।५६	१३	श	३५।३६	२१।९	श्र	५।२५	९।४	शि	३५।४२	गर	६।४६	२६	१७	८	२५	भ ३५।३६(२१।९) उ पंचक ३५।४(२०।५६) उ B	कु २०।५६	६।५४	६।२९	१०।२३।३१।३४
२९।१	१४	सू	३५।५	२०।३१	ध	५।०	८।५३	सि	४१।४५	वि	४।४४	२७	१८	९	२६	भ ४।४४(८।४७) या पश्चिमेअस्तो बुधः ११।२५(११।२७)	कुम्भ	६।५३	६।२९	१०।२४।३१।३३
२९।६	३०	चं	३३।४७	२०।२३	श	५।४१	९।८	सा	३८।४६	चतु	३।४७	२८	१९	१०	२७	मन्वादि: ३० सोमवती ३०	मी २७।४०	६।५२	६।३०	१०।२५।३१।२८

A बुध: ४५।४८(२५।२४) B प्रदोष १३ व्र. महाशिवरात्रि १४ व्र.

फाल्गुन कृष्ण ८ चन्द्रे श्रीष्टम् १२।२८(१२।०) मध्याह्न् अयनांशा: २३।३९।४०

कु. ८

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१०	७	११	१०	१०	७	०	६
१७	२०	५	८	२७	१५	८	८
४३	३०	३६	३९	४६	४८	५८	५८
४५	१४	५	१	५८	१७	२३	२३
६०	३२	३३	१३	७५	२	३	३
११	५७	३४	५५	४	५	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
श	ज्ये	उभा	श	पूफा	अनुराधा	स्वा	
४	२	२	१	३	४	३	१
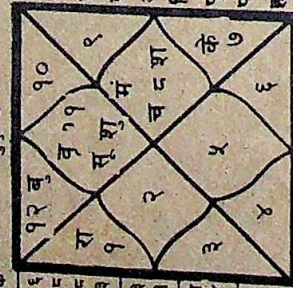
फाल्गुनकविषयर्या: फाल्गुन में नित्य प्रातः स्नान से पापों की निवृत्ति एवं विष्णुधाम की प्राप्ति शास्त्रों ने कही है। फाल्गुन कृ.अष्टमी में भगवती सीता की उत्पत्ति मानी जाती है। किन्तु उत्तर भारत में वैशाख शुक्ल नवमी को उसका प्रादुर्भाव कहा है।। अतः इन दोनों दिनों में उपवास के साथ ही भगवान् श्री सीताराम की युगल पूजा से पाप क्षय एवं अभीष्ट मनोरथ सिद्धि कही गई है। फाल्गुन कृष्ण शिव चतुर्दशी प्रदोष व्यापिनी लिखी है किन्तु दोनों दिन अर्धरात्रि व्यापिनी न हो अन्यथा अर्धरात्रि व्यापिनी चतुर्दशी पूर्वविद्धा उत्तम मानी गई है। इस दिन शिवरात्रि व्रत करने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल कहा है। इस व्रत के न करने से किसी भी देवता की पूजा का फल सफल नहीं होता। इसी दिन महानदी देविका की उत्पत्ति कही है। किन्तु वह फाल्गुन कृष्ण चैत्र कृष्ण ही माना गया क्योंकि दक्षिण में अमान्त मास और उत्तर में पूर्णान्त मास चलते हैं। अतः उत्तर में फाल्गुन कृष्ण को चैत्र संज्ञा दी गई है।

वायुलक्षण: मार्च १, ३-१० में कहीं कहीं बादल की चाल के साथ बूँदाबाँदी का भारी प्रभाव रहे।

अयनांशा: २३।३९।४१ फाल्गुन कृष्ण ३० चन्द्रे श्रीष्टम् १२।५०(१२।०) मध्याह्न्

कु ३०

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१०	७	११	१०	११	७	०	६
२५	२६	७	१०	७	१५	८	८
४३	५४	४	३३	४५	५९	३२	३२
१७	५२	४१	४९	२०	१६	५६	५६
६०	३३	२०	१३	१४	१	३	३
५६	६	१३	५७	४२	२	११	११
	मा	व	मा	मा	मा	व	व
	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
पूभा	ज्ये	उभा	श	उभा	ज्ये	धनिष्ठ	स्वा
२	४	२	२	२	४	३	१

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (११ मार्च से २६ मार्च सन् १९८६ ई) उत्तरायण दक्षिण गोल बसन्तर्तुः

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शकः १९०७ फाल्गुन शुक्लपक्षः—(२५)

तारिख — मु० रा० अं० हि०

उफ ५८।४४(३०१२)

जम्मू नगरे भारतीय स्टै० टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	क्रम.उ.	फाल्गु	मार्च	फाल्गु	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचारः	सू. उ.	सू. अ.	रा. अं. क. वि
२९।११	१	मं	३४।४७	२०।४६	पूभा	७।३७	९।५४	शु	३६।४९	कि	४।८	२९	२०	११	२८		मीन	६।५१	६।३१	१०।२६।३१।२२
२९।१५	२	बु	३७।१५	२१।४४	उभा	१०।५२	११।११	शु	३६।०	वा	५।५०	३०	२१	१२	२९	चन्द्रदर्शनम् मुहूर्त ३०	मीन	६।५०	६।३२	१०।२७।३१।१४
२९।२१	३	बृ	४१।१५	२३।१८	रे	१५।३९	१३।४	ब्र	३६।२१	तै	९।८	रज	२२	१३	३०	पंचक १५।३९(१३।४) या उदितोगुरु २७।३९(१७।४८)	मे १३।४	६।४८	६।३२	१०।२८।३१।१
२९।२६	४	शु	४६।३०	२५।२३	अश्वि	२१।४१	१५।२८	ऐं	३७।४०	वणि	१३।४५	२	२३	१४	चै.	भ १३।४५(१२।१७) उ. ४६।३०(२५।२३) या. A	मेष	६।४७	६।३३	१०।२९।३०।५०
२९।३१	५	श	५२।३९	२७।४९	भ	२८।४७	१८।१६	वै	३९।४४	बव	१९।३२	३	२४	१५	२	मूल भे धनुषि च भौमः ५४।५९(२८।४५) पूभा भे B	वृ २५।१	६।४५	६।३४	११।०।३०।३३
२९।३६	६	सू	५९।१५	३०।२६	कृ	३६।१९	२१।१६	वि	४२।१३	कौ	२३।५४	४	२५	१६	३	गुरुवाल्यत्व समाप्तिः २७।२९(१७।४८)	वृष	६।४४	६।३५	११।१।३०।१६
२९।४२	७	चं	६०।०	उदयान्त	रो	४४।८	२४।२२	प्री	४४।३६	गर	३२।३१	५	२६	१७	४	उभाभे सूर्य ५०।१४(२६।४९) रेव भे शुक्रः २३।२२(१६।४)	वृष	६।४३	६।३५	११।२।२९।५९
२९।४७	७	मं	५।४१	८।५९	मृ	५१।१५	२१।१२	आ	४६।३५	वणि	५।४१	६	२७	१८	५	भ ५।४१(८।५९) उ. ३८।३१(२२।६) या. वक्री शनिः C	मि. १३।५०	६।४२	६।३६	११।३।२९।३८
२९।५१	८	बु	११।२०	११।१२	आर्द्रा	५७।२४	२९।३८	सौ	४७।५०	बव	११।२०	७	२८	१९	६	होलाष्टकारम्भः पूभा ३ कुम्भे च बुधः ११।५२(११।२५)	मिथुन	६।४०	६।३७	११।४।२९।१४
२९।५७	९	बृ	१५।४२	१२।५६	पुन	६०।०	उदयान्त	शो	४७।५०	कौ	१५।४२	८	२९	२०	७	सायनं मेषेअर्कः ५२।२८ उत्तरगोल प्रा. विषुवदिन	क २५।२	६।३९	६।३८	११।५।२८।५१
३०।२	१०	शु	१८।१९	१३।५८	पुन	१।५६	७।२५	अति	४६।२८	गर	१८।१९	९	३०	२१	८	भ ४८।४१(२६।०५) उ.	कर्क	६।३८	६।३८	११।६।२८।३५
३०।५	११	श	१९।४	१४।१५	पु	४।४२	८।३०	सु	४३।३६	वि	१९।४	१०	चै	२२	९	भ १९।४(१४।१५) या. आमला (आमली) ११ व्र.	कर्क	६।३७	६।३९	११।७।२७।५६
३०।१२	१२	सू	१७।५८	१३।४६	श्ले	५।३७	८।५०	धृ	३९।२०	बा	१७।५८	११	२	२३	१०	प्रदोष १३ व्र.	सि ८।५०	६।३५	६।४०	११।८।२७।२४
३०।१७	१३	चं	१५।४	१२।३६	म	४।४६	८।२९	शू	३३।४२	तै	१५।४	१२	३	२४	११	पूर्वोदितो बुधः ८।१२(९।५१)	सिंह	६।३४	६।४०	११।९।२६।५२
३०।२२	१४	मं	१०।४०	१०।४८	पूफा	२।२३	७।२९	गं	२६।५६	वणि	१०।४०	१३	४	२५	१२	भ १०।४०(१०।४८) उ. ३७।५०(२१।४०) या. श्रीसत्य १५ व्र.	क १३।१९	६।३२	६।४१	११।१०।२६।१५
३०।२७	१५	बु	५।१	८।३२	ह	५४।१९	२८।११	वृ	१९।१५	बव	५।१	१४	५	२६	१३	मन्वादिः १५ फाल्गुनी १५ होलिका दहनम् होलिका विभूति D	कन्या	६।३१	६।४२	११।११।२५।३९

A सं. मीनेऽर्कः २९।१४(१८।२९) मु. १५ पुण्यं अपराह्ने   B वक्री बुधः ३७।१३(२१।३८)   C ४३।५(२४।२)   D धारणम् होलिका समाप्तिः बसन्तोत्सवः तैलाभ्यङ्गः चाण्डाल स्पर्शः आम्रकालिका प्राशनम्

फा. शु. ८ बुधे श्रीष्टम् १३।२०(१२।०) मध्याह्न   अयनांशाः २३।३९।४२

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	८	१०	१०	११	७	०	६
४	१	२९	१२	१८	१६	८	८
४२	४५	५८	३९	५६	२	४	४
३०	२४	३९	४५	१३	५९	१९	१९
५९	३१	५६	१४	७५	०	३	३
३८	१५	९	०	६	३	११	११
	मा	व	मा	मा	मा	व	व
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उभा	मृ	पूभा	श	रे	अनु	अश्वि	स्वा
१	१	३	२	१	४	३	१

कु० ८

१ रा, बृ ११ बु, १२ सू शु, १०, २, ९ मं, ३, ८ श, ४, ६ चं, ५, ७ के

फाल्गुन शुचिचर्या: फा. शु. ८ से होलिकारम्भ माना जाता है अतः होलाष्टक में देश भेद से विवाहादि कृत्य का निषेध है। फा. शु. पूर्णिमा होली का दिन विख्यात है। पूर्णिमा होली में प्रदोष काल व्यापिनी भी है। दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी होने पर दूसरे दिन वाली लेनी चाहिए। यदि दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी न हो सके तो प्रथम दिन भद्रा के योग की समाप्ति के पश्चात् आधी रात के समय होलिका दहन किया जाता है। भद्रा समाप्ति आधी रात के बाद हो तो भद्रा के पुच्छ में या भद्रा के मुख मात्र परित्याग करके दहन उचित है। क्योंकि आधी रात के पश्चात्, दिन में या प्रतिपदा में दाह का निषेध कहा है। भद्रा का मुख पुच्छ ज्ञान—भद्रा को चार भागों में विभाजित कर तीसरे भाग की अंतिम तीन घड़ी पुच्छ और चौथे भाग की पहली पाँच घड़ी मुख जानना। होली में ढूढ़ाँ राक्षसी का प्रज्वलित अग्नि में पूजन लिखा है।

नाभसलक्षणः मार्च १४, १८, २२ में वायु वेग से युक्त वर्षण योग है।

कु० १५

रा १, ११ बृ बु, १२ सू शु, १०, २, ९ मं, ३ चं, ८ श, ४, ६, ५, ७ के

अयनांशाः २३।३९।४२   फा. शु. १५ बुधे श्रीष्टम् १३।४२(१२।१०) मध्याह्न

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	८	१०	१०	११	७	०	६
११	५	२५	१४	२७	१६	७	७
३९	२३	५	१५	३७	०	४२	४२
१४	२६	४५	४६	०	४१	४	४
५९	३१	२६	१३	७४	१	३	३
२४	१८	०	५४	१	२६	११	११
	मा	व	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उभा	मृ	पूभा	श	रे	स्वा	अश्वि	स्वा
३	२	२	३	४	३	३	१

सप्तर्षि संवत् ५०६१ (२७ मार्च से ९ अप्रैल सन् १९८५६ ई) उत्तरायण उत्तर गोल बसन्तर्त्तु:

श्री वैक्रम संवत् २०४२ शक: १९०७ चैत्र कृष्णपक्ष:—(२६)

तारिख — शुक्ल ५४।४२(२८।११)

मु० रा० अं० हि०

जम्मू नगरे . भारतीय स्टै०टा० — सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट

दिनमान	तिथि	वार	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	र	चैत्र	मार्च	चैत्र	विवरण में घण्टादि (भा० स्टै० टा०) जानना	चन्द्रचार:	सू. उ.	सू. अ.	रा. अ. क. वि.
तिथिक्षय:	१	बु	५८।३०	२९।५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०
३०।३२	२	बृ	५१।२९	२७।६	चि	४९।९	२६।७	धृ	१०।५८	तै	२५।४	१५	६	२७	१४		तु १५।१०	६।३०	६।४३	११।१२।२५।२
३०।३८	३	शु	४३।४६	२४।१२	स्वा	४३।४६	२३।५९	व्यां	२।१९	वणि	१७।५६	१६	७	२८	१५	भ १७।५६(१३।३९) उ ४३।४६(२४।१२) या अश्विनी A	तुला	६।२८	६।४४	११।१३।२४।१८
३०।४४	४	श	३७।१५	२१।२१	वि	३८।३५	२१।५३	वज्र	४४।५४	बव	१०।४६	१७	८	२९	१६	संकट ४ व्र. चन्द्रोदय: ४४।०(२४।१)	वृ १६।२४	६।२७	६।४४	११।१४।२३।३६
३०।४९	५	सू	३०।३१	१८।३८	अनु	३३।४६	१९।५६	सि	३६।३७	कौ	३।५२	१८	९	३०	१७	मार्गी बुध: ४६।१५(२४।५४)	वृश्चिक	६।२५	६।४५	११।१५।२२।५०
३०।५४	६	चं	२४।२१	१६।९	ज्ये	२१।३२	१८।१३	व्य	२८।४७	वणि	२४।२१	१९	१०	३१	१८	भ २४।२१(१६।९) उ ५१।३९(२७।४) या रे मे B	ध १८।१३	६।२४	६।४६	११।१६।२२।४
३०।५४	७	मं	१८।५७	१३।५८	मू	२६।३	१६।४९	वरी	२१।३६	बव	१८।५७	२०	११	अ	१९	अप्रैल ४	धनु:	६।२३	६।४६	११।१७।२१।१६
३१।४	८	बु	१४।२६	१२।९	पूषा	२३।२९	१५।४६	प	१५।९	कौ	१४।२६	२१	१२	२	२०		म २१।३४	६।२२	६।४७	११।१८।२०।२५
३१।६	९	बृ	१०।५६	१०।४४	उषा	२१।५७	१५।८	शि	९।३१	गर	१०।५६	२२	१३	३	२१	भ ३९।४५(२२।१५) उ	मकर	६।२१	६।४८	११।१९।१९।३३
३१।१३	१०	शु	८।३३	९।४४	श्र	२१।३०	१४।५५	सि	४।४७	वि	८।३३	२३	१४	४	२२	भ ८।३३(९।४४) या पंचक ५१।४०(२६।५९) उ	कु २६।५९	६।१९	६।४८	११।२०।१८।३६
३१।१७	११	श	७।१५	९।१२	ध	२२।७	१५।९	सा	०।५५	बा	७।१५	२४	१५	५	२३	पापमोचनी ११ व्र.	कुम्भ	६।१८	६।४९	११।२१।१७।३९
३१।२२	१२	सू	७।३	९।७	श	२३।५१	१५।५०	शु	५५।४७	तै	७।३	२५	१६	६	२४		कुम्भ	६।१७	६।५०	११।२२।१६।४१
३१।२७	१३	चं	८।६	९।३०	पूभा	२६।४८	१५।५९	ब्र	५४।४३	वणि	८।६	२६	१७	७	२५	भ ८।६(९।३०) उ ३९।१२(२१।५६) या प्रदोष १३ व्र. C	मी १०।३९	६।१५	६।५०	११।२३।१५।३८
३१।३२	१४	मं	१०।१८	१०।२२	उभा	२३।४९	१०।३४	ऐं	५४।२५	श	१०।१८	२७	१८	८	२६	चैत्र १४ देविकोत्पत्ति: १४ मेलापुरमण्डल उत्तरवाहिनी	मीन	६।१४	६।५१	११।२४।१४।२६
३१।३७	३०	बु	१३।३५	११।३९	रे	३५।५५	१०।३५	वै	५५।१	ना	१३।३५	२८	१९	९	२७	पंचक ३५।५५(२०।३५) या चान्द्र सवत्सर पूर्ति: ३०	मे २०।३५	६।१३	६।५२	११।२५।१३।३२

A भे मेषे च शुक्र: ८।५०(१०।०) B सूर्य १८।८(१३।४९) C भर भे शुक्र: ५७।२(२९।४९)

अयनांशा: २३।३९।४५ — चै. कृ. ३० बुधे श्रीष्टम् १४।२७(१२।०) मध्याह्न

चैत्र कृ. ८ बुधे श्रीष्टम् १४।५(१२।०) मध्याह्न — अयनांशा: २३।३९।४४

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	८	१०	१०	०	७	०	६
१८	८	२४	१५	६	१५	७	७
३४	५४	३९	४९	१६	५४	१९	१९
१९	५४	४३	४४	२	३०	४९	४९
५९	२८	१७	१३	७४	१	३	३
१०	५७	५८	४९	०	१६	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रे	मृ	पूभा	श	भिष	अनु	अश्वि(?)	स्वा
१	३	२	३	२	४	३	१

कु ८

रा १ शु | ११ बु | वृ | २ | सू १२ | १० | ३ | चं ९ | मं | ४ | ६ | ८ श | ५ | ७ के

चैत्रवविषयाँ: चै. कृ. १ उदय व्यापिनी प्रतिपदा में बसन्तोत्सव किया जाता है। दोनों दिन उदय व्यापिनी होने पर प्रथम ग्राह्य है। प्रात: चाण्डाल स्पर्श कर स्नान करने से समग्र व्याधि नाश होता है। इस दिन आम की कोमल पत्तियों को पुष्पों सहित चन्दन के साथ मिलाकर निम्न मंत्र से खाएँ—चूतमग्रं बसन्तस्य माकन्द कुसुमं तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थ सिद्धये। चै. कृ. त्रयोदशी में शतभिषा का योग हो तो वारुणी पर्व त्रयोदशी शनि शतभिषा तीनों का योग महा वारुणी पर्व किन्तु त्रयोदशी शनिवार शतभिषा नक्षत्र के साथ ही शुभ योग भी हो तो महा महावारुणी पर्व गंगा स्नान से सौ सूर्यग्रहण के तुल्य फल देने वाला है। महा वारुणी पर्व में गंगा स्नान से कोटि सूर्यग्रहण से भी अधिक एवं महा महावारुणी पर्व में गंगा स्नान से तीन करोड़ कुलों का उद्धार लिखा है। अत: तीनों पर्वों में अक्षय पुण्य वा वैकुण्ठ की प्राप्ति का द्योतक है। चैत्र. कृ. चतुर्दशी पिशाच मोचनी कही जाती है। इसमें शिव सानिध्य प्राप्त कर स्नान करें तो प्रेत योनि में कभी न जाएँ। इस योग में देविका तट पर श्राद्ध करने से पिशाचत्व दूर होता है। इसी दिन देविका की उत्पत्ति मानी गई है और दक्षिण में इसे फाल्गुन कृष्ण कहते हैं।

कु ३०

शु १ रा | वृ | बु ११ | १२ | २ | सू | चं | १० | ३ | मं ९ | ४ | ६ | ८ श | ५ | ७ के

सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
११	८	१०	१०	०	७	०	६
२५	१२	२८	१७	१४	१५	६	६
२५	१६	२०	२१	५३	४१	५७	५७
४३	३८	५	३२	२	२७	३३	३३
६०	२७	३७	१२	७४	२	३	३
५५	५९	४	४२	२	०	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रे	मृ	पूभा	श	ध	अनु	अश्वि(?)	स्वा
३	४	३	४	१	४	३	१

[illegible]: मार्च ३०, अप्रैल ४, ६, ८ में वर्षा के योग हैं।

दैनिक ग्रह स्पष्ट मध्याह्न १२ भा० स्टै० टा० २२ मार्च २३।३८।४९ १ अप्रैल १९८५ अयनांशा: २३।३८।५०

मार्च	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्या० प्र०	घ० प० (घ० मि०)
२२	११।७।५६।३५	११।१६।२२।१०	०।११।२८।५४	११।२४।३६।३८	९।१५।३४।५७	११।२७।११।३१	७।४।१८।४६	०।२७।१५।११	०।२५।३२।१७	+०।३७।५६	+०।५८।५८	−३।१४।३६	०।५२(६।५८)
२३	११।८।५६।६	११।२८।११।५६	०।१२।१२।३९	११।२४।५२।२८	९।१५।४५।५७	११।२६।४९।४३	७।४।१७।३०	०।२७।१२।१८	०।२५।२८।१६	१।१।३६	६।१९।२५	−२।२१।३१	२।२(७।२४)
२४	११।९।५५।३५	०।९।५९।२५	०।१२।५५।५४	११।२५।०।१५	९।१५।५६।५७	११।२६।२५।१४	७।४।१५।२७	०।२७।८।५७	०।२५।२४।१२	१।२५।१४	११।२६।१२	−१।२२।२९	३।११(७।५१)
२५	११।१०।५५।३	०।२१।४६।३९	०।१३।३९।४२	११।२५।०।२१	९।१६।७।५७	११।२५।५८।५०	७।४।१३।२७	०।२७।५।४६	०।२५।२०।१७	१।४८।५१	१६।८।४३	+०।१९।५०	४।२८(८।१९)
२६	११।११।५४।२८	१।३।३६।५०	०।१४।२२।३८	११।२४।५३।९	९।१६।१८।५९	११।२५।३१।५	७।४।११।२४	०।२७।२।३६	०।२५।१६।४९	२।१२।२४	२०।१५।४९	०।४४।२	५।५०(८।५१)
२७	११।१२।५३।५२	१।१५।३४।२२	०।१५।५।३८	११।२४।३८।२८	९।१६।२९।४२	११।२५।०।२८	७।४।९।४२	०।२६।५९।२५	०।२५।१३।१९	२।३५।५५	२३।३५।३६	१।४६।४६	७।२५(९।२८)
२८	११।१३।५३।१३	१।२७।४३।५९	०।१५।४८।३८	११।२४।१७।३७	९।१६।३९।५६	११।२४।२८।११	७।४।८।३३	०।२६।५६।१४	०।२५।९।५६	२।५९।२३	२५।५५।१०	२।४५।५१	९।१२(१०।९)
२९	११।१४।५२।३२	२।१०।९।५७	०।१६।३१।३८	११।२३।४९।३५	९।१६।५०।२४	११।२३।५४।३९	७।४।६।१२	०।२६।५३।३	०।२५।६।४१	३।२२।४७	२७।११।४१	३।३८।३५	११।१९(१०।५९)
३०	११।१५।५१।५०	२।२२।५७।३	०।१७।१४।३८	११।२३।१५।२१	९।१७।०।३८	११।२३।१९।१७	७।४।३।२४	०।२६।४९।५२	०।२५।३।३५	३।४६।८	२६।४४।४०	४।२२।६	१३।४५(११।५५)
३१	११।१६।५१।५	३।६।९।२२	०।१७।५७।३८	११।२२।३७।१४	९।१७।१०।५६	११।२२।४३।१६	७।४।१।२९	०।२६।४६।४२	०।२५।०।३६	४।९।२४	२४।५८।१०	४।५३।२१	१६।२४(१२।५८)
अप्रै.	११।१७।५०।१८	३।१९।५०।१३	०।१८।४०।४१	११।२१।५५।२१	९।१७।२१।४४	११।२२।७।१०	७।३।५९।१२	०।२६।४३।३१	०।२४।५७।४४	४।३२।३५	२१।४२।३४	५।९।१७	१९।१४(१४।५)
२	११।१८।४९।२९	४।४।०।४	०।१९।२३।२३	११।२१।१०।२७	९।१७।३१।४१	११।२१।३०।१०	७।३।५६।२६	०।२६।४०।२०	०।२४।५५।१	४।५५।४२	१७।५।२९	५।७।११	२२।१८(१५।१७)
३	११।१९।४८।३८	४।१८।३६।५२	०।२०।५।३५	११।२०।२३।४	९।१७।४१।४३	११।२०।५२।४४	७।३।५४।१४	०।२६।३७।९	०।२४।५२।२५	५।१८।४४	११।२१।८	४।४५।१९	२५।१६(१६।२७)
४	११।२०।४७।४६	५।३।३५।१	०।२०।४८।३०	११।१९।३४।४३	९।१७।५१।२५	११।२०।१४।३८	७।३।५१।८	०।२६।३३।५९	०।२४।४९।५७	५।४१।४०	४।४९।३५	४।३।३८	२८।१५(१७।३७)
५	११।२१।४६।५०	५।१८।४६।३८	०।२१।३१।४१	११।१८।४५।५२	९।१८।०।३७	११।१९।३६।५३	७।३।४८।२६	०।२६।३०।४८	०।२४।४७।३६	६।४।३०	−२।४।५१	३।४।१६	३१।१५(१८।४८)
६	११।२२।४५।५३	६।४।१।३२	०।२२।१४।२३	११।१७।५८।६	९।१८।१०।४३	११।१८।५९।५५	७।३।४६।१४	०।२६।२७।३७	०।२४।४५।२३	६।२७।१३	−८।५४।३६	१।५१।३४	३४।१९(२०।१०)
७	११।२३।४४।५४	६।१९।९।३४	०।२२।५६।३७	११।१७।११।२९	९।१८।२०।२८	११।१८।२३।७	७।३।४३।११	०।२६।२४।२६	०।२४।४३।१८	६।४९।५०	−१५।११।०	०।३१।२८	३७।२४(२१।१३)
८	११।२४।४३।५४	७।४।२।४	०।२३।३९।२५	११।१६।२७।३०	९।१८।२९।२२	११।१७।४१।२१	७।३।३९।५६	०।२६।२१।१६	०।२४।४१।१९	७।१२।२०	−२०।२६।५७	−०।४९।३३	४०।२८(२५।२५)
९	११।२५।४२।५०	७।१८।२९।२९	०।२४।२१।१९	११।१५।४७।२०	९।१८।३८।१९	११।१७।१२।१३	७।३।३६।५८	०।२६।१८।५	०।२४।३९।२८	७।३४।४२	−२४।१९।१९	−२।५।१७	४३।३४(२३।३८)
१०	११।२६।४१।४५	८।२।३०।२९	०।२५।३।३३	११।१५।१०।२२	९।१८।४८।२८	११।१६।३८।५५	७।३।३३।५९	०।२६।१४।५४	०।२४।३७।४५	७।५६।५७	−२६।३४।२०	−३।११।१७	४६।२१(२४।४३)
११	११।२७।४०।३८	८।१६।२९।१८	०।२५।४६।४१	११।१४।३७।२२	९।१८।५७।२७	११।१६।५।२४	७।३।३०।५३	०।२६।११।४३	०।२४।३६।८	८।१९।१४	−२७।८।३४	−४।५।१५	४८।४८(२५।४१)
१२	११।२८।३९।२८	८।२९।३४।३	०।२६।२९।२५	११।१४।८।५७	९।१९।६।९	११।१५।३४।४०	७।३।२७।५५	०।२६।८।३२	०।२४।३४।३८	८।४१।३	−२६।६।१४	−४।४३।४६	५०।५४(२६।३१)
१३	११।२९।३८।१८	९।१२।२७।३६	०।२७।११।१९	११।१३।४६।२	९।१९।१४।२१	११।१५।६।२२	७।३।२४।७	०।२६।५।४२	०।२४।३३।१५	९।२।५३	−२३।४१।४३	−५।६।४५	५२।४०(२७।१२)
१४	०।०।३७।५	९।२५।२।४०	०।२७।५३।३७	११।१३।२७।५३	९।१९।२३।२७	११।१४।४०।१२	७।३।२१।१३	०।२६।२।११	०।२४।३१।५९	९।२४।३४	−२०।११।५०	−५।१४।१५	५४।११(२७।४७)
१५	०।१।३५।५०	१०।७।२२।१३	०।२८।३६।२५	११।१३।१६।५	९।१९।३२।११	११।१४।१६।५१	७।३।१७।५५	०।२५।५९।०	०।२४।३०।४९	९।४६।५	−१५।५३।२८	−५।६।५६	५५।३२(२८।१८)
१६	०।२।३४।३३	१०।१९।३०।४	०।२९।१८।२२	११।१३।८।२४	९।१९।४०।५	११।१३।५५।६	७।३।१४।१०	०।२५।५५।४९	०।२४।२९।४५	१०।७।२७	−११।१।६	−४।४५।५१	५६।४४(२८।४६)
१७	०।३।३३।१४	११।१।२९।१०	१।०।०।२२	११।१३।५।४४	९।१९।४८।२३	११।१३।३४।५०	७।३।१०।५८	०।२५।५२।३९	०।२४।२८।४८	१०।२८।३९	−५।४७।३९	−४।१२।२५	५७।५१(२९।१२)
१८	०।४।३१।५३	११।१३।२२।३८	१।०।४२।२२	११।१३।८।४	९।१९।५७।१४	११।१३।१७।२४	७।३।६।५२	०।२५।४९।२८	०।२४।२७।५७	१०।४९।४०	−०।२४।१	−३।२८।१७	५७।३(२९।३७)
१९	०।५।३०।३०	११।२५।११।५०	१।१।२४।१९	११।१३।१५।४०	९।२०।४।५३	११।१३।२।११	७।३।३।१०	०।२५।४६।१७	०।२४।२७।१२	११।१०।३०	+४।५९।१४	−३।३५।२८	०।३(९।२)
२०	०।६।२९।५	०।६।५९।३८	१।२।६।४०	११।१३।२९।१०	९।२०।१२।५	११।१२।४९।४५	७।२।५९।५८	०।२५।४३।६	०।२४।२६।३३	११।३१।१०	१०।११।४८	−१।३६।६	११६(६।३०)
२१	०।७।२७।३८	०।१८।४७।५७	१।२।४९।१०	११।१३।४६।५७	९।२०।२०।८	११।१२।३९।३५	७।२।५५।५४	०।२५।३९।५५	०।२४।२५।५९	११।५१।३९	१५।३।२६	−०।३२।३४	११६(६।२९)
२२	०।८।२६।१०	१।०।३९।५	१।३।३०।१९	११।१४।८।२९	९।२०।२८।११	११।१२।३१।५१	७।२।५१।५४	०।२५।३६।४५	०।२४।२५।३०	१२।११।५५	१९।२२।३३	+०।३२।४१	२।३५(६।५९)
२३	०।९।२४।२९	१।१२।३५।२८	१।४।१२।२२	११।१४।३५।४१	९।२०।३५।५५	११।१२।२५।५१	७।२।४७।५४	०।२५।३३।३४	०।२४।२५।६	१२।३२।१०	२२।५६।४२	१।३७।४	४।५(७।३४)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ मई १९८५ अयनांशा: २३।३८।५४

अप्रै.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्या० प्र०	घ० प० (घं० मि०)
२४	०।१०।११।३६	१।२४।३९।२	१।४।५४।२२	११।१५।६।४९	९।२०।४२।५२	११।१२।२३।३०	७।२।४३।५४	०।२५।३०।२३	०।२४।२४।४८	१२।५१।५२	२५।३२।४९	२।३७।५२	५।४८(८।१४)
२५	०।११।२१।३२	२।६।५४।३४	१।५।३६।२४	११।१५।४१।३६	९।२०।४९।५२	११।१२।२३।२	७।२।३९।५४	०।२५।२७।१२	०।२४।२४।३४	१३।११।३१	२६।५८।५९	३।३२।३४	७।४७(९।१)
२६	०।१२।१९।५६	२।१९।२४।३५	१।६।१८।७	११।१६।१९।५६	९।२०।५६।५५	११।१२।२४।३५	७।२।३५।५४	०।२५।२४।२	०।२४।२४।२५	१३।३०।५८	२७।५।८	३।१८।२३	१०।४(९।५५)
२७	०।१३।१८।१८	३।२।११।५४	१।६।५९।१९	११।१७।२।४८	९।२१।३।३७	११।१२।२८।४	७।२।३१।५४	०।२५।२०।५१	०।२४।२४।२०	१३।५०।११	२५।४६।०	४।५२।३४	१२।३४(१०।५४)
२८	०।१४।१६।३८	३।१५।२०।५३	१।७।४१।२४	११।१७।४८।५३	९।२१।९।५१	११।१२।३३।५२	७।२।२७।५४	०।२५।१७।४०	०।२४।२४।१९	१४।९।१०	२३।११।४६	५।१२।३६	१५।१८(११।५८)
२९	०।१५।१४।५७	३।२८।५३।४८	१।८।२३।७	११।१८।३८।३६	९।२१।१६।३६	११।१२।४२।२७	७।२।२३।५४	०।२५।१४।२९	०।२४।२४।२१	१४।२७।५६	१८।५८।२५	५।१६।४	१८।४(१३।४)
३०	०।१६।१३।१३	४।१२।५२।४५	१।९।४।२९	११।१९।३१।३४	९।२१।२२।५१	११।१२।५३।१४	७।२।१९।५४	०।२५।११।१९	०।२४।२४।२८	१४।४६।२७	१३।४६।३२	५।१।११	२०।५४(१४।११)
मई	०।१७।११।२८	४।२७।१६।१०	१।९।४६।७	११।२०।२७।२०	९।२१।२९।३८	११।१३।६।५३	७।२।१५।५७	०।२५।८।८	०।२४।२४।३८	१५।४।४३	७।४१।३६	४।२७।१४	२३।४७(१५।१९)
२	०।१८।९।४१	५।१२।०।४२	१।१०।२७।२१	११।२१।२६।२७	९।२१।३५।३६	११।१३।२२।१०	७।२।११।३९	०।२५।४।५७	०।२४।२४।५१	१५।२२।४५	१।२।३४	३।३५।३	२६।४१(१६।२८)
३	०।१९।७।५२	५।२७।२।१८	१।११।९।९	११।२२।२९।६	९।२१।४१।३६	११।१३।३८।३९	७।२।६।५१	०।२५।१।४६	०।२४।२५।६	१५।४०।३१	−५।४८।९	३।२७।१८	२९।३९(१७।३८)
४	०।२०।६।२	६।१२।११।२५	१।११।५०।३	११।२३।३३।३७	९।२१।४७।३८	११।१३।५७।१२	७।२।२।५७	०।२४।५८।३५	०।२४।२५।२५	१५।५८।२	−१२।२३।१४	१।८।४६	३२।४८(१८।५२)
५	०।२१।४।११	६।२७।१९।२१	१।१२।३१।२१	११।२४।४०।२२	९।२१।५३।२३	११।१४।१७।४४	७।१।५८।३९	०।२४।५५।२५	०।२४।२५।४६	१६।१५।१७	−१८।१४।०	−०।१४।२७	३५।५५(२०।६)
६	०।२२।२।१६	७।१२।१७।४७	१।१३।१३।७	११।२५।५०।१०	९।२१।५८।१९	११।१४।४०।१८	७।१।५३।५३	०।२४।५२।१४	०।२४।२६।८	१६।३२।१५	−२२।५२।२६	−१।३५।५२	३९।१(२१।२०)
७	०।२३।०।२०	७।२६।५८।२२	१।१३।५४।२१	११।२७।३।१	९।२२।३।१९	११।१५।४।३८	७।१।४९।३९	०।२४।४९।३	०।२४।२६।३३	१६।४८।५७	−२५।५५।३३	−२।४९।२४	४१।५९(२२।३०)
८	०।२३।५८।२३	८।११।१५।१८	१।१४।३६।९	११।२८।१८।३७	९।२२।८।२०	११।१५।२९।५२	७।१।४४।५१	०।२४।४५।५२	०।२४।२६।५९	१७।५।२२	−२७।११।१५	−३।५०।२३	४४।४०(२३।३३)
९	०।२४।५६।२५	८।२५।५।११	१।१५।१७।६	११।२९।३६।८	९।२२।१३।१९	११।१५।५६।२२	७।१।४०।५७	०।२४।४२।४२	०।२४।२७।२७	१७।२१।३१	−२६।४१।३	−४।३५।५४	४६।५९(२४।२८)
१०	०।२५।५४।२४	९।८।२९।१	१।१५।५८।६	०।०।५५।५६	९।२२।१८।१९	११।१६।२४।५४	७।१।३६।३९	०।२४।३९।३१	०।२४।२७।५६	१७।३७।२२	−२४।३७।५२	−५।४।४५	४८।५३(२५।१४)
११	०।२६।५२।२२	९।२१।२७।२७	१।१६।३९।६	०।२।१८।३२	९।२२।२३।२२	११।१६।५५।२९	७।१।३१।५४	०।२४।३६।२०	०।२४।२८।२५	१७।५२।५५	−२१।२०।५२	−५।१६।५३	५०।३१(२५।५२)
१२	०।२७।५०।१९	१०।४।३।५७	१।१७।२०।६	०।३।४३।५	९।२२।२८।६	११।१७।२७।४९	७।१।२७।४२	०।२४।३३।९	०।२४।२८।५५	१८।८।१०	−१७।९।४२	−५।१३।१०	५१।५४(२६।२४)
१३	०।२८।४८।१३	१०।१६।२२।१२	१।१८।१।६	०।५।९।३५	९।२२।३२।३	११।१८।१।१५	७।१।२२।३६	०।२४।२९।५९	०।२४।२९।२५	१८।२३।७	−१२।२१।३८	−४।५८।५९	५३।८(२६।५२)
१४	०।२९।४६।७	१०।२८।२६।१	१।१८।४२।६	०।६।३८।२३	९।२२।३६।५	११।१८।३५।१९	७।१।१७।५४	०।२४।२६।४८	०।२४।२९।५५	१८।३७।४५	−७।१०।५४	−४।२३।५९	५४।१६(२७।१९)
१५	१।०।४३।५९	११।१०।२०।४४	१।१९।२३।६	०।८।९।५९	९।२२।३९।४७	११।१९।१०।५०	७।१।१३।३९	०।२४।२३।३७	०।२४।३०।२५	१८।५२।४	−१।४८।२५	−३।४१।५६	५५।१९(२७।४४)
१६	१।१।४१।५०	११।२२।९।५३	१।२०।४।६	०।९।४३।३१	९।२२।४३।०	११।१९।४८।९	७।१।८।५४	०।२४।२०।२६	०।२४।३०।५४	१९।६।५	+३।३५।५४	−२।५०।५६	५६।२५(२८।९)
१७	१।२।३९।३९	०।३।५७।२१	१।२०।४६।६	०।११।१९।४	९।२२।४७।५	११।२०।२६।२६	७।१।४।३९	०।२४।१७।१५	०।२४।३१।२३	१९।१९।४३	८।५२।१५	−१।५२।३२	५७।३२(२८।३६)
१८	१।३।३७।२६	०।१५।४५।०	१।२१।२६।६	०।१२।५६।३६	९।२२।५०।५०	११।२१।५।४२	७।०।५९।५४	०।२४।१४।५	०।२४।३१।५०	१९।३३।७	१३।५०।३२	−०।४९।३३	५८।४८(२९।६)
१९	१।४।३५।१२	०।२७।३७।३२	१।२२।७।६	०।१४।३६।६	९।२२।५३।४७	११।२१।४५।५८	७।०।५५।२९	०।२४।१०।५४	०।२४।३२।१६	१९।५६।८	१८।२०।१२	+०।१५।५५	०।१५(५।३९)
२०	१।५।३३।५७	१।९।३६।१५	१।२२।४८।८	०।१६।१७।५७	९।२२।५६।४७	११।२२।२७।१२	७।०।५०।५४	०।२४।७।४३	०।२४।३२।४०	१९।५८।४९	२२।८।१३	१।१।१३	०।१०(५।३७)
२१	१।६।३०।४१	१।२१।४२।४५	१।२३।२८।५०	०।१८।२।१५	९।२२।५९।५०	११।२३।९।४६	७।०।४६।३९	०।२४।४।३२	०।२४।३३।२	२०।११।१०	२५।०।५८	२।२३।३५	१।४९(६।१६)
२२	१।७।२८।२२	२।३।५९।३५	१।२४।९।२	०।१९।४७।५७	९।२३।२।२२	११।२३।५३।५०	७।०।४१।५१	०।२४।१।२२	०।२४।३३।२२	२०।२३।१९	२६।४५।२७	३।२०।१५	३।३७(६।५९)
२३	१।८।२६।३	२।१६।२७।५५	१।२४।५०।८	०।२१।३६।५०	९।२३।४।४६	११।२४।३८।४	७।०।३७।५७	०।२३।५८।११	०।२४।३३।३९	२०।३४।४९	२७।१०।५८	४।८।२१	५।४७(७।५०)
२४	१।९।२३।४३	२।२९।९।४९	१।२५।३०।५०	०।२३।२८।११	९।२३।७।३४	११।२५।२३।२२	७।०।३३।३९	०।२३।५५।०	०।२४।३३।५३	२०।४६।६	२६।११।५१	४।४५।१४	८।१३(८।४७)
२५	१।१०।२१।२१	३।१२।७।३	१।२६।११।५	०।२५।२०।४०	९।२३।९।३३	११।२६।९।२३	७।०।२८।५४	०।२३।५१।४९	०।२४।३४।५	२०।५७।३	२३।४८।३२	५।८।२५	१०।४७(९।४९)
२६	१।११।१८।५८	३।२५।२०।३१	१।२६।५१।५०	०।२७।१५।१३	९।२३।११।१५	११।२६।५५।३६	७।०।२४।३९	०।२३।४८।३९	०।२४।३४।१३	२१।७।३७	२०।७।३९	५।१५।५१	१३।२७(१०।५३)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ जून १९८५ अयनांशाः २३।३८।५९

अं.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	घ० प० (घ० मि०)
२७	१।१२।१६।३४	४।८।५१।३३	१।२७।३२।५	०।२९।११।४३	९।२३।१२।३०	११।२७।४२।५२	७।०।१९।५१	०।२३।४५।२८	०।२४।३४।१८	२१।१७।५०	१५।२०।१४	५।६।८	१६।१२(११।५८)
२८	१।१३।१४।९	४।२२।४१।४४	१।२८।१२।५०	१।१।१०।३३	९।२३।१४।१८	११।२८।३।१९	७।०।१५।५४	०।२३।४२।१७	०।२४।३४।१८	२१।२७।४१	९।३९।५२	४।३८।३७	१८।५५(१३।२)
२९	१।१४।११।४३	५।६।५०।४५	१।२८।५३।५	१।३।११।५३	२।२३।१५।१४	११।२९।२०।२५	७।०।११।५७	०।२३।३९।६	०।२४।३४।१५	२१।३७।९	३।२२।३९	३।५३।४७	२१।४८(१४।११)
३०	१।१५।९।१५	५।२१।१७।२७	१।२९।३३।५३	१।५।१४।२३	९।२३।१६।१४	०।०।१०।४४	७।०।७।३९	०।२३।३५।५५	०।२४।३४।७	२१।४६।१५	–३।१३।९	३।५३।२८	२४।३५(१५।१८)
३१	१।१६।६।४६	६।५।५८।४३	२।०।१३।४९	१।७।१८।५८	९।२३।१७।१४	०।१।११।४८	७।०।२।५१	०।२३।३२।४५	०।२४।३३।५५	२१।५४।५९	–९।४६।०	१।४०।५८	२७।२७(१६।२७)
जून	१।१७।४।१५	६।२०।४८।३९	२।०।५३।४७	१।९।२५।१७	९।२३।१८।१७	०।१।५२।४५	६।२९।५८।५४	०।२३।२९।३४	०।२४।३३।३७	२२।३।१९	–१५।५०।३०	०।२९।९	३०।२४(१७।३८)
२	१।१८।१।४५	७।५।४१।५३	२।१।३४।५	१।११।३२।३१	९।२३।१८।५९	०।२।४३।५८	६।२९।५४।५४	०।२३।२६।२३	०।२४।३३।१५	२२।११।१६	–२०।५९।३४	–१।०।१५	३३।३०(१८।५१)
३	१।१८।५९।१३	७।२०।३०।४०	२।२।१४।५३	१।१३।४१।३	९।२३।१९।१४	०।३।३६।१७	६।२९।५०।५४	०।२३।२३।१२	०।२४।३२।४७	२२।१८।५०	–२४।४६।१५	–२।१७।७	३६।३१(२०।३)
४	१।१९।५६।४१	८।५।६।३६	२।२।५४।४७	१।१५।५१।२५	९।२३।२०।१	०।४।२९।१८	६।२६।४६।५४	०।२३।२०।२	०।२४।३२।१४	२२।२६।१	–२६।५०।०	–३।२३।५२	३९।२०(२१।११)
५	१।२०।५४।७	८।१९।२४।३	२।३।३५।५	१।१८।२।२६	९।२३।२०।१०	०।५।२२।३४	६।२९।४२।५४	०।२३।१६।५१	०।२४।३१।३५	२२।३२।४८	–२७।३।११	–४।१६।२२	४१।५५(२२।१४)
६	१।२१।५१।३३	९।३।१८।३१	२।४।१५।५३	१।२०।१३।४१	९।२३।१९।४३	०।६।१६।३४	६।२९।३८।५४	०।२३।१३।४०	०।२४।३०।५०	२२।३९।१२	–२५।३२।३१	–४।५२।७	४४।५(२३।४)
७	१।२२।४८।५७	९।१६।४७।१०	२।४।५५।५९	१।२२।२५।४४	९।२३।१८।५७	०।७।१०।३९	६।२९।३४।५४	०।२३।१०।२९	०।२४।२९।५९	२२।४५।११	–२२।३५।५३	–५।१०।२०	४३।५०(२३।४६)
८	१।२३।४६।२०	९।२९।४९।३६	२।५।३५।४९	१।२४।३६।४६	९।२३।१८।४५	०।८।६।६	६।२९।३०।५४	०।२३।७।१८	०।२४।२९।१	२२।५०।४७	–१८।३५।३३	–५।११।३७	४७।१८(२४।२१)
९	१।२४।४३।४३	१०।१२।२९।३८	२।६।१५।४९	१।२६।४८।१४	९।२३।१७।४२	०।९।२।९	६।२९।२६।५२	०।२३।४।८	०।२४।२७।५७	२२।५५।५९	–१३।५१।३८	–४।५७।२४	४८।३३(२४।५१)
१०	१।२५।४१।५	१०।२४।४९।३४	२।६।५५।५५	१।२८।५८।३४	९।२३।१६।४१	०।९।५८।१७	६।२९।२३।१०	०।२३।०।५७	०।२४।२६।४६	२३।०।४६	–८।४१।२८	–४।२९।३६	४९।४०(२५।१८
११	१।२६।३८।२७	११।६।५३।४२	२।७।३५।१७	२।१।१०।४९	९।२३।१५।४४	०।१०।५४।२२	६।२९।१९।५९	०।२२।५७।४६	०।२४।२५।२८	२३।५।९	–३।१८।१८	–३।५०।२०	५०।४४(२५।४४)
१२	१।२७।३५।४७	११।१८।५१।२७	२।८।१५।१०	२।३।२०।२	९।२३।१४।२६	०।११।५१।२३	६।२९।१५।५४	०।२२।५४।३५	०।२४।२४।३	२३।९।८	+२।९।२७	–३।१।२२	५१।४८(२६।९)
१३	१।२८।३३।७	०।०।४४।४५	२।८।५५।४३	२।५।३०।४८	९।२३।१२।४१	०।१२।४८।३९	६।२९।११।५२	०।२२।५१।२५	०।२४।२२।३०	२३।१२।४२	७।३१।१०	–२।४।५६	५२।५०(२६।३४)
१४	१।२९।३०।२५	०।१२।२४।४	२।९।३४।४६	२।७।३८।१६	९।२३।११।२९	०।१३।४६।४२	६।२९।८।१०	०।२२।४८।१४	०।२४।२०।५१	२३।१५।५२	१२।३३।३१	–१।४।२८	५४।०(२७।२)
१५	२।०।२७।४४	०।२४।१५।५	२।१०।१४।४९	२।९।४३।५९	९।२३।९।२६	०।१४।४४।३९	६।२९।४।५५	०।२२।४५।३	०।२४।१९।३	२३।१८।३७	१७।९।४३	–०।०।२१	५५।२०(२७।३४)
१६	२।१।२५।२	१।६।१३।३७	२।१०।५४।४९	२।११।४८।३०	९।२३।७।२५	०।१५।४२।५५	६।२९।१।७	०।२२।४१।५२	०।२४।१७।८	२३।२०।५८	२१।१०।२३	+१।४।१८	५६।५२(२८।११)
१७	२।२।२२।१९	१।१८।२२।१०	२।११।३४।४९	२।१३।५०।५८	९।२३।५।२७	०।१६।४१।५६	६।२८।५८।१३	०।२२।३८।४२	०।२४।१५।५	२३।२२।५३	२४।१९।४५	२।६।५२	५८।३९(२८।५४)
१८	२।३।१९।३५	२।०।४१।४४	२।१२।१४।५२	२।१५।५१।२८	९।२३।३।१३	०।१७।४१।११	६।२८।५५।५५	०।२२।३५।३१	०।२४।१२।५४	२३।२४।२४	२६।२३।२९	३।४।२५	०।४४(५।४४)
१९	२।४।१६।५२	२।१३।१५।३१	२।१३।५४।३४	२।१७।४९।३७	९।२३।०।१९	०।१८।४१।१४	६।२८।५१।७	०।२२।३२।२०	०।२४।१०।३५	२३।२५।३०	२७।१।२९	३।५४।१९	०।३८(५।४१)
२०	२।५।१४।६	२।२६।३।२१	२।१३।३३।४६	२।१९।४५।१९	९।२२।५७।१९	०।१९।४१।१४	६।२८।४८।११	०।२२।२९।९	०।२४।८।८	२३।२६।१२	२६।२९।४६	४।३३।६	२।५८(६।३७)
२१	२।६।११।२२	३।९।४।५९	२।१४।१३।५२	२।२१।३९।३५	९।२२।५४।१०	०।२०।४१।१२	६।२८।४५।११	०।२२।२५।५८	०।२४।५।३२	२३।२६।२८	२४।२३।३१	४।५८।३८	५।२८(७।३७)
२२	२।७।८।३७	३।२२।१९।१२	२।१४।५३।३४	२।२३।३०।५९	९।२२।५१।१२	०।२१।४१।२५	६।२८।४२।११	०।२२।२२।४८	०।२४।२।४८	२३।२६।२०	२०।५७।२२	५।८।४२	८।८(८।४२)
२३	२।८।५।५१	४।५।४६।०	२।१५।३२।४६	२।२५।२०।२६	९।२२।४७।५४	०।२२।४२।४६	६।२८।३९।११	०।२२।१९।३७	०।२३।५९।५६	२३।२५।४७	१६।२३।११	५।२।०	१०।५०(९।४७)
२४	२।९।३।५	४।१९।२६।९	२।१६।१२।५२	२।२७।७।५४	९।२२।४४।०९	०।२३।४४।३२	६।२८।३६।८	०।२२।१६।२६	०।२३।५६।५६	२३।२४।४९	१०।५५।२५	४।३८।७	१३।२९(१०।५२)
२५	२।१०।०।१९	५।३।१७।११	२।१६।५२।३४	२।२८।५३।२४	९।२२।४०।५६	०।२४।४५।४४	६।२८।३३।२६	०।२२।१३।१५	०।२३।५३।४७	२३।२३।२७	४।५१।१५	३।५७।४८	१६।१(११।५६)
२६	२।१०।५७।३२	५।१७।१८।५६	२।१७।३१।४८	३।०।३६।३८	९।२२।३६।५३	०।२५।४७।४७	६।२८।३१।१४	०।२२।१०।५	०।२३।५०।२९	२३।२१।३९	–१।३३।६	३।२।५१	१८।५१(१३।१)
२७	२।११।५४।४५	६।१।३०।४६	२।१८।११।३४	३।२।१६।४५	९।२२।३२।५५	०।२६।४९।४७	६।२८।२८।८	०।२२।६।५४	०।२३।४७।३	२३।१९।२८	–७।५६।५	१।५६।१२	२१।३३(१४।६)
२८	२।१२।५१।५८	६।१५।५२।०	२।१८।५०।४९	३।३।५४।२४	९।२२।२८।३८	०।२७।५१।४४	६।२८।२५।२६	०।२२।३।४३	०।२३।४३।२९	२३।१६।५१	–१४।०।१४	०।४१।४०	२४।२३(१५।१४)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ जुलाई १९८५ अयनांशाः २३।३९।१४

मि.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्यं० प्र०	श० प० (घ० मि०)
२९	२।१३।४९।१०	७।०।१९।१३	२।१९।३०।३७	३।५।३०।५८	९।२२।२३।५२	०।२८।५४।०	६।२८।२३।१२	०।२२।०।३२	०।२३।३९।४६	२३।१३।५०	-१९।२०।४५	-०।३५।५२	२७।२४(१६।२७)
३०	२।१४।४६।२३	७।१४।४८।२३	२।२०।९।३३	३।७।५।१०	९।२२।१९।४०	०।२९।५७।३	६।२८।२०।२३	०।२१।५७।२२	०।२३।३५।५५	२३।१०।२५	-२३।३२।४५	-१।५२।८	३०।१९(१७।३८)
जुल.	२।१५।४३।३६	७।२९।१५।२०	२।२०।४८।३१	३।८।३६।३६	९।२२।१५।३७	१।१।०।३	६।२८।१८।२७	०।२१।५४।११	०।२३।३१।५६	२३।६।३५	-२६।१३।४८	-२।५८।५९	३३।१२(१८।४७)
२	२।१६।४०।४८	८।१३।३४।२३	२।२१।२७।४८	३।१०।५।४८	९।२२।९।३७	१।२।३।१	६।२८।१६।२७	०।२१।५१।०	०।२३।२७।४८	२३।२।२१	-२७।९।८	-३।५४।५०	३५।५७(१९।५१)
३	२।१७।३७।५९	८।२७।३९।१९	२।२२।७।३४	३।११।३२।१२	९।२२।४।३६	१।३।६।१६	६।२८।१४।२७	०।२१।४७।४९	०।२३।२३।३२	२२।५७।४३	-२६।१७।७	-४।३५।२०	३८।७(२०।४६)
४	२।१८।३५।११	९।११।२५।४६	२।२२।४६।४८	३।१२।५६।४३	९।२१।५९।३७	१।४।१०।१९	६।२८।१२।२७	०।२१।४४।३८	०।२३।१९।८	२२।५२।४१	-२३।४९।३०	-४।५८।४४	४०।१(२१।३३)
५	२।१९।३२।२३	९।२४।५०।३७	२।२३।२६।३७	३।१४।१८।५५	९।२१।५४।४०	१।५।१४।१९	६।२८।१०।२७	०।२१।४१।२८	०।२३।१४।३६	२२।४७।१५	-२०।६।३७	-५।४।४८	४१।३८(२२।११)
६	२।२०।२९।३५	१०।७।५२।३३	२।२४।५।३३	३।१५।३८।२१	९।२१।४९।२४	१।६।१८।१९	६।२८।८।२७	०।२१।३८।१७	०।२३।९।५५	२२।४१।२५	-१५।३०।५२	-४।५४।३५	४३।०(२२।४४)
७	२।२१।२६।४८	१०।२०।३२।३६	२।२४।४४।३३	३।१६।५५।३३	९।२१।४३।२०	१।७।२२।१७	६।२८।६।२४	०।२१।३५।६	०।२३।५।८	२२।३५।१२	-१०।२२।८	-४।२९।५६	४४।९(२३।१३)
८	२।२२।२४।०	११।२।५२।४९	२।२५।२३।३३	३।१८।१०।१०	९।२१।३७।२१	१।८।२६।३२	६।२८।४।४२	०।२१।३१।५५	०।२३।०।१२	२२।२८।३५	-४।५६।४०	-३।५३।१०	४५।१५(२३।३९)
९	२।२३।२१।१२	११।१४।५८।८	२।२६।२।३३	३।१९।२२।१५	९।२१।३१।२१	१।९।३१।३६	६।२८।३।३०	०।२१।२८।४५	०।२२।५५।९	२२।२१।३४	+०।३३।३३	-३।६।३६	४६।१६(२४।५)
१०	२।२४।१८।२४	११।२६।५२।४३	२।२६।४१।३१	३।२०।३१।२६	९।२१।२५।२०	१।१०।३६।३३	६।२८।११।२४	०।२१।२५।३४	०।२२।४९।५१	२२।१४।११	५।५८।१७	-२।१२।३४	४७।२०(२४।३०)
११	२।२५।१५।३७	०।८।४१।५६	२।२७।२०।४९	३।२१।३७।३५	९।२१।१९।२३	१।११।४१।५१	६।२७।५९।४०	०।२१।२२।२३	०।२२।४४।४०	२२।६।२५	११।८।३३	-१।१३।१८	४८।२७(२४।५८)
१२	२।२६।१२।४९	०।२०।३१।१९	२।२८।०।३७	३।२२।४०।२६	९।२१।१३।१५	१।१२।४७।३७	६।२७।५८।५३	०।२१।१९।१२	०।२२।३९।१६	२१।५८।१६	१५।५५।८	-०।१०।५८	४९।४३(२५।२८)
१३	२।२७।१०।२	१।२।२४।५९	२।२८।३९।३३	३।२३।३९।२०	९।२१।६।१७	१।१३।५२।४९	६।२७।५७।४३	०।२१।१६।२	०।२२।३३।३४	२१।४९।४४	२०।७।१०	+०।५२।७	५१।७(२६।३)
१४	२।२८।७।१६	१।१४।२८।६	२।२९।१८।३३	३।२४।३२।११	९।२१।०।२३	१।१४।५८।५२	६।२७।५६।४३	०।२१।१२।५१	०।२२।२८।६	२१।४०।५०	२३।२१।५७	१।५२।३७	५२।४७(२६।४४)
१५	२।२९।४।३०	१।२६।४५।१३	२।२९।५७।३३	३।२५।३५।१२	९।२०।५४।८	१।१६।४।५२	६।२७।५५।४३	०।२१।९।४०	०।२२।२२।२१	२१।३१।३४	२५।५६।११	२।५०।५९	५४।४६(२७।३२)
१६	३।०।१।४३	२।९।१८।४६	३।०।३६।३३	३।२६।२६।३७	९।२०।४७।४	१।१७।१०।५२	६।२७।५४।४३	०।२१।६।२९	०।२२।१६।३०	२१।२१।५५	२७।५।४८	३।४१।१८	५७।१(२८।२६)
१७	३।०।५८।५८	२।२२।९।२०	३।१।१५।३३	३।२७।१४।४७	९।२०।४०।४	१।१८।१६।५२	६।२७।५३।४३	०।२१।३।१८	०।२२।१०।३४	२१।११।५५	२६।५०।२	४।२१।३५	५९।३०(२९।२७)
१८	३।१।५६।१३	३।५।१७।१९	३।१।५४।३३	३।२७।५९।४६	९।२०।३३।८	१।१९।२२।४९	६।२७।५२।४१	०।२१।०।८	०।२२।४।३१	२१।१।३४	२५।५।१०	४।४८।५९	५९।२३(२९।२४)
१९	३।२।५३।२८	३।१८।४२।२५	३।२।३३।३३	३।२८।४०।३८	९।२०।२६।१९	१।२०।२९।७	६।२७।५१।५९	०।२०।५६।५७	०।२१।५८।२३	२०।५०।५१	२१।५४।२२	५।१।१६	२।२(६।२९)
२०	३।३।५०।४४	४।२।२०।५७	३।३।१२।३३	३।२९।१७।५१	९।२०।१९।३९	१।२१।३५।५३	६।२७।५१।२४	०।२०।५३।४६	०।२१।५२।१०	२०।३९।४७	१७।२९।३९	४।५६।२०	४।४७(२।३५)
२१	३।४।४८।०	४।१६।१०।२६	३।३।५१।३६	३।२९।५१।३४	९।२०।११।५९	१।२२।४२।५	६।२७।५०।५६	०।२०।५०।३५	०।२१।४५।५३	२०।२८।१२	१२।६।५३	४।३४।१४	७।२९(८।४९)
२२	३।५।४५।१६	५।०।७।१५	३।४।३०।१८	४।०।२०।२६	९।२०।४।१०	१।२३।४९।६	६।२७।५०।२६	०।२०।४७।२५	०।२१।३९।३०	२०।१६।३६	६।४।४२	३।५५।३८	१०।१०(९।४६)
२३	३।६।४२।४३	५।१४।९।३२	३।५।८।३०	४।०।४५।२३	९।१९।५७।७	१।२४।५६।२४	६।२७।५०।६	०।२०।४४।१४	०।२१।३३।१३	२०।४।३१	-०।१८।६	३।२।३७	१२।५२(१०।५१)
२४	३।७।३९।५१	५।२८।१५।११	३।५।४७।३३	४।१।६।३	९।१९।४९।५०	१।२६।४।१२	६।२७।४९।५२	०।२०।४१।४	०।२१।२६।३३	१९।५२।५	-६।४२।१६	१।५८।१९	१५।३३(११।५६)
२५	३।८।३७।१०	६।१२।२२।५१	३।६।२६।३३	४।१।२१।५७	९।१९।४२।४	१।२७।११।१६	६।२७।४९।५९	०।२०।३७।५२	०।२१।१९।५८	१९।३९।३९	-१२।४७।५६	०।४६।४०	१८।१७(१३।३)
२६	३।९।३४।२९	६।२६।३१।४८	३।७।५।३६	४।१।३३।४२	९।१९।३४।५०	१।२८।१८।२१	६।२७।५०।४	०।२०।३४।४१	०।२१।१३।२०	१९।२६।१६	-१८।१४।२०	-०।२७।५२	२१।५(१४।११)
२७	३।१०।३१।५९	७।१०।३९।२१	३।७।४४।१८	४।१।४०।५	९।१९।२७।४	१।२९।२६।२७	६।२७।५०।१४	०।२०।३१।३१	०।२१।६।३९	१९।१२।४९	-२२।३९।१३	-१।४०।३३	२३।५९(१५।२१)
२८	३।११।२९।८	७।२४।४४।४४	३।८।२२।३२	४।१।४०।३८	९।१९।१९।५२	२।०।३४।९	६।२७।५०।२४	०।२०।२८।२०	०।२०।५९।५६	१८।५९।५	-२५।४२।१७	-२।४६।५१	२६।४८(१६।२९)
२९	३।१२।२६।३०	८।८।४६।२९	३।९।१।१८	४।१।३६।२४	९।१९।११।४८	२।१।४२।२१	६।२७।५०।३८	०।२०।२५।९	०।२०।५३।१०	१८।४५।३	-२७।७।४९	-३।४२।४३	२९।३०(१७।३४)
३०	३।१३।२३।५२	८।२२।४०।५१	३।९।३९।३०	४।१।२७।५९	९।१९।३।४५	२।२।४९।२२	६।२७।५०।४२	०।२०।२१।५८	०।२०।४६।२१	१८।३०।४२	-२६।४९।१८	-४।२४।३६	३१।५३(१८।३२)
३१	३।१४।२१।१५	९।६।२३।३४	३।१०।१८।३६	४।१।१३।५२	९।१८।५६।३	२।३।५७।४०	६।२७।५१।१२	०।२०।१८।४८	०।२०।३९।३१	१८।१६।२	-२४।५२।३०	-४।५०।४७	३३।५९(१९।२४)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ अगस्त १९८५ अयनांशा: २३।३९।९

क्र.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्य० प्र०	घ० प० (घं० मि०)
१	३।१५।१८।३९	९।१९।५।३१	३।१०।५७।१८	४।०।५५।१९	९।१८।४८।५१	२।५।६।२५	६।२७।५१।३५	०।२०।१५।३७	०।२०।३२।४०	१८।१।५	-२१।३२।५४	-४।५९।५८	३५।४३(२०।५)
२	३।१६।१६।३	१०।३।४।३०	३।११।३५।३०	४।०।३०।५२	९।१८।४०।४५	२।६।१४।४०	६।२७।५२।१२	०।२०।१२।२६	०।२०।२५।४५	१७।४५।५०	-१७।११।९	-४।५२।४०	३७।२(२०।४१)
३	३।१७।१३।२९	१०।१५।५७।३७	३।१२।१४।२३	४।०।१।४१	९।१८।३३।३	२।७।२३।२५	६।२७।५३।१६	०।२०।९।१५	०।२०।१८।५५	१७।३०।१८	-१२।८।११	-४।३०।२३	३८।२३(२१।११)
४	३।१८।१०।५४	१०।२८।३२।१९	३।१३।५३।३६	३।२९।२८।५३	९।१८।२५।५१	२।८।३१।३७	६।२७।५४।१६	०।२०।६।४	०।२०।१२।१	१७।१४।२९	-६।४१।५८	-३।५५।१४	३९।२९(२१।३९)
५	३।१९।८।२२	११।१०।४९।७	३।१३।३२।१८	३।२८।५२।३४	९।१८।१७।४८	२।९।४०।४१	६।२७।५५।१६	०।२०।२।५४	०।२०।५।८	१६।५८।२३	-१।७।३९	-३।९।५१	४०।३४(२२।५)
६	३।२०।५।५१	११।२२।५२।४६	३।१४।१०।३२	३।२८।११।३६	९।१८।९।४८	२।१०।४९।४१	६।२७।५६।१३	०।१९।५९।४३	०।१९।५८।१४	१६।४२।१	+४।२३।४५	-२।१६।३८	४१।३४(२२।३०)
७	३।२१।३।२०	०।४।४६।४०	३।१४।४९।२०	३।२७।२८।३	९।१८।१।४८	२।११।५८।४१	६।२७।५७।३१	०।१९।५६।३२	०।१९।५१।२२	१६।२५।२२	९।४२।१	-१।१८।६	४२।३९(२२।५७)
८	३।२२।०।५०	०।१६।३५।५४	३।१५।२७।१४	३।२६।४२।१०	९।१७।५३।४६	२।१३।७।४१	६।२७।५९।१९	०।१९।५३।२१	०।१९।४४।३०	१६।८।२८	१४।३७।५६	-०।१६।३४	४३।५२(२३।२६)
९	३।२२।५८।२१	०।२८।२५।२९	३।१६।५।३२	३।२५।५३।५९	९।१७।४६।४	२।१४।१६।३८	६।२८।०।१३	०।१९।५०।११	०।१९।३७।४०	१५।५१।१८	१९।१।३१	+०।४५।४४	४५।१२(२३।५९)
१०	३।२३।५५।५३	११।१०।२०।२४	३।१६।४४।१८	३।२५।६।१२	९।१७।३८।४९	२।१५।२५।२६	६।२८।१।२८	०।१९।४७।०	०।१९।३०।५१	१५।३३।५३	२२।४१।३०	१।४६।३०	४६।४७(२४।३७)
११	३।२४।५३।२७	११।२२।२५।५७	३।१७।२२।३०	३।२४।१७।३७	९।१७।३१।४	२।१६।३५।४२	६।२८।३।३४	०।१९।४३।४९	०।१९।२४।५	१५।१६।१२	२५।२५।२१	२।४३।२४	४८।३६(२३।२२)
१२	३।२५।५१।२	२।४।४७।४४	३।१८।१।३६	३।२३।२९।२७	९।१७।२३।५१	२।१७।४४।४६	६।२८।५।१७	०।१९।४०।३८	०।१९।१७।२०	१४।५८।१२	२६।५९।५१	३।३३।५६	५०।४४(२६।१४)
१३	३।२६।४८।३८	२।१७।२९।१४	३।१८।४०।२०	३।२२।४५।२२	९।१७।१५।४९	२।१८।५४।३९	६।२८।६।२८	०।१९।३७।२८	०।१९।१०।३९	१४।४०।१९	२७।१२।४९	४।१५।१९	५३।८(२७।१३)
१४	३।२७।४७।१५	३।०।३३।१६	३।१९।१८।१४	३।२२।३।५०	९।१७।७।४५	२।२०।४।११	६।२८।८।३२	०।१९।३४।१७	०।१९।४।०	१४।२१।४५	२५।५६।३२	४।४४।३८	५५।४८(२८।१७)
१५	३।२८।४३।५३	३।१३।५८।२०	३।१९।५६।३२	३।२१।५५।१	९।१७।०।०	२।२१।१४।४५	६।२८।१०।३२	०।१९।३१।६	०।१८।५७।२४	१४।३।१८	२३।१०।४८	४।५९।१०	५८।३३(२९।२४)
१६	३।२९।४१।३३	३।२७।४।३७	३।२०।३५।१८	३।२०।५९।१७	९।१६।५३।५	२।२२।२३।४१	६।२८।१२।३२	०।१९।२७।५५	०।१८।५०।५२	१३।४४।१८	१९।३।२	४।५६।५०	१।२०(६।३१)
१७	४।०।३९।१४	४।११।४७।५५	३।२१।१३।३२	३।२०।२३।९	९।१६।४६।७	२।२३।३४।१२	६।२८।१४।२९	०।१९।२४।४४	०।१८।४४।२४	१३।२५।१५	१३।४७।४८	४।३६।३५	१।१३(६।२८)
१८	४।१।३६।५६	४।२६।३।२३	३।२१।५२।२०	३।२०।१।३२	९।१६।३८।४९	२।२४।४४।२५	६।२८।१६।४५	०।१९।२१।३४	०।१८।३८।०	१३।५।५९	७।४४।७	३।५८।५२	३।५९(७।३६)
१९	४।२।३४।३९	५।१०।२४।३८	३।२२।३०।१४	३।१९।४५।१७	९।१६।३१।१	२।२५।५१।५६	६।२८।१९।३५	०।१९।१८।२३	०।१८।३१।४१	१२।२६।३०	१।१३।३७	३।५।५८	६।४४(८।४३)
२०	४।३।३२।२५	५।२४।४७।३०	३।२३।८।३२	३।१९।३६।२६	९।१६।२४।४	२।२६।५७।१२	६।२८।२१।२९	०।१९।१५।१२	०।१८।२५।२६	१२।२६।४९	-५।२२।५	३।०।४६	९।३१(९।५०)
२१	४।४।३०।११	६।९।७।२४	३।२३।४०।२०	३।१९।३५।३५	९।१६।१७।४	२।२८।१६।३२	६।२८।२३।४५	०।१९।१२।११	०।१८।१६।१६	१२।६।५७	-११।४०।४९	०।४८।१३	१२।२३(११।०)
२२	४।५।२७।५८	६।२३।२१।४२	३।२४।२५।१४	३।१९।३९।४०	९।१६।१०।४	२।२९।२६।१२	६।२८।२६।५१	०।१९।८।५०	०।१८।१३।४१	११।४८।३४	-१७।२०।४९	-०।२६।४९	१५।१३(१२।९)
२३	४।६।२५।४७	७।७।२८।२०	३।२५।३।३२	३।१९।५०।५१	९।१६।३।१	३।०।३६।५८	६।२८।२९।३३	०।१९।५।३९	०।१८।४।१५	११।२६।१२	-२२।१।७	-१।४०।३	१७।५९(१३।१६)
२४	४।७।२३।३८	७।२१।६।९	३।२५।४२।२०	३।२०।१७।५५	९।१५।५६।२०	३।१।४७।१०	६।२८।३१।४५	०।१९।२।२८	०।१७।५८।४३	११।६।४१	-२५।२२।३६	-२।४७।१२	२०।३३(१४।१८)
२५	४।८।२१।३०	८।५।१५।४९	३।२६।२०।१७	३।२०।४६।४१	९।१५।५०।८	३।२।५८।१६	६।२८।३४।५१	०।१८।५९।१७	०।१७।५३।७	१०।४४।३५	-२७।८।५०	-३।४२।३८	२३।२५(१५।२७)
२६	४।९।१९।२४	८।१८।५६।१२	३।२६।५८।१७	३।२१।२३।५१	९।१५।४३।२	३।४।८।५८	६।२८।३७।३३	०।१८।५६।६	०।१७।४८।२९	१०।२७।१०	-२७।१३।५१	-४।२४।२१	२६।४(१६।३२)
२७	४।१०।१७।१८	९।२।२६।२९	३।२७।३६।१४	३।२२।९।६	९।१५।३६।१७	३।५।१९।७	६।२८।३९।४२	०।१८।५२।५५	०।१७।४३।१६	१०।३।५१	-२५।४२।८	-४।२१।३१	२८।१०(१७।२३)
२८	४।११।१५।१५	९।१५।४५।९	३।२८।१४।३२	३।२३।१।४५	९।१५।३०।२३	३।६।३०।२९	६।२८।४३।३	०।१८।४९।४४	०।१७।३८।४८	९।४२।४५	-२२।४५।१२	-५।२।१८	२९।५१(१८।७)
२९	४।१२।१३।१३	९।२८।५१।४६	३।२८।५३।२०	३।२४।०।५३	९।१५।२४।५	३।७।४२।१७	६।२८।४६।५२	०।१८।४६।३४	०।२७।३३।२६	९।२१।२९	-१८।४०।५२	-४।५६।५०	३१।३०(१८।४४)
३०	४।१३।११।१२	१०।११।४४।४९	३।१।३१।१७	३।२५।७।३८	९।१५।१७।१५	३।८।५३।११	६।२८।४९।४६	०।१८।४३।२४	०।१७।२८।११	९।०।५	-१३।४८।३२	-४।३६।१९	३२।४८(१९।१६)
३१	४।१४।९।१४	१०।२४।२२।४१	४।०।९।१७	३।२६।२०।१५	९।१५।११।३६	३।१०।४।२९	६।२८।५३।१४	०।१८।४०।१४	०।१७।२३।४	८।३८।३१	-८।२६।४२	-४।२।८	३३।५९(१९।४५)
सि त.	४।१५।७।१७	११।६।४६।०	४।०।४७।१४	३।२७।३८।५५	९।१५।६।२१	३।११।१६।१७	६।२८।५६।४९	०।१८।३७।३	०।१७।१८।३	८।१६।५०	-२।५०।५९	-३।१७।१०	३५।४(२०।१२)
२	४।१६।५।२२	११।१८।५६।३५	४।१।२५।३२	३।२९।३।२०	९।१५।०।३६	३।१२।२७।११	६।२९।०।१	०।१८।३३।५२	०।१७।१३।१०	७।५५।०	+२।४६।८	-२।२३।४८	३६।६(२०।३८)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ सितम्बर १९८५ अयनांशाः २३।३९।१३

ता.	सूर्य रा अं क वि	चन्द्र रा अं क वि	मंगल रा अं क वि	बुध रा अं क वि	गुरु रा अं क वि	शुक्र रा अं क वि	शनि रा अं क वि	मध्यम राहु रा अं क वि	स्पष्ट राहु रा अं क वि	सूर्य क्रान्ति अं क वि	चन्द्र क्रान्ति अं क वि	चन्द्र शर अं क्ष प्र	चन्द्रोदय घ प (घं मि)
३	४।१७।३।२८	०।०।५५।४८	४।२।४।२०	४।०।३२।४४	९।१४।५५।२१	३।१३।३८।२६	६।२९।४।४	०।१८।३०।४१	०।१७।८।२४	७।३३।३	८।१२।४१	-१।२४।४५	३७।१३(२१।४)
४	४।१८।१।३६	०।१३।४७।१	४।२।४२।१७	४।२।६।५५	९।१४।४९।३३	३।१४।५०।२९	६।२९।८।४	०।१८।२७।३१	०।१७।३।४६	७।१०।५९	१३।१८।४१	-०।२२।३४	३८।२३(२१।३३)
५	४।१८।५९।४५	०।२४।३४।३४	४।३।२०।१७	४।३।४४।४७	९।१४।४४।३७	३।१६।२।३२	६।२९।१२।७	०।१८।२४।२०	०।१६।५९।१६	६।४८।४८	१७।५४।२०	+०।४०।२२	३९।३९(२२।४)
६	४।१९।५७।५७	१।६।२३।१०	४।३।५८।१७	४।५।२५।३३	९।१४।३९।३७	३।१७।१४।१४	६।२९।१५।४९	०।१८।२१।९	०।१६।५४।५३	६।२६।२९	२१।४९।५	१।४१।४७	४१।१(२२।४०)
७	४।२०।५६।१०	१।१८।१७।२०	४।४।३६।१७	४।७।९।३९	९।१४।३४।३६	३।१८।२५।२६	६।२९।१९।१	०।१८।१७।५८	०।१६।५०।३८	६।४।५	२४।५१।१८	२।३९।२०	४२।५०(२३।२१)
८	४।२१।५४।२५	२।०।२२।५४	४।५।१४।१७	४।८।५७।२१	९।१४।२९।३४	३।१९।३७।२७	६।२९।२३।२	०।१८।१४।४८	०।१६।४६।३२	५।४१।३४	२६।४९।१०	३।३०।४८	४४।४४(२४।८)
९	४।२२।५२।४२	२।१२।४४।५२	४।५।५२।१७	४।१०।४६।४१	९।१४।२४।५०	३।२०।४९।४५	६।२९।२७।२०	०।१८।११।३७	०।१६।४२।३२	५।१८।५८	२७।३०।३४	४।१३।४१	४७।२(२५।३)
१०	४।२३।५१।०	२।२५।२८।६	४।६।३०।१७	४।१२।३६।५५	९।१४।२०।५५	३।२२।२।३३	६।२९।३२।८	०।१८।८।२६	०।१६।३८।४१	४।५६।१६	२६।४७।८	४।४५।२५	४९।३३(२६।५)
११	४।२४।४९।१९	३।८।३५।४४	४।७।८।१७	४।१४।२८।२९	९।१४।१६।३८	३।२३।१४।२७	६।२९।३६।४	०।१८।५।१५	०।१६।३४।५८	४।३३।३०	२४।३४।५२	५।३।२०	५२।१५(२७।१०)
१२	४।२५।४७।४२	३।२२।९।८	४।७।४६।१७	४।१६।२१।३३	९।१४।११।४७	३।२४।२६।४५	६।२९।४०।४	०।१८।२।४	०।१६।३१।२३	४।१०।३८	२०।५६।५३	५।५।२	५५।५(२८।१८)
१३	४।२६।४६।६	४।६।८।३३	४।८।२४।१७	४।१८।१४।४९	९।१४।८।८	३।२५।३९।३०	६।२९।४४।२	०।१७।५८।५४	०।१६।२७।५६	३।४७।४२	१६।२।४५	४।४८।४७	५८।२(२९।२९)
१४	४।२७।४४।३२	४।२०।२८।५७	४।९।२।१७	४।२०।८।५२	९।१४।४।५४	३।२६।५१।४५	६।२९।४८।४७	०।१७।५५।४३	०।१६।२४।३७	३।२४।४२	१०।८।५७	४।१४।१०	०।५९(६।२८)
१५	४।२८।४३।०	५।५।५।३७	४।९।४०।१७	४।२२।२।५४	९।१४।१।८	३।२८।४।३३	६।२९।५३।२१	०।१७।५२।३२	०।१६।२१।२६	३।१।३९	३।३५।३३	३।२२।२३	०।४९(६।३४)
१६	४।२९।४१।२९	५।१९।५१।२८	४।१०।१८।१७	४।२३।५६।४२	९।१३।५७।५५	३।२९।१६।२७	६।२९।५८।२३	०।१७।४९।२१	०।१६।१८।२२	२।३८।३२	-३।१४।६	२।१६।३४	३।३०(७।४३)
१७	५।०।४०।१	६।४।३८।४५	४।१०।५६।१७	४।२५।४९।२०	९।१३।५४।६	४।०।२८।४२	७।०।३।५	०।१७।४६।११	०।१६।१५।२७	२।१५।२२	-९।५४।५२	१।१।२३	६।२९(८।५३)
१८	५।१।३८।३३	६।१९।२०।३	४।११।३४।१७	४।२७।४१।३७	९।१३।५१।१०	४।१।४१।४६	७।०।७।१७	०।१७।४३।०	०।१६।१२।३९	१।५२।९	-१६।०।५८	-०।१७।२८	९।१८(१०।३)
१९	५।२।३७।९	७।३।५१।२३	४।१२।१२।१७	४।२९।३४।१०	९।१३।४८।७	४।२।५४।४६	७।०।१२।२३	०।१७।३९।४९	०।१६।९।५९	१।२८।५४	-२१।८।२२	-१।३४।३०	१२।१४(११।१५)
२०	५।३।३५।४६	७।१८।७।२२	४।१२।५०।१७	५।१।२५।६	९।१३।४५।२२	४।४।७।४६	७।०।१७।५	०।१७।३६।३८	०।१६।७।२७	१।५।३६	-२४।५४।५८	-२।४४।२५	१५।९(१२।२६)
२१	५।४।३४।२६	८।२।८।८	४।१३।२८।१७	५।३।१५।५०	९।१३।४३।२५	४।५।२०।४६	७।०।२१।१५	०।१७।३३।२७	०।१६।५।२	०।४२।१७	-२७।५।३९	-३।४३ १८	१८।४(१३।३६)
२२	५।५।३३।७	८।१५।५२।३०	४।१४।६।१७	५।५।५।५२	९।१३।४१।२६	४।६।३३।४६	७।०।२६।३६	०।१७।३०।१७	०।१६।२।४५	०।१८।५७	-२७।३३।२४	-४।२८।५०	२०।३६(१४।३८)
२३	५।६।३१।५०	८।२९।२०।१८	४।१४।४४।१७	५।६।५५।२१	९।१३।३९।२६	४।७।४६।४६	७।०।३२।२४	०।१७।२७।६	०।१६।०।३५	-०।४।२४	-२६।२९।४९	-४।५७।१४	२२।५०(१५।३१)
२४	५।७।३०।३४	९।१२।३३।९	४।१५।२२।१७	५।८।४३।१७	९।१३।३७।२३	४।८।५९।४६	७।०।३७।२१	०।१७।२३।५५	०।१५।५८।३२	-०।२७।४६	-२३।४३।१०	-५।९।४९	२४।४२(१६।१७)
२५	५।८।२९।२१	९।२५।३१।३१	४।१६।०।१७	५।१०।३१।४	९।१३।३५।४१	४।१०।१२।४३	७।०।४२।२१	०।१७।२०।४४	०।१५।५६।३६	-०।५१।८	-१९।५४।५०	-५।६।८	२६।१५(१६।५५)
२६	५।९।२८।१०	१०।८।१६।५५	४।१६।३८।१७	५।१२।१७।५०	९।१३।३४।२७	४।११।२६।१	७।०।४७।१८	०।१७।१७।३४	०।१५।५४।४७	-१।१४।३१	-१५।१५।३	-४।४७।९	२७।३७(१७।२८)
२७	५।१०।२७।१	१०।२०।४९।५२	४।१७।१६।१९	५।१४।३।१९	९।१३।३२।३९	४।१२।३९।४७	७।०।५२।३६	०।१७।१४।२३	०।१५।५३।५	-१।३७।५४	-१०।१।९	-४।१४।३०	२८।४८(१७।५७)
२८	५।११।२५।५४	११।३।११।३३	४।१७।५२।२	५।१५।४६।५७	९।१३।३१।४१	४।१३।५३।४	७।०।५८।२२	०।१७।११।१२	०।१५।५१।३०	-२।१।१५	-४।२८।१२	-३।३०।१९	२९।५२(१८।२४)
२९	५।१२।२४।५०	११।१५।२१।५६	४।१८।३१।१३	५।१७।२९।५६	९।१३।३०।३९	४।१५।६।३१	७।१।३।३६	०।१७।८।१	०।१५।५०।१	-२।२४।३६	+१।१०।४	-२।३७।७	३०।५७(१८।५०)
३०	५।१३।२३।४७	११।२७।२३।२०	४।१९।९।१७	५।१९।१२।४०	९।१३।२९।५७	४।१६।१८।५८	७।१।९।२२	०।१७।४।५१	०।१५।४८।३९	-२।४७।५५	६।४२।३०	-१।३७।५०	३१।५७(१९।१५)
अक्तू.	५।१४।२२।४५	०।९।१६।४१	४।१९।४७।१७	५।२०।५४।३९	९।१३।२९।२३	४।१७।३२।४७	७।१।१४।३३	०।१७।१।४०	०।१५।४७।२२	-३।११।१३	११।५७।१५	-०।३४।१२	३३।६(१९।४३)
२	५।१५।२१।४६	०।२१।५।३८	४।२०।२५।१७	५।२२।३६।३९	९।१३।२९।५	४।१८।४५।५८	७।१।२०।३७	०।१६।५८।२९	०।१५।४६।१२	-३।३४।२८	१६।४४।४५	+०।३०।१६	३४।१६(२०।१३)
३	५।१६।२०।४९	१।२।५२।१५	४।२१।३।१७	५।२४।१६।५७	९।१३।२८।५४	४।२०।०।२	७।१।२६।३७	०।१६।५५।१८	०।१५।४५।७	-३।५७।४२	२०।५३।३४	१।३३।२२	३५।४०(२०।४६)
४	५।१७।१९।५५	०।१४।४०।१०	४।२१।४१।१९	५।२५।५५।३५	९।१३।२८।४६	४।२१।१४।२	७।१।३२।३७	०।१६।५२।७	०।१५।४४।८	-४।२०।५२	२४।१२।३१	२।३२।४३	३७।१४(२१।२५)
५	५।१८।१९।३	१।२६।३४।१०	४।२२।१९।२	५।२७।३३।३४	९।१३।२९।१४	४।२२।२८।४	७।१।३८।३९	०।१६।४८।५७	०।१५।४३।१५	-४।४४।०	२६।३०।२४	३।२६।६	३९।७(२२।१०)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ अक्तूबर १९८५ अयनांशा: २३।३९।१७

अक्टू.	सूर्य रा अं क वि	चन्द्र रा अं क वि	मंगल रा अं क वि	बुध रा अं क वि	गुरु रा अं क वि	शुक्र रा अं क वि	शनि रा अं क वि	मध्यम राहु रा अं क वि	स्पष्ट राहु रा अं क वि	सूर्य क्रान्ति अं क वि	चन्द्र क्रान्ति अं क वि	चन्द्र शर अं क प्र	चन्द्रोदय घ प (घं मि)
६	५।१९।१८।११	२।८।३८।२८	४।२२।५६।१४	५।२८।११।२२	९।१३।३०।१०	४।२३।४१।४७	७।१।४४।२२	०।१६।४५।४६	०।१५।४२।२६	-५।७।३	२७।३६।३८	४।११।१३	४१।१३(२३।१)
७	५।२०।१७।२१	२।२०।५८।९	४।२३।३४।१७	६।०।४८।५	९।१३।३०।११	४।२४।५४।५८	७।१।४९।३३	०।१६।४२।३५	०।१५।४१।४२	-५।३०।३	२७।२२।२५	४।४५।५०	४३।३४(२३।५९)
८	५।२१।१६।३६	३।३।३७।५९	४।२४।१२।१७	६।२।२३।४७	९।१३।३१।१४	४।२६।९।२	७।१।५५।३६	०।१६।३९।२४	०।१५।४१।४	-५।५२।५९	२५।४३।४६	५।७।३९	४६।८(२५।१)
९	५।२२।१५।५१	३।१६।४२।७	४।२४।५०।१९	६।३।५८।४६	९।१३।३२।११	४।२७।२३।२	७।२।१।३७	०।१६।३६।१४	०।१५।४०।२९	-६।१५।५०	२२।४१।८	५।१४।२६	४८।५२(२६।७)
१०	५।२३।१४।९	४।०।१३।१०	४।२५।२८।२	६।५।३३।३३	९।१३।३३।२७	४।२८।३७।२	७।२।७।३७	०।१६।३३।३	०।१५।३९।५९	-६।३८।३६	१८।२०।३६	५।४।१५	५१।३७(२७।१४)
११	५।२४।१४।२८	४।१४।१०।३३	४।२६।५।१३	६।७।७।१४	९।१३।३५।३३	४।२९।५०।५९	७।२।१३।३७	०।१६।२९।५२	०।१५।३९।३३	-७।१।१७	१२।५२।५१	४।३६।१०	५४।२४(२८।२२)
१२	५।२५।१३।५०	४।२८।३४।३४	४।२६।४३।१९	६।८।४०।१३	९।१३।३७।१३	५।१।५।१७	७।२।१९।३७	०।१६।२६।४१	०।१५।३९।११	-७।२३।५२	६।३५।५६	३।४९।४३	५६।४५(२९।३०)
१३	५।२६।१३।१६	५।१३।२०।३८	४।२७।२१।२	६।१०।१३।१०	९।१३।३८।४२	५।२।२०।२	७।२।२५।३४	०।१६।२३।३०	०।१५।३८।५३	-७।३६।५५	-०।१३।७	२।४७।१०	०।६(६।४०)
१४	५।२७।१२।५०	५।२८।२०।५४	४।२७।५८।१४	६।११।४४।४२	९।१३।४१।३४	५।३।३४।२	७।२।३१।५०	०।१६।२०।१९	०।१५।३८।३७	-८।५।३४	-७।८।३४	१।३२।२०	१।२४(७।१२)
१५	५।२८।१२।१५	६।१३।२७।३२	४।२८।३६।१७	६।१३।१५।४२	९।१३।४३।२८	५।४।४७।५९	७।२।३८।५६	०।१६।१७।९	०।१५।३८।३०	-८।२६।१५	-१३।४३।२९	०।१०।२५	१।१७(७।१०)
१६	५।२९।११।२३	६।२८।३०।५७	४।२९।१४।१७	६।१४।४६।२८	९।१३।४५।४३	५।६।२।१७	७।२।४५।३८	०।१६।१३।५८	०।१५।३८।२०	-८।३३।३८	-१९।२८।३५	-१।१३।१६	४।२८(८।२७)
१७	६।०।१०।३१	७।१३।२३।७	४।२९।५२।१९	६।१६।१६।९	९।१३।४८।५०	५।७।१७।५	७।२।५१।५२	०।१६।१०।४७	०।१५।३८।१०	-९।२।३७	-२३।५५।४३	-२।२८।३६	९।९(१०।२०)
१८	६।१।१०।४१	७।२७।५७।४८	५।०।३०।२	६।१७।४५।८	९।१३।५१।३१	५।८।३१।२	७।२।५८।४०	०।१६।७।३७	०।१५।३८।७	-९।३७।३	-२६।४४।२१	-३।३४।१२	१२।३(११।३०)
१९	६।२।१०।४६	८।१२।१०।४१	५।१।७।१६	६।१९।१३।५५	९।१३।५३।४१	५।९।४४।५९	७।३।४।३७	०।१६।४।२६	०।१५।३८।६	-९।५८।४८	-२७।४३।२६	-४।२४।५५	१४।४६(१२।३७)
२०	६।३।९।५३	८।२६।०।२३	५।१।४५।२	६।२०।४१।३९	९।१३।५७।२	५।१०।५९।१७	७।३।१०।३४	०।१६।१।१५	०।१५।३८।६	-१०।२०।२३	-२६।५५।३२	-४।५८।४५	१७।११(१३।३२)
२१	६।४।९।३४	९।९।२७।१४	५।२।२२।१४	६।२२।८।२३	९।१४।०।४८	५।१२।१४।३	७।३।१६।५३	०।१५।५८।४	०।१५।३८।८	-१०।४१।५०	-२४।३४।७	-५।१५।३	१९।१०(१४।२३)
२२	६।५।९।१६	९।२२।३२।५३	५।३।०।१७	६।२३।३४।४	९।१४।४।१०	५।१३।२८।१७	७।३।२३।१८	०।१५।५४।५४	०।१५।३८।१२	-११।३।८	-२०।५८।२७	-५।१४।१९	२०।४९(१५।४)
२३	६।६।९।०	१०।५।१९।४४	५।३।३८।१९	६।२४।५९।३	९।१४।८।३	५।१४।४३।३	७।३।२९।२९	०।१५।५१।४३	०।१५।३८।१७	-११।२४।१५	-१६।२८।३१	-४।५७।५०	२२।११(१५।३८)
२४	६।७।८।४५	१०।१७।४९।४१	५।४।१६।२	६।२६।२३।५०	९।१४।१२।१	५।१५।५७।१५	७।३।३६।२८	०।१५।४८।३२	०।१५।३८।२३	-११।४५।१३	-११।२२।३०	-४।२७।२४	२३।२३(१६।७)
२५	६।८।८।३२	१०।२९।५२।३७	५।४।५३।१४	६।२७।४७।३४	९।१४।१६।१९	५।१७।१२।२१	७।३।४३।४३	०।१५।४५।२१	०।१५।३८।३०	१२।५।५९	-६।११।३५	-३।४६।३	२४।२८(१६।३४)
२६	६।९।८।२२	११।१४।२।८	५।५।३१।१९	६।२९।१०।१८	९।१४।२१।६	५।१८।२७।३	७।३।५०।१७	०।१५।४२।१०	०।१५।३८।३७	-१२।२६।३४	+०।३९।३८	-२।४४।४९	२५।५०(१७।७)
२७	६।१०।८।१२	११।२९।२।३८	५।६।९।२	७।०।३२।२	९।१४।२५।१	५।१९।४१।१५	७।३।५६।१७	०।१५।३८।५९	०।१५।३८।४४	-१२।४५।१६	७।२७।७	-१।२९।३	२६।५४(१७।३४)
२८	६।११।८।६	०।५।४६।५४	५।६।४६।१३	७।१।५२।४३	९।१४।२९।१६	५।२०।५६।१८	७।४।३।३८	०।१५।३५।४९	०।१५।३८।५६	-१३।१५।२५	१०।२७।५	-०।५२।४६	२७।२४(१७।४७)
२९	६।१२।८।३	०।१७।५५।१५	५।७।२४।१९	७।३।१२।४४	९।१४।३४।२०	५।२२।११।२१	७।४।९।५०	०।१५।३२।३८	०।१५।३९।१४	-१४।१०।२०	१५।३२।५	+०।१४।११	२८।२४(१८।१२)
३०	६।१३।८।२	०।२९।४३।२१	५।८।२।४	७।४।३२।१६	९।१४।३९।१७	५।२३।२६।३	७।४।१६।५३	०।१५।२९।२७	०।१५।३९।१६	-१४।१५।५९	१९।५३।१९	१।१८।४१	२९।५६(१८।४९)
३१	६।१४।८।०	१।११।३९।७	५।८।३८।५८	७।५।४९।५९	९।१४।४४।३५	५।२४।४०।१५	७।४।२३।५३	०।१५।२६।१७	०।१५।३९।१२	-१४।२०।१७	२३।२७।२९	२।१९।५४	३१।३६(१९।३०)
नवं.	६।१५।८।०	१।२३।२३।१७	५।९।१६।१३	७।७।६।२७	९।१४।५०।२०	५।२५।५५।१८	७।४।३०।५३	०।१५।२३।६	०।१५।३९।१९	-१४।२५।५०	२६।३।११	३।१५।३०	३३।१४(२०।१०)
२	६।१६।८।३	२।५।२९।७	५।९।५४।१९	७।८।२१।१०	९।१४।५५।३२	५।२७।१०।१८	७।४।३७।५३	०।१५।१९।५५	०।१५।३९।२३	-१४।४४।५७	२७।२९।१९	४।३।४	३५।१३(२०।५८)
३	६।१७।८।८	२।१७।२७।५८	५।१०।३२।२	७।९।३४।४४	९।१५।१।३५	५।२८।२५।१८	७।४।४४।५३	०।१५।१६।४४	०।१५।३९।२६	-१५।३।४९	२७।३८।०	४।४०।२८	३७।२६(२१।५३)
४	६।१८।८।१५	२।२९।४७।५७	५।११।९।१४	७।१०।४५।५३	९।१५।७।३५	५।२९।४०।१८	७।४।५१।५३	०।१५।१३।३४	०।१५।३९।२८	-१५।२२।२६	२६।२५।१९	५।५।४२	३९।५२(२२।५२)
५	६।१९।८।२३	३।१२।२४।४३	५।११।४६।१९	७।११।५४।३३	९।१५।१३।३६	६।०।५५।१८	७।४।५८।५३	०।१५।१०।२३	०।१५।३९।२८	-१५।४०।४८	२३।५२।१०	५।१६।५५	४२।२५(२३।५४)
६	६।२०।८।३४	३।२५।२९।५३	५।१२।२४।२६	७।१३।२।६	९।१५।१९।३३	६।२।२।४६	७।५।५।५३	०।१५।७।१२	०।१५।३९।२६	-१५।५८।५५	२०।३।५५	५।१२।३०	४५।५(२४।५८)
७	६।२१।८।४६	४।८।४३।३१	५।१३।१।३५	७।१४।७।२३	९।१५।२५।४८	६।४।१८।४२	७।५।१२।५३	०।१५।४।१	०।१५।३९।२१	-१६।१६।४५	१५।९।१४	५।५१।१९	४७।४२(२६।३)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ नवम्बर १९८५ अयनांशा: २३।३९।२१

१ दिसम्बर अयनांशा: २३।३९।२५

तवं.	सूर्य रा० अं० क० वि०	चन्द्र रा० अं० क० वि०	मंगल रा० अं० क० वि०	बुध रा० अं० क० वि०	गुरु रा० अं० क० वि०	शुक्र रा० अं० क० वि०	शनि रा० अं० क० वि०	मध्यम राहु रा० अं० क० वि०	स्पष्ट राहु रा० अं० क० वि०	सूर्य क्रान्ति अं० क० वि०	चन्द्र क्रान्ति अं० क० वि०	चन्द्र शर अं० क० वि०	चन्द्रोदय घ्व० प्र०व० प० (घ० मि०)
८	६।२२।८।५९	४।२२।३०।४८	५।१३।२९।१७	७।१५।९।१७	९।१५।३२।५४	६।५।३३।२८	७।५।१९।५३	०।१५।०।५०	०।१५।३९।१५	-१६।३४।१९	९।२०।२२	४।१२।५६	५०।२६(२७।९)
९	६।२३।९।१५	५।६।४४।५१	५।१४।१६।१०	७।१६।७।४८	९।१५।३९।३७	६।६।४८।३४	७।५।२६।५३	०।१४।५७।४०	०।१५।३९।५	-१६।५१।३७	२।५२।५	३।१८।५	५३।१२(२८।१६)
१०	६।२४।९।३३	५।२१।२३।१	५।१४।५४।१६	७।१७।३।४७	९।१५।४५।४६	६।८।३।४०	७।५।३३।३८	०।१४।५४।२९	०।१५।३८।५३	-१७।८।३७	-३।५६।२४	२।९।४	५६।९(२९।२८)
११	६।२५।९।५२	६।६।२०।४८	५।१५।३२।२	७।१७।५५।२७	९।१५।५३।७	६।८।२६।१८	७।५।४२।४०	०।१४।५१।१८	०।१५।३८।३८	-१७।२५।२०	-१०।४१।४०	०।४९।५६	५९।७(३०।४०)
१२	६।२६।१०।१३	६।२१।३१।२१	५।१६।९।१६	७।१८।४२।२१	९।१६।०।५६	६।९।४१।१८	७।५।५२।३९	०।१४।४८।७	०।१५।३८।२०	-१७।४१।४५	-१६।५५।३६	-०।३३।४१	२।१२(७।५५)
१३	६।२७।१०।३५	७।६।४५।१६	५।१६।४७।२	७।१९।२५।८	९।१६।८।१४	६।१०।५६।१८	७।५।५४।१८	०।१४।४४।५७	०।१५।३७।५८	-१७।५७।५१	-२२।६।५६	-१।५५।१२	२।१(७।५२)
१४	६।२८।११।०	७।२१।५२।१७	५।१७।२४।१४	७।२०।२।१८	९।१६।१२।६	६।१२।११।१८	७।६।२।५७	०।१४।४१।४६	०।१५।३७।३२	-१८।१३।३९	-२५।४६।१५	-३।८।३	५।६(९।७)
१५	६।२९।११।२६	८।६।४३।२८	५।१८।२।१९	७।२०।३२।४०	९।१६।२५।७	६।१३।२६।१८	७।६।९।५३	०।१४।३८।३५	०।१५।३७।३	-१८।२९।७	-२७।३३।२१	-४।६।५५	८।२(१०।१८)
१६	७।०।११।५३	८।२१।१२।४९	५।१८।४०।२	७।२०।५६।५५	९।१६।३१।४२	६।१४।४१।१८	७।६।१६।५३	०।१४।३५।२४	०।१५।३६।२९	-१८।४४।१६	-२७।२३।१७	-४।४८।२४	१०।४५(११।२४)
१७	७।१।१२।२२	९।५।१५।१९	५।१९।१७।१९	७।२१।१३।३५	९।१६।३९।८	६।१६।१।१७	७।६।२३।५३	०।१४।३२।१४	०।१५।३५।५२	-१८।५९।५	-२५।२६।५७	-५।११।१४	१२।५७(१२।१८)
१८	७।२।१२।५२	९।१८।४९।५१	५।१९।५४।४६	७।२१।२१।९	९।१६।४७।६	६।१६।३५।५१	७।६।३०।५३	०।१४।२९।३	०।१५।३५।१०	-१९।१३।३४	-२२।५।४३	-५।१५।१६	१४।४८(१३।२)
१९	७।३।१३।२५	१०।१।५७।४६	५।२०।३१।१३	७।२१।१९।४५	९।१६।५५।२४	६।१८।५१।१३	७।६।३७।५३	०।१४।२५।५२	०।१५।३४।२३	-१९।२७।४२	-१७।४३।२३	-५।२।३३	१६।१६(१३।३९)
२०	७।४।१३।५८	१०।१४।४१।५६	५।२१।९।२	७।२१।९।६	९।१७।४।१२	६।१९।४९।५	७।६।४४।५१	०।१४।२२।४१	०।१५।३३।३२	-१९।४१।२९	-१२।४१।८	-४।३५।५	१७।३१(२४।१०)
२१	७।५।१४।३३	१०।२७।६।५७	५।२१।४६।१३	७।२०।४८।२९	९।१७।१२।६	६।२०।५७।३४	७।६।५२।९	०।१४।१९।३०	०।१५।३२।३६	-१९।५४।५४	-७।१५।३९	-३।५५।१७	१८।३७(१४।३७)
२२	७।६।१५।१०	११।९।१६।१५	५।२२।१६।४८	७।२०।१७।१३	९।१७।२०।२१	६।२२।१३।२२	७।६।५९।५७	०।१४।१६।२०	०।१५।३१।३५	-२०।७।५८	-१।४०।३२	-३।५।३९	१९।३६(१५।३)
२३	७।७।१५।४८	११।२१।१४।४४	५।२२।५५।३८	७।१९।३४।३९	९।१७।२९।२४	६।२३।२८।१८	७।७।६।५३	०।१४।१३।९	०।१५।३०।२८	-२०।२०।४०	+३।५३।२५	-२।८।४७	२०।३६(१५।२७)
२४	७।८।१६।२७	०।३।६।१०	५।२३।३३।११	७।१८।४३।१०	९।१७।३८।२४	६।२४।४३।१६	७।७।१३।५३	०।१४।९।५८	०।१५।२९।१७	-२०।३२।५९	९।१६।४२	-१।६।४७	२१।३७(१५।५२)
२५	७।९।१७।८	०।१४।५३।४३	५।२४।६।१	७।१७।४१।७	९।१७।४७।२२	६।२५।५८।३१	७।७।२०।५३	०।१४।६।४७	०।१५।२७।५९	-२०।४४।५५	१४।१८।५६	-०।२।२८	२२।४३(१६।१९)
२६	७।१०।१७।५०	०।२६।४१।३४	५।२४।५४।४	७।१६।३०।१४	९।१७।५६।३९	६।२७।१४।३७	७।७।२७।५३	०।१४।३।३७	०।१५।२६।३६	-२०।५६।२८	१८।४९।४६	+१।११।५२	२३।५९(१६।५०)
२७	७।११।१८।३३	१।८।३०।२०	५।२५।३१।१	७।१५।१३।४४	९।१८।६।२५	६।२८।३०।२२	७।७।३४।५३	०।१४।०।२६	०।१५।२५।८	-२१।७।३७	२२।३६।५०	२।३।३४	२५।२३(१७।२४)
२८	७।१२।१९।१८	१।२०।२३।४९	५।२६।७।५८	७।१३।५२।३८	९।१८।१५।३७	६।२९।४५।१८	७।७।४१।५३	०।१३।५७।१५	०।१५।२३।३३	-२१।१८।२७	२५।२८।१९	३।०।१७	२७।१(१८।५)
२९	७।१३।२०।४	२।२।२३।३७	५।२६।४५।१६	७।१२।२९।३३	९।१८।२५।४३	७।१।०।१६	७।७।४८।५३	०।१३।५४।४	०।१५।२१।५२	-२१।२८।४५	२७।१२।२३	३।४९।३३	२८।५४(१८।५१)
३०	७।१४।२०।५२	२।१४।३०।३६	५।२७।२३।४	७।११।८।२८	९।१८।३५।२६	७।२।१५।३१	७।७।५५।५३	०।१३।५०।५३	०।१५।२०।५	-२१।३८।४२	२७।३९।५१	४।२९।१०	३१।३(१९।४३)
दिस.	७।१५।२१।४१	२।२६।४६।४९	५।२८।०।१	७।९।५१।२८	९।१८।४४।३८	७।३।३१।३७	७।८।२।५३	०।१३।४७।४३	०।१५।१८।१२	-२१।४८।१४	२६।४६।२५	४।५६।२७	३३।२३(२०।४१)
२	७।१६।२२।१०	३।९।१३।३६	५।२८।३७।१	७।८।३९।४५	९।१८।५४।४०	७।४।४७।२२	७।८।९।५१	०।१३।४४।३२	०।१५।१७।२३	-२१।५३।३५	२४।३३।१४	५।१०।५०	३५।५८(२१।४४)
३	७।१७।२२।२५	३।२१।५४।४३	५।२९।१३।५८	७।७।३७।४९	९।१९।४।४०	७।६।२।१८	७।८।१७।९	०।१३।४१।२१	०।१५।१५।५९	-२२।६।२३	२१।५।६	५।९।८	३७।०(२२।९)
४	७।१८।२३।२०	४।४।५२।९	५।२९।५१।१६	७।६।४५।१४	९।१९।१४।३८	७।७।१७।१६	७।८।२४।५७	०।१३।३८।११	०।१५।१३।४२	-२२।१६।४	१६।३०।१८	४।४९।२२	३८।५५(२२।५५)
५	७।१९।२४।१६	४।१८।७।२१	६।०।२९।४	७।६।४।४६	९।१९।२४।५६	७।८।३२।३३	७।८।३१।५३	०।१३।३५।०	०।१५।११।४५	-२२।२२।३९	११।७।२३	४।१८।२१	४३।९(२४।३८)
६	७।२०।२५।०	५।१।४२।५४	६।१।६।१	७।५।३३।५१	९।१९।३५।४१	७।९।४८।१९	७।८।३८।५३	०।१३।३१।४९	०।१५।८।४९	-२२।२५।२५	५।६।३९	३।३३।५४	४६।१३(२५।५३)
७	७।२१।२६।५५	५।१५।४०।३	६।१।४३।१	७।५।१५।८	९।१९।४५।५३	७।११।३।३४	७।८।४५।५३	०।१३।२८।३९	०।१५।४।३६	-२२।३६।३३	-१।२१।२८	२।३२।३१	४८।५२(२६।५७)
८	७।२२।२७।५२	६।०।०।१७	६।२।२०।१	७।५।८।१८	९।१९।५६।५७	७।१२।१९।१९	७।८।५२।५३	०।१३।२५।२८	०।१५।१।५६	-२२।४३।५	-७।५६।२७	१।२०।२५	५१।४०(२८।५)
९	७।२३।२८।४९	६।१४।४१।२८	६।२।५६।५८	७।५।११।३१	९।२०।७।५९	७।१३।३४।३४	७।८।५९।५३	०।१३।२२।१७	०।१४।५९।१०	-२२।४९।१०	-१४।१५।५५	०।११।३०	५४।३७(२९।१७)
१०	७।२४।२९।४६	६।२९।३७।५१	६।३।३४।१६	७।५।२३।२७	९।२०।१८।४२	७।१४।५०।१९	७।९।६।५३	०।१३।१९।६	०।१४।५६।४६	-२२।५४।४८	-१९।५९।५५	-१।१८।३९	५६।२१(३०।३९)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टैं० टा० १ जनवरी अयनांशाः २३।३९।३१

वा.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्या० प्र०घ०	प० (घ० मि०)
११	७।२५।३०।४५	७।१४।४२।७	६।४।१२।४	७।५।४५।५०	९।२०।२८।५१	७।१६।५।३१	७।१९।१३।३२	०।१३।१५।५५	०।१४।५२।४८	-२२।५९।५८	-२४।१४।९	-२।३३।५८	०।४३(७।४५)
१२	७।२६।३१।४५	७।२९।४४।१७	६।४।४८।३३	७।६।१९।१७	९।२०।४०।२५	७।१७।२९।२५	७।१९।२०।११	०।१३।१२।४४	०।१४।४९।२०	-२३।४।२९	-२५।५५।४७	-३।३०।१२	०।४१(७।४४)
१३	७।२७।३२।४६	८।१४।४४।६	६।५।२६।३	७।६।५२।४५	९।२०।५२।०	७।१८।३७।१९	७।१९।२६।५०	०।१३।९।३३	०।१४।४६।५३	-२३।८।५८	-२७।३७।२४	-४।२७।२५	३।३२(८।५३)
१४	७।२८।३३।४७	८।२९।२९।७	६।६।२।४३	७।७।२६।११	९।२१।२।५४	७।१९।५२।३४	७।१९।३३।५३	०।१३।६।२३	०।१४।४३।३१	-२३।१२।४६	-२६।२१।५८	-४।५७।३४	६।०(९।५३)
१५	७।२९।३४।४९	९।१३।३३।३	६।६।३९।१३	७।८।२४।४८	९।२१।१४।१२	७।२१।८।१९	७।१९।४०।५३	०।१३।३।१२	०।१४।४०।१	-२३।१६।७	-२३।२६।७	-५।८।१४	८।५(१०।४३)
१६	८।०।३५।५२	९।२७।१७।१७	६।७।१७।४	७।९।१९।१७	९।२१।२५।५८	७।२२।२३।३३	७।१९।४७।५३	०।१३।०।१	०।१४।३६।२५	-२३।१९।१०	-१९।१५।१९	-५।०।२९	९।३५(११।२४)
१७	८।१।३६।५५	१०।१०।३२।०	६।७।५४।१	७।१०।१८।८	९।२१।३७।९	७।२३।३९।१९	७।१९।५४।५३	०।१२।५६।५०	०।१४।३२।४२	-२३।२१।२५	-१४।१५।४७	-४।३६।३५	११।८(११।५८)
१८	८।२।३८।०	१०।२३।२३।४३	६।८।३१।१	७।११।२०।३०	९।२१।४९।१५	७।२४।५४।३४	७।१०।१।५३	०।१२।५३।४०	०।१४।२८।५१	-२३।२३।२१	-८।४७।१	-३।५९।१३	१२।२१(१२।२८)
१९	८।३।३९।५	११।५।५५।१०	६।९।८।१	७।१२।२७।१०	९।२२।०।५८	७।२६।१०।१९	७।१०।८।५३	०।१२।५०।२९	०।१४।२४।५३	-२३।२४।५०	-३।५।३१	-३।११।१३	१३।२७(१२।५४)
२०	८।४।४०।१०	११।१७।५५।१८	६।९।४१।१	७।१३।३५।५८	९।२२।१२।९	७।२७।२५।३३	७।१०।१५।५६	०।१२।४७।१८	०।१४।२०।५९	-२३।२५।५१	+२।८।५९	-२।१६।३९	१४।२६(१३।१९)
२१	८।५।४१।१६	११।२९।५१।५६	६।१०।२२।१	७।१४।४७।३४	९।२२।२४।१३	७।२८।४१।१९	७।१०।२२।३८	०।१२।४४।७	०।१४।१६।३७	-२३।२६।२३	७।५७।४	-१।१६।२७	१५।२७(१३।४४)
२२	८।६।४२।२२	०।११।४०।१९	६।१०।५९।३	७।१६।१।६	९।२२।३६।१३	७।२९।५६।३४	७।१०।२८।५२	०।१२।४०।५६	०।१४।१२।१८	-२३।२६।२७	१३।५।१	-०।१३।४५ +०।४९।१३	१६।३३(१४।१०)
२३	८।७।४३।२८	०।२३।२६।२९	६।११।३५।४५	७।१७।१६।३९	९।२२।४८।१०	८।१।१२।१९	७।१०।३५।३८	०।१२।३७।४६	०।१४।७।५२	-२३।२६।३	१७।४३।४४	+१।५०।११	१७।४५(१४।३९)
२४	८।८।४४।३६	१।५।१५।२	६।१२।११।५७	७।१८।३४।१९	९।२३।०।२९	८।२।२७।३४	७।१०।४१।५०	०।१२।३४।३५	०।१४।३।२०	-२३।२५।१०	२१।४२।३१	२।४६।३८	१९।५(१५।१२)
२५	८।९।४५।४३	१।१७।७।५३	६।१२।४९।१	७।१९।५२।५५	९।२३।१३।१७	८।३।४३।१९	७।१०।४८।५६	०।१२।३१।२४	०।१३।५८।४१	-२३।२३।४९	२४।४८।५०	३।३६।१८	२०।३५(१५।४९)
२६	८।१०।४६।५२	१।२९।९।१४	६।१३।२६।१	७।२१।१२।२९	९।२३।२५।१०	८।४।५८।३४	७।१०।५५।३८	०।१२।२८।१३	०।१३।५३।५५	-२३।२२।१	२६।५०।४५	४।१६।४३	२२।५६(१६।३४)
२७	८।११।४८।०	२।११।१९।४८	६।१४।३।१	७।२२।३६।१४	९।२३।३७।२९	८।६।१४।२२	७।११।१।५२	०।१२।२५।३	०।१३।४९।२	-२३।१९।४३	२७।३७।२२	४।४५।४१	२४।३३(१७।२४)
२८	८।१२।४९।८	२।२३।४०।५८	६।१४।४०।३	७।२३।५८।३८	९।२३।५०।१४	८।७।३२।१६	७।११।८।४०	०।१२।२१।५२	०।१३।४४।३	-२३।१६।५८	२७।२।१५	५।१।२१	२६।५१(१८।२१)
२९	८।१३।५०।१६	३।६।१४।१	६।१५।१६।४५	७।२५।२२।४२	९।२४।२।२६	८।८।४४।३४	७।११।१४।३७	०।१२।१८।४१	०।१३।३८।५८	-२३।१३।४५	२५।४।४९	५।२।२०	२९।२२(१९।२१)
३०	८।१४।५१।२६	३।१८।५७।५९	६।१५।५३।०	७।२६।४६।५५	९।२४।१५।३२	८।१०।०।२२	७।११।२०।३७	०।१२।१५।३०	०।१३।३६।४६	-२३।१०।४	२१।५०।५७	४।४७।५७	३१।५४(२०।२३)
३१	८।१५।५२।३४	४।१।५२।५३	६।१६।२९।४८	७।२८।१२।१३	९।२४।२८।१४	८।११।१५।१६	७।११।२६।३७	०।१२।१२।२०	०।१३।२८।२८	-२३।५।५५	१७।३१।१८	४।१८।१८	३४।२९(२१।२५)
जन.	८।१६।५३।४३	४।१४।५९।१५	६।१७।५।४२	७।२९।३८।१४	९।२४।४०।२९	८।१२।३०।३४	७।११।३२।३७	०।१२।९।९	०।१३।२३।४	-२३।१।१८	१२।१९।९	३।३४।१५	३७।४(२२।२७)
२	८।१७।५४।५३	४।२८।१८।५९	६।१७।४१।५७	८।१।४।२७	९।२४।५३।१३	८।१३।४६।१९	७।११।३८।३७	०।१२।५।५८	०।१३।१७।३५	-२२।५६।१४	६।२७।५०	२।३७।३२	३९।३९(२३।२९)
३	८।१८।५६।२	५।११।५२।४४	६।१८।१९।३	८।२।३१।४३	९।२५।५।२६	८।१५।१।३३	७।११।४४।३७	०।१२।२।४७	०।१३।११।५९	-२२।५०।४२	०।१२।४०	१।३०।४८	४२।१६(२४।३१)
४	८।१९।५७।११	५।२५।४०।३९	६।१८।५५।४८	८।४।०।२	९।२५।१८।३०	८।१६।१७।१८	७।११।५०।३७	०।११।५९।३६	०।१३।६।१९	-२२।४४।४३	-६।१०।३	०।१७।२८	४४।२५(२५।३६)
५	८।२०।५८।२०	६।९।४४।१९	६।१९।३१।४२	८।५।२९।३	९।२५।३१।३९	८।१७।३२।३२	७।११।५६।३७	०।११।५६।२६	०।१३।०।३२	-२२।३८।१८	-१२।२२।२८	-०।५८।१२	४७।४३(२६।४४)
६	८।२१।५९।३०	६।२४।४।१९	६।२०।८।०	८।६।५८।१८	९।२५।४४।२७	८।१८।४८।१७	७।१२।२।३७	०।११।५३।१५	०।१२।५४।४१	-२२।३१।२५	-१८।३।१०	-२।११।१६	५०।४०(२७।५४)
७	८।२३।०।३९	७।८।३६।२९	६।२०।४४।४५	८।८।२८।२२	९।२५।५७।४४	८।२०।३।३२	७।१२।८।३७	०।११।५०।४	०।१२।४८।४५	-२२।२४।५	-२२।४५।२८	-३।१६।१३	५३।४६(२९।९)
८	८।२४।१।४८	७।२३।१८।२९	६।२१।२०।५७	८।९।५८।१९	९।२६।११।३३	८।२१।१९।१८	७।१२।१४।३७	०।११।४६।५३	०।१२।४२।४४	-२२।१६।१९	-२६।३।१६	-४।८।५	५५।१९(३०।१९)
९	८।२५।२।५७	८।८।३।४०	६।२१।५८।३	८।११।२८।३५	९।२६।२४।२६	८।२२।३४।३३	७।१२।२०।३७	०।११।४३।४३	०।१२।३६।३८	-२२।८।७	-२७।३३।५२	-४।४३।२१	५९।२२(३१।२३)
१०	८।२६।४।६	८।२२।४४।४४	६।२२।३४।४८	८।१२।५९।३६	९।२६।३७।४४	८।२३।५०।१८	७।१२।२६।३९	०।११।४०।३२	०।१२।३०।२८	-२१।५९।२८	-२७।७।१३	-४।५९।४४	१।४०(८।१८)
११	८।२७।५।१३	९।७।१३।३१	६।२३।१०।४२	८।१४।३०।५१	९।२६।५१।३१	८।२५।५।३३	७।१२।३२।२२	०।११।३७।२१	०।१२।२४।१४	-२१।५०।२४		-२४।५०।५	१।३४(८।१६)
१२	८।२८।६।२२	९।२१।२२।४२	६।२३।४७।०	८।१६।२।५२	९।२७।४।४४	८।२६।२१।१७	७।१२।३७।३३	०।११।३४।१०	०।१२।१७।५६	-२१।४०।५५	-२१।३।१५	४।५७।५	३।२९(९।२)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ फरवरी १९८६ अयनांशाः २३।३९।३६

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	घ० प० (घं० मि०)
१३	८।२९।७।३०	१०।५।७।५०	६।२४।२३।४८	८।१७।३५।६	९।२७।१८।३०	८।२७।३६।३२	७।१२।४३।४८	०।११।३।१०	०।१२।११।३४	−२१।३।१०	−१६।१३।८	−४।३६।५७	५।५(९।४०)
१४	९।०।८।३६	१०।१८।२६।४४	६।२४।५९।४४	८।१९।८।६	९।२७।३१।४४	८।२८।५२।२०	७।१२।४९।५९	०।११।२७।४९	०।१२।५।९	−२१।२०।४०	−१०।४४।५५	−४।२।६	६।२८(१०।१२)
१५	९।१।९।४३	११।१।१९।४०	६।२५।३५।४४	८।२०।४१।२०	९।२७।४५।३०	९।०।७।१६	७।१२।५४।५९	०।११।२४।३८	०।११।५८।४१	−२१।९।५६	−४।५९।१४	−३।१५।४७	७।३९(१०।४१)
१६	९।२।१०।५०	११।१३।४९।३	६।२६।११।४४	८।२२।१५।३८	९।२७।५८।४२	९।१।२२।१४	७।१२।५९।५९	०।११।२१।२७	०।११।५२।१०	−२०।५८।४७	+०।४८।१०	−२।२९।१८	८।४४(११।१७)
१७	९।३।११।५६	११।२६।०।१५	६।२६।४७।४४	८।२३।५०।४०	९।२८।१२।४५	९।२।३७।३२	७।१३।५।३४	०।११।१८।१६	०।११।४५।३६	−२०।४७।१४	६।२६।०	−१।२९।३५	९।४८(११।३२)
१८	९।४।१३।२	०।७।५७।११	६।२७।२३।४२	८।२५।२५।५४	९।२८।२६।४८	९।३।५३।१८	७।१३।११।३९	०।११।१५।६	०।११।३८।५९	−२०।३५।१७	११।४३।५५	−०।१९।२४	१०।५६(११।५९)
१९	९।५।१४।६	०।१९।४६।५४	६।२८।०।०	८।२७।१।५७	९।२८।४०।३१	९।५।८।३०	७।१३।१७।२४	०।११।११।५५	०।११।३०।२०	−२०।२२।५८	१६।३३।२८	+०।४२।५९	१२।७(१२।२७)
२०	९।६।१५।११	१।१।३४।२७	६।२८।३६।४८	८।२८।३७।५६	९।२८।५३।४२	९।६।२४।३५	७।१३।२२।२१	०।११।८।४४	०।११।२५।४०	−२०।१०।१५	२०।४४।४२	१।४३।१८	१३।२५(१२।५८)
२१	९।७।१६।१४	१।१३।२३।४९	६।२९।१२।४७	९।०।१४।९	९।२७।७।४५	९।७।४०।२०	७।१३।२७।२१	०।११।५।३३	०।११।१८।५८	−१९।५७।९	२४।६।२५	२।३९।१८	१४।५९(१३।३५)
२२	९।८।१७।१७	१।२५।२१।१४	६।२९।४८।२९	९।१।५१।२८	९।२९।२१।४६	९।८।५५।१६	७।१३।३२।२१	०।११।२।२३	०।११।१२।१४	−१९।४३।४१	२६।२७।२२	३।२८।५४	१६।४४(१४।१७)
२३	९।९।१८।१९	२।७।२९।३२	७।०।२३।४१	९।३।२९।३०	९।२९।३५।४५	९।१०।१०।१४	७।१३।३७।२१	०।१०।५९।१२	०।११।५।२९	−१९।२९।५१	२७।३५।५७	४।९।४७	१८।४७(१५।६)
२४	९।१०।१९।२१	२।१९।५१।११	७।०।५९।४४	९।५।७।२९	९।२९।४९।४५	९।११।२५।३२	७।१३।४२।२१	०।१०।५६।१	०।१०।५८।४४	−१९।१५।४०	२७।२३।३४	४।३९।४३	२१।७(१६।१)
२५	९।११।२०।२१	३।२।२७।३०	७।१।३५।११	९।६।४५।४१	१०।०।३।४५	९।१२।४१।२०	७।१३।४७।२१	०।१०।५२।५०	०।१०।५१।५८	−१९।१।७	२५।४६।५२	४।५६।३८	२३।३८(१७।१)
२६	९।१२।२१।२१	३।१५।१९।२९	७।२।११।४४	९।८।२४।५७	१०।०।१७।४६	९।१३।५६।१४	७।१३।५२।२३	०।१०।४९।४०	०।१०।४५।११	−१८।४६।४३	२२।४८।४८	४।५८।५४	२६।१८(१८।४)
२७	९।१३।२२।२१	३।२८।२४।५१	७।२।४७।४४	९।१०।५।१६	१०।०।३१।४५	९।१५।११।२९	७।१३।५७।८	०।१०।४६।२९	०।१०।३८।२५	−१८।३०।५८	१८।३९।१	४।४५।३३	२८।५७(१९।८)
२८	९।१४।२३।२०	४।११।४२।१३	७।३।२३।४७	९।११।४६।१७	१०।०।४५।४५	९।१६।२७।३५	७।१४।१।१२	०।१०।४३।१८	०।१०।३१।३९	−१८।१५।२४	१३।३९।११	४।१६।३३	३१।२८(२०।११)
२९	९।१५।२४।१६	४।२५।१०।५०	७।३।५९।२९	९।१३।२७।३०	१०।०।५९।४४	९।१७।४३।२०	७।१४।५।२०	०।१०।४०।७	०।१०।२४।५४	−१७।५९।३०	७।४०।४६	३।३२।५४	३४।१५(२१।१४)
३०	९।१६।२५।१२	५।८।४८।२४	७।४।३४।४४	९।१५।९।४८	१०।१।१४।१	९।१८।५८।१४	७।१४।१०।५	०।१०।३६।५६	०।१०।१८।९	−१७।४३।१६	१।२४।५४	२।३६।२८	३६।५६(२२।१७)
३१	९।१७।२६।७	५।२२।३४।६	७।५।१०।२९	९।१६।५२।५०	१०।१।२८।४९	९।२०।१३।३२	७।१४।१४।१७	०।१०।३३।४६	०।१०।११।२५	−१७।२६।४४	−४।५९।११	१।३०।४३	३९।३६(२३।२२)
फ	९।१८।२७।२	६।६।२६।१२	७।५।४५।४४	९।१८।३६।२	१०।१।४२।४३	९।२१।२९।२०	७।१४।१९।२३	०।१०।३०।३५	०।१०।४।४३	−१७।९।५३	−११।१२।४०	०।१८।५५	४२।२३(२४।२७)
२	९।१९।२७।५५	६।२०।२६।१२	७।६।२१।३२	९।२०।२०।१९	१०।१।५३।१	९।२२।४४।१४	७।१४।२४।८	०।१०।२७।२४	०।९।५८।३	−१६।५२।४४	−१६।५६।२७	−०।५४।४३	४५।१६(२५।३६)
३	९।२०।२८।४९	७।४।३२।५५	७।६।५६।२६	९।२२।५।३४	१०।२।११।४९	९।२३।५९।३३	७।१४।२८।४	०।१०।२४।१३	०।९।५१।२४	−१६।३५।१७	−२१।४८।१२	−२।५।३८	४८।११(२६।४६)
४	९।२१।२९।३८	७।१८।४५।२७	७।७।३१।४३	९।२३।५१।५३	१०।२।२५।४५	९।२५।१४।४९	७।१४।३२।४	०।१०।२१।३	०।९।४४।४८	−१६।१७।३३	−२५।२४।४८	−३।९।१८	५१।७(२७।५५)
५	९।२२।३०।२८	८।३।२।२०	७।८।७।३२	९।२५।३८।५७	१०।२।३९।४५	९।२६।३०।१३	७।१४।३६।७	०।१०।१७।५२	०।९।३८।१४	−१५।५९।३३	−२७।२५।२४	−४।१।२९	५३।५३(२९।१)
६	९।२३।३१।१७	८।१७।२०।१६	७।८।४२।४६	९।२७।२५।५७	१०।२।५३।४३	९।२७।४५।२७	७।१४।३९।४९	०।१०।१४।४१	०।९।३१।४३	−१५।४१।१४	−२७।३६।४६	−४।३८।३५	५५।३९(३९।५९)
७	९।२४।३२।५	९।१।३४।३८	७।९।१७।४४	९।२९।१२।५५	१०।३।८।१	९।२९।०।४७	७।१४।४३।१	०।१०।११।३०	०।९।२५।१५	−१५।२२।४०	−२५।५८।२७	−४।५८।१०	५७।३३(३०।४८)
८	९।२५।३३।५२	९।१५।३९।३४	७।९।५३।३२	१०।१।०।७	१०।३।२२।४९	१०।०।१५।५४	७।१४।४७।२४	०।१०।८।१९	०।९।१८।५१	−१५।३।५१	−२२।४३।४१	−४।५९।१६	०।१३(७।२९)
९	९।२६।३३।३७	९।२९।३०।३१	७।१०।२८।२८	१०।२।४८।२६	१०।३।३६।४३	१०।१।३०।१३	७।१४।५०।४४	०।१०।५।९	०।९।१२।२९	−१४।४४।४६	−१८।२४।२५	−४।४२।३२	०।१२(७।२९)
१०	९।२७।३४।२१	१०।१३।१३।५४	७।११।३।२८	१०।४।३७।१५	१०।३।५१।१	१०।२।४६।२०	७।१४।५४।२५	०।१०।१।५८	०।९।६।१२	−१४।२५।२७	−१२।५५।१४	−४।१०।१	१।४२(८।४)
११	९।२८।३५।३	१०।२६।१४।१५	७।११।३८।२८	१०।६।२८।१७	१०।४।५।४६	१०।४।१।१७	७।१४।५८।३१	०।९।५८।४७	०।८।५९।५९	−१४।५।५३	−७।८।१७	−३।२४।४४	३।०(८।३४)
१२	९।२९।३५।४३	११।९।४।८	७।१२।१३।३१	१०।८।२०।१५	१०।४।२०।१	१०।५।१६।१७	७।१५।१।५२	०।९।५५।३६	०।८।५३।४९	−१३।४६।५	−१।१२।३४	−२।३०।२	४।१२(९।२)
१३	१०।०।३६।२४	११।२१।३०।५०	७।१२।४८।१३	१०।१०।४।२४	१०।४।३४।४९	१०।६।३१।१४	७।१५।४।४६	०।९।५२।२६	०।८।४७।४५	−१३।२६।३	+४।३६।५९	−१।२९।२५	५।२०(९।२८)
१४	१०।१।३७।१	०।३।४५।४५	७।१३।२२।२५	१०।११।५४।३६	१०।४।४८।४४	१०।७।४६।३४	७।१५।८।४	०।९।४९।१५	०।८।४१।४५	−१३।५।४९	१०।९।१५	−०।२५।५२	६।२७(९।५४)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ मार्च १९८६ अयनांशा: २३।३९।४०

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रान्ति	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर	चन्द्रोदय
	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	रा० अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० क० वि०	अं० व्य०	घ०प० प० (घं० मि०)
१५	१०।२।३७।३८	०।१५।४४।४९	७।१३।५७।३१	१०।१३।४३।१९	१०।५।३।१	१०।९।२।२०	७।१५।११।५२	०।९।४६।४	०।८।३५।५०	-१२।४५।२१	१५।१३।२८	०।३७।४६	७।३९(१०।२२)
१६	१०।३।३८।१४	०।२७।३५।५६	७।१४।३२।१३	१०।१५।३१।३	१०।५।१७।४६	१०।१०।१७।१४	७।१५।१४।४८	०।९।४२।५३	०।८।३०।०	-१२।२४।४१	१९।४०।१५	१।३९।१०	८।५७(१०।५२)
१७	१०।४।३८।४९	१।९।२३।५५	७।१५।६।२७	१०।१७।१७।४६	१०।५।३२।१	१०।११।३२।३२	७।१५।१७।४८	०।९।३९।४३	०।८।२४।१५	-१२।३।४९	२३।१९।२५	२।३६।७	१०।२६(११।२७)
१८	१०।५।३९।२०	१।२१।१५।४	७।१५।४९।१३	१०।१९।३।३२	१०।५।४६।४६	१०।१२।४८।२०	७।१५।२०।५१	०।९।३६।३२	०।८।१८।३६	-११।४२।४६	२६।०।३५	३।२६।४०	१२।८(१२।७)
१९	१०।६।३९।५१	२।३।१३।४८	७।१६।१५।२७	१०।२०।४८।६	१०।६।१।१	१०।१४।३।१६	७।१५।२३।३३	०।९।३३।२१	०।८।१३।३	-११।२१।३२	२७।३२।५७	४।८।४४	१४।६(१२।५३)
२०	१०।७।४०।३८	२।१५।२५।५०	७।१६।५०।१५	१०।२२।३०।१९	१०।६।१५।४९	१०।१५।१८।१६	७।१५।२५।४५	०।९।३०।१०	०।८।८।१	-११।१।५४	२७।४७।२४	४।४०।१५	१६।२२(१३।४६)
२१	१०।८।४०।४२	२।२७।५४।३३	७।१७।२४।९	१०।२४।९।४७	१०।६।२९।४४	१०।१६।३३।१६	७।१५।२८।४८	०।९।२७।१०	०।७।५९।३६	-१०।४७।२५	२६।३८।२८	४।५९।३४	१८।४२(१४।४१)
२२	१०।९।४१।५७	३।१०।४१।३८	७।१७।५८।२७	१०।२५।४६।४९	१०।६।४४।१	१०।१७।४८।१६	७।१५।३१।५१	०।९।२३।४९	०।७।४५।४७	-१०।२८।२५	२४।६।१	५।४।४०	२१।७(१५।३८)
२३	१०।१०।४१।३९	३।२३।४७।५२	७।१८।३३।१५	१०।२७।१९।४७	१०।६।५८।४७	१०।१९।३।१६	७।१५।३४।३५	०।९।२०।३८	०।७।४४।२३	-९।५९।५८	२०।१५।११	४।५३।१६	२४।३(१६।४८)
२४	१०।११।४२।२	४।७।१२।४३	७।१९।७।१२	१०।२८।४८।३०	१०।७।१३।१	१०।२०।१८।१६	७।१५।३६।३२	०।९।१७।२७	०।७।४७।२२	-९।३५।१९	१५।१८।५	४।२५।४०	२६।५९(१७।५७)
२५	१०।१२।४२।२३	४।२०।५३।४८	७।१९।४१।१२	११।०।१२।१०	१०।७।२७।४९	१०।२१।३३।१६	७।१५।३८।३२	०।९।१४।१६	०।७।४१।५२	-९।१०।३५	९।३०।८	३।४२।३८	२९।४३(१९।१)
२६	१०।१३।४२।४२	५।४।४८।९	७।२०।१५।१२	११।१।३०।३९	१०।७।४१।४४	१०।२२।४८।१९	७।१५।४०।३२	०।९।११।६	०।७।३७।३	-८।४८।१५	३।८।४४	२।४५।४४	३२।३०(२०।६)
२७	१०।१४।४३।०	५।१८।५२।९	७।२०।४९।१४	११।२।४२।४६	१०।७।५६।१	१०।२४।२।५९	७।१५।४२।३२	०।९।७।५५	०।७।३२।२१	-८।२५।४६	-३।२६।४१	१।३८।६	३५।१७(२१।१२)
२८	१०।१५।४३।१७	६।३।११।३३	७।२१।२२।५७	११।३।४८।१२	१०।८।१०।४९	१०।२५।१७।३२	७।१५।४४।३२	०।९।४।४४	०।७।२७।४६	-८।३।१०	-९।५५।११	०।२३।५४	३८।७(२२।१९)
मार्च	१०।१६।४३।३१	६।१७।१३।३४	७।२१।५६।८	११।४।४६।५१	१०।८।२४।४३	१०।२६।३३।७	७।१५।४६।३४	०।९।१।३३	०।७।२३।१८	-७।४०।२७	-१५।५५।७	-०।५२।७	४१।२(२३।२८)
२	१०।१७।४३।४५	७।१।२४।२५	७।२२।३०।१४	११।५।३६।५५	१०।८।३९।१	१०।२७।४६।५८	७।१५।४८।१७	०।८।५८।२३	०।७।१८।५७	-७।१७।३७	-२१।३।१९	-२।४।५९	४४।०(२४।३८)
३	१०।१८।४३।५४	७।१५।३३।२८	७।२३।३।५९	११।६।१९।३६	१०।८।५३।४९	१०।२९।१।१३	७।१५।४९।२७	०।८।५५।१२	०।७।१४।४४	-६।५४।४२	-२४।५७।५९	-३।१०।१०	४७।३(२५।५०)
४	१०।१९।४४।३	७।२९।३८।४३	७।२३।३६।५६	११।६।५३।१०	१०।९।७।४४	११।०।४६।१७	७।१५।५१।३४	०।८।५२।१	०।७।१०।३८	-६।३१।४०	-२७।१९।३८	-४।३।३७	४९।५३(२६।५७)
५	१०।२०।४४।१०	८।१३।४०।२१	७।२४।९।५६	११।७।१७।४४	१०।९।२२।१	११।१।३१।१८	७।१५।५३।१७	०।८।४८।५०	०।७।६।३९	-६।८।३३	-२७।५५।३१	-४।४३।१९	५२।२८(२७।५७)
६	१०।२१।४४।१५	८।२७।३५।१९	७।२४।४२।५३	११।७।३३।१७	१०।९।३६।४९	११।२।४६।१९	७।१५।५४।३३	०।८।४५।३९	०।७।२।४८	-५।४५।२१	-२७।९।३८	-५।०।४९	५३।५(२८।११)
७	१०।२२।४४।१९	९।११।२२।१४	७।२५।१६।११	११।७।३९।४४	१०।९।५०।४५	११।४।१।१२	७।१५।५६।१	०।८।४२।२९	०।६।५९।४	-५।२२।१४	-२५।४७।१२	-५।७।४९	५६।१७(२९।२७)
८	१०।२३।४४।२०	९।२४।५९।४	७।२५।५०।२	११।७।३७।९	१०।१०।४।४३	११।५।१५।१४	७।१५।५७।२८	०।८।३९।१८	०।६।५५।२८	-४।५८।४३	-१९।४१।३२	-४।५२।४७	५७।५९(३०।७)
९	१०।२४।४३।१९	१०।८।२३।२८	७।२६।२२।४०	११।७।२४।५४	१०।१०।१९।१	११।६।३०।१७	७।१५।५८।१९	०।८।३६।७	०।६।५१।५९	-४।३५।१८	-१४।५०।४७	-४।२३।४८	५९।३३(३०।३८)
१०	१०।२५।४३।१७	१०।२१।३३।१३	७।२६।५४।५२	११।७।४।४१	१०।१०।३३।४९	११।७।४५।२०	७।१५।५९।१९	०।८।३२।५६	०।६।४८।३८	-४।११।४९	-९।१२।३५	-३।४०।१३	०।३६(७।७)
११	१०।२६।४४।१३	११।४।२७।११	७।२७।२७।२८	११।६।३६।४४	१०।१०।४६।४६	११।९।०।२	७।१६।०।१८	०।८।२९।४६	०।६।४५।२५	-३।४८।१७	-३।१७।२४	-२।४६।६	०।३६(७।६)
१२	१०।२७।४४।८	११।१७।५।३३	७।२८।०।४३	११।६।१।४७	१०।११।१।४५	११।१०।१४।१३	७।१६।१।१०	०।८।२६।३५	०।६।४२।१९	-३।२४।४३	+२।३९।१०	-१।४४।४५	१।४५(७।३२)
१३	१०।२८।४३।५९	११।२९।२७।३१	७।२८।३२।३७	११।५।२०।१	१०।११।१५।४५	११।११।२९।१६	७।१६।१।४१	०।८।२३।२४	०।६।३९।२१	-३।१।१६	८।२२।२१	-०।३९।३८	२।५७(७।५९)
१४	१०।२९।४३।५०	०।११।३५।५७	७।२९।४।४५	११।४।३२।४९	१०।११।२९।४५	११।१२।४४।१९	७।१६।२।१७	०।८।२०।१३	०।६।३६।३०	-२।३७।२७	१३।४१।१९	+०।२६।१३	४।८(८।२६)
१५	११।०।४३।३८	०।२३।३३।३९	७।२९।४७।४३	११।३।४१।३९	१०।११।४३।४६	११।१३।५९।४	७।१६।२।४६	०।८।१७।२	०।६।३३।४६	-२।१३।१४	१८।२५।२	१।३०।६	५।२७(८।५६)
१६	११।१।४३।२३	१।५।२५।१२	८।०।९।३९	११।२।४६।५५	१०।११।५०।४५	११।१५।१२।५८	७।१६।३।९	०।८।१३।५२	०।६।३१।१०	-१।५०।४	२२।२३।१९	२।२९।४०	६।५८(९।११)
१७	११।२।४३।८	१।१७।१३।५६	८।०।४१।३९	११।१।५०।४८	१०।१२।११।४५	११।१६।२७।१६	७।१६।३।२१	०।८।१०।४१	०।६।२८।४२	-१।२६।२१	२५।२५।२६	३।२२।४३	८।२९(१०।७)
१८	११।३।४२।४९	१।२९।५।२२	८।१।१३।४२	११।०।५४।४८	१०।१२।२५।४५	११।१७।४२।२	७।१६।३।२४	०।८।७।३०	०।६।२६।२१	-१।२।३८	२७।२१।३३	४।७।२२	१०।१७(१०।४९)
१९	११।४।४२।३०	२।११।४।३६	८।१।४५।२४	१०।२९।५८।३९	१०।१२।३९।४५	११।१८।५६।१३	७।१६।३।२३	०।८।४।१९	०।६।२४।७	-०।३८।५५	२८।२।५८	४।४१।४६	१२।२६(११।३९)

दैनिक ग्रह स्पष्ट १२ मध्याह्न भा० स्टै० टा० १ अप्रैल १९८६ अयनांशा: २३।३९।४४

मार्च	सूर्य रा अ क वि	चन्द्र रा अ क वि	मंगल रा अ क वि	बुध रा अ क वि	गुरु रा अ क वि	शुक्र रा अ क वि	शनि रा अ क वि	मध्यम राहु रा अ क वि	स्पष्ट राहु रा अ क वि	सूर्य क्रान्ति अ क वि	चन्द्र क्रान्ति अ क वि	चन्द्र शर अ व्य प्र	चन्द्रोदय घ प (घ मि)
२०	११।५।४२।८	२।२३।१५।४४	८।२।१६।३९	१०।२९।३।३०	१०।१२।५३।४५	११।२०।११।१९	७।१६।३।१६	०।८।१।१९	०।६।२२।१०	−०।१५।२२	२७।२३।४९	५।४।७	१४।४७(१२।३४)
२१	११।६।४१।४४	३।५।४४।३६	८।२।४८।२४	१०।२८।१२।३४	१०।१३।७।४८	११।२१।२६।४	७।१६।३।३	०।७।५७।५८	०।६।२०।१०	+०।८।३०	२५।२२।१७	५।१२।४५	१७।२१(१३।३५)
२२	११।७।४१।१८	३।१८।३३।३६	८।३।११।३८	१०।२७।२५।३९	१०।१३।२१।३१	११।२२।३९।५८	७।१६।२।४४	०।७।५४।४७	०।६।१८।८	०।३२।१२	२१।११।३६	५।६।१०	२०।२(१४।३८)
२३	११।८।४०।५०	४।१।४५।४९	८।३।५१।२९	१०।२६।४२।३९	१०।१३।३४।४२	११।२३।५४।१६	७।१६।२।२१	०।७।५१।३६	०।६।१६।२२	०।५५।५२	१७।२९।२०	४।४३।२१	२२।४९(१५।४३)
२४	११।९।४०।२०	४।१५।२१।११	८।४।२२।८	१०।२६।४।११	१०।१३।४८।४८	११।२५।९।४	७।१६।१।५६	०।७।४८।२६	०।६।१४।४३	१।१९।३१	११।५७।३२	४।४।७	२५।३५(१६।४८)
२५	११।१०।३९।४८	४।२९।१९।१	८।४।५२।२०	१०।२५।३१।४५	१०।१४।२।३१	११।२६।२३।०	७।१६।१।४७	०।७।४५।१५	०।६।१३।११	१।४३।८	५।४१।१५	३।९।२९	२८।२५(१७।५४)
२६	११।११।३९।१४	५।१३।३५।१९	८।५।२३।२६	१०।२५।५।४५	१०।१४।१५।४४	११।२७।३७।०	७।१६।०।४१	०।७।४२।४	०।६।११।४५	२।६।४२	−१।०।३५	२।११।५८	३१।१४(१९।१)
२७	११।१२।३८।३८	५।२८।४।३५	८।५।५४।८	१०।२४।४५।३७	१०।१४।२९।३०	११।२८।५१।१	७।१५।५९।५९	०।७।३८।५३	०।६।१०।२६	२।३०।१३	−७।४६।१	०।४५।३७	३४।१४(२०।१२)
२८	११।१३।३७।५९	६।१२।४१।५८	८।६।२४।२२	१०।२४।२९।१८	१०।१४।४२।४२	०।०।५।१	७।१५।५९।४९	०।७।३५।४२	०।६।९।१३	२।५३।४२	−१२।२४।४१	−०।११।३३	३७।१६(२१।२२)
२९	११।१४।३९।१७	६।२७।१९।२६	८।६।५५।१०	१०।२४।२०।१९	१०।१४।५६।४८	०।१।१९।१	७।१५।५८।२५	०।७।३२।३२	०।६।८।७	३।१७।७	−१७।१०।४	−४।३।३४	४०।१९(२२।३५)
३०	११।१५।३६।३८	७।११।५२।५८	८।७।२५।७	१०।२४।१७।२७	१०।१५।१०।३३	०।२।३२।५९	७।१५।५६।५५	०।७।२९।२१	०।६।७।६	३।४०।३२	−२७।२५।११	−४।४४।५	४३।२५(२३।४७)
३१	११।१६।३५।५४	७।२६।१८।३	८।७।५५।७	१०।२४।१९।१८	१०।१५।२३।२९	०।३।४७।१७	७।१५।५६।४७	०।७।२६।१०	०।६।६।११	४।३।४३	−२८।९।१४	−३।३९।५५	४६।२०(२४।५६)
अप्रै.	११।१७।३५।७	८।१०।३०।४०	८।८।२५।९	१०।२४।२७।३१	१०।१५।३६।२७	०।५।२।५	७।१५।५५।४६	०।७।२२।५९	०।६।५।२२	४।२६।५९	−२८।६।१६	४।४३।५३	४८।५९(२५।५९)
२	११।१८।३४।१९	८।२४।२९।४२	८।८।५४।५४	१०।२४।३९।४३	१०।१५।४९।४४	०।६।१६।२	७।१५।५४।३०	०।७।१९।४९	०।६।४।३८	४।५०।७	−२७।१८।३७	−५।८।५५	५१।१६(२६।५३)
३	११।१९।३३।२९	९।८।१३।३८	८।९।२३।५१	१०।२४।५७।४१	१०।१६।३।३३	०।७।३०।२	७।१५।५२।२४	०।७।१६।३८	०।६।४।१०	५।१३।१०	−२५।५१।५३	−५।१५।४०	५३।११(२७।३८)
४	११।२०।३२।३५	९।२१।४२।३२	८।९।५२।५१	१०।२५।२१।४०	१०।१६।१६।२९	०।८।४४।२	७।१५।५०।४२	०।७।१३।२७	०।६।३।२७	५।३६।७	−२१।४।३१	−५।४।४३	५४।५१(२८।१५)
५	११।२१।३१।४१	१०।४।५६।४१	८।१०।२१।५१	१०।२५।४८।३९	१०।१६।२९।३०	०।९।५८।५	७।१५।४९।३०	०।७।१०।१६	०।६।२।५८	५।५८।५८	−१६।१७।३६	−४।३७।३६	५६।१४(२८।४८)
६	११।२२।३०।४४	१०।१७।५६।५३	८।१०।५०।५३	१०।२६।२०।१०	१०।१६।४२।२९	०।११।११।४७	७।१५।४७।२७	०।७।७।६	०।६।२।३५	६।२१।४३	−१०।५१।१०	−३।५६।३२	५७।२९(२९।१६)
७	११।२३।२९।४६	११।०।४२।५८	८।११।१९।३५	१०।२६।५६।८	१०।१६।५५।३०	०।१२।२४।५९	७।१५।४५।२७	०।७।३।५५	०।६।२।१६	६।४४।२२	−५।३।१३	−३।४।२०	५७।१९(२९।४३)
८	११।२४।२८।४६	११।१३।१५।५२	८।११।४७।५०	१०।२७।३६।१६	१०।१७।८।२९	०।१३।३९।२	७।१५।४३।२७	०।७।०।४४	०।६।२।१	७।६।५३	+०।५०।५८	−२।४।५	५९।४९(३०।१०)
९	११।२५।२५।४३	११।२५।३७।३३	८।१२।१६।३८	१०।२८।२०।५	१०।१७।२१।३२	०।१४।५३।२	७।१५।४१।२७	०।६।५७।३३	०।६।१।५१	७।२९।१८	६।३८।३१	−०।५८।२२	०।५८(६।३६)
१०	११।२६।२६।३८	०।७।४७।५४	८।१२।४४।३७	१०।२९।७।९	१०।१७।३४।१४	०।१६।७।४	७।१५।३९।२७	०।६।५४।२२	०।६।१।४५	७।५१।३५	१२।६।३२	−०।८।४	१।०(६।३५)

मास	२२ मार्च ८५	१ अप्रैल	१ मई	१ जून	१ जुलाई	१ अगस्त	१ सितम्बर	१ अक्टूबर	१ नवम्बर	१ दिसम्बर	१ जनवरी ८६	१ फरवरी	१ मार्च	१ अप्रैल
	वक्री (२४)	वक्री (६)				मार्गी २४ अग								
हर्शल	७।२४।२१।१०	७।१४।१८।१०	७।१३।४३।६	७।१२।२५।१	७।२१।२२।५६	७।२०।३०।५०	७।१९।१९।४६	७।२०।५६।४३	७।२२।१५।३९	७।३३।५८।३४	७।२५।४९।२८	७।२७।२६।२३	७।२८।२३।१९	७।२८।५१।१५
		वक्री (६)					मार्गी (१२ सि.)							वक्री (८ अप्रैल)
नेप्चून	८।९।५५।१०	८।९।५८।१०	८।९।४८।६	८।९।१२।१	८।८।२३।५६	८।७।४९।५०	८।६।१३।४६	८।६।१७।४३	८।८।५१।३९	८।८।५६।३४	८।९।५५।२८	८।११।०।२३	८।११।४४।१९	८।१२।७।१५
												वक्री (१० फर.)		
प्लूटो	६।९।२८।४७	६।९।१९।१०	६।९।३१।६	६।८।४४।१	६।७।१७।५६	६।८।२१।५०	६।८।५७।४६	६।९।४७।५६	६।१०।१२।३९	६।१२।२०।३४	६।१३।१३।२८	६।१३।३७।२३	६।१३।३१।१९	६।१२।५८।१५

दैनिक चन्द्रस्पष्ट भा. स्टै. टा. रात्री १२ बजे

	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त चन्द्रस्पष्ट	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
1	----	३।२६।५१।३१	५।४।३५।४६	६।२८।१५।१६	८।६।२६।२१	९।२६।३०।५३	११।१२।५२।५१	०।१५।११।३६	१।२९।२१।१९	३।२।५८।२५	४।२१।३७।२२	६।१३।२५।१८	६।२४।१९।१३	८।१७।३२।३
२	—	४।११।१५।२४	५।१९।२९।५९	७।१३।७।२७	८।२०।३८।४६	१०।९।३३।१९	११।२४।५७।२५	०।२६।५९।४	२।११।२३।९	३।१५।३२।१२	५।५।४८	६।२७।२८।४७	६।८।२९।२७	९।१।२३।३२
३	—	४।२६।३।४१	६।४।३६।३०	७।२७।५०।३७	९।४।३५।१	१०।२२।१७।२७	०।६।५२।१०	१।८।४५।४२	२।२३।३६।३	३।२८।२१।२३	५।१८।४४।५२	७।११।३८।२९	७।२२।३६।२५	९।१४।५९।२९
४	—	५।११।९।४७	६।१९।४६।०	८।१२।१७।५९	९।१८।११।५	११।४।४२।३४	०।१८।४०।५५	१।२०।३६।१०	३।६।४।५	४।११।२७।१७	६।२।४०।१७	७।२५।५३।३२	८।६।२६।१३	९।२८।२१।२२
५	—	५।२६।२४।१८	७।४।५०।२२	८।२६।२४।२०	१०।१।२४।२२	११।१६।५२।२७	१।०।२८।३१	२।२।३४।४२	३।१८।५०।२२	४।२४।५२।३३	६।१६।५२।३२	८।१०।११।२४	८।२०।२८।४८	१०।११।२८।३२
६	—	६।११।३७।६	७।१९।४०।४०	९।१०।६।१७	१०।१४।१५।१९	११।२८।५०।३६	१।१२।१९।१९	२।१४।४६।३	४।१।५९।३८	५।८।३८।३६	७।१।१८।४८	८।२४।२८।१८	९।४।२९।४५	१०।२४।२९।४५
७	—	६।२६।३७।५९	८।४।१०।१२	९।२३।२१।२०	१०।२६।४४।५०	०।१०।४१।३२	१।२४।१८।२३	२।२७।१५।१९	४।१५।३३।४६	५।२२।४७।१८	७।१५।५६।४०	९।८।३८।३६	९।१८।१२।१०	११।७।०।४८
८	—	७।११।२०।१०	८।१८।१३।३०	१०।६।१२।२०	११।८।५७।६	०।२२।३०।२०	२।६।३१।३१	३।१०।६।४१	४।२९।३४।३६	६।७।१८।३३	८।०।४९।६	९।२२।३६।५६	१०।१।४२।५७	११।१९।२८।१६
९	—	७।२५।३०।२१	९।१।५०।२५	१०।१८।४१।५२	११।२०।५६।२८	१।४।२९।५९	२।१९।३।३२	३।२३।२४।२४	५।१४।१।१९	६।२२।८।१२	८।१५।२५।१३	१०।६।१९।१४	१०।१५।०।२१	०।१।४३।५४
१०	—	८।९।२९।१३	९।१५।१।१३	११।०।५३।२०	०।२।४७।३४	१।१६।२१।२५	३।१।५८।५०	४।७।८।२६	५।२८।४९।४८	७।७।९।३२	९।०।१।१२	१०।१९।४१।११	१०।२८।२।३	०।१३।४९।४९
११	—	८।२२।५९।३८	९।२७।४८।१०	११।१२।५९।५७	०।१४।२६।२३	१।२८।३४।३४	३।१५।१८।५८	४।२१।१९।२२	६।१३।५५।३	७।२२।१५।३४	९।१४।२०।५३	११।२।४२।३	११।१०।४८।३२	
१२	—	९।६।३।१६	१०।१०।१५।१४	११।२४।५१।१३	०।२६।२७।१७	२।११।५।५४	३।२९।५।५८	५।५।५५।२४	६।२९।८।३१	८।७।२१।३६	९।२८।१८।३०	११।१५।२०।५१	११।२३।१८।२१	
१३	—	९।१८।४७।२३	१०।२२।२५।२८	०।६।३३।१२	१।८।२५।१	२।२३।४९।४८	४।१३।१६।१९	५।२०।४९।२३	७।१४।२०।१९	८।२२।५।२९	१०।११।५०।३३	११।२७।४१।२९	०।५।३३।२२	
१४	—	१०।१।१३।५६	११।४।२४।२३	०।१८।१८।४५	१।२०।३४।४२	३।७।१२।५९	४।२७।४५।४२	६।५।५४।६	७।२९।२०।१२	९।६।३०।२३	१०।२४।५६।२८	०।९।४६।३२	०।१७।३५।४७	
१५	—	१०।१३।२७।२५	११।१६।१५।३६	१।०।१३।८	२।२।५९।५३	३।२०।४९।१७	५।१२।२७।४८	६।२१।०।६	८।१४।१।१८	९।२०।२८।४७	११।७।३६।५०	०।२१।४१।१३	०।२९।३०।१३	
१६	—	१०।२५।३०।२५	११।२८।३।५२	१।१२।१६।४४	२।१५।४१।५७	४।४।२४।२०	५।२७।१५।३६	७।५।५८।४९	८।२८।१७।३५	१०।३।५८।२७	११।१९।५६।५०	१।३।२९।४९	१।११।१९।३६	
१७	—	११।७।२६।३६	०।९।५०।४७	१।२४।३०।१४	२।२८।४।१०	४।१८।५४।३८	६।१२।०।१४	७।२०।४३।१०	९।१२।६।१	१०।१६।५९।३	०।२।०।१	१।१५।१८।५४	१।२३।८।५३	
१८	—	११।१९।१७।३२	०।२१।४०।३५	२।६।५६।५३	३।११।५८।३	५।३।१३।३०	६।२६।३७।३२	८।५।७।६	९।२५।२७।४	१०।२९।४४।५१	०।१३।५२।३१	१।२७।१३।४	२।५।३।५४	
१९	—	०।१।१५।४८	१।३।३६।६	२।१९।३७।४०	३।२५।३०।५	५।१७।३६।१३	७।११।१।१४	८।१९।८।२६	१०।८।२२।२७	११।११।५५।४४	०।२५।४०।५१	२।१९।१७।५३	. २।१७।८।८	
२०	—	०।१२।५३।१७	१।१५।३८।१८	३।२।३२।३१	४।९।१४।३७	६।१।५८।१	७।२५।९।४३	९।२।४६।३८	१०।२०।५६।४२	११।२३।५४।४८	१।७।२८।२२	२।२९।३७।५८	२।२९।२७।५३	
२१	—	०।२४।४२।५६	१।२७।४९।५१	३।१५।४०।३७	४।२३।८।२	६।१६।१५।२२	८।९।२।२९	९।१६।२।२९	११।३।१३।१४	०।५।४६।३८	१।१९।२१।२२	३।४।१५।४३	३।१२।६।१५	
२२	११।२२।१७।२५	१।६।३६।३८	२।१०।१२।११	३।२९।१०।४८	५।७।७।५०	७।०।२६।९	८।२२।३८।१७	९।२८।५८।४०	११।१५।१६।३५	०।१७।३३।१३	२।११।२३।४८	३।१७।१२।२०	३।२५।६।५०	
२३	०।४।५।५३	१।१८।३५।५८	२।२२।४७।२	४।१२।३४।४१	५।२१।१२।१६	७।१४।२८।१४	९।५।५९।३९	१०।११।३६।२०	११।२७।११।७	०।२९।२०।३०	२।१३।३८।५०	४।०।२८।५	४।८।३०।३४	
२४	०।१५।५३।५३	२।०।४५।७	३।५।३६।२८	४।२६।२०।१६	५।५।१८।४३	७।२८।२२।५	९।१९।३।५९	१०।२०।०।१२	०।८।५९।५४	१।११।१०।३१	२।२६।७।१९	४।१४।१।२५	४।२२।१७।२७	
२५	०।२७।४१।७	२।१३।७।४१	३।१८।४१।५३	५।१०।१६।४८	६।१९।२७।२४	८।१२।७।१४	१०।१।५५।५३	११।५।५३।४७	०।२०।४७।४३	१।२३।७।२८	३।८।५९।४१	४।२७।४९।२८	५।६।२५।१७	
२६	१।९।३४।२१	२।२५।४५।४१	४।२।३।४१	५।२४।२३।३३	७।३।३५।४८	८।२५।४२।३६	१०।१४।३४।४५	११।२३।१७।२४	१।२।३५।३१	२।५।१३।१९	३।२१।५०।३९	५।११।४९।१९	५।२०।४८।३०	
२७	१।२१।३७।२६	३।८।४३।३६	४।१५।४४।१५	६।८।४०।२५	७।१७।४२।२१	९।९।७।१३	१०।२७।२।१६	०।११।४१।२६	१।१४।२६।२२	२।१७।२७।५८	४।५।१।५८	५।२५।५६।१४	६।५।२२।४६	
२८	२।३।५४।३६	३।२२।४।६	४।२९।४३।५७	६।२३।१।७	८।१।४६।१२	९।२२।२०।२	११।९।१७।५३	०।११।४८।४५	१।२६।२२।५२	२।२९।५६।६	४।१८।२५।२३	६।१०।७।३९	६।२०।०।५२	
२९	२।१६।३०।३७	४।५।५०।५	५।१४।११।५८	७।७।३३।४७	८।१५।४४।५८	१०।५।२०।९	११।२१।२३।५०	०।२३।४९।४९	२।८।२६।१०	३।११।२३।४७	५।१।५८।२५		७।४।३६।५७	
३०	२।२९।२९।४६	४।२०।१।३३	५।२८।३६।४१	७।२२।२।२५	८।२९।३३।४५	१०।१८।५।४१	०।१३।२०।४२	१।५।३६।४८	२।२०।३७।९	३।२५।२५।४६	५।१५।४०।३१		७।१९।६।५७	
३१	३।१२।४६।९		६।१३।२२।५२		९।१३।९।५८	११।०।३६।०		१।१७।२६।३९		४।८।२४।२९	५।२९।२९।९		८।३।२५।५६	

दैनिक सूर्यस्पष्ट भा. स्टै. टा. रात्रौ १२ बजे

	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त सूर्यस्पष्ट	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१		११।१८।१९।५४	०।१७।४०।३५	१।१७।३३।१०	२।१६।१२।१२	३।१५।४७।२१	४।१५।३६।१९	५।१४।५२।१५	६।१५।३८।१	७।१५।५२।५	८।१७।२४।१८	९।१८।५७।२८	१०।१७।१३।३८	११।१८।४।४३
२		११।१९।१९।१४	०।१८।३८।४७	१।१८।३०।२९	२।१७।९।२३	३।१६।४४।४६	४।१६।३४।२५	५।१५।५१।१७	६।१६।३८।६	७।१६।५२।५५	८।१८।२५।२८	९।१९।५८।२२	१०।१८।१३।४८	११।१९।३।५४
३		११।१५।१९।१४	०।१९।३६।५७	१।१९।२७।५७	२।१८।६।३५	३।१७।४२।११	४।१७।३२।३२	५।१६।५०।२२	६।१७।३८।११	७।१७।५३।५७	८।१९।२६।३६	९।२०।५९।१४	१०।१९।१३।५८	११।२०।३।२
४		११।२१।१७।१७	०।२०।३५।७	१।२०।२५।२४	२।१९।३।४७	३।१८।३९।३८	४।१८।३०।४०	५।१७।४९।२८	६।१८।३८।१९	७।१८।५४।३९	८।२०।२७।४६	९।२२।०।३	१०।२०।१४।७	११।२१।२।९
५		११।२२।१६।२२	०।२१।३३।१४	१।२१।२२।५०	२।२०।०।५९	३।१९।३७।६	४।१९।२८।५१	५।१८।४८।३७	६।१९।३८।२९	७।१९।५५।३३	८।२१।२८।५५	९।२३।०।५१	१०।२१।१४।१३	११।२२।१।१३
६		११।२३।१५।२४	०।२२।३१।१८	१।२२।२०।१५	२।२०।५८।११	३।२०।३४।३५	४।२०।२७।३	५।१९।४७।४६	६।२०।३८।४०	७।२०।५६।२८	८।२२।३०।५	९।२४।१।४१	१०।२२।१४।१७	११।२३।०।१६
७		११।२४।१४।२४	०।२३।२९।२२	१।२३।१७।३९	२।२१।५५।२४	३।२१।३२।५	४।२१।२५।१७	५।२०।४६।५८	६।२१।३८।५२	७।२१।५७।२३	८।२३।३१।१४	९।२५।२।२९	१०।२३।१४।२०	११।२३।५९।१६
८		११।२५।१३।२२	०।२४।२७।२४	१।२४।१५।२	२।२२।५२।३६	३।२२।२९।३६	४।२२।२३।३३	५।२१।४६।१३	६।२२।३९।७	७।२२।५८।२१	८।२४।३२।२३	९।२६।३।१४	१०।२४।१४।२०	११।२४।५८।१५
९		११।२६।१२।१९	०।२५।२५।२५	१।२५।१२।१४	२।२३।४९।४८	३।२३।२७।७	४।२३।२१।५१	५।२२।४५।३०	६।२३।३९।२४	७।२३।५९।१८	८।२५।३३।३१	९।२७।३।५९	१०।२५।१४।१८	११।२५।५७।११
१०		११।२७।११।१२	०।२६।२३।२३	१।२६।९।४६	२।२४।४७।१	३।२४।२४।४०	४।२४।२०।९	५।२३।४४।४८	६।२४।३९।४३	७।२५।०।१५	८।२६।३४।३९	९।२८।४।४३	१०।२६।१४।१६	११।२६।५६।५
११		११।२८।१०।३	०।२७।२१।२१	१।२७।७।७	२।२५।४४।१३	३।२५।२२।१५	४।२५।१८।३०	५।२४।४४।९	६।२५।४०।२	७।२६।१।१५	८।२७।३५।४८	९।२९।५।२३	१०।२७।१०।१०	
१२		११।२९।८।५३	०।२८।१९।१६	१।२८।४।२७	२।२६।४१।२६	३।२६।१९।४९	४।२६।१६।५४	५।२५।४३।३१	६।२६।४०।२४	७।२७।२।१६	८।२८।३६।५५	१०।०।६।१३	१०।२८।१४।३	
१३		०।०।७।४२	०।२९।१७।११	१।२९।१।४६	२।२७।३८।३९	३।२७।१७।३७	४।२७।१५।१९	५।२६।४२।५५	६।२७।४०।४७	७ २८।३।१७	८।२९।३८।३	१०।१।६।४३	१०।२९।१३।५४	
१४		०।१।६।२८	१।०।१५।४	१।२९।५९।५	२।२८।३५।५३	३।२८।१५।४	४।२८।१३।४६	५।२७।४२।२२	६।२८।४१।१२	७।२९।४।१८	९।०।३९।१०	१०।२।७।२०	११।०।१३।४४	
१५		०।२।५।१२	१।१।१२।५५	२।०।५६।२३	२।२९।३३।७	३।२९।१२।४३	४।२९।१२।१४	५।२८।४१।५१	६।२९।४३।३९	८।०।५।४०	९।१।४०।१६	१०।३।७।५७	११।१।१३।३१	
१६		०।३।३।५३	१।२।१०।४०	२।१।५३।४१	३।०।३०।२०	४।०।१०।२३	५।०।१०।४५	५।२९।४१।२१	७।०।४२।७	८।१।६।२३	९।२।४१।२३	१०।४।८।३२	११।२।१३।१६	
१७		०।४।२।३४	१।३।८।३३	२।२।५०।५७	३।१।२७।३५	४।१।८।५	५।१।९।१७	६।०।४०।५४	७।१।४२।३७	८।२।७।२७	९।३।४२।२९	१०।५।९।४	११।३।१२।५९	
१८		०।५।१।१२	१।४।६।१९	२।३।४८।१४	३।२।२४।५०	४।२।५।४७	५।२।७।५१	६।१।४०।२८	७।२।४३।८	८।३।८।३२	९।४।४३।३३	१०।६।९।३६	११।४।१२।४०	
१९		०।५।५९।५८	१।५।४।४	२।४।४५।१९	३।३।२२।६	४।३।३।३२	५।३।६।२७	६।२।४०।४	७।३।४३।४२	८।४।९।३७	९।५।४४।३८	१०।७।१०।६	११।५।१२।२०	
२०		०।६।५८।२२	१।६।१।४९	२।५।४२।४४	३।४।१९।२२	४।४।१।१८	५।४।५।६	६।३।३९।४३	७।४।४४।१५	८।५।१०।४३	९।६।४१।४३	१०।८।१०।३५	११।६।११।५७	
२१		०।७।५६।५४	१।६।५९।३२	२।६।३९।५९	३।५।१६।३८	४।४।५९।५	५।५।३।४६	६।४।३९।२५	७।५।४४।५१	८।६।११।४९	९।७।४६।४६	१०।९।११।१	११।७।११।३१	
२२	११।८।२६।२१	०।८।५५।२५	१।७।५७।१३	२।७।३७।१४	३।६।१३।५४	४।५।५६।५२	५।६।२।२८	६।५।३९।७	७।६।४५।२९	८।७।१२।५५	९।८।४७।४८	१०।१०।११।२७	११।८।११।१४	
२३	११।९।२५।५१	०।९।५३।५३	१।८।५४।५४	२।८।३४।२८	३।७।११।१२	४।६।५४।४२	५।७।१।१२	६।६।३८।५२	७।७।४६।७	८।८।१४।२	९।९।४८।५०	१०।११।११।५१	११।९।१०।३६	
२४	११।१०।२५।१९	०।१०।५२।२०	१।९।५२।३२	२।९।३१।४२	३।८।८।३१	४।७।५२।३४	५।७।५९।५७	६।७।३८।३९	७।८।४६।४७	८।९।१५।९	९।१०।४९।५१	१०।१२।१२।१३	११।१०।१०।१४	
२५	११।११।२४।४६	०।११।५०।४४	१।१०।५०।१०	२।१०।२८।५६	३।९।५।४९	४।८।५०।२७	५।८।५८।४५	६।८।३८।२७	७।९।४७।२९	८।१०।१६।१७	९।११।५०।५१	१०।१३।१२।३३	११।११।९।३२	
२६	११।१२।२४।१०	०।१२।४९।७	१।११।४७।४६	२।११।२६।८	३।१०।३।९	४।९।४८।२४	५।९।५७।३६	६।९।३८।१७	७।१०।४८।११	८।११।१७।२६	९।१२।५१।५१	१०।१४।१२।५१	११।१२।८।५७	
२७	११।१३।२३।३४	०।१३।४७।२८	१।१२।४५।२१	२।१२।२३।२१	३।११।०।२९	४।१०।४६।१६	५।१०।५६।२७	६।१०।३८।१०	७।११।४८।५५	८।१२।१८।३४	९।१३।५२।५१	१०।१५।१३।१९	११।१३।८।१९	
२८	११।१४।२२।५३	०।१४।४५।४८	१।१३।४२।५६	२।१३।२०।३४	३।११।५७।४९	४।११।४४।१४	५।११।५५।२२	६।११।३८।५	७।१२।४९।४१	८।१३।१९।४२	९।१४।५३।४८	१०।१६।१३।२४	११।१४।७।३९	
२९	११।१५।२२।११	०।१५।४४।५	१।१४।४०।२९	२।१४।१७।४७	३।१२।५५।११	४।१२।४२।१२	५।१२।५४।१८	६।१२।३८।१	७।१३।५०।२८	८।१४।२०।५१	९।१५।५४।४८		११।१५।६।५९	
३०	११।१६।२१।२८	०।१६।४२।२०	१।१५।३८।१०	२।१५।१४।५९	३।१३।५२।३३	४।१३।४०।१३	५।१३।५३।१६	[illegible]	[illegible]	८।१५।२२।१०	९।१६।५५।३९		११।१६।६।१६	
३१	११।१७।२०।४१		१।१६।३५।३०		३।१४।४९।५७	४।१४।३८।१५		६।१४।३३।३९		८।१६।२३।१९	९।१७।५६।३६		११।१७।५।३१	

अक्षांशा: ३२।४४, पलभा ७।४२.८२३२ अयनांशा: २४।००।००

जम्बु प्रदेशीय निरयण लग्न तालिका

राशयः अंशाः	० मेष घ प वि	१ वृष घ प वि	२ मिथुन घ प वि	३ कर्क घ प वि	४ सिंह घ प वि	५ कन्या घ प वि	६ तुला घ प वि	७ वृश्चिक घ प वि	८ धन घ प वि	९ मकर घ प वि	१० कुम्भ घ प वि	११ मीन घ प वि
०	०२।४८।४१	०६।३८।२९	११।२४।२६	१७।०४।१२	२३।०६।१३	२९।०१।२९	३४।५४।३३	४०।५१।३०	४६।४६।३६	५१।५३।१७	५५।५९।३७	५९।२७।०३
१	०२।५५।४२	०६।४७।००	११।३५।०३	१७।१६।०५	२३।१८।१२	२९।१३।१४	३५।०६।२६	४१।०६।२७	४६।५७।४५	५२।०२।२५	५६।०६।५२	५९।३३।४०
२	०३।०२।४६	०६।५५।३५	११।४५।४३	१७।२७।२९	२३।३०।०९	२९।२४।५७	३५।१८।२०	४१।१८।३५	४७।०८।५१	५२।११।२९	५६।१४।११	५९।४०।१७
३	०३।०९।५१	०७।०४।१४	११।५७।२७	१७।३९।५४	२३।४२।०६	२९।३६।४१	३५।३०।१३	४१।३०।३६	४७।१९।५४	५२।२०।२९	५६।२१।२८	५९।४६।५५
४	०३।१६।५८	०७।१२।५७	१२।०७।१७	१७।५१।५०	२३।५४।०२	२९।४८।२६	३५।४१।०९	४१।४२।३७	४७।३०।५३	५२।२९।२४	५६।२८।४२	५९।५३।३२
५	०३।२४।०८	०७।२१।४४	१२।१७।०५	१८।०३।४७	२४।०५।५८	३०।००।००	३५।५४।०४	४१।५४।३८	४७।४१।५०	५२।३८।१५	५६।३५।५४	००।००।००
६	०३।३१।२०	०७।३०।३५	१२।२९।०५	१८।१५।४५	२४।१७।४७	३०।११।४३	३६।०६।००	४२।०६।३७	४७।५२।५३	५२।४७।०२	५६।४३।०३	००।०६।३७
७	०३।३८।३४	०७।३९।३१	१२।४०।०१	१८।२९।२३	२४।२९।४९	३०।२३।२८	३६।१७।५६	४२।१८।३६	४८।०३।३२	५२।५५।४५	५६।५०।११	००।१३।१४
८	०३।४५।५१	०७।४८।३०	१२।५१।००	१८।३८।०४	२४।४१।४२	३०।३५।१२	३६।२९।५३	४२।३०।३४	४८।१४।०७	५३।०२।२३	५६।५७।१६	००।१९।५१
९	०३।५३।१०	०७।५७।३४	१३।०२।०२	१८।५३।२७	२४।५३।३६	३०।४६।५५	३६।४१।५०	४२।४२।३०	४८।२४।५७	५३।१२।५९	५७।०४।२०	००।२६।२९
१०	०४।००।३२	०८।०६।४२	१३।१३।०८	१९।०५।२९	२५।०५।२९	३०।५८।४०	३६।५३।४९	४२।५४।२६	४८।३५।३४	५३।२१।४१	५७।११।२१	००।३३।०७
११	०४।०७।५६	०८।१५।५५	१३।२४।१७	१९।१७।३२	२५।१७।२१	३१।१०।२५	३७।०५।४८	४३।०६।२१	४८।४६।०७	५३।२९।५८	५७।१८।२१	००।३९।४५
१२	०४।१५।२३	०८।२५।११	१३।३५।२९	१९।२९।२५	२५।२९।१२	३१।२२।०९	३७।१७।४७	४३।१८।२५	४८।५६।३६	५३।३८।२१	५७।२५।१८	००।४६।२४
१३	०४।२२।५३	०८।३४।३२	१३।४६।४४	१९।४१।४०	२५।४१।०४	३१।३३।५४	३७।२९।४७	४३।३०।०६	४९।०७।०१	५३।४६।२२	५७।३२।१४	००।५३।०३
१४	०४।३०।२५	०८।४३।५७	१३।५८।०१	१९।५३।५४	२५।५२।५४	३१।४५।३९	३७।४१।४७	४३।४१।५७	४९।१७।२२	५३।५४।५८	५७।३९।०८	००।५९।४२
१५	०४।३८।४१	०८।५३।२७	१४।०९।२२	२०।०५।४७	२६।०४।४४	३१।५७।२४	३७।५३।४७	४३।५३।४५	४९।२७।२८	५४।०३।०९	५७।४६।०२	०१।०६।२३
१६	०४।४५।३९	०९।०३।०१	१४।२०।१२	२०।१७।५०	२६।१६।३३	३२।०९।१०	३८।०५।४९	४४।०५।३३	४९।३७।५१	५४।११।१८	५७।५२।५३	०१।१३।०४
१७	०४।५३।२१	०९।१२।३९	१४।३२।१२	२०।२९।५४	२६।२८।३२	३२।२०।५५	३८।१७।५१	४४।१७।१६	४९।४७।५९	५४।१९।२२	५७।५९।५२	०१।१९।४६
१८	०५।०१।०५	०९।२२।२२	१४।४३।४१	२०।४१।५७	२६।४०।२१	३२।३२।४२	३८।२९।४९	४४।२९।०२	४९।५८।०३	५४।२७।२४	५८।०६।४१	०१।२६।२९
१९	०५।०८।५३	०९।३२।०९	१४।५५।१२	२०।५४।००	२६।५२।०८	३२।४४।२५	३८।४१।५५	४४।४०।४३	५०।०८।०३	५४।३५।२२	५८।१३।२८	०१।३३।१३
२०	०५।१६।४४	०९।४२।००	१५।०६।४६	२१।०६।०३	२७।०७।५५	३२।५६।१६	३८।५३।५८	४४।५२।२२	५०।१७।५९	५४।४३।१७	५८।२०।१३	०१।३९।५८
२१	०५।२४।३९	०९।५१।५६	१५।१८।२२	२१।१८।०६	२७।१५।४६	३३।०८।०३	३९।०६।०१	४५।०४।००	५०।२७।५०	५४।५१।०८	५८।२६।५८	०१।४६।४४
२२	०५।३२।३७	१०।०१।५६	१५।३०।००	२१।३०।०८	२७।२७।२९	३३।१९।५१	३९।१८।०३	४५।१५।३४	५०।३७।३७	५४।५८।५६	५८।३३।४३	०१।५३।३१
२३	०५।४०।३८	१०।१२।००	१५।४१।४०	२१।४२।१०	२७।३९।१५	३३।३१।४०	३९।३०।०७	४५।२७।०६	५०।४७।१९	५५।०६।४०	५८।४०।२५	०२।००।१९
२४	०५।४८।४३	१०।२२।०८	१५।५२।२३	२१।५४।१२	२७।५१।०१	३३।४३।२९	३९।४२।११	४५।३८।३६	५०।५६।५८	५५।१४।४२	५८।४७।०७	०२।०७।०९
२५	०५।५६।५१	१०।३२।२१	१६।०५।०७	२२।०६।१४	२८।०२।४६	३३।५५।१८	३९।५४।१४	४५।५०।०३	५१।०६।३२	५५।२२।००	५८।५३।४८	०२।१४।२१
२६	०६।०५।०३	१०।४२।३८	१६।१६।५३	२२।१८।१५	२८।१४।३१	३४।०९।०८	४०।०६।१७	४६।०१।२८	५१।१५।०२	५५।२९।३७	५९।००।२७	०२।२०।५३
२७	०६।१३।१९	१०।५२।५९	१६।२८।४०	२२।३०।१५	२८।२६।१५	३४।१८।५८	४०।१८।२१	४६।१२।४९	५१।२५।२७	५५।३७।०९	५९।०७।०७	०२।२७।४८
२८	०६।२१।३८	११।०३।२४	१६।४०।२९	२२।४२।१५	२८।३८।००	३४।३०।५०	४०।३०।२४	४६।२४।०८	५१।३४।४८	५५।४४।३९	५९।१३।४६	०२।३४।४४
२९	०६।३०।०९	११।१३।५३	१६।५२।१९	२२।५४।१४	२८।४९।४४	३४।४२।४१	४०।४२।२७	४६।३५।२१	५१।४४।०४	५५।५२।०६	५९।२०।२४	०२।४१।४१

जम्मू नगरीय दैनिक लग्न तालिका
वैशाख

वैशाख प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	मेष (घं मि)	वृष (घं मि)	मिथुन (घं मि)	कर्क (घं मि)	सिंह (घं मि)	कन्या (घं मि)	तुला (घं मि)	वृश्चिक (घं मि)	धनु (घं मि)	मकर (घं मि)	कुम्भ (घं मि)	मीन (घं मि)
१	अप्रैल १३	७।४०	९।३४	११।४९	२।१३	४।३४	६।५५	९।१८	११।३९	१।४२	३।२०	४।४६	६।०५
२	१४	७।३६	९।३०	११।४५	२।०९	४।३०	६।५१	९।१४	११।३५	१।३८	३।१६	४।४२	६।०१
३	१५	७।३२	९।२६	११।४१	२।०५	४।२७	६।४७	९।१०	११।३१	१।३४	३।१३	४।३८	५।५७
४	१६	७।२९	९।२२	११।३७	२।०१	४।२३	६।४३	९।०७	११।२७	१।३०	३।०९	४।३४	५।५३
५	१७	७।२५	९।१८	११।३३	१।५७	४।१९	६।३९	९।०३	११।२३	१।२६	३।०५	४।३०	५।४९
६	१८	७।२१	९।१४	११।२९	१।५३	४।१५	६।३५	८।५९	११।१९	११।२२	३।०१	४।२६	५।४५
७	१९	७।१७	९।१०	११।२५	१।४९	४।११	६।३१	८।५५	११।१६	१।१८	२।५७	४।२२	५।४१
८	२०	७।१३	९।०६	११।२२	१।४५	४।०७	६।२७	८।५१	११।१२	१।१४	२।५३	४।१८	५।३८
९	२१	७।०९	९।०२	११।१८	१।४१	४।०३	६।२३	८।४७	११।०८	१।१०	२।४९	४।१४	५।३४
१०	२२	७।०५	८।५८	११।१४	१।३७	३।५९	६।२०	८।४३	११।०४	१।०६	२।४५	४।१०	५।३०
११	२३	७।०१	८।५४	११।१०	१।३३	३।५५	६।१६	८।३९	११।००	१।०२	२।४१	४।०६	५।२६
१२	२४	६।५७	८।५०	११।०६	१।२९	३।५१	६।१२	८।३५	१०।५६	१२।५८	२।३७	४।०२	५।२२
१३	२५	६।५३	८।४६	११।०२	१।२६	३।४७	६।०८	८।३१	१०।५२	१२।५४	२।३३	३।५८	५।१८
१४	२६	६।४९	८।४३	१०।५८	१।२२	३।४३	६।०४	८।२७	१०।४८	१२।५०	२।२९	३।५४	५।१४
१५	२७	६।४५	८।३९	१०।५४	१।१८	३।३९	६।००	८।२३	१०।४४	१२।४६	२।२५	३।५१	५।१०
१६	२८	६।४१	८।३५	१०।५०	१।१४	३।३५	५।५६	८।१९	१०।४०	१२।४३	२।२१	३।४७	५।०६
१७	२९	६।३७	८।३१	१०।४६	१।१०	३।३१	५।५२	८।१५	१०।३६	१२।३९	२।१७	३।४३	५।०२
१८	३०	६।३३	८।२७	१०।४२	१।०६	३।२८	५।४८	८।११	१०।३२	१२।३५	२।१४	३।३९	४।५८
१९	मई १	६।३०	८।२३	१०।३८	१।०२	३।२४	५।४४	८।०८	१०।२८	१२।३१	२।१०	३।३५	४।५४
२०	२	६।२६	८।१९	१०।३४	१२।५८	३।२०	५।४०	८।०४	१०।२४	१२।२७	२।०६	३।३१	४।५०
२१	३	६।२२	८।१५	१०।३०	१२।५४	३।१६	५।३६	८।००	१०।२०	१२।२३	२।०२	३।२७	४।४६
२२	४	६।१८	८।११	१०।२६	१२।५०	३।१२	५।३२	७।५६	१०।१७	१२।१९	१।५८	३।२३	४।४२
२३	५	६।१४	८।०७	१०।२३	१२।४६	३।०८	५।२८	७।५२	१०।१३	१२।१५	१।५४	३।१९	४।३९
२४	६	६।१०	८।०३	१०।१९	१२।४२	३।०४	५।२४	७।४८	१०।०९	१२।११	१।५०	३।१५	४।३५
२५	७	६।०६	७।५९	१०।१५	१२।३८	३।००	५।२१	७।४४	१०।०५	१२।०७	१।४६	३।११	४।३१
२६	८	६।०२	७।५५	१०।११	१२।३४	२।५६	५।१७	७।४०	१०।०१	१२।०३	१।४२	३।०७	४।२७
२७	९	५।५८	७।५१	१०।०७	१२।३०	२।५२	५।१३	७।३६	९।५७	११।५९	१।३८	३।०३	४।२३
२८	१०	५।५४	७।४७	१०।०३	१२।२७	२।४८	५।०९	७।३२	९।५३	११।५५	१।३४	२।२९	४।१९
२९	१२	५।५०	७।४४	९।५९	१२।२३	२।४४	५।०५	७।२८	९।४९	११।५१	१।३०	२।५५	४।१५
३०	१२	५।४६	७।४०	९।५५	१२।१९	२।४०	५।०१	७।२४	९।४५	११।४७	१।२६	२।५२	४।११
३१	१३	५।४२	७।३६	९।५१	१२।१५	२।३६	४।५७	७।२०	९।४१	११।४४	१।२२	२।४८	४।०७
१ ज्ये०	१४	५।३८											

दैनिक लग्न तालिका
ज्येष्ठ

ज्येष्ठ प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	वृष (घं मि)	मिथुन (घं मि)	कर्क (घं मि)	सिंह (घं मि)	कन्या (घं मि)	तुला (घं मि)	वृश्चिक (घं मि)	धनु (घं मि)	मकर (घं मि)	कुम्भ (घं मि)	मीन (घं मि)	मेष (घं मि)
१	मई १४	७।३२	९।४७	१२।११	२।३२	४।५३	७।१६	९।३७	११।४०	१।१८	२।४४	४।०३	५।३४
२	१५	७।२८	९।४३	१२।०७	२।२९	४।४९	७।१२	९।३३	११।३६	१।१५	२।४०	३।५९	५।३१
३	१६	७।२४	९।३९	१२।०३	२।२५	४।४५	७।०९	९।२६	११।३२	१।११	२।३६	३।५५	५।२७
४	१७	७।२०	९।३५	११।५९	२।२१	४।४१	७।०५	९।२५	११।२८	१।०७	२।३२	३।५१	५।२३
५	१८	७।१६	९।३१	११।५५	२।१७	४।३७	७।०१	९।२१	११।२४	१।०३	२।२८	३।४७	५।१९
६	१९	७।१२	९।२७	११।५१	२।१३	४।३३	६।५७	९।१८	११।२०	१२।५९	२।२४	३।४३	५।१५
७	२०	७।०८	९।२४	११।४७	२।०९	४।२९	६।५३	९।१४	११।१६	१२।५५	२।२०	३।४०	५।११
८	२१	७।०४	९।२०	११।४३	२।०५	४।२५	६।४९	९।१०	११।१२	१२।५१	२।१६	३।३६	५।०७
९	२२	७।००	९।१६	११।३९	२।०१	४।२२	६।४५	९।०६	११।०८	१२।४७	२।१२	३।३[illegible]	५।०३
१०	२३	६।५६	९।१२	११।३५	१।५७	४।१८	६।४१	९।०२	११।०४	१२।४३	२।०८	३।२८	४।५९
११	२४	६।५२	९।०८	११।३१	१।५३	४।१४	६।३०	८।५८	११।००	१२।३९	२।०४	३।२४	४।५५
१२	२५	६।४८	९।०४	११।२८	१।४९	४।१०	६।३३	८।५४	१०।५६	१२।३५	२।००	३।२०	४।५१
१३	२६	६।४५	९।००	११।२४	१।४५	४।०६	६।२९	८।५०	१०।५२	१२।३१	१।५६	३।१६	४।४७
१४	२७	६।४१	८।५६	११।२०	१।४१	४।०२	६।२५	८।४६	१०।४८	१२।२७	१।५३	३।१२	४।४३
१५	२८	६।३७	८।५२	११।१६	१।३७	३।५८	६।२१	८।४२	१०।४५	१२।२३	१।४९	३।०८	४।३९
१६	२९	६।३३	८।४८	११।१२	१।३३	३।५४	६।१७	८।३८	१०।४१	१२।१९	१।४५	३।०४	४।३५
१७	३०	६।२९	८।४४	११।०८	१।३०	३।५०	६।१३	८।३४	१०।३७	१२।१६	१।४१	३।००	४।३२
१८	३१	६।२५	८।४०	११।०४	१।२६	३।४६	६।१०	८।३०	१०।३३	१२।१२	१।३७	२।५६	४।२८
१९	जून १	६।२१	८।३६	११।००	१।२२	३।४२	६।०६	९।२६	१०।२९	१२।०८	१।३३	२।५२	४।२४
२०	२	६।१७	८।३२	१०।५६	१।१८	३।३८	६।०२	८।२२	१०।२५	१२।०४	१।२९	२।४८	४।२०
२१	३	६।१३	८।२८	१०।५२	१।१४	३।३४	५।५८	८।१९	१०।२१	१२।००	१।२५	२।४४	४।१६
२२	४	६।०९	८।२५	१०।४८	१।१०	३।३०	५।५४	८।१५	१०।१७	११।५६	१।२१	२।४१	४।१२
२३	५	६।०५	८।२१	१०।४४	१।०६	३।२६	५।५०	८।११	१०।१३	११।५२	१।१७	२।३७	४।०८
२४	६	६।०१	८।१७	१०।४०	१।०२	३।२३	५।४६	८।०७	१०।०९	११।४८	१।१३	२।३३	४।०४
२५	७	५।५७	८।१३	१०।३६	१२।५८	३।१९	५।४२	८।०३	१०।०५	११।४४	१।०९	२।२९	४।००
२६	८	५।५३	८।०९	१०।३२	१२।५४	३।१५	५।३८	७।५९	१०।०१	११।४०	१।०५	२।२५	३।५६
२७	९	५।४९	८।०५	१०।२९	१२।५०	३।११	५।३४	७।५५	९।५७	११।३६	१।०१	२।२१	३।५२
२८	१०	५।४६	८।०१	१०।२५	१२।४६	३।०७	५।३०	७।५१	९।५३	११।३२	१२।५७	२।१७	३।४८
२९	११	५।४२	७।५७	१०।२१	१२।४२	३।०३	५।२६	७।४७	९।४९	११।२८	१२।५४	२।१३	३।४४
३०	१२	५।३८	७।५३	१०।१७	१२।३८	२।५९	५।२२	७।४३	९।४६	११।२४	१२।५०	२।०९	३।४०
३१	१३	५।३४	७।४९	१०।१३	१२।३४	२।५५	५।१८	७।३९	९।४२	११।२०	१२।४६	२।०५	३।३६
१ आ०	१४	५।३०											

भा. स्टै. समयानुसार लग्न समाप्तिकाल

जम्मू नगरीय दैनिक लग्न तालिका आषाढ़

आषाढ़ प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं मि	घं मि	घं मि	घं. मि	घं मि	घं- मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	१४	७।४५	१०।०९	१२।३१	२।५१	५।१४	७।३५	९।३८	११।१७	१२।४२	२।०१	३।३३	५।२६
२	१५	७।४१	१०।०५	१२।२७	२।४७	५।११	७।३१	९।३४	११।१३	१२।३८	१।५७	३।२९	५।२२
३	१६	७।३७	१०।०१	१२।२३	२।४३	५।०७	७।२७	९।३०	११।०९	१२।३४	१।५३	३।२५	५।१८
४	१७	७।३३	९।५७	१२।१९	२।३९	५।०३	७।२३	९।२६	११।०५	१२।३०	१।४९	३।२१	५।१४
५	१८	७।२९	९।५३	१२।१५	२।३५	४।५९	७।२०	९।२२	११।०१	१२।२६	१।४५	३।१७	५।१०
६	१९	७।२६	९।४९	१२।११	२।३१	४।५५	७।१६	९।१८	१०।५७	१२।२२	१।४२	३।१३	५।०६
७	२०	७।२२	९।४५	१२।०७	२।२७	४।५१	७।१२	९।१४	१०।५३	१२।१८	१।३८	३।०९	५।०२
८	२१	७।१८	९।४१	१२।०३	२।२४	४।४७	७।०८	९।१०	१०।४९	१२।१४	१।३४	३।०५	४।५८
९	२२	७।१४	९।३७	११।५९	२।२०	४।४३	७।०४	९।०६	१०।४५	१२।१०	१।३०	३।०१	४।५४
१०	२३	७।१०	९।३३	११।५५	२।१६	४।३९	७।००	९।०२	१०।४१	१२।०६	१।२६	५।५७	४।५०
११	२४	७।०६	९।३०	११।५१	२।१२	४।३५	६।५६	८।५८	१०।३७	१२।०२	१।२२	२।५३	४।४७
१२	२५	७।०२	९।२६	११।४७	२।०८	४।३१	६।५२	८।५४	१०।३३	११।५८	१।१८	२।४९	४।४३
१३	२६	६।५८	९।२२	११।४३	२।०४	४।२७	६।४८	८।५०	१०।२९	११।५५	१।१४	२।४५	४।३९
१४	२७	६।५४	९।१८	११।३९	२।००	४।२३	६।४४	८।४७	१०।२५	११।५१	१।१०	२।४१	४।३५
१५	२८	६।५०	९।१४	११।३५	१।५६	४।१९	६।४०	८।४३	१०।२१	११।४७	१।०६	२।३७	४।३१
१६	२९	६।४६	९।१०	११।३२	१।५२	४।१५	६।३६	८।३९	१०।१८	११।४३	१।०२	२।३४	४।२७
१७	३०	६।४२	९।०६	११।२८	१।४८	४।१२	६।३३	८।३५	१०।१४	११।३९	१२।५८	२।३०	४।२३
१८	जुला. १	६।३८	९।०२	११।२४	१।४४	४।०८	६।२८	८।३१	१०।१०	११।३५	१२।५४	२।२६	४।१९
१९	२	६।३४	८।५८	११।२०	१।४०	४।०४	६।२४	८।२७	१०।०६	११।३१	१२।५०	२।२२	४।१५
२०	३	६।३०	८।५४	११।१६	१।३६	४।००	६।२१	८।२३	१०।०२	११।२७	१२।४६	२।१८	४।११
२१	४	६।२७	८।५०	११।१२	१।३२	३।५६	६।१७	८।१९	९।५८	११।२३	१२।४३	२।१४	४।०७
२२	५	६।२३	८।४६	११।०८	१।२८	३।५२	६।१३	८।१५	९।५४	११।१९	१२।३९	२।१०	४।०३
२३	६	६।१९	८।४२	११।०४	१।२५	३।४८	६।०९	८।११	९।५०	११।१५	१२।३५	२।०६	३।५९
२४	७	६।१५	८।३८	११।००	१।२१	३।४४	६।०५	८।०७	९।४६	११।११	१२।३१	२।०२	३।५५
२५	८	६।११	८।३४	१०।५६	१।१७	३।४०	६।०१	८।०३	९।४२	११।०७	१२।२७	१।५८	३।५१
२६	९	६।०७	८।३१	१०।५२	१।१३	३।३६	५।५७	७।५९	९।३८	११।०३	१२।२३	१।५४	३।४८
२७	१०	६।०३	८।२७	१०।४८	१।०९	३।३२	५।५३	७।५५	९।३४	१०।५९	१२।१९	१।५०	३।४४
२८	११	५।५९	८।२३	१०।४४	१।०५	३।२८	५।४९	७।५१	९।३०	१०।५६	१२।१५	१।४६	३।४०
२९	१२	५।५५	८।१९	१०।४०	१।०१	३।२४	५।४५	७।४८	१०५२	९।२६	१२।११	१।४२	३।३६
३०	१३	५।५१	८।१५	१०।३६	१२।५७	३।२०	५।४१	७।४४	९।२२	१०।४८	१२।०७	१।३८	३।३२
३१	१४	५।४७	८।११	१०।३३	१२।५३	३।१६	५।३७	७।४०	९।१९	१०।४४	१२।०३	१।३५	३।२८
३२	१५	५।४३	८।०७	१०।२९	१२।४९	३।१३	५।३३	७।३६	९।१५	१०।४०	११।५९	१।३१	३।२४
१ श्र.	१६	५।३९											

दैनिक लग्न तालिका श्रावण

श्रावण प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	जुला. १६	८।०३	१०।२५	१२।४५	३।०९	५।२९	७।३२	९।११	१०।३६	११।५५	१।२७	३।२०	५।३५
२	१७	७।५९	१०।२१	१२।४१	३।०५	५।२५	७।२८	९।०७	१०।३२	११।५१	१।२३	३।१६	५।३१
३	१८	७।५५	१०।१७	१२।३७	३।०१	५।२२	७।२४	९।०३	१०।२८	११।४७	१।१९	३।१२	५।२८
४	१९	७।५१	१०।१३	१२।३३	३।५७	५।१८	७।२०	८।५९	१०।२४	११।४४	१।१५	३।०८	५।२४
५	२०	७।४७	१०।०९	१२।२९	२।५३	५।१४	७।१६	८।५५	१०।२०	११।४०	१।११	३।०४	५।२०
६	२१	७।४३	१०।०५	१२।२६	२।४९	५।१०	७।१२	८।५१	१०।१६	११।३६	१।०७	३।००	५।१६
७	२२	७।३९	१०।०१	१२।२२	२।४५	५।०६	७।०८	८।४७	१०।१२	११।३२	१।०३	२।५६	५।१२
८	२३	७।३५	९।५७	१२।१८	२।४१	५।०२	७।०४	८।४३	१०।०८	११।२८	१२।५९	२।५२	५।०८
९	२२	७।३२	९।५३	१२।१४	२।३७	४।५८	७।००	८।३९	१०।०४	११।२४	१२।५५	२।५४	५।०४
१०	२३	७।२८	९।४९	१२।१०	२।३३	४।५४	६।५६	८।३५	१०।००	११।२०	१२।५१	२।४५	५।००
११		७।२४	९।४५	१२।०६	२।२९	४।५०	६।५२	८।३१	९।५७	११।१६	१२।४७	२।४१	४।५६
१२	२५	७।२०	९।४१	१२।०२	२।२५	४।४६	६।४९	८।२७	९।५३	११।१२	१२।४३	२।३७	४।५२
१३	२६	७।१६	९।३७	११।५८	२।२१	४।४२	६।४५	८।२३	९।४९	११।०८	१२।३९	२।३३	४।४८
१४	२७	७।१२	९।३४	११।५४	२।१७	४।३८	६।४१	८।२०	९।४५	११।०४	१२।३६	२।२९	४।४४
१५	२८	७।०८	९।३०	११।५०	२।१४	४।३४	६।३७	८।१६	९।४१	११।००	१२।३२	२।२५	४।४०
१६	३१	७।०४	९।२६	११।४६	२।१०	४।३०	६।३३	८।१२	९।३७	१०।५६	१२।२८	२।२१	४।३६
१७	१	७।००	९।२२	११।४२	२।०६	४।२६	६।२९	८।०८	९।३३	१०।५२	१२।२४	२।१७	४।३२
१८	२	६।५६	९।१८	११।३८	२।०२	४।२३	६।२५	८।०४	९।२९	१०।४८	१२।२०	२।१३	४।२९
१९	अग. ०३	६।५२	९।१४	११।३४	१।५८	४।१९	६।२१	८।००	९।२५	१०।४५	१२।१६	२।०९	४।२५
२०	४	६।४८	९।१०	११।३०	१।५४	४।१५	६।१७	७।५६	९।२१	१०।४१	१२।१२	२।०५	४।२१
२१	५	६।४४	९।०६	११।२७	१।५०	४।११	६।१३	७।५२	९।१७	१०।३७	१२।०८	२।०१	४।१७
२२	६	६।४०	९।०२	११।२३	१।४६	४।०७	६।०९	७।४८	९।१३	१०।३३	१२।०४	१।५७	४।१३
२३	७	६।३६	८।५८	११।१९	१।४२	४।०३	६।०५	७।४४	९।०९	१०।२९	१२।००	१।५३	४।०९
२४	८	६।३३	८।५४	११।१५	१।३८	३।५९	६।०१	७।४०	९।०५	१०।२५	११।५६	१।५०	४।०५
२५	९	६।२९	८।५०	११।११	१।३४	३।५५	५।५७	७।३६	९।०१	१०।२१	११।५२	१।४६	४।०१
२६	१०	६।२५	८।४६	११।०७	१।३०	३।५१	५।५३	७।३२	८।५८	१०।१७	११।४८	१।४२	३।५७
२७	११	६।२१	८।४२	११।०३	१।२६	३।४७	५।५०	७।२८	८।५४	१०।१३	११।४४	१।३८	३।५३
२८	१०	६।१७	८।३८	१०।५९	१।२२	३।४३	५।४६	७।२४	८।५०	१०।०९	११।४०	१।३४	३।४९
२९	१३	६।१३	८।३५	१०।५५	१।१८	३।३९	५।४२	७।२१	८।४६	१०।०५	११।३७	१।३०	३।४५
३०	१४	६।०९	८।३१	१०।५१	१।१५	३।३५	५।३८	७।१७	८।४२	१०।०१	११।३३	१।२६	३।४१
३१	१५	६।०५	८।२७	१०।४७	१।११	३।३१	५।३४	७।१३	८।३८	९।५७	११।२९	१।२२	३।३७
१ भा.	१६	६।०१											

पा. स्टै. समयानुसार लग्न समाप्तिकाल

जम्मू नगरीय दैनिक लग्न तालिका भाद्रपद

भाद्रपद प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१ अग.	१६	८।२३	१०।४३	१।०७	३।२७	५।३०	७।०९	८।३४	९।५३	११।२५	१।१८	३।३३	५।५७
२	१७	८।१९	१०।३९	१।०३	३।२४	५।२६	७।०५	८।३०	९।४९	११।२१	१।१४	३।३०	५।५३
३	१८	८।१५	१०।३५	१२।५९	३।२०	५।२२	७।०१	८।२६	९।४६	११।१७	१।१०	३।२६	५।४९
४	१९	८।११	१०।३१	१२।५५	३।१६	५।१८	६।५७	८।२२	९।४२	११।१३	१।०६	२।२२	५।४५
५	२०	८।०७	१०।२८	१२।५१	३।१२	५।१४	६।५३	८।१८	९।३८	११।०९	१।०२	३।१८	५।४१
६	२१	८।०३	१०।२४	१२।४७	३।०८	५।१०	६।४९	८।१४	९।३४	११।०५	१२।५८	३।१४	५।३७
७	२२	७।५९	१०।२०	१२।४३	३।०४	५।०६	६।४५	८।१०	९।३०	११।०१	१२।५४	३।१०	५।३४
८	२३	७।५५	१०।१६	१२।३९	३।००	५।०२	६।४१	८।०६	९।२६	१०।५७	१२।५१	३।०६	५।३०
९	२४	७।५१	१०।१२	१२।३५	२।५६	४।५८	६।३७	८।०२	९।२२	१०।५३	१२।४७	३।०२	५।२६
१०	२५	७।४७	१०।०८	१२।३१	२।५२	४।५४	६।३३	७।५९	९।१८	१०।४९	१२।४३	२।५८	५।२२
११	२६	७।४३	१०।०४	१२।२७	२।४८	४।५१	६।२९	७।५५	९।१४	१०।४५	१२।३९	२।५४	५।१८
१२	२७	७।३९	१०।००	१२।२३	२।४४	४।४७	६।२५	७।५१	९।१०	१०।४१	१२।३५	२।५०	५।१४
१३	२८	७।३६	९।५६	१२।१९	२।४०	४।४३	६।२२	७।४७	९।०६	१०।३८	१२।३१	२।४६	५।१०
१४	२९	७।३२	९।५२	१२।१६	२।३६	४।३९	६।१८	७।४३	९।०२	१०।३५	१२।२७	२।४२	५।०६
१५	३०	७।२८	९।४८	१२।१२	२।३२	४।३५	६।१४	७।३९	८।५८	१०।३०	१२।२३	२।३८	५।०२
१६	३१	७।२४	९।४४	१२।०८	२।२८	४।३१	६।१०	७।३५	८।५४	१०।२६	१२।१९	२।३४	४।५८
१७ सितं.	१	७।२०	९।४०	१२।०४	२।२५	४।२७	६।०६	७।३१	८।५०	१०।२२	१२।१५	२।३१	४।५४
१८	२	७।१६	९।३६	१२।००	२।२१	४।२३	६।०२	७।२७	८।४७	१०।१८	१२।११	२।२७	४।५०
१९	३	७।१२	९।३२	११।५६	२।१७	४।१९	५।५८	७।२३	८।४३	१०।१४	१२।०७	२।२३	४।४६
२०	४	७।०८	९।२९	११।५२	२।१३	४।१५	५।५४	७।१९	८।३९	१०।१०	१२।०३	२।१९	४।४२
२१	५	७।०४	९।२५	११।४८	२।०९	४।११	५।५०	७।१५	८।३५	१०।०६	११।५९	२।१५	४।३८
२२	६	७।००	९।२१	११।४४	२।०५	४।०७	५।४६	७।११	८।३१	१०।०२	११।५५	२।११	४।३५
२३	७	६।५६	९।१७	११।४०	२।०१	४।०३	५।४२	७।०७	८।२७	९।५८	११।५२	२।०७	४।३१
२४	८	६।५२	९।१३	११।३६	१।५७	३।५९	५।३८	७।०३	८।२३	९।५४	११।४८	२।०३	४।२७
२५	९	६।४८	९।०९	११।३२	१।५३	३।५५	५।३४	७।००	८।१९	९।५०	११।४४	१।५९	४।२३
२६	१०	६।४४	९।०५	११।२८	१।४९	३।५२	५।३०	६।५६	८।१५	९।४६	११।४०	१।५५	४।१९
२७	११	६।४०	९।००	११।२४	१।४५	३।४८	५।२६	६।५२	८।११	९।४२	११।३६	१।५१	४।१५
२८	१२	६।३७	८।५७	११।२०	१।४१	३।४४	५।२३	६।४८	८।०७	९।३९	११।३२	१।४७	४।११
२९	१३	६।३३	८।५३	११।१७	१।३७	३।४०	५।१९	६।४४	८।०३	९।३५	११।२८	१।४३	४।०७
३०	१४	६।२९	८।४९	११।१३	१।३३	३।३६	५।१५	६।४०	७।५९	९।३१	११।२४	१।३९	४।०३
३१	१५	६।२५	८।४५	११।०९	१।२९	३।३२	५।११	६।३६	७।५५	९।२७	११।२०	१।३५	३।५९
१ आ.	१६	६।२१											

दैनिक लग्न तालिका आश्विन

आश्विन प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१ सितं.	१६	८।४१	११।०५	१।२६	३।२८	५।०७	६।३२	७।५१	९।२३	११।१६	१।३२	३।५५	६।१७
२	१७	८।३७	११।०१	१।२२	३।२४	५।०३	६।२८	७।४९	९।१९	११।१२	१।२८	३।५१	६।१३
३	१८	८।३३	१०।५७	१।१८	३।२०	४।५९	६।२४	७।४५	९।१५	११।०८	१।२४	३।४७	६।०९
४	१९	८।३०	१०।५३	१।१४	३।१६	४।५५	६।२०	७।४०	९।११	११।०४	१।२०	३।४३	६।०५
५	२०	८।२६	१०।४९	१।१०	३।१२	४।५१	६।१६	७।३६	९।०७	११।००	१।१६	३।३९	६।०१
६	२१	८।२२	१०।४५	१।०६	३।०८	४।४७	६।१२	७।३२	९।०३	१०।५६	१।१२	३।३६	५।५७
७	२२	८।१८	१०।४१	१।०२	३।०४	४।४३	६।०८	७।२८	८।५९	१०।५३	१।०८	३।३२	५।५३
८	२३	८।१४	१०।३७	१२।५८	३।००	४।३९	६।०४	७।२४	८।५५	१०।४९	१।०४	३।२८	५।४९
९	२४	८।१०	१०।३३	१२।५४	२।५६	४।३५	६।०१	७।२०	८।५१	१०।४५	१।००	३।२४	५।४५
१०	२५	८।०६	१०।२९	१२।५०	२।५३	४।३१	५।५७	७।१६	८।४७	१०।४१	१२।५६	३।२०	५।४१
११	२६	८।०२	१०।२५	१२।४६	२।४९	४।२७	५।५३	७।१२	८।४३	१०।३७	१२।५२	३।१६	५।३८
१२	२७	७।५८	१०।२१	१२।४२	२।४५	४।२४	५।४९	७।०८	८।४०	१०।३३	१२।४८	३।१२	५।३४
१३	२८	७।५४	१०।१८	१२।३८	२।४१	४।२०	५।४५	७।०४	८।३६	१०।२९	१२।४४	३।०८	५।३०
१४	२९	७।५०	१०।१४	१२।३४	२।३७	४।१६	५।४१	७।००	८।३२	१०।२५	१२।४०	३।०४	५।२६
१५	३०	७।४६	१०।१०	१२।३०	२।३३	४।१२	५।३७	६।५६	८।२८	१०।२१	१२।३६	३।००	५।२२
१६ अक्तु.	१	७।४२	१०।०६	१२।२७	२।२९	४।०८	५।३३	६।५३	८।२४	१०।१७	१२।३३	२।५६	५।१८
१७	२	७।३८	१०।०२	१२।२३	२।२५	४।०४	५।२९	६।४९	८।२०	१०।१३	१२।२९	२।५२	५।१४
१८	३	७।३४	९।५८	१२।१९	२।२१	४।००	५।२५	६।४५	८।१६	१०।०९	१२।२५	२।४८	५।१०
१९	४	७।३१	९।५४	१२।१५	२।१७	३।५६	५।२१	६।४१	८।१२	१०।०५	१२।२१	२।४४	५।०६
२०	५	७।२७	९।५०	१२।११	२।१३	३।५२	५।१७	६।३७	८।०८	१०।०१	१२।१७	२।४०	५।०२
२१	६	७।२३	९।४६	१२।०७	२।०९	३।४८	५।१३	६।३३	८।०४	९।५७	१२।१३	२।३७	४।५८
२२	७	७।१९	९।४२	१२।०३	२।०५	३।४४	५।०९	६।२९	८।००	९।५४	१२।०९	२।३३	४।५४
२३	८	७।१५	९।३८	११।५९	२।०१	३।४०	५।०५	६।२५	७।५६	९।५०	१२।०५	२।२९	४।५०
२४	९	७।११	९।३४	११।५५	१।५७	३।३६	५।०२	६।२१	७।५२	९।४६	१२।०१	२।२५	४।४६
२५	१०	७।०७	९।३०	११।५१	१।५४	३।३२	४।५८	६।१७	७।४८	९।४२	११।५७	२।२१	४।४२
२६	११	७।०३	९।२६	११।४७	१।५०	३।२८	४।५३	६।१३	७।४४	९।३८	११।५३	२।१७	४।३८
२७	१२	६।५९	९।२२	११।४३	१।४६	३।२५	४।४९	६।०९	७।४१	९।३४	११।४९	२।१३	४।३४
२८	१३	६।५५	९।१९	११।३९	१।४२	३।२१	४।४५	६।०५	७।३७	९।३०	११।४५	२।०९	४।३१
२९	१४	६।५१	९।१५	११।३५	१।३८	३।१७	४।४१	६।०१	७।३३	९।२६	११।४१	२।०५	४।२७
३०	१५	६।४७	९।११	११।३१	१।३४	३।१३	४।३७	५।५७	७।२९	९।२२	११।३७	२।०१	४।२३
का. १	१६	६।४३											

भा. स्ट. समयानुसार लग्नसमाप्तिकाल

जम्मू नगरीय दैनिक लग्न तालिका
कार्तिक

कार्तिक प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	अक्तू. १६	९।०७	११।२८	१।३०	३।०९	४।३४	५।५३	७।२५	९।१८	११।३४	१।५७	४।१९	६।३९
२	१७	९।०३	११।२४	१।२६	३।०५	४।३०	५।५०	७।२१	९।१४	११।३०	१।५३	४।१५	६।३५
३	१८	८।५९	११।२०	१।२२	३।०१	४।२६	५।४६	७।१७	९।१०	११।२६	१।४९	४।११	६।३२
४	१९	८।५५	११।१६	१।१८	२।५७	४।२२	५।४२	७।१३	९।०६	११।२२	१।४५	४।०७	६।२८
५	२०	८।५१	११।१२	१।१४	२।५३	४।१८	५।३८	७।०९	९।०२	११।१८	१।४१	४।०३	६।२४
६	२१	८।४७	११।०८	१।१०	२।४९	४।१४	५।३४	७।०५	८।५८	११।१४	१।३८	३।५९	६।२०
७	२२	८।४३	११।०४	१।०६	२।४५	४।१०	५।३०	७।०१	८।५५	११।१०	१।३४	३।५५	६।१६
८	२३	८।३९	११।००	१।०२	२।४१	४।०६	५।२६	६।५७	८।५१	११।०६	१।३०	३।५१	६।१२
९	२४	८।३५	१०।५६	१२।५८	२।३७	४।०३	५।२२	६।५३	८।४७	११।०२	१।२६	३।४७	६।०८
१०	२५	८।३१	१०।५२	१२।५५	२।३३	३।५९	५।१८	६।४९	८।४३	१०।५८	१।२२	३।४३	६।०४
११	२६	८।२७	१०।४८	१२।५१	२।२९	३।५५	५।१४	६।४५	८।३९	१०।५४	१।१८	३।४०	६।००
१२	२७	८।२३	१०।४४	१२।४७	२।२६	३।५६	५।१०	६।४२	८।३५	१०।५०	१।१४	३।३६	५।५६
१३	२८	८।२०	१०।४०	१२।४३	२।२२	३।४७	५।०६	६।३८	८।३१	१०।४६	१।१०	३।३२	५।५२
१४	२९	८।१६	१०।३६	१२।३९	२।१८	३।४३	५।०२	६।३४	८।२७	१०।४२	१।०६	३।२८	५।४८
१५	३०	८।१२	१०।३२	१२।३५	२।१४	३।३९	४।५८	६।३०	८।२३	१०।३८	१।०२	३।२४	५।४४
१६	३१	८।०८	१०।२९	१२।३१	२।१०	३।३५	४।५४	६।२६	८।१९	१०।३५	१२।५८	३।२०	५।४०
१७	नवम्बर १	८।०४	१०।२५	१२।२७	२।०६	३।३६	४।५०	६।२२	८।१५	१०।३१	१२।५४	३।१६	५।३६
१८	२	८।००	१०।२१	१२।२३	२।०२	३।२७	४।४७	६।१८	८।११	१०।२७	१२।५०	३।१२	५।३३
१९	३	७।५६	१०।१७	१२।१९	१।५८	३।२३	४।४३	६।१४	८।०७	१०।२३	१२।४६	३।०८	५।२९
२०	४	७।५२	१०।१३	१२।१५	१।५४	३।१९	४।३९	६।१०	८।०३	१०।१९	१२।४२	३।०४	५।२२
२१	५	७।४८	१०।०९	१२।११	१।५०	३।१५	४।३५	६।०६	७।५९	१०।१५	१२।३९	३।००	५।२१
२२	६	७।४४	१०।०५	१२।००	१।४६	३।११	४।३१	६।०२	७।५६	१०।११	१२।३५	२।५६	५।१७
२३	७	७।४०	१०।०१	१२।०३	१।४२	३।०७	४।२७	५।५८	७।५२	१०।००	१२।३१	२।५२	५।१३
२४	८	७।३६	९।५७	११।५९	१।३८	३।०४	४।२३	५।५४	७।४८	१०।३	१२।२७	२।४८	५।०९
२५	९	७।३२	९।५३	११।५६	१।३४	३।००	४।१९	५।५०	७।४४	९।५९	१२।२३	२।४४	५।०५
२६	१०	७।२८	९।४९	११।५२	१।३०	२।५६	४।१५	५।४६	७।४०	९।५५	१२।१९	२।४१	५।०१
२७	११	७।२४	९।४५	११।४८	१।२७	२।५२	४।११	५।४३	७।३६	९।५१	१२।१५	२।३७	४।५७
२८	१२	७।२१	९।४१	११।४४	१।२३	२।४८	४।०७	५।३९	७।३२	९।४७	१२।११	२।३३	४।५३
२९	१३	७।१७	९।३७	११।४०	१।१९	२।४४	४।०३	५।३५	७।२८	९।४३	१२।०७	२।२९	४।४९
३०	१४	७।१३	९।३३	११।३६	१।१५	२।४०	३।५९	५।३१	७।२४	९।३९	१२।०३	२।२५	४।४५
१ मार्ग.	१५	७।१०											

दैनिक लग्न तालिका
मार्गशीर्ष

मार्ग शी. प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	नवम्बर १५	९।३०	११।३२	१।११	२।३६	३।५५	५।२७	७।२०	९।३६	११।५९	२।२१	४।४१	७।०५
२	१६	९।२६	११।२८	१।०७	२।३२	३।५२	५।२३	७।१६	९।३२	११।५५	२।१७	४।३७	७।०१
३	१७	९।२२	११।२४	१।०३	२।२८	३।४८	५।१९	७।१२	९।२८	११।५१	२।१३	४।३४	६।५७
४	१८	९।१८	११।२०	१२।५९	२।२४	३।४४	५।१५	७।०८	९।२४	११।४७	२।०९	४।३०	६।५३
५	१९	९।१४	११।१६	१२।५५	२।२०	३।४०	५।११	७।०४	९।२०	११।४३	२।०५	४।२६	६।४९
६	२०	९।१०	११।१२	१२।५१	२।१६	३।३६	५।०७	७।००	९।१६	११।४०	२।०१	४।२२	६।४५
७	२१	९।०६	११।०८	१२।४७	२।१२	३।३२	५।०३	६।५७	९।१२	११।३६	१।५७	४।१८	६।४१
८	२२	९।०२	११।०४	१२।४३	२।०८	३।२८	४।५९	६।५३	९।०८	११।३२	१।५३	४।१४	६।३७
९	२३	८।५८	११।००	१२।३९	२।०५	३।२४	४।५५	६।४९	६।०४	११।२८	१।४९	४।१०	६।३३
१०	२४	८।५४	१०।५७	१२।३५	२।०१	३।२०	४।५१	६।४५	९।००	११।२४	१।४५	४।०६	६।२९
११	२५	८।५०	१०।५३	१२।३१	१।५७	३।१६	४।४७	६।४१	८।५६	११।२०	१।४२	४।०२	६।२५
१२	२६	१०।४९	८।४६	१२।२८	१।५३	३।१२	४।४३	६।३७	८।५२	११।१६	१।३८	३।५८	६।२२
१३	२७	८।४२	१०।४५	१२।२४	१।४९	३।०८	४।४०	६।३३	८।४८	११।१२	१।३४	३।५४	६।१८
१४	२८	८।३८	१०।४१	१२।२०	१।४५	३।०४	४।३६	६।२९	८।४४	११।०८	१।३०	३।५०	६।१४
१५	२९	८।३४	१०।३७	१२।१६	१।४१	३।००	४।३२	६।२५	८।४०	११।०४	१।२६	३।४६	६।१०
१६	३०	८।३१	१०।३३	१२।१२	१।३७	२।५६	४।२८	६।२१	८।३७	११।००	१।२२	३।४२	६।०६
१७	दिसम्बर १	८।२७	१०।२९	१२।०८	१।३३	२।५३	४।२४	६।१७	८।३३	१०।५६	१।१८	३।३८	६।०२
१८	२	८।२३	१०।२५	१२।०४	१।२९	२।४९	४।२०	६।१३	८।२९	१०।५२	१।१४	३।३५	५।५८
१९	३	८।१९	१०।२१	१२।००	१।२५	२।४५	४।१६	६।०९	८।२५	१०।४८	१।१०	३।३१	५।५४
२०	४	८।१५	१०।१७	११।५६	१।२१	२।४१	४।१२	६।०५	८।२१	१०।४४	१।०६	३।२७	५।५०
२१	५	८।११	१०।१३	११।५२	१।१७	२।३७	४।०८	६।०१	८।१७	१०।४१	१।०२	३।२३	५।४६
२२	६	८।०७	१०।०९	११।४८	१।१३	२।३३	४।०४	५।५८	८।१३	१०।३७	१२।५८	३।१९	५।४२
२३	७	८।०३	१०।०५	११।४४	१।०९	२।२९	४।००	५।५४	८।०९	१०।३३	१२।५४	३।१५	५।३८
२४	८	७।५९	१०।०१	११।४०	१।०६	२।२५	३।५६	५।५०	८।०५	१०।२९	१२।५०	३।११	५।३४
२५	९	७।५५	९।५८	११।३६	१।०२	२।२१	३।५२	५।४६	८।०१	१०।२५	१२।४६	३।०७	५।३०
२६	१०	७।५१	९।५४	११।३२	१२।५८	२।१७	३।४८	५।४२	७।५७	१०।२१	१२।४३	३।०३	५।२६
२७	११	७।४७	९।५०	११।२९	१२।५४	२।१३	३।४५	५।३८	७।५३	१०।१७	१२।३९	२।५९	५।२३
२८	१२	७।४३	९।४६	११।२५	१२।५०	२।०९	३।४१	५।३४	७।४९	१०।१३	१२।३५	२।५५	५।१९
२९	१३	७।३९	९।४२	११।२१	१२।४६	२।०५	३।३७	५।३०	७।४५	१०।०९	१२।३१	२।५१	५।१५
३०	१४	७।३५	९।३८	११।१७	१२।४२	२।०१	३।३३	५।२६	७।४१	१०।०५	१२।२७	२।४७	५।११
१ पौ.	१५	७।३२											

भा. स्टै. समयानुसार लग्न समाप्तिकाल

दैनिक लग्न तालिका
पौष

पौष प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	दिस. १५	९।३४	११।१३	१२।३८	१।५७	३।२९	५।२२	७।३८	१०।०१	१२।२३	२।४३	५।०७	७।२८
२	१६	९।३०	११।०९	१२।३४	१।५४	३।२५	५।१८	७।३४	९।५७	१२।१९	२।३९	५।०३	७।२४
३	१७	९।२६	११।०५	१२।३०	१।५०	३।२१	५।१४	७।३०	९।५३	१२।१५	२।३६	४।५९	७।२०
४	१८	९।२२	११।०१	१२।२६	१।४६	३।१७	५।१०	७।२६	९।४९	१२।११	२।३२	४।५५	७।१६
५	१९	९।१८	१०।५७	१२।२२	१।४२	३।१३	५।०६	७।२२	९।४५	१२।०७	२।२८	४।५१	७।१२
६	२०	९।१४	१०।५३	१२।१८	१।३८	३।०९	५।०२	७।१८	९।४२	१२।०३	२।२४	४।४७	७।०८
७	२१	९।१०	१०।४९	१२।१४	१।३४	३।०५	४।५९	७।१४	९।३८	११।५९	२।२०	४।४३	७।०४
८	२२	९।०६	१०।४५	१२।१०	१।३०	३।०१	४।५५	७।१०	९।३४	११।५५	२।१६	४।३९	७।००
९	२३	९।०२	१०।४१	१२।०७	१।२६	२।५७	४।५१	७।०६	९।३०	११।५१	२।१२	४।३५	६।५६
१०	२४	८।५९	१०।३७	१२।०३	१।२२	२।५३	४।४७	७।०२	९।२६	११।४७	२।०८	४।३१	६।५२
११	२५	८।५५	१०।३३	११।५९	१।१८	२।४९	४।४३	६।५८	९।२२	११।४४	२।०४	४।२७	६।४८
१२	२६	८।५१	१०।३०	११।५५	१।१४	२।४५	४।३९	६।५४	९।१८	११।४०	२।००	४।२४	६।४४
१३	२७	८।४७	१०।२६	११।५१	१।१०	२।४२	४।३५	६।५०	९।१४	११।३६	१।५६	४।२०	६।४०
१४	२८	८।४३	१०।२२	११।४७	१।०६	२।३८	४।३१	६।४६	९।१०	११।३२	१।५२	४।१६	६।३६
१५	२९	८।३९	१०।१८	११।४३	१।०२	२।३४	४।२७	६।४२	९।०६	११।२८	१।४८	४।१२	६।३२
१६	३०	८।३५	१०।१४	११।३९	१२।५८	२।३०	४।३३	६।३९	९।०२	११।२४	१।४४	४।०८	६।२९
१७	३१	८।३१	१०।१०	११।३५	१२।५५	२।२६	४।१९	६।३५	८।५८	११।२०	१।४०	४।०४	६।२५
१८	जन. १	८।२७	१०।०६	११।३१	१२।५१	२।२२	४।१५	६।३१	८।५४	११।१६	१।३७	४।००	६।२१
१९	२	८।२३	१०।०२	११।२७	१२।४७	२।१८	४।११	६।२७	८।५०	११।१२	१।३३	३।५६	६।१७
२०	३	८।१९	९।५८	११।२३	१२।४३	२।१४	४।०७	६।२३	८।४६	११।०८	१।२९	३।५२	६।१३
२१	४	८।१५	९।५४	११।१९	१२।३९	२।१०	४।०३	६।१९	८।४३	११।०४	१।२५	३।४८	६।०९
२२	५	८।११	९।५०	११।१५	१२।३५	२।०६	४।००	६।१५	८।३९	११।००	१।२१	३।४४	६।०५
२३	६	८।०७	९।४६	११।११	१२।३१	२।०२	३।५६	६।११	८।३५	१०।५६	१।१७	३।४०	६।०१
२४	७	८।०३	९।४२	११।०८	१२।२७	१।५८	३।५२	६।०७	८।३१	१०।५२	१।१३	३।३६	५।५७
२५	८	८।००	९।३८	११।०४	१२।२३	१।५४	३।४८	६।०३	८।२७	१०।४८	१।०९	३।३२	५।५३
२६	९	७।५६	९।३४	११।००	१२।१९	१।५०	३।४४	५।५९	८।२३	१०।४५	१।०५	३।२८	५।४९
२७	१०	७।५२	९।३१	१०।५६	१२।१५	१।४७	३।४०	५।५५	८।१९	१०।४१	१।०१	३।२५	५।४५
२८	११	७।४८	९।२७	१०।५२	१२।११	१।४३	३।३६	५।५१	८।१५	१०।३७	१२।५७	३।२१	५।४१
२९	१२	७।४४	९।२३	१०।४८	१२।०७	१।३९	३।३२	५।४७	८।११	१०।३३	१२।५३	३।१७	५।३७
१ माघ	१३	७।४०											

दैनिक लग्न तालिका
माघ

माघ प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	जन. १३	९।१९	१०।४४	१२।०३	१।३५	३।२८	५।४३	८।०७	१०।२९	१२।४९	३।१३	५।३४	७।३६
२	१४	९।१५	१०।४०	११।५९	१।३१	३।२४	५।४०	८।०३	१०।२५	१२।४५	३।०९	५।३०	७।३२
३	१५	९।११	१०।३६	११।५६	१।२७	३।२०	५।३६	७।५९	१०।२१	१२।४१	३।०५	५।२६	७।२८
४	१६	९।०७	१०।३२	११।५२	१।२३	३।१६	५।३२	०।५५	१०।१७	१२।३८	३।०१	५।२२	७।२४
५	१७	९।०३	१०।२८	११।४८	१।१९	३।१२	५।२८	७।५१	१०।१३	१२।३४	२।५७	५।१८	७।२०
६	१८	८।५९	१०।२४	११।४४	१।१५	३।०८	५।२४	७।४७	१०।०९	१२।३०	२।५३	५।१४	७।१६
७	१९	८।५५	१०।२०	११।४०	१।११	३।०४	५।२०	७।४४	१०।०५	११।२६	२।४९	५।१०	७।१२
८	२०	८।५१	१०।१६	११।३६	१।०७	३।०१	५।१६	७।४०	१०।०१	१२।२२	२।४५	५।०६	७।०८
९	२१	८।४७	१०।१२	११।३२	१।०३	२।५७	५।१२	७।३६	९।५७	१२।१८	२।४१	५।०२	७।०४
१०	२२	८।४३	१०।०९	११।२८	१२।५९	२।५३	५।०८	७।३२	८।५३	१२।१४	२।३७	४।५८	७।०१
११	२३	८।३९	१०।०५	११।२४	१२।५५	२।४९	५।०४	७।२८	९।४९	१२।१०	२।३३	४।५४	६।५७
१२	२४	८।३५	१०।०१	११।२०	१२।५१	२।४५	५।००	७।२४	९।४६	१२।०६	२।२९	४।५०	६।५३
१३	२५	८।३२	९।५७	११।१६	१२।४८	२।४१	४।५६	७।२०	९।४२	१२।०२	२।२६	४।४६	६।४९
१४	२६	८।२८	९।५३	११।१२	१२।४४	२।३७	४।५२	७।१६	९।३८	११।५८	२।२२	४।४२	६।४५
१५	२७	८।२४	९।४९	११।०८	१२।४०	२।३३	४।४८	७।१२	६।३४	११।५४	२।१८	४।३८	६।४१
१६	२८	८।२०	९।४५	११।०४	१२।३६	२।२९	४।४४	७।०८	९।३०	११।५०	२।१४	४।३५	६।३७
१७	२९	८।१६	९।४१	११।००	१२।३२	२।२५	४।४१	७।०४	९।२६	११।४६	२।१०	४।३१	६।३३
१८	३०	८।१२	९।३७	१०।५७	१२।२८	२।२१	४।३७	७।००	९।२२	११।४२	२।०६	४।२७	६।२९
१९	३१	८।०८	९।३३	१०।५३	१२।२४	२।१७	४।३३	६।५६	९।१८	११।३९	२।०२	४।२३	६।२५
२०	फर. १	८।०४	९।२९	१०।४९	१२।२०	२।१३	४।२९	६।५२	९।१४	११।३५	१।५८	४।१९	६।२१
२१	२	८।००	९।२५	१०।४५	१२।१६	२।०९	४।२५	८।४८	९।१०	११।३१	१।५४	४।१५	६।१७
२२	३	७।५६	९।२१	१०।४१	१२।१२	२।०५	४।२१	६।४५	९।०६	११।२७	१।५०	४।११	६।१३
२३	४	७।५२	९।१७	१०।३७	१२।०८	२।०२	४।१७	६।४१	९।०२	११।२३	१।४६	४।०७	६।०९
२४	५	७।४८	९।१३	१०।३३	१२।०४	१।५८	४।१३	६।३७	८।५८	११।१९	१।४२	४।०३	६।०५
२५	६	७।४४	९।१०	१०।२९	१२।००	१।५४	४।०९	६।३३	८।५४	११।१५	१।३८	३।५९	६।०२
२६	७	७।४०	९।०६	१०।२५	११।५६	१।५०	४।०५	६।२९	८।५१	११।११	१।३४	३।५५	५।५८
२७	८	७।३६	९।०२	१०।२१	११।५२	१।४६	४।०१	६।२५	८।४७	११।०७	१।३०	३।५१	५।५४
२८	९	७।३३	८।५८	१०।१७	११।४९	१।४२	३।५७	६।२१	८।४३	११।०३	१।२७	३।४७	५।५०
२९	१०	७।२९	८।५४	१०।१३	११।४५	१।३८	३।५३	६।१७	८।३९	१०।५९	१।२३	३।४३	५।४६
३०	११	७।२५	८।५०	१०।०९	११।४१	१।३४	३।४९	६।१३	८।३५	१०।५५	१।१९	३।३९	५।४२
[illegible]	१२	७।२१											

जम्मू नगरीय दैनिक लग्न तालिका

फाल्गुन

फाल्गुन प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१फर.	१२	८।४६	१०।०५	११।३७	१।३०	३।४५	६।०९	८।३१	१०।५१	१।१५	३।३६	५।३८	७।१७
२	१३	८।४२	१०।०१	११।३३	१।२६	३।४२	६।०५	८।२७	१०।४७	१।११	३।३२	५।३४	७।१३
३	१४	८।३८	९।५८	११।२९	१।२२	३।३८	६।०१	८।२३	१०।४३	१।०७	३।२८	५।३०	७।०९
४	१५	८।३४	९।५४	११।२५	१।१८	३।३४	५।५७	८।१९	१०।४०	१।०३	३।२४	५।२६	७।०५
५	१६	८।३०	९।५०	११।२१	१।१४	३।३०	५।५३	८।१५	१०।३६	१२।५९	३।२०	५।२२	७।०१
६	१७	८।२६	९।४६	११।१७	१।१०	३।२६	५।४९	८।११	१०।३२	१२।५५	३।१६	५।१८	६।५७
७	१८	८।२२	९।४२	११।१३	१।०६	३।२२	५।४६	८।०७	१०।२८	१२।५१	३।१२	५।१४	६।५३
८	१९	८।१८	९।३८	११।०९	१।०३	३।१८	५।४२	८।०३	१०।२४	१२।४७	३।०८	५।१०	६।४९
९	२०	८।१४	९।३४	११।०५	१२।५९	३।१४	५।३८	७।५९	१०।२०	१२।४३	३।०४	५।०६	६।४५
१०	२१	८।११	९।३०	११।०१	१२।५५	३।१०	५।३४	७।५५	१०।१६	१२।३९	३।००	५।०३	६।४१
११	२२	८।०७	९।२६	१०।५७	१२।५१	३।०६	५।३०	७।५१	१०।१२	१२।३५	२।५६	४।४९	६।३७
१२	२३	८।०३	९।२२	१०।५३	१२।४७	३।०२	५।२६	७।४८	१०।०८	१२।३१	२।५२	४।५५	६।३७
१३	२४	७।५९	९।१८	१०।५०	१२।४३	२।५८	५।२२	७।४४	१०।०४	१२।२८	२।४८	४।५१	६।३४
१४	२५	७।५५	९।१४	१०।४६	१२।३९	२।५४	५।१८	७।४०	१०।००	१२।२४	२।४४	४।४७	६।३०
१५	२६	७।५१	९।१०	१०।४२	१२।३५	२।५०	५।१४	७।३६	९।५६	१२।२०	२।४०	४।४३	६।२६
१६	२७	७।४७	९।०६	१०।३८	१२।३१	२।४६	५।१०	७।३२	९।५२	१२।१६	२।३७	४।३९	६।२२
१७	२८	७।४३	९।०२	१०।३४	१२।२७	२।४३	५।०६	७।२८	९।४८	१२।१२	२।३३	४।३५	६।१८
१८	मार्च १	७।३९	८।५९	१०।३०	१२।२३	२।३९	५।०२	७।२४	९।४४	१२।०८	२।२९	४।३१	६।१४
१९	२	७।३५	८।५५	१०।२६	१२।१९	२।३५	४।५८	७।२०	९।४१	१२।०४	२।२५	४।२७	६।१०
२०	३	७।३१	८।५१	१०।२२	१२।१५	२।३१	४।५४	७।१६	९।३७	१२।००	२।२१	४।२३	६।०६
२१	४	७।२७	८।४७	१०।१८	१२।११	२।२७	४।५०	७।१२	९।३३	११।५६	२।१७	४।१९	६।०२
२२	५	७।२३	८।४३	१०।१४	१२।०७	२।२३	४।४७	७।०८	९।२९	११।५२	२।१३	४।१५	५।५८
२३	६	७।१९	८।३९	१०।१०	१२।०४	२।१९	४।४३	७।०४	९।२५	११।४८	२।०९	४।११	५।५४
२४	७	७।१५	८।३५	१०।०६	१२।००	२।१५	४।३९	७।००	६।२१	११।४४	२।०५	४।०७	५।५०
२५	८	७।१२	८।३१	१०।०२	११।५६	२।११	४।३५	६।५६	९।१७	११।४०	२।०१	४।०४	५।४६
२६	९	७।०८	८।२७	९।५८	११।५२	२।०७	४।३१	६।५२	९।१३	११।३६	१।५७	४।००	५।४२
२७	१०	७।०४	८।२३	९।५४	११।४८	२।०३	४।२७	६।४९	९।०९	११।३२	१।५३	३।५६	५।३८
२८	११	७।००	८।१९	९।५१	११।४४	१।५९	४।२३	६।४५	९।०५	११।२९	१।४९	३।५२	५।३५
२९	१२	६।५६	८।१५	९।४७	११।४०	१।५५	४।१९	६।४१	९।०१	११।२५	१।४५	३।४८	५।३१
३०	१३	६।५२	८।११	९।४३	११।३६	१।५१	४।१५	६।३७	८।५७	११।२१	१।४१	३।४४	५।२७
१ चैत्र	१४	६।४८											

भा. स्टै. समयानुसार लग्न समाप्तिकाल

दैनिक लग्न तालिका

चैत्र

चैत्र प्रविष्टे	अंग्रेजी तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि	घं मि
१	मार्च १४	८।०७	९।३९	११।३२	१।४७	४।११	६।३३	८।५३	११।१७	१।३८	३।४०	५।२३	६।४८
२	१५	८।०३	९।३५	११।२८	१।४४	४।०७	६।२९	८।४९	११।१३	१।३४	३।३६	५।१९	६।४४
३	१६	८।००	९।३१	११।२४	१।४०	४।०३	६।२५	८।४५	११।०९	१।३०	३।३२	५।१५	६।४०
४	१७	७।५६	९।२७	११।२०	१।३६	३।५९	६।२१	८।४२	११।०५	१।२६	३।२८	५।११	६।३६
५	१८	७।५२	९।२३	११।१६	१।३२	३।५५	६।१७	८।३८	११।०१	१।२२	३।२४	५।०७	६।३२
६	१९	७।४८	९।१९	११।१२	१।२८	३।५१	६।१३	८।३४	१०।५७	१।१८	३।२०	५।०३	६।२८
७	२०	७।४४	९।१५	११।०८	१।२४	३।४८	६।०९	८।३०	१०।५३	१।१४	३।१६	४।५९	६।२४
८	२१	७।४०	९।११	११।०५	१।२०	३।४४	६।०५	८।२६	१०।४९	१।१०	३।१२	४।५५	६।२०
९	२२	७।३६	९।०७	११।०१	१।१६	३।४०	६।०१	८।२२	१०।४५	१।०६	३।०८	४।५१	६।१६
१०	२३	७।३२	९।०३	१०।५७	१।१२	३।३६	५।५७	८।१८	१०।४१	१।०२	३।०५	४।४७	६।१३
११	२४	७।२८	८।५९	१०।५३	१।०८	३।३२	५।५३	८।१४	१०।३७	१२।५८	३।०१	४।४३	६।०९
१२	२५	७।२४	८।५५	१०।४९	१।०४	३।२८	५।५०	८।१०	१०।३३	१२।५४	२।५७	४।३९	६।०५
१३	२६	७।२०	८।५२	१०।४५	१।००	३।२४	५।४६	८।०६	१०।३०	१२।५०	२।५३	४।३६	६।०१
१४	२७	७।१६	८।४८	१०।४१	१२।५६	३।२०	५।४२	८।०२	१०।२६	१२।४६	२।४९	४।३२	५।५७
१५	२८	७।१२	८।४४	१०।३७	१२।५२	३।१६	५।३८	७।५८	१०।२२	१२।४२	२।४५	४।२८	५।५३
१६	२९	७।०८	८।४०	१०।३३	१२।४८	३।१२	५।३४	७।५४	१०।१८	१२।३९	२।४१	४।२४	५।४९
१७	३०	७।०४	८।३६	१०।२९	१२।४५	३।०८	५।३०	७।५०	१०।१४	१२।३५	२।३७	४।२०	५।४५
१८	३१	७।००	८।३२	१०।२५	१२।४१	३।०४	५।२६	७।४६	१०।१०	१२।३१	२।३३	४।१६	५।४१
१९	अप्रैल १	६।५७	८।२८	१०।२१	१२।३७	३।००	५।२२	७।४३	१०।०६	१२।२७	२।२९	४।१२	५।३७
२०	२	६।५३	८।२४	१०।१७	१२।३३	२।५६	५।१८	७।३९	१०।०२	१२।२३	२।२५	४।०८	५।३३
२१	३	६।४९	८।२०	१०।१३	१२।२९	२।५२	५।१४	७।३५	९।५८	१२।१९	२।२१	४।०४	५।२९
२२	४	६।४५	८।१६	१०।०९	१२।२५	२।४९	५।१०	७।३१	९।५४	१२।१५	२।१७	४।००	५।२५
२३	५	६।४१	८।१२	१०।०६	१२।२१	२।४५	५।०६	७।२७	९।५०	१२।११	२।१३	३।५६	५।२१
२४	६	६।३७	८।०८	१०।०२	१२।१७	२।४१	५।०२	७।२३	९।४६	१२।०७	२।०९	३।५२	५।१७
२५	७	६।३३	८।०४	९।५८	१२।१३	२।३७	४।५८	७।१९	९।४३	१२।०३	२।०६	३।४८	५।१४
२६	८	६।२९	८।००	९।५४	१२।०९	२।३३	४।५४	७।१५	९।३८	११।५९	२।०२	३।४४	५।१०
२७	९	६।२५	७।५६	९।५०	१२।०५	२।२९	४।५०	७।११	९।३४	११।५५	१।५८	३।४०	५।०६
२८	१०	६।२१	७।५३	९।४६	१२।०१	२।२५	४।४७	७।०७	९।३१	११।५१	१।५४	३।३७	५।०२
२९	११	६।१७	७।४९	९।४२	११।५७	२।२१	४।४३	७।०३	९।२७	११।४७	१।५०	३।३३	४।५८
३०	१२	६।१३	७।४५	९।३८	११।५३	२।१७	४।३९	६।५९	९।२३	११।४३	१।४६	३।२९	४।५४
१ वैशा. ह	१३	६।०९											

।। प्राचीन वर्षमान ३६५.२५८७५ द्वारा साधित वर्ष प्रवेश तालिका ।।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

।। अभिनव वर्षमान ३६५.२५६३६२८द्वारा सधित वर्ष प्रवेश तालिका ।।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	७	१	२	४	५	६	७	२	३
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२
विपल	५४	४८	४३	३७	३१	२६	२०	१४	९	३	५७	५२	४६	४१	३५	२९	२४	१८	१२	७	१	५६	५०	४४	३९

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	७	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९
पल	५५	१८	४१	४	२७	५०	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
विपल	३३	२७	२२	१६	१०	५	५९	५४	४८	४२	३७	३१	२५	२०	१४	८	३	५७	५८	४६	४३	३५	२९	२३	१८

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	७	१	२	४	५	६	७	२	३	४	५	७	१	२	३	५	६	७	१	३
घटी	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३
पल	२८	५१	१४	३६	५९	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५२	१५	३७
विपल	१८	६	१	५५	५०	४४	३८	३३	२७	२१	१६	१०	४	५९	५३	४८	४२	३६	३१	२५	१९	१४	८	२	५७

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	६	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	७	१	२	४	५	६
घटी	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४८	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८
पल	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८	१	२४	४७	१०
विपल	५१	४६	४०	३४	२९	२३	१७	१२	६	०	५५	४९	४४	३८	३२	२७	२१	१५	१०	४	५९	५३	४७	४२	३६

।। वर्ष फल-साधन ।।

वर्षेष्ट निर्माण के लिए नाना प्रकार के वर्षमान प्रचलित हैं। उनमें प्रसिद्ध चार प्रकार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

१. प्राचीन पद्धति अत्यन्त स्थूल हैं क्योंकि आजकल पञ्चांग प्रायः वेधसिद्ध वर्ष मान से चल रहे हैं।

२ जन्मकालिक सूर्य स्पष्ट के तुल्य वर्ष में सूर्य स्पष्ट आने पर उस समय का वर्षेष्ट भी स्थूल ही होता है।

३. अभिनव वर्षमान द्वारा साधित वर्ष प्रवेश तालिका द्वारा सिद्ध वर्षेष्ट सूक्ष्म के अति निकटवर्तीहुआ करता है।

४ आधुनिक पद्धति से सिद्ध जन्मकालिक सायन सूर्य के तुल्य वर्ष में सायन स्पष्ट सूर्य जब भी आए उस समय का वर्षेष्ट सिद्ध करके ही वास्तविक वर्षफल अत्यन्त सूक्ष्म माना जायेगा।

वर्ष प्रवेश साधन प्रकार: आधुनिक वर्षमान एवं सौर वर्षमान से साधित वर्ष प्रवेश तालिकाएं दी गई हैं उनमें दृश्य गणित द्वारा चलने वाली सभी शुद्ध पञ्चागों में आधुनिक वर्षमान से ही वर्षफल सही होने के कारण वर्तमान संवत् से जन्म संवत् घटाने पर अवशिष्ट शताब्द संख्या होगी। गताब्द संख्या के नीचे अभिनव वर्ष प्रवेश तालिका में वारादि ध्रुवक में जन्मकालिक वारादि इष्टकाल जोड़ने से (वर्षेष्ट) अभीष्ट वर्ष का वार इष्ट घट्यादि होगा। उस इष्ट के अनुसार स्वनगरीय लग्न तालिका से लग्न स्पष्ट करके पञ्चांग के ग्रहों सहित वर्ष कुण्डली निर्माण करें।

मुंथासाधन प्रकार: गताब्द संख्या में जन्म लग्न संख्या जोड़कर १२ से भाग दें। शेष तुल्य राशि संख्या पर मुंथा का न्यास करें।

हर्ष बलचक्रम: (१) स्थानबलम्: सूर्य वर्ष लग्न से९ वें,चन्द्रमा ३रे मगंल ६ठे, बुध वर्ष लग्न में,गुरु ११वें, शुक्र ५वें,शनि १२वें स्थान में हर्षित होते हैं। वर्ष में जो हर्षित हो वह पाँच बल ग्रहण करता है।

(२) स्वभोच्चबलम्: जो ग्रह स्वक्षेत्र (अपनी राशि) में अथवा अपनी उच्च राशि में हो वह पाँच बल का अधिकारी होता है।

(३) पुंस्त्रीबलम्: वर्ष कुण्डली में १, २, ३, ७, ८, ९ घरों में स्त्रीग्रह (चं.कु.शु.श) पाँच बल पाते हैं। एवं ४, ५, ६, १०, ११, १२ घरों में पुरुष ग्रह (सू.मं.बृ.) पाँच बल पाते हैं।

(४) दिवारात्रिबलम्: दिन में वर्ष प्रवेश होने पर पुरुष ग्रह पाँच बल ग्रहण करते हैं एवं रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर स्त्री ग्रह पाँच बल ग्रहण करते हैं।

मुद्दवशाचक्रम्: गताब्द संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर दो घटाकर ९ से तष्टित (भाग) करने पर शेष १ बचे तो सूर्य १८ दिन, दो से चन्द्र एक मास, ३ से मंगल २१ दिन, ४ से राहु १ मास २४ दिन, ५ से गुरु १ मास १८ दिन, ६ से शनि १ मास २७ दिन, ७ से बुध एक मास २१ दिन, ८ से केतु २१ दिन, ९ से शुक्र दो मास की विशोत्तरी मुद्दादशा जानें।

योगिनीमुद्दा दशा: गताब्द संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या एवं तीन जोड़कर ८ का भाग देवें, १ शेष से मंगला १० दिन, २ से पिंगला २० दिन, ३ से धान्या १ मास, ४ से भ्रामरी १ मास १० दिन, ५ से भद्रिका १ मास २० दिन, ६ से उल्का २ मास, ७ से सिद्धा २ मास १० दिन, ८ से संकटा २ मास २० दिन तक योगिनीमुद्दा दशा जानें।

पञ्चाधिकारी: (१) जन्मलग्न पतिः (२) वर्ष लग्न पतिः (३) मुंथापतिः (४) त्रिराशिपतिः (५) दिवा सूर्य राशि पति, रात्री चन्द्र राशि पतिः जानें।

त्रिराशिपतिः दिन में वर्ष प्रवेश होने पर मेषादि लग्नों के स्वामी सू. शु. श. शु. गु. चं. बु. मं. श. मं. गु. चं. एवं रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर गु. चं. कु. मं. सू. शु. शं. शु. श. मं. गु. च. से त्रिराशि पति होते हैं।

वर्षेतााजिक दृष्टि: ताजिक दृष्टि चार प्रकार की कही गई है (१) ५, ९ घर में प्रत्यक्ष बलवती स्निग्धा मित्रदृष्टि (२) ३, ११ घर में गुप्त मित्र दृष्टि (३) सप्तम भाव में प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि (४) चतुर्थ दशम में प्रत्यक्ष गुप्त शत्रु दृष्टि हुआ करती है।

वर्षेश्वर निर्णय: वर्षेश निर्णय में पञ्चवर्गी बल दृष्टि एवं अधिकार के आधार पर वर्षेश्वर निर्णय होता है, जो सबल अथवा लग्न को सबल दृष्टि से देखे वही वर्षेश जाने। यदि कोई अधिकारी वर्ष लग्न को न देखे तो बल के आधार पर वर्षेश होगा। बल समान होने पर वर्ष लग्न पर अधिक दृष्टि से वर्षाधिप जानना तीनों तत्व समान होने पर मुंथेश वर्षराट् जानें। बहुमत में अधिकाराधिक्य में वर्षराज जानें अथवा बलाधिक्य अथवा अधिक दृष्टि से वर्षेश जानें। किसी के मत से सर्वसम्मता होने पर दिवा सूर्य राशीश रात्री चन्द्र राशीश अथवा चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करने वाले को ही वर्षेश समझें।

त्रिपताकी चक्रम: तीन रेखा ऊर्ध्व, तीन तिरछी बनाकर उनके चारों ओर शिरो बिन्दु मिलाकर त्रिपताकी चक्र बना लें। वर्ष लग्न को मध्य में रखकर राशिन्यास करें। गत वर्ष संख्या में एक जोड़कर वर्ष प्रवेश संख्या बना लें। उसमें ९ का भाग देकर शेष तुल्य संख्या पर जन्म राशि से चन्द्रमा एवं वर्ष प्रवेश संख्या को चार से भाग देकर जन्मकुण्डली की अपनी अपनी राशि से अन्य ग्रहों का न्यास करें। राहुकेतु को विपरीत गिन कर लगायें। किसी आचार्य के मत से भौम, राहु केतु के लिए ६ का भाग दिया जाता है।

वर्ष प्रकारो:—प्रत्यब्दं चलितं चन्द्रो राहुभौमौ रसांकगौ। शेषा ग्रहाश्चत्वारि त्रिपदा चक्रमुदाहृतम्।। अस्यानुवादी मुहूर्त सिन्धुः—प्रवेशाब्दं नवतष्टं शेष राशौ जन्मतश्चन्द्रः। षट्तष्टे शेष राशौ विलोम राहुः सरलं भौमः अन्ये ग्रहाश्चतुर्भिस्तष्टा बोध्याः।।

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टदिनानि १-च	२-च	३-च	४-च	पूज्यवृक्षाः	धार्यौषधम्	पक्षिणः	कष्टलक्षणानि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यमन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
अश्विनी (दस्रनासत्यौ)	८	१२	१७	९	वृषः (विषः) (वासा)	अपामार्ग (ओंगा)	कपोतः	बुद्धिभ्रमः कण्डूज्वरः अनिद्रा, गात्रपीड़ा	तिलाः	आटे का अश्व गुडौदन सहित	ब्रह्मभोजनम्	ॐ यावांकशामधु मत्यश्विना सूनृता-वती। तया यज्ञमिमिक्षतम्।।	विष्कम्भः (यमः)	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहाघर्माय स्वाहाघर्मः पित्रे।।
भरणी (यमः)	५	१२	०	१९	परूषकः (आमलक.)	अगस्तिः	मयूरः	नाना व्याधि, अंगपीड़ा छर्दि रोगः, अरुचिः	घृतमधुगुड	भाषपिष्टिकामहिष खिचड़ी सहित	रक्तवस्त्रम्	ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुताहविः यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरङ्कृतः।।	प्रीतिः (विष्णुः)	ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा-अदोभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।
कृत्तिका (अग्निः)	९	१९	१४	१४	उदुम्बरः (रुम्बल)	कार्पासः	बकः	अतिदाहः, नेत्रपीड़ा उरुशूलप्रलापश्च	तिलाः	मसूर का मेष पायस सहित	दुग्धमिश्री	ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्यनस्पतिः मूर्धा कवीरयीणाम्।।	आयुष्मान् (चन्द्रमा)	ॐ सनो महांअनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धियेवाजाय हिन्वतु।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	११	८	१२	१२	जम्बू (जामुन)	अपामार्गः	सरटः	हिक्का, उदरशूलम्, दाहः त्रिदोषः।	घृतपायसम्	आटे का हंस तिल सहित	मधु	ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः सबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयो निमसतश्चविवः।।	सौभाग्य (ब्रह्मा)	ॐ एष ब्रह्मा यऋत्वियइन्द्रो नाम श्रुतोगृणे।।
मृगशीर्षम् (चन्द्रः)	५	१३	१५	१९	खदिरः (खैर)	जयन्ती	सरटः	दृष्टिदोषः, अर्धगात्रपीड़ा, क्लेशः	तिलदुग्धम्	आटे का मृग दुग्ध सहित	कृष्णगौः	ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् भवावाजस्य संगथे।।	शोभनः (बृहस्पतिः)	ॐ वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्। बृहस्पतिं वरेण्यम्।।
आर्द्रा (रुद्रः)	०	२	३२	११	कलिः (बहेड़ा)	चन्दनम् (अश्वत्थः)	गृध्रः	कटिपीड़ा, निद्राक्षयः, कम्पनं, भीतिः	मध्वाज्य	आटे का बैल दध्योदन सहित	कृष्णवस्त्र	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।	अतिगण्डः (राक्षसः)	ॐ वत्थाहि निर्ऋतीनां वज्रहस्तपरि वृजम् अहरहः शुन्धुः परिपदामि।।
पुनर्वसु (अदितिः)	११	१३	१५	३२	वंशः (बांस)	अर्कः	बकः	शिरः पीड़ा, कटि पीड़ा नेत्रदोषः, देवदोषः	घृतपायसम्	पिष्टी दम्पती अपूप सहित	कृष्ण वस्त्र	ॐ अनागसो अदितये देव सवितः सर्वे। विश्ववामानि धीमहि।।	सुकर्मा (इन्द्रः)	ॐ इन्द्र प्रातर्हवामेह इन्द्र प्रयत्यध्वरे। इन्द्रं सोमस्य पीतये।।
पुष्यम् (बृहस्पतिः)	८	१२	३०	१५	अश्वत्थः (पीपल)	तुषारः	पिकः	शीतविषमज्वरः, घोरकष्टं पाणिपादशैत्यम्	घृतदुग्धम्	आटे का पुरुष पायस सहित	तिल तैल	ॐ बृहस्पते जुषस्व नो हव्यानि विश्वदेव्य। रास्व रत्नानिदाशुषे।	धृतिः (आपः)	ॐ शन्नोदेवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।
आश्लेषा (सर्पः)	०	०	०	०	पुन्नागः (गंगरेन)	पटोलः	कपोतः	सन्निपातः, पादपीड़ा औषधवैफल्यम्	घृतपायसम्	त्रिशिरा सर्पः तिलमयः दुग्धयुतः	सुवर्णम्	ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः।।	शूलम् (सर्पः)	ॐ या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं रनु। ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	६	३	१८	३०	वटः (बोढ़)	भृंगराजः	काकः	हृच्छूल, अर्धगात्रपीड़ा दाहः डाकिनीदोषः	घृततिलाः	आटे का मनुष्य पञ्चान्न सहित	अन्नरौप्यम्	ॐ आधत्त पितरोगर्भंकुमारं पुष्कर स्रजम्। यथेह पुरुषो असत्।।	गण्डः (अग्निः)	ॐ सुसमिद्धाय शोचिषेघृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।।
पूर्वाफाल्गुनी (भगः)	६०	५	१२	९	पलाशः (ढाक)	कष्टकारी	चातकः	गात्रपीड़ा, दाहः देवदोषः कम्पनम्	घृतौदनम्	आटे की कन्या दुग्धोदनयुक्त	लौहम्	ॐ देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या। भगस्य रातिमीमहे।।	वृद्धिः (आदित्यः)	ॐ सनो विश्वाहासुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्। प्रण आयूं षितारिषत्।।
उत्तराफाल्गुनी (अर्यमा)	४	५	६	०	प्लक्षः (पिलखन)	पटोलः	शुकः	तीव्रज्वरः, महाकष्टम् हृच्छूलम्, कुलदेवदोषः	प्रयङ्गुघृतम्	आटे की दम्पती अन्न सहित	अन्नम्	ॐ वामं वामं त आसुरे देवो ददात्वर्यमा। वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूलती।।	ध्रुवः (भूमिः)	ॐ महामित्रस्य साधयस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परियज्ञं निषेदथु।।
हस्तः (सूर्यः)	२१	३०	३०	०	अरिष्टः (रीठा)	जाती	सरटः	भयंकर रोगः, प्रस्वेदः उदरदोषः	चर्वाज्यम्	आटे की स्त्री ओदनयुक्त	सुवर्णम्	ॐ सप्तत्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षण।।	व्याघातः (वायुः)	ॐ वायोशतं हरीणां युवस्यपोस्याणाम्। अतवाते महस्रिणो रथआयातु पाजस्य।।
चित्रा (त्वष्टा)	१२	२	८	१०	श्री वृक्ष (नारिकेल)	मरुबकः (मरुआ)	मालिका (मल्लिकः) हंसजातिः	चित्ररोगः कर्ण, ग्रीवा, [illegible]	तिलाज्यम्	मृन्मय पिशाच [illegible]	वस्त्रम्	ॐ आयन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा। [illegible] धातु वीरान्।।	हर्षणः (भगः)	ॐ भग भक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा। मूर्धानरायमारभे।।

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टविनानि १-च	२-च	३-च	४-च	पूज्यवृक्षाः	धार्यौषधम्	पक्षिणः	कष्टलक्ष्माणि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यमन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
स्वातिः (वायुः)	१२	६	८	७	अर्जुनः	जाती	पिङ्गलः	नाना व्याधिः श्लेष्मा, अंगपीडा, व्रण	घृतपायसम्	पिष्टिमृगमूर्तिः सप्तान्नसहिता	कृष्णवस्त्रम्	ॐ वायोयेते सहस्रिणो रथा सस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोम पतिये।।	वज्रः (वरुणः)	ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिर्ऊतिभिः।। करता नः सुराधसः।।
विशाखा (इन्द्राग्नी)	१०	१२	३०	०	पाहिकः (पाह)	गुञ्जा	कौशिकः	कुक्षिशूल, श्लेष्मव्याधिः, मुखकर्ण पीडा, मुग्धत्वम्	घृतौदनम्	आटे का अश्व पञ्चान्न सहित	रौप्यम्	ॐ इन्द्राग्नीआगत सुतगीभिर्नभोवरेण्यम्। अस्य पातन्धियेषित।।।	सिद्धिः (गणेशः)	ॐ गणनान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमजा निगर्भध त्वमजा सिगर्भधम्।।
अनुराधा (मित्रः)	१२	१३	४	१२	बकुलः (मौल श्री)	सुपुपम्	कोकिलः	मुदपीड़ा, भूतबाधा, शिरःपीड़ा ज्वरः।	त्रिमधु (गुड़, घृत, मधु)	आटे का सर्प चित्रान्न सहित	कृष्णवस्त्रम्	ॐ तानः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम्। मित्र साधयतं धियः।।	व्यतीपातः (रुद्रः)	ॐ पात नो रुद्रा पायुभिरूत त्रायेथा सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून् तनूभिः।।
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	१५	४०	६	१०	देवदारु (दयार)	अपामार्गः	कुक्कुटः	मार्गभीतिः कम्पन पित्त कोप, व्याकुलता	तिलपायसम्	आटे का हाथी पायस सहित	रौप्यम्	ॐ यत इन्द्रभयामहे ततो नो अ अभयं कृधि। मघवञ्छग्धितव तन्न उतये विद्विषो विमृधो जहि	वरीयान् (कुबेरः)	ॐ वयम् सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।
मूला (निर्ऋतिः)	०	२१	२६	३०	सर्जः (शाल)	मन्दारः	भ्रमरः	मुख, उदरदोष, स्त्री-देव-दोष, कण्ठावरोध	चर्वाज्यम्	आटे का अश्व सप्तान्नसहित	तिलस्वर्णम्	ॐ मोषुणः परा परा निर्ऋतिर्द् हणावधीत पदीष्ट तृष्णया सह।।	परिघः (त्वष्टा)	ॐ इहत्वष्टारमग्रिय विश्वरूपमुपह्वये। अस्माकमस्तु केवलः।।
पूर्वाषाढा (आपः)	१५	२२	४	०	जलवेतस् (बैंत)	कार्पासकः	तित्तिरिः	शिरः पीड़ा, कम्पनं छर्दिः, दुर्गन्धिः अङ्गशूल		पूर्ण कुम्भ अन्नसहित	तिलतैलम्	ॐ आपः प्रणीत भेषज वरूथ तन्वेमम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।	शिवः (मित्रः)	ॐ मित्र वयं हवामहे वरुण सोम पतिये। जज्ञाना पूतदक्षसा।।
उत्तराषाढा (विश्वेदेवाः)	२०	१५	१२	२५	पनसः (फालसा)	कार्पासकः	शुकः	प्रलाप, कटि उरुपीड़ा, ज्वरदोष त्रिदोषः	तिल पायसम्	आटे का मगरमच्छ तिलौदनसहित	कृष्णवस्त्रम्	ॐ विश्वेदेवास आगत श्रृणुता म इमं हवम्। एद बर्हिर्निषीदत।।	सिद्धः (स्कन्द)	ॐ तपन्ति शत्रु स्वर्ण भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम्।।
श्रवण (विष्णुः)	२०	१५	१२	२५	अर्कः (आक)	अपामार्गः	तित्तिरिः	अतिसारः, त्रिदोषः भूतदोषः स्वकृतव्याधिः	चर्वाज्यम्	आटे का गरुड पूर्णकुम्भ सहित	नवगृह	ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे।।	साध्यः (सावित्री)	ॐ युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितु सवे। स्वर्ग्याय शक्त्या।।
धनिष्ठा (गन्धर्वाः)	८	२०	१६	१०	शमी (जांटी)	भृंगराजः	काकः	मूत्रकृच्छ्र, अतिसारः वमनं, कुलदेवदोषः, ज्वरः	अश्वत्थसमित्	आटे का मकर अन्नघटसहित	तिलतैलम्	ॐ वसोः पवित्र मसिशतधार वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा काम धुक्षः।।	(शुभः) (लक्ष्मीः)	ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्ण्न्निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण।।
शतभिषा (वरुणः)	१०	१४	१४	२५	कदम्बः (कदम्ब)	कमलम्	कपोतः	सन्निपातज्वरः, व्याधिः, वाताधिक्य, वारुण दोषः	कूष्माण्डम्	आटे का पुरुष कुम्भ सहित	तिलतैलम्	ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्याच मृडय।। त्वामवस्यु राचके।।	(शुक्लः) (गौरी)	ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरापरमे व्योमन्।।
पूर्वाभाद्रपदा (अजैकपाद)	१०	१४	१९	२०	आम्रः (आम)	भृंगराजः	कलविङ्कः	त्रिदोषः, छर्दिः अङ्गपीडा जलदेवदोष	चर्वाज्यम्	कुश के विश्वेदेव अष्टदल पर अन्नयुक्त	रक्तवस्त्रम्	ॐ उतनोअहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वजएक पात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।।	ब्रह्म (कुमारी)	ॐ गोमद्दुणास्त्वाश्वावद्यातमश्विना। वर्ती रुद्रा नृपाय्यम्।।
उत्तराभाद्रपदा (अहिर्बुध्न्य)	११	०	३०	८	निम्बः (नीम)	अश्वत्थ	शुकः	कामलज्वरः, शूलम् अतिसारः क्षेत्रपालदोषः	कूष्माण्ड	आटे का शिव बिल्वपत्र युक्त	रौप्यम्	ॐ मा नोअ हिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्यस्त्रिधदृतायोः।।	ऐन्द्रः (पितरः)	ॐ मनो न्वाह्वामहे नाराशं सेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः।।
रेवती (पूषा)	१	११	२	३०	मधूकः (महआ)	अश्वत्थ	बर्हिः (मयूरः)	उरुशूलम्, चित्तभ्रमः भीतिः, वातपित्तज्वरः	घृतपायसम्	कुमारी प्रतिमा कुम्भ सहित	कांस्यपात्रम्	ॐ पूषन् तवव्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इहस्मसि।।	वैधृतिः (दितिः)	ॐ त्वमग्ने वीर वद्यशसंदेवश्च सविता भगः। दितिश्चदातिवार्यम्।।

।। वर-वधू मेलापक सारणी ।।

वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रह मैत्र-५, गण-६, भकूट-७, नाड़ी-८, न्यून दोष-+, अधिक दोष-−, ७-द्वि, न, ष, (द्वि-द्विर्द्वादश, न-नवपंचम, ष-षडष्टक)

कन्याराशि	वरराशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ	भ	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ	पुन ३	पुन १	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू. फा.	उ.फा. १	उ.फा. ३	ह.	चि. २
मेष	अ	२८ ८	३३	२७॥ +६	१८॥ +१,६,द्वि	२१ +१,द्वि	२२॥ +१,द्वि	२६ +१	१७ −१,८	१९ −१,८	२३॥ −८	३१॥	२८ +६	२१ +२न	२५ +२न	१५ −न८	११ −१ष८	१० −१ष८	१३ −१,६,ष
	भ	३४	२८ +८	२९ +६	१९ +१,६,द्वि	२२॥ +१,द्वि	१४॥ −१,द्वि८	१८ −१,८	२६ +१	२७ +१	३१॥	२३॥ +८	२५॥ +६	२० +२,६न	१८ −२न८	२६ +२न	२१॥ −१ष	२० −१ष	५ −१,६ष८
	कृ. १	२७॥ +६	२९ +६	२८ −८	१८ +१,द्वि८	११ −१,६द्वि८	१७॥ −१,६द्वि	२१ +१,६	२० −१,६	२१ −१,६	२५॥ +६	२६॥ −८	२३॥ −८	१४॥ −२,न८	१८ +६न	२० +२,६न	१५॥ −१,६ष	१५॥ −१,६ष	१८ −१ष
वृष	कृ. ३	१८॥ +६द्वि	२० +६द्वि	१९ +द्वि८	२८ ८	२१ +६,८	२७॥ +६	१८॥ +१,६द्वि	१७॥ +१,६द्वि	१८॥ +१,६द्वि	२२ +६	२३ +६	२० −८	१६॥ −२,५,८	२० +२,६	२२ −२,६	२१ +६न	२१ +६न	२३॥ +न
	रो.	२३॥ +द्वि	२३॥ −द्वि	१२ −६द्वि८	२१ +६,८	२८ +८	३६	२७ +१द्वि	२३॥ +१द्वि	२३॥ +१द्वि	२७	२८	१३ −६,८	१०॥ −२,५,६,८	२४॥ +२	२६ +२	२५ +न	२६ +न	२० +६न
	मृ. २	२३॥ +१द्वि	१४॥ −द्वि८	१८॥ −६द्वि	२८॥ +६	३५	२८ +८	१९ +१,द्वि८	२४ +१द्वि८	२३॥ +१द्वि	२७	२० −८	२२ +६	१९॥ +२,५,६	१५॥ −२,८	२३॥ +२	२२॥ +न	२६ +न	१३ −६न८
मिथुन	मृ. २	२७	१८ −८	२३ +६	२०॥ +द्वि	२७ +द्वि	२० +द्वि८	२८ ८	३३	३२॥	२० +द्वि	१३ +द्वि८	१५ −६द्वि	२३॥ +२,६	१९॥ −२,८	२७॥ +२	३०॥	३४	२१ +६,८
	आ	१९ −८	२७	२१ ६	१८॥ +६द्वि	२४॥ +द्वि	२६ +द्वि	३४	२८ +८	२५ +८	१२॥ −द्वि८	२० +द्वि	१३ −६द्वि	२२॥ −२,६	२८ +२	२१॥ +२,८	२४॥ +८	२४॥ +८	२७ +६
	पुन. ३	१९ −८	२६	२३ +६	२०॥ +६द्वि	२३॥ +द्वि	२४॥ +द्वि	३२॥	२४ +८	२८ +८	१५॥ −द्वि८	२२॥ +द्वि	१७ −६द्वि	२२॥ +२,४,६	२६॥ +२,४	२०॥ −२,८	२३॥ +८	२४॥ +८	२६॥ +६
कर्क	पुन. १	२१॥ −८	२८॥ +१	२५॥ +१,६	२२ +१,६	२५ +१	२६ +१	१९ −१द्वि	१०॥ −१द्वि८	१४॥ +१द्वि८	२८ +८	३५	२९॥ +६	१६॥ १,४,द्वि	२०॥ +१,४,द्वि	१४॥ −द्वि८	१७ −१,८	१८ −१,८	२० +१
	पुष्य	३०॥	२१॥ −१,८	२६॥ −१,६	२३ +१,६	२६ +१	१९ +१,८	१२ −१द्वि,८	१८ −१द्वि	२१॥ −१द्वि	३५	२८ +८	३० +६	१७॥ +१,६द्वि	१३॥ −१द्वि८	२३॥ +द्वि,१	२६ +१	२७ +१	१२ +१,६,८
	श्ले.	२५ +६	२३॥ −१,६	२२॥ −१,८	१९ −१,८	१२ −१,६,८	२० +१,६	१३ −१,६द्वि	१२ १,६,द्वि	१५ −१,६,द्वि	२८॥ +६	२९ +६	२८ +६	१५ −१,२,४,८	१५॥ −१,४,६द्वि	१७॥ +१,६द्वि	२० −१,६	२० −१,६	२५ +१
सिंह	मघा.	१९ +२,६,न	१९ +२,६,न	१५॥ −२,न,८	१६॥ −१,२,५,८	९॥ −१२५६८	१७॥ −१,२,५,६	२१॥ −१,२,६	२१॥ −१,२,६	२०॥ −१,२,४,६	१६॥ +४,६,द्वि	१८॥ +६द्वि	१६ −४द्वि८	२८ +८	३० +६	२६॥ +६	१५॥ −१,२,६,द्वि	१५॥ −१,द्वि६	२१ −१,२द्वि
	पू.फा.	२५ +२न	१७ −२न८	१९ +२,६न	२० −१,२,५,६	२३॥ −१,२,५	१५॥ −१,२,५,८	१९॥ −१,२,८	२७॥ +१,२	२६॥ −१,२,४	२२॥ +४द्वि	१६॥ −द्वि८	१६॥ +४,६द्वि	३० +६	२८ +८	३४	२३ −१,२,द्वि	२१॥ −१,२,द्वि	७॥ −१,२,६द्वि८
	उ.फा. १	१६॥ −२न८	२५ +२न	२० +२,६न	२१ −१,२,५,६	२५ −१,२,५	२३॥ −१,२,५,८	२७॥ −१,२	२०॥ −१,२,८	२०॥ −१,२,८	१६॥ −द्वि८	२५॥ −द्वि	१८॥ +६द्वि	२६॥ +६	३४	२२ −८	१७ +१,२द्वि८	१७ −१,२द्वि८	१३॥ −१२४६द्वि
कन्या	उ.फा. ३	१३ ष ८	२१॥ −ष	१६॥ −६ष	२१ +६न	२५ +न	२३॥ +न	३०॥ +१	२३॥ +१,८	२३ +१,८	१९ −८	२८	२१ +६	१६॥ −२,४,६द्वि	२४ द्वि	१८ +द्वि८	२२ +८	२७ +८	२४॥ +४,६
	ह.	१० −४ष८	२० −ष	१७॥ −६ष	२२ +६ष	२५ +न	२६ +न	३३ +१	२२॥ +१,८	२३॥ +१,८	१९ −८	२८	२२ +६	१७॥ −२,६द्वि	२१॥ द्वि	१६ −२द्वि ८	२६ +८	२९ +८	२८ +६
	चि. २	१३ +६ष	६ −६ष८	१९ −ष	२३॥ +न	२० +६न	१२ −६,न,८	१९ −१,६,८	२६ +१,६	२४॥ +१,६	२० +६	१२ −६,८	२६	२२॥ −२द्वि८	८॥ −२,६द्वि८	१४॥ −२,४,६द्वि	२७ +६	२७ +६	२८ +८

।। वर-वधू मेलापक सारणी ।।

वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रह मैत्र-५, गण-६, भकूट-७, नाड़ी-८, न्यून दोष-+, अधिक दोष-–, ७-द्वि, न, ष, (द्वि-द्विर्द्वादश, न-नवपंचम, ष-षडष्टक)

राशि	वरस्य →	तुला			वृश्चिक			धनु:				मकर				कुम्भ			मीन		
		चि. २	स्वा	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.।।	पू.षा.३।।	उ.षा १	उ.षा ३	श्र. १।।	श्र. २।।	ध. २	ध. २	शत.	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रेवती
मेष	अ	२२।। −६	२७।। +१	२२।। +१	१८।। +६ष	२५।। +ष	१४ ६षद	१३ −६नद	२५ +न	२६ +न	२४।। +न	२६ −१	२७ १	२६ १	२० +१,६	२० +१,६	१५ −१,६,८	१६ −१,८	१४।। −द्विद	२४।। +द्वि	२६ +द्वि
	भ	१४।। −१,६,८	२९।। +१	२२।। +१,६	१८।। +६ष	१६।। +षद	१८।। +षद	२० +६नद	१९ −नद	२० −नद	२७ न	२८।। १	२७ १	२६ १	१० −१४६८	१० −१४६८	२० +१,६	२४ +१,४	२२।। +४द्वि	१७।। −द्विद	२६।। +द्वि
	कृ. १	२७।। +१	१५।। −१,६,८	१९।। +१,८	१५।। +षद	१९।। +६ष	२५।। +ष	२४।। +न	१७।। +६न	१९ +४,६,न	१४ ६नद	१५।। १,६,८	१२।। १,४,६,८	११।। १,४,६,८	२५ +१	२५ +१	२७ +१	१९ −१,६	१७।। +६द्वि	१९।। +६द्वि	११।। −६द्विद
वृष	कृ. ३	२२।। +१ष	१०।। −१,६षद	१४।। +१,८ष	२०।। −८	२४।। +६	३०।।	२० −ष	१३ −५,६ष	१४।। ४,६ष	९।। ६षद	१४ ६नद	११ ४,६नद	१० ४,६नद	२३।। +न	२९।। +१	३१।। +१	२३।। +१,६	२० +६	२२ +६	१४ −६,८
	रो	१९ +१,६ष	१५।। +१षद	९।। +१,६ष	१५।। −६,८	२९।।	२३।। +६	१४ −ष	१९।। ष	२१ +ष	१२।। षद	१७ ४नद	१९ नद	१८ नद	२० +६न	२६ +१,६	२४।। +१,६	३०।। +१	२७	२६	१९ −८
	मृ. २	१२ १,६षद	२५ +१ष	१८।। +१,६ष	२४।। ६+	२९।। −८	२४।। +६	१५ −६ष	१०।। −षद	१२ षद	१८ ५ष	२२।। ५न	२७ न	२६ न	१३ −६नद	१९ −१,६,८	२७ +१,६	२९।। +१	२६	१७ −८	२७
मिथुन	मृ. २	१४ −६षद	२७ +न	२०।। +६न	१५ −६ष	१२ −षद	१५ −६ष	२३ −६	१९ ८	१८	२४ −४	२०।। ४ष	२५ ष	२४।। ष	११।। −६षद	१२ −६नद	२१ ६न	२३।। +ष	२५।।	१६।। −८	२६।।
	आ	२० +६न	२७ +न	२० +६न	१५।। −६ष	१८ −४ष	४ −४,६षद	१६ −६,८	२८	२७	२७	२३।। ष	२३।। ष	२३ ष	१७।। −६ष	१९ −६न	१२ −६नद	१७ −नद	१९ −८	२६।।	२६।।
	पुन. ३	१९।। +६न	२७ +न	२१ +६न	१५।। −६ष	२९।। −ष	७ ६षद	१४ −६,८	२७	२६	२६	२२।। ष	२३।। ष	२३ ष	१८ −६ष	१९।। −६न	१३ −६नद	१७ −नद	१९ −८	२७	२६।।
कर्क	पुन. १	१९।। +१	२७ +१	२१ +१,६	१९ +६न	२५ +न	१०।। −६नद	८ −६षद	२१ +१ष	२१।। १ष	२१।। १,ष	२५ १	२६ १	२७ −१,	२२ −१,६ष	१३।। १,६षद	७ −१षद	११ −नद	१७ −न	२५ +न	२४।।
	पुष्य	११।। +१,८	२६।। +१	२१ +१,६	१९ +६न	१८ −नद	२१ +न	१७ +१,६ष	११ +४षद	११।। १,४षद	२२।। १ष	२६ १	२४ १,४	२५ १	१३ १,६,८	४।। −१,६ष	१४।। १,६ष	१८ −१ष	२४ +न	१८ −नद	२७ +न
	श्ले	२४।। +१	११।। −१,६,८	१६।। −१,८	१४।। −नद	१९ −६न	२५ +न	२२।। +१ष	१६ −१,६ष	१६।। १,६ष	८।। १,६षद	१२ १,६,८	१२ १,६,८	१३ १,६,८	२७ −१	१८।। −१ष	१८।। −१ष	१२।। −१,६ष	१८।। −६न	२० −६न	१२ −६नद
सिंह	मघा.	२४।। +१,२	१०।। −१२६८	१६।। −१,२,८	२२।। −८	३४।। +२,६	३२ +२	२४ +२न	१९ २,६न	१९ २,६न	१९।। २,६नद	३।। १२५६षद	३।। १२५६षद	४।। १५६षद	१७।। −१ष	२३।। −१,२	२४।। −१,२	१७।। −१,२,६	१७।। +६ष	१८।।	१२ −६नद
	पू.फा.	१०।। −१२६८	२४।। +१,२	१८।। +१,२,६	२४।। +२,६	२२।। −२,८	२४।। +२,६	१८ +२,६न	१७ २नद	१७ २नद	२५ २न	१९ १,२,५ष	१७।। १,२,५ष	१८।। १,५ष	३।। १,६षद	९।। −१२६८	१८।। −१,२,६	२३।। −१,२	२३।। +ष	१६।। −षद	२४।। +ष
	उ.फा.	१ −१२४५६	१६।। +१,२	२५।। −१२४६	१६।। +१,४,६	२२।। +२	३१।। −२,६,७	१७।। −२,६न	९।। २न	२५।। +२न	२५।। २न	२६ १,२,५ष	२० १,२,५ष	१९ १,५ष	२० −१,६ष	११।। −१,२,६	१७।। −१२६८	११।। −१,२,८	१५।। −षद	१५।। +ष	२६।। +ष
कन्या	उ.फा.	३ +४,६द्वि	१६।। +१द्वि	२५।। +१४६द्वि	१६।। −४,६	१९	२८ −६,८	१४ −६,८	१४	२९।।	२८।।	२९।। न	२६ न	२५ न	२४।। ६न	१६ −१,६ष	१६।। −१,६ष	१०।। −१षद	१४।। −८	१७।।	२८।।
	ह.	२० +१,६द्वि	२६।। +१द्वि	१८।। +१,६द्वि	२१ +६	२७	१४ −६,८	१५ −६,८	२७	२६	२७।।	२४ न	२५ न	२४।। न	२०।। −६न	२१ −१,६ष	९।। १,६षद	१५।। १षद	१८।। −८	२६।।	२७।।
	चि. २	२० +१द्विद	१९ +१,६द्वि	२६।। +१द्वि	२९	१३ −६,८	२७	२७	१३ ६,८	१२ ६,८	२१ ६	१७।। ६न	१८ ६न	१७।। ६न	१६।। नद	१७ १षद	२४ +१ष	१७।। −१,६ष	२०।। +६	१०।। −४,६,८	२०।। +६

।। वर-वधू मेलापक सारणी ।।

भाग-३

वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रह मैत्र-५, गण-६, भकूट-७, नाड़ी-८, न्यून दोष-+, अधिक दोष-—, ७-द्वि, न, ष, (द्वि-द्विर्द्वादश, न-नवपंचम, ष-षडष्टक)

कन्यायाः ↓	वरस्य →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ	भ	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ	पुन ३	पुन १	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	ह.	चि.२
तुला	चि.२	२२।। +६	१५।। -६,८	२८।।	२३।। +ष	२० +६ष	१२ -६ष८	१३ ६न८	२० -६न	१८।। +६न	१९।। +६	११।। -६,८	२५।।	२५ +२,५	११।। -२,६,८	१७।। -२,४,७	१७।। +४,६द्वि	२० +६द्वि	२१ +द्वि८
	स्वाती	२८।। -४	२९।।	१७।। -६,८	१२।। +६ष८	१५।। +ष८	२६ +ष	२७ +न	२६ +न	२७ +न	२८	२७।।	१३।। -८	१२।। -२,६,८	२४।। +२	२५।। +२	२५।। +द्वि	२७।। +द्वि	२१ +६द्वि
	विशा.३	२२।। +६	२३।। ६	२०।। -८	१५।। +ष८	१०।। ६ष८	१८।। +६ष	१९।। +६न	२० +६न	२० +६न	२१ +६	२१ +६	१७।। -८	१७।। +२,८	१९।। -६	१७।। -२,६	१७।। -४,६द्वि	१८।। +६द्वि	२७।। +द्वि
वृश्चिक	विशा.१	१६।। +ष	१७।। +१,६ष	१४।। -१ष८	१९।। १,८	१४।। -१,६,८	२२।। +१,६	१३ +१,६ष	१३।। -१,६ष	१३।। -१,६ष	१८ +६न	१८ -६न	१४।। -न८	२१।। +१,२,८	२३।। +१,६	२१।। +२,४,६	१८ -१,४,६	१९ +१,६	२८ +१
	अनु.	२४।। +ष	१४।। -१ष८	१९।। +६ष	२४।। +१,६	२७।। +१	२०।। +१,६	११ -१ष८	१६ -१,४ष	२०।। -१ष	२५ +न	१८ -न८	२० न	२४।। +१,२,६	२०।। -१,८	२९।। +१,२,७	२६ +१	२६ +१	१२ -१,८
	ज्ये.	१२ -६ष८	१७।। +१,६ष	२४।। -१ष	२९।। +१	२२।। +१,६	२२।। +१,६	१३ -१,६ष	३ १,४,६ष८	५ -१,६ष८	९।। -६न८	२० -६न	२५ न	३१ +१,२	२३।। +१,२,६	१६।। -१,२,८	१३ -६,८	१२ -१,६,८	२५ +१
धनु	मूल	१२ -६न८	२० +६न	२४।। +न	१९ -ष	१३ -१,६ष	१३ -१,६ष	२१ -१,६,	१५ -१,६,८	१२ -१,६,८	८ -६ष८	१९ +६ष	२३।। +ष	२४ +२न	१८ +२,६न	९।। -२,६,न८	१३ -१,६,८	१३ १,६,८	२६ +१
	पू.षा.।।	२६ +न	१९ न८	१८ +४,६न	१२।। -१,४,६ष	१९ -१ष	११ -१ष८	१९ -१,८	२७ -१	२७ -१	२३ +ष	१३ -४ष८	१७ ६ष	१९ +२,६न	१७ २न८	२५ -२न	२८।। +१	२७	१२ -१,६,८
	पू.षा.३।।	२७ +न	२० न८	१९ ४,६न	१३।। १,४,६ष	२० १ष	१२ १ष८	१८ -१,८	२६ -१	२६ -१	२३।। +ष	१३ -४ष८	१७।। ६ष	१९ -२,६न	१७ -२न८	२५ २न	२७ +१	२६ +१	११ -१,६,८
	उ.षा.१	२५।।	२७ न	१४ ६न८	८।। १,६ष८	११।। १,४ष८	१८ १,४ष	२४ -१,४	२६	२६ -१	२३।। +ष	२४ +ष	९।। ६ष८	९।। २,६न८	२५ +२न	२६ -२न	२८।। +१	२७।। +१	२० -१,६
मकर	उ.षा.३	२८	२९।।	१६।। ६,८	१४ ६,न,८	१७ ४न८	२३।। ४न	२०।। १,४ष	२२।। +१ष	२२।। +१ष	२७	२८	१३ ६,८	४।। २,५,६ष८	२० २,५ष	२१ २,५ष	२६ +न	२५ न	१७।। -६न
	श्रव.१।।	२८	२८	१४।। ४,८	१२ ४न८	१८ न८	२७ न	२४ १ष	२१।। १ष	२२ +१ष	२७	२५ +४	१४ ८	५।। २,५ष८	१७।। २,५ष	१९ २,५ष	२४ +२	२५ न	१९ न
	श्रव.२।।	२७	२७	१३।। ४,८	११ ४न८	१७ न८	२६ न	२३।। १ष	२१ १ष	२२ +१ष	२८	२६ ४	१५ ८	६।। ५ष८	१८।। ५ष	२० ५ष	२३।। +न	२४।। न	१८।। न
	धनि.२	२० ६	११ -४,६,८	२६	२३।। न	२० +न६	१२ ६न८	९।। १,६ष८	१६।। ६ष	१६ १,६ष	२२ +६	१३ ६,८	२८	१८।। ५ष	४।। ५,६ष८	१२।। ५,६ष	१६ +६न	१९।। ६न	१६।। न८
कुम्भ	धनि.२	२० ६	११ -४,६,८	२६	३०।।	२७ +६	१९ ६,८	१२ -६,न८	१९ -६न	१८।। +६न	१३।। -ष	४।। ६ष८	१९।। -ष	२४।। +२,५	१०।। -२,६,८	१८।। २,५,६	१७।। -६ष	२१ -६ष	१८ -ष८
	शतभि.	१५ +६,८	२१ +६	२८	३२।।	२५।। +६	२७ +६	२० +६न	१२ -६न८	१३ -६न८	८ -६ष८	१४।। -६ष	२०।। -ष	२६।। +२,५	२०।। -२,६	१२।। -२,५,६,८	११।। -६ष८	९।। -६ष८	२५ +ष
	पू.भा.३	१८ -८	२५ +४	२० +६	२४।। +६	३१।।	३१।।	२४।। +न	१७ -न८	१८ -न,८	१३ -ष८	२० -ष	१३।। -६ष	१८।। २,५,६	२४।।	१६।। -२,८	१५।। -ष८	१७।। -ष८	१८।। -६ष
मीन	पू.भा.१	१४।। १द्वि८	२१।। +१,४द्वि	१६।। +१,६द्वि	१९ १,६	२६ +१	२६ +१	२५।। -१	१८ -१,८	१९ -१,८	१८ -न८	२५ -न	१८।। +६न	१६।। +१,६ष	२२।। +१ष	१४।। -१ष८	१६।। -१,८	१८ -१,८	१९।। -१,६
	उ.भा.	२४।। +द्वि१	१५।। -१द्वि८	१८।। +१,६द्वि	२१ -१,६	२५ +१	१७ [illegible]	१६।। [illegible]	२५।। [illegible]	२७ [illegible]	२६ [illegible]	१९ [illegible]	२० [illegible]	१७।। +१,६ष	२५।। -१ष८	२५।। +१ष	२७।। +१	२६।। +१	९।। -१,४,६,८
	रेवती	२५ +१द्वि	२४।। +१द्वि	११।। १द्वि८	१४ -१,६,८	१७ +१,८	२६ +१	२५।। -१	२४।। -१	२६।। +१	२५।। +न	२७ +न	१४ -६न८	१३ -१,६ष८	२३।। +१ष	२३।। +१ष	२५।। +१	२६।। +१	२०।। +१,६

वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रह मैत्र-५, गण-६, भकूट-७, नाड़ी-८, न्यून दोष-+, अधिक दोष-–, ७-द्वि, न, ष, (द्वि-द्विर्द्वादश, न-नवपंचम, ष-षडष्टक)

कन्यायाः ↓	वरस्य →	तुला			वृश्चिक			धनुः				मकर				कुम्भ			मीन		
		चि. २	स्वा	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.।।	पू.षा.३।।	उ.षा १	उ.षा ३	श्र. १।।	श्र. २।।	ध. २	ध. २	शत.	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रेवती
तुला	चि. २	२८ ८	२७ +६	३४।।	२४।। +द्वि	८।। −६द्वि८	२२ +द्वि	२७	१३ −६,८	१२ −६,८	२१ −६	२५।। +६	२६ +६	२५।। +६	२४।। −८	१९ −न८	२६ +न	१९।।	१३।। −६ष	३।। −४,६ष८	१३।। −६ष
	स्वाती	२८ +६	२८ ८	२० +८	१० −६द्वि८	२२।। +द्वि	१७।। +६द्वि	२३ +६	२७	२६	१८ −८	२२।। −८	२३।। −८	२३ −८	२८।। +६	२३ +६न	२१ +६न	२७ +न	२१ −ष	१९।। −ष	१२।। −ष८
	विशा. ३	३४।।	१९ +६,८	२८ ८	१८ +द्वि८	१८ −६द्वि	२२।। +द्वि	२७	२१ −६	२० −६	१३ −६,८	१७।। −६,८	१६।। −६,८	१६ −६,८	३१	२५।। +न	२६ +न	२१ +६न	१५ −६ष	१३ −४,६ष	५।। −६ष८
वृश्चिक	विशा. १	२३।। −१द्वि	८ १,६द्वि८	१७ +१द्वि८	२८ +८	२८ +६	३२।।	२२।। +१द्वि	१५।। १,२,६द्वि	१६।। १,६द्वि	९।। −२,६द्वि८	१२ −१,६,८	११ १,६,८	११ −१,६,८	२६ +१	२६ −१	२६।। −१	२१।। −१,६	२० −६ष	१८ +४,६न	१०।। ६न८
	अनु.	७।। −१द्वि८	२१।। −१द्वि	१७ −१,६द्वि	२८ +६	२८ +८	३१ +६	१६।। +१,६द्वि	१३ १,२द्वि८	१४।। १द्वि८	२२।। +१द्वि	२५ +१	२६ +१	२६ +१	१३ −१,३,८	१३ −१,६,८	२२ −१,६	२६।। −१	२५ +न	१८ −न८	२६ +न
	ज्ये.	२० −१द्वि	१५।। −१,६द्वि	२०।। −१द्वि	३१।।	३० +६	२८ +८	१५ −१द्वि ८	१६।। १,२,६द्वि	१७।। १,६द्वि	१७।। +१,६द्वि	२० +१,६	२० +१,६	२० +१,६	२६ +१	२६ −१	१९ −१,८	१२ −१,६,८	१०।। −६न८	२१ +६न	२० +६न
धनुः	मूल	२६ +१	२१ +१,६	२६ +१	२३।। +द्वि	१६।। +४,६द्वि	१६ −४द्वि८	२८ +८	२८ +६	२७ +६	२५।। +६	१५।। −१,६द्वि	१५।। १,६द्वि	१५ १,६द्वि	२० +द्वि	२८।। +१	२१।। −१,८	१४।। −१,६,८	१६ +६,८	२५ +६	२६।। +६
	पू.षा।।	१२ −१,६,८	२७ +१	२० −१,६	१७।। +६द्वि	१६।। −द्वि८	१८।। +६द्वि	२८ +६	२८ +८	२७	३३	२३ +द्वि१	२३।। +१द्वि	२३ +१द्वि	८ −१,६द्वि८	१६।। −१,६,८	२३।। −१,६	३०।। +१	३२	२३ +८	३२
	पू.ष.२।।	११ −१,६,८	२६ −१	१९ −१,६	१७।। +६द्वि	१६।। −द्वि८	१८।। +६द्वि	२७ +६	२६ +८	२८ +८	३४	२४ +१द्वि	२४।। +१द्वि	२३।। +१द्वि	८।। −१,६द्वि८	१५।। १,६,८	२२।। +१,६	२९ +१	३२	२३ +८	३२।।
	उ.षा. १	२० −१,६	१८ −१,८	१२ −१,६	१०।। −६द्वि८	२४।। +द्वि	१८।। +६द्वि	२५।। +६	३३।।	३५	२८ −८	१८ +द्वि८	१६ +१द्वि८	१५ १द्वि८	१५।। −१,६द्वि	२२।। +१,६	२२।। +१,६	२८।। +१	३१।।	३२।।	२३।। +८
मकर	उ.षा ३	२४।। १,६+	२२।। −१,८	२६।। −१,६,८	१३ −६,८	२७	२१ −६	१६।। −६द्वि	२४।। −न	२६ द्वि	१९ +द्वि८	२८ +द्वि	२६ +८	२५ +८	२५।। −६	१७।। +१,६द्वि	१७।। १,६द्वि	२३।। −१द्वि	२९।।	३०।।	२१।। −८
	श्रव. १।।	२६ −१	२२।। −१,८	१६।। −१,८	१३ −८	२७	२२ +६	१७ +द्वि	२३ द्वि	२४।। द्वि	१६ −द्वि८	२५ +८	२८ +८	२७ +८	२९	२१ −१,६द्वि	१८।। −१द्वि	२३।। −१द्वि	२९।।	२८।।	२२।। −८
	श्रव. २।।	२५।। १	२२ −१,८	१६ १,६,८	१३ −८	२७	२२	१७ −६द्वि	२३ द्वि	२३।। द्वि	१५ द्वि८	२४ +८	२७ ८	२८ ८	३०	२०।। १द्वि	१८ +१द्वि६	२३ −१द्वि	३०।।	२९।।	२३।। −८
	धनि. २	२३।। १,८	२६।। +१,६	३० +१	२७	१३ −६,८	२७	२१ −द्वि	९ ६द्वि८	८।। ६द्वि८	१६।। द्वि८	२५।। +६	२७ ६	२८ −६	२८ −८	१८।। +१द्वि८	२३।। १द्वि	१९ १,६द्वि	२६।। +६	१५।। −६,८	२२।। −४,६
कुम्भ	धनि २	१९ −न८	२२ +६न	२५।। +न	२७	१३ −६,८	२७	२९।।	१७।। ८	१५।। −६,८	२३।। +६	१८।। +६द्वि	२० +६द्वि	१९।। ६द्वि	१८।। +द्वि८	२८ +८	३३	२८।। +६	१८ +६द्वि	७ −६द्वि८	१४ −२,६द्वि
	शतभि.	२६ +न	२० +६न	२६ +न	२७।।	२२ +६	२० −८	२२।। −८	२४।। −६	२३।। −६	२३।। +६	१८।। +६द्वि	१८।। ६द्वि	१८।। +६द्वि	२४।। +द्वि	३३	२८ +८	१९ +६,८	८।। −६द्वि८	१७ −६द्वि	१६ +६द्वि
	पू.भा. ३	१९।। +६न	२८ +न	२१ +६न	२२।। +६	२८।।	१३ −६,८	१५।। −६,८	३१।।	२९।।	२९।।	२४।। +द्वि	२४।। +द्वि	२४ द्वि	२० +द्वि६	२८।। +६	१९ +६,८	२८ +८	१७।। −द्वि८	२२।। +द्वि	२० −४द्वि
मीन	पू.भा. १	१२।। −१,६ष	२१ −१ष	१४ −१,६ष	२० +६न	२६ +न	१०।। −६न८	१५ −१,६,५	३१ −१	३०।।	३० +१	२८।। +१	२८।। +१	२९।। +१	२५।। +१,६	१७ −१,६द्वि	७।। −१,६द्वि८	१६।। +१द्वि८	२८ −८	३३	३०।। +४
	उ.भा.	२।। −१४६ष८	१९।। −१ष	१२ −१४६ष	१८ +४,६न	१९ −न८	२१ −६न	२४ +१,६	२२ १,८	२२।। १,८	३१।। +१	२९।। +१	२८।। +१	२९।। +१	१४।। −१,६,८	६ −१,६द्वि	१६ १,६द्वि	२१।। −१द्वि	३३	२८ +८	३४
	रेवती	१३।। −१,६ष	११।। १ष८	५।। −१,६ष८	११।। −६न८	२६ +न	२१ +६न	२६।। −१,६	३० −१	२९।। −१	२१।। +१,८	१९।। −१,८	२०।। −१,८	२१।। +१	२२।। +१,४,६	१६ −१,६द्वि	१६ −१,६द्वि	१८ −१,४द्वि	२९।। +४	३४	२८ +८

वरुणः पवनश्चैवधनाध्यक्षस्तथाशिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।
कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः ।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्चमातरः ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तुदेवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुध जीव सिताऽर्कजाः ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥
अस्त्राणि सर्वे शस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एतेत्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

देवविसर्जनम्—ओं उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा स चा ॥
ओं यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छस्वाहा ।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा ॥
ओं यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामिकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थ पुनरागमनाय च ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणा देव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
ओं विश्व शान्तिः । ओं विश्व शान्तिः । ओं विश्वशान्तिः ॥

❀ अथ अवभृथ स्नान विधिः ❀

तीर्थे गत्वा अवभृथ स्नानार्थं प्रधान देवता कलशं प्रधान यन्त्रं कुण्डाद् भस्मभृद्घटं पूजन सामग्रीं गृहीत्वाचार्यादि समस्तर्त्विग्भिः परिवृतः स्वकीय स्त्री पुत्रपौत्रादि परिवार जनैः सह मङ्गलवाद्य घोष पुरः सरं यजमानो जलाशयं गच्छन्नर्धमार्गे क्षेत्रपालाय बलिदानं दद्यात् ।

भूमि सम्प्रोक्षणम्:—ओं आपोहिष्ठा मयोभुवः० इति संप्रोक्ष्य सपत्नीकः तीर्थाभिमुखः उदङ्मुखः पूर्वाभिमुखोतिष्ठेत् ॥
ततः आचम्य प्राणानायम्य हस्ते जलं गृहीत्वा—

सङ्कल्पः—ओं मया कृतस्य सग्रहमखामुक कर्मणः सम्पूर्णं फल प्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिपरिवार जनैः ज्ञातिगौरवासिभिश्च परिवृतः अस्मिँस्तीर्थे अवभृथ स्नानमहंकरिष्ये ।

कलश स्थापन—ततो गणपतिं पूजयित्वा स्वस्ति पुण्याह वाचनार्थं विरचित-स्याष्टदलस्य मध्ये एकं कलशं निधाय पुण्याह वाचनोक्त विधिना पुण्य कलशं स्थापयेत् ॥

वरुणावाहनम्—ओं तत्वायामि०

प्रतिष्ठाः—ओं मनोजूति० ।

प्रार्थना:— ओं जलाधिप समागच्छ परिवार समन्वितः ।
अस्मिन्कुम्भे करिष्यामि यावत्पूजां स्थिरो भव ॥

तत्राष्टदलस्य पूर्वादितः क्रमेणाऽऽवाहनं स्थापनञ्च:—

ओं मत्स्यं नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि च ॥१॥ ओं कूर्मं नमः कूर्मीम्० ओं वाराहीं० ॥ ओं माण्डूकीं० ॥ ओं मकरीं० ॥ ओं ग्राहवीं० ॥ ओं कौञ्चिवीं० ॥ एवमक्षतैः जलमातृः संस्थाप्य "ओं मनोजूतिः" इति प्रतिष्ठाप्य "ओं मत्स्यादि मातृभ्यो नमः" इत्यनेन यथालब्धोपचारैः आवाहनादिषोडशोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ ततो यजमानो जलाशयं गत्वा तीर्थे "ओं तत्वायामि०" इति मन्त्रेण आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य तस्मिन् स्थितानां मत्स्यादि जीवानां सन्तोषार्थं चणकादींश्च निक्षिप्य तीर्थे स्थितानां गङ्गादि देवानां प्रीतये पुरुष सूक्तं पठन् दुग्धेनाभिषेकं जले कुर्यात् । ततस्तीर्थे जले आज्यस्य स्रुवेण द्वादशाहुतिदद्यात् ॥

ओं अद्भ्यः स्वाहा । इदमद्भ्यो न मम ।। ओं वार्म्यः० । ओं उदकाय० । ओं तिष्ठन्तीभ्यः० । ओं स्रवन्तीभ्यः० । ओं स्यन्दमानाभ्यः० । ओं कूप्याभ्यः० । ओं सूद्याभ्यः० । ओं धार्याभ्यः० । ओं अर्णवाय० । ओं समुद्राय० । ओं सरिराय स्वाहा । इदं सरिराय न मम ।।

यन्त्र निमज्जनम्—ततः सपत्नीको यजमानः "ओं यन्त्राधिष्ठित देवताभ्यो नमः ।" इति सम्पूज्य प्रधान यन्त्रं हस्ते गृहीत्वा तीर्थं जले निमज्जेत् ।। तत उन्मज्य प्रधान कलशादर्धं जलं कुण्डादानीतं भस्म च तीर्थे निक्षिप्या र्धंजलसमन्वितं कलशं तीर्थ जलेन सम्पूर्य किंचित भस्मादाय "ओं प्रसद्य० "इति पठन्ननुलिप्याऽऽचार्यादिभिः पुत्रपौत्रादिभिर्ज्ञातृभिः पौर वासिभिश्च सह तस्मिस्तीर्थे स्नायात् ।।

मन्त्रः—ओं अवभृथनिचम्पुणः । अवदेवैर्देवकृतमेनो यासिषभवमर्त्यै मर्त्य कृतम्पुरुराव्णो पुर्वरिह स्पाहि देवानां ँ समिदसि ।।

सूर्य नमस्कारः—ओं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

तीर्थम्—ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि० ।।

ततो तीर्थाद्बहिरागत्य नवानि वस्त्राणि धृत्वा वस्त्र युग्ममाचार्याय दत्वा तीर्थ तटे स्थितेभ्यो ब्राह्मणेभ्य आचार्यादिभ्यश्च दक्षिणया सन्तोष्य सजलं प्रधान कलशं यन्त्रम् अविशिष्टं भस्मआदाय मङ्गलवाद्य घोष-पुरस्सरं मण्डपमागत्य प्रधान पीठे प्रधान कलशं यन्त्रञ्च संस्थाप्य भस्म पुनः कुण्डे प्रक्षिप्यावशिष्टं कर्म च समापयेत् ।

।। इति अवभृथ स्नानविधिः ।।

श्री राम मन्त्रराज जप होम विधानम्

विनियोगः—अस्य षडक्षर श्री राममन्त्रराजस्य सुयज्ञो भगवान् वशिष्ठ ऋषिः एकपदीगायत्रीछन्दः श्री राम परमात्मा देवता राँ बीजम् नमः शक्तिः रामाय कीलकम् श्री सीता राम प्रीत्यर्थे श्री राममन्त्रराज जपे (होमे) विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—ओं वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमो मुखे । श्री रामदेवतायै नमो हृदि । रां बीजाय नमो नाभौ । नमः शक्तये नमो गुह्ये । श्री राम कीलकाय नमः पादयोः ।

मन्त्रन्यासः—रां नमः शिरसि । रा नमो मुखे । मा नमो भुजयोः । य नमो हृदये । न नमो उपस्थे (लिङ्गे) । मः नमः पादयोः ।

हृत्करन्यासौ—ओंरां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) । ओं रामायतर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ओं नमो मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) । ओं रां अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुम्) । ओं रामाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्र त्रयाय वौषट्) ओं नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्) ।

ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः । मूल मन्त्रेण व्यापकत्रयम् ।।

ध्यानम्—कालाम्भोधर कान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासितं ।
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरां रक्ताम्बुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभं राघवं ।
पश्यन्तं मुकुटाङ्गदादि विबुधान् कलोज्ज्वलाङ्गं भजे ।।

मूल मन्त्रः—ओं रां रामाय नमः ।

❁ अथ सन्तान गोपालमन्त्रः ❁

ॐ अस्य सन्तानगोपालमन्त्रस्य नारदर्षिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णो देवता पुत्रप्राप्त्यर्थेजपेविनियोगः । ॐ नारदर्षये शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे मुखे कृष्ण देवतायै हृदि । इति ऋष्यादिन्यासः । ॐ देवकीसुत अंगुष्ठाभ्यां । गोविन्द तर्जनीभ्यां । वासुदेव मध्यमाभ्यां । जगत्पते अनामिकाभ्यां । देहि मे तनयं कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां । त्वामहं शरण गतः करतल कर-पृष्ठाभ्यां नमः । कर न्यासः एवं हृदयादिः ।

ध्यानम्—विजयेन युतोरथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः ।
प्रददत्तनयान्द्विजातमने स्मरणीयो वसुदेव नन्दनः ।।

मूलमन्त्रः—ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।। पंचलक्षजपः कार्यः ।

इति वैष्णवयागविधिः ।

मुहूर्त्तप्रकरणम्

आद्यरजोदर्शनम्—मास- वै. ज्ये. श्रा. आश्वि. माघ. फा.। तिथि- १(कृ) २,३,५,७,१०,११,१२,१३ वार- चं. बु. गु. शु.। नक्षत्र- अश्वि-रो. मृ. पु. उत्तरा ३ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रे। लग्न-२,३,४,६,७,९,१२ विशेष—रिक्ता. अमावस्या. ग्रहण. व्यतिपात, वैधृति यह सब शुभ कृत्यों में वर्जित हैं। शुभ तिथि१(कृ) २,३,५,७,१०,११,१२,१३, (शु) १५ शुभवार—सोरू-बु. गु. शु. तद्भिन्न क्रूर वार समझें। शुभ ग्रहों की राशियां सर्वत्र शुभ लग्न मानी गई हैं।

रजस्वलास्नानम्—शुभ तिथि शुभवार। नक्षत्र—अश्वि-रो-मृ-पुन-पुष्य-उत्तरा ३-ह-चि स्वा-अनु-ज्ये-मू-ध-रे। इन नक्षत्रों में चतुर्थ दिन के पश्चात् स्नान उचित है।

गर्भाधान मुहूर्त्तः—शुभ तिथि एवं शुभवार। नक्षत्र—रो. मृ उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श लग्न पुत्रार्थी विषम राशि विषम नवांशोदित लग्न में कन्याकांक्षी तद्विपरीत लग्नों में सहवास करें। विशेषः—स्त्री पुष्पवती होने से ७वें दिन के पश्चात् १७वें दिन तक केवल बारह दिन ही गर्भ धारण योग्य होती है। इन्हीं दिनों के भीतर स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न, सूर्य और चन्द्र जिन नक्षत्रों में हों उन तीनों के नक्षत्रों में लग्न के नक्षत्र से ७वें, १४वें, २१वें नक्षत्र में जब गोचर में चन्द्रमा आवे। स्त्री के चन्द्र नक्षत्र में और १४वें नक्षत्रों में गोचर गत चन्द्र आने पर एवं सूर्य नक्षत्र पर तथा उसके १४वें नक्षत्र पर गोचरगत चन्द्र आवे तो गर्भाधानमुहूर्त्त समझना। उस दिन से एकदिन आगे पीछे भी गर्भाधान सम्भव है। अन्यथा नहीं। अतः मास भर में तीन दिन मात्र ही गर्भ-धारण के योग्य हैं। स्त्री की कुण्डली न होने पर उससे उत्पन्न संतान की कुण्डली में भी उसी ढंग से विचार करें। यथेष्ट समय में सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं। —ज्योतिष रहस्य काशी।

कृत्यम्—अद्यैतस्याः पत्न्याः प्रथम संस्करणेनात्र जनिष्यमाण गर्भाणां बीजगर्भ समुद्भवदोष निराकरणार्थं गर्भाधानाख्यं गणमातृका नान्दी पुण्याह वाचन पूर्वकं करिष्ये। सर्वत्र लघु संस्कारों में नान्दी पुण्याह वाचन एवं मातृपूजा परमावश्यक है।

सायं सूर्यार्ध्यम्—ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्यप्रतिमा विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसामाऽभिमः ँ स्थाः सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्।

पत्न्या नाभिं स्पृष्ट्वा—ॐ पूषा भग ँ, सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। ॐ विष्णुर्योनिकल्पयतु त्वष्टा रुपाणिपि ँ शतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ ॐ गर्भंदेहि सिनीवालि! गर्भंदेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावधत्तां पुष्कर स्रजौ॥

पत्नीमुखावलोकनम्—तेजो वैश्वानरोदद्यादथ ब्रह्मानु मन्त्रयेत्। ब्रह्मा गर्भंदधातु ते॥

सङ्क्रमः—ॐ गायत्रेण त्वाछन्दसामन्थामि। त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसामन्थामि जागतेन त्वा छन्दसामन्थामि॥

हृत्स्पर्शः—ॐ रेतो मूत्र विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणा वृत उल्वं जहाति जन्मना। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं ँ शुक्रमंधसऽ-इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतं मधु॥

प्रार्थना—ॐ यत्तेसुपीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम्॥ ततः प्रातः नित्य कृत्यान्ते विप्रान् पुरस्कृत्य मातृका विसर्जनम्।

पुंसवनमुहूर्त्तः—शुभतिथि एवं पुरुष (गु. मं. सू) वारों में। नक्षत्र—अश्वि. मृ. ऽऽर्द्रा. पुन. पु, म, पूर्वा ३. उत्तरा ३. ह मू. अनु. श्र. रे. किन्तु इनमें कोई विद्ध नक्षत्र न हो। लग्न—२,५,६,८,९,११,१२

संकल्पः—ॐ ममास्याः पत्न्या उत्पत्स्यमान गर्भस्य बैजिक गार्भिक दोष परिहारार्थं पुंस्त्वसम्पत्तये च श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गणमातृका नान्दी पुण्याहवाचन गणेश पूजन पुरस्सरं पुंसवनं कर्म करिष्ये। वट की जटा व शाखाङ्कुर समान भागले कर पानी में पीसछान, रस निकाल, सगर्भापत्नी के दक्षिण नासारन्ध्र में निम्न मन्त्र से गिरायें।

वटजटाङ्कु रसस्य नासायांप्रक्षेपः—ॐ हिरण्यगर्भः० ॐ अदभ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च० पराक्रमीत्वार्थी पति पत्नी की गोद में जलपात्र

नारियल रखकर अनामिकाग्र भाग से उदर का स्पर्श करें।

उदरस्पर्शः—ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्तेशिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम ऽआत्मा छन्दा ँ स्यङ्गानि यजु ँ षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वपत॥ बादामादि पौष्टिक फलों से परिपक्व पायस की पाँच आहुतियाँ दें।

पायसहोमः—ॐ धाता दधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम्। वयं देवस्य धीमहि सुमतिं वाजिनीवतः स्वाहा॥ इदं धात्रे इदं न मम॥ अवशिष्ट पायस पत्नी को दें।

पत्न्यैपायस प्रदानम्—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु०॥ फिर पति पत्नी के सिर पर हाथ रखे।

पत्युः पत्न्याः शिरोहस्तन्यासः—ॐ यत्ते सुसीमे हृदये हितवन्तः प्रजापतौ। मन्येहमां तद्विद्वांसमाहं पौत्रमघन्नियाम॥ फिर ब्राह्मणों को प्रसन्न करके मातृका विसर्जन करें।

सीमन्तोनयनम्—मास—गर्भधारण के पश्चात् ६, ८वें मास में मासेश्वर का पन देख कर शुभतिथियों एवं पुरुष वारों में। वेधरहित नक्षत्र—मृ. पुन. पुष्य. ह. मू. श्र। लग्न—१,३,५,७ ९,११ पुरुषलग्नों एवं पुरुष नवांशों में।

संकल्पः—यस्याः मम भार्यायाः गर्भाशयवेभ्यस्तेजो वृद्ध्यर्थं क्षेत्रगर्भयोः संस्कारार्थं च गर्भं समुद्भवदोषनिर्वहण पुरस्सरं गणमातृकार्चन नान्दी श्राद्ध पुण्याहवाचन पूर्वकं सीमन्तोनयनं कर्म करिष्ये। प्राजापत्यव्याहृति प्रायश्चित्त होम के पश्चात् द्विज देवताओं को नमस्कार करके सगर्भा-पत्नी के केशों को पिप्पल वृक्ष के शङ्कु द्वारा दाएँ से बायीं ओर करें।

केशानांवामावर्तन्यासः ॐ भूर्विनयामि ॐ भुवर्विनयामि ॐ स्वर्विनयामि। तब जूटिका बाँधकर शल्ल की (सेही का कांटा) कंटक, लोहे का तकुँला, दर्भ, पिंजूल, रुम्बल का फल और शाखा, रक्त वस्त्र खण्ड में लपेट कर जूड़ी पर बांधे।

जूटिका बन्धनम्— ॐ अयमूर्जावतो वृक्षउर्जीवफलिनी भव।

गाथगानम्—ॐ सोमऽएवनो राजेमा मानुषीः प्रजाः।
अविमुक्तचक्रआसीरस्तीरेतुभ्यमसौ।

जातकर्म संस्कारः—शुभ तिथि एवं शुभ वारों में। नक्षत्र—अश्वि रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ह. चि. स्वाः अनु. ध श. श. रे। नालछेदन के पहले अथवा ११,१२वें दिन में शुभ ग्रहों के लग्न वा नवांशों में शुभ है। जन्म होने के पूर्व

प्रसवार्त्त सगर्भायां मार्जनम्—ॐ एजतु दशमास्योगर्भो जरायुणा सह।

प्रसव पीड़ाशामक जपः—ॐ अवैतु पृश्नि शेवलं शुनेजराय्वत्तवे नैव मां ँसेन।
पीवरीं न कस्मिंश्चनायतनमवजरायु पद्यतामिति॥

तिलतैलावदूर्वानिर्मार्जनम् अष्टोत्तरशतंजपः—हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शबरीनाम यक्षिणी। तस्यानूपुर शब्देन विशल्यास्यात्तु गर्भिणी स्वाहा॥
अनामिकाग्र भाग में मधु घृत संलग्न स्वर्णशलाका से जिह्वा पर ॐ लिख कर बारबार चटाने से मेधा वृद्धि होती है।

मेधाजननम्—ॐ भूस्त्वयि दधावि ॐ भुवस्त्वयिदधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि।

स्तनपान मुहूर्तः—शुभ तिथि, शुभ वार, रो, मृ, पुन, पुष्य, ह ३उ. श्र. रे. नक्षत्र स्तनपान में शुभ है।

शिशोर्नाभौदक्षिणकर्णे वा जपः—ॐ अग्निरायुष्मान्त्सवनस्पतिभिरायुष्मान्-स्तेनत्वाऽऽयुष्मन्तं करोमि। (१) इत्यादि इसके अनन्तर गोमूत्राक्त दूर्वाओं से पूजित कुमारी द्वारा दक्षिणस्तन को मार्जन कराकर बच्चे के मुख में देवें।

स्तनपानमन्त्रः—ॐ इम ँ स्तन मूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रिय ँ सदनमाविशस्व॥

प्रसूतापार्श्वेघटस्थापनम्—ॐ आपो देवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ एव मस्या ँ सूतिकाया ँ सपुत्रिकायां जाग्रथ। तदनन्तर शिशु रक्षार्थ सर्षप होम दसदिनतक नित्यकरे।

सिद्धार्थहोमः—ॐ शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणा-सश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहाः। इदमग्नये न मम।

ॐ आखिलन्न निमिष: किम्वदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्ष कुम्भीं शत्र: पात्रपाणि-र्नृमणिर्हन्त्रीमुख: सर्षपारुणश्च्यवनोनश्यतादित: स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

प्रसूता स्नान मुहूर्त्त:—शुभ तिथि एवं पुरुष वारों में । नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३ ह. स्वा अनु. रे विशेषत: प्रसूता स्नान विषम दिनों में ही प्रशस्त माना गया है ।

षष्ठी पूजन मुहूर्त्त:—देश भेद कुलाचार भेद से पञ्चम रात्रि में जीवन्ती देवी की पूजा एवं छठी रात्रि में गीत वाद्यादि माङ्गलिक समय में षष्ठी पूजन किया जाता है । मन्त्र विधान जन्म दिन कृत्य में देख लेवे ।

।। जन्मदिन कृत्यम् ।।

ॐ अद्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थं विष्णु प्रीति द्वारा आयुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं च गणमातृका पूर्वकं वर्धापनकृत्यमहं करिष्ये । गणेशमातृका: पञ्चांगाधिष्ठातृदेवनव ग्रहषष्ठी सप्तचिरजीवि सप्तर्षिमार्कण्डेयांश्चनाममन्त्रै: सम्पूज्य स्कन्दमातृका प्रार्थना—

ॐ सम्भूतिरनुसूया च क्षमा प्रीतिश्च सन्नति: ।
अरुन्धती तथा लज्जा सप्तैता: स्कन्द मातर: ।।

स्कन्दप्रार्थना—कार्त्तिकेय महाभाग गौरीहृदयनंदन ।
सर्वतो रक्ष मां वीर कुरुदीर्घायुषं सदा ।।

षष्ठी प्रार्थना:—जय देवि जगन्मातर्जगदानन्द कारिणी ।
प्रसीद मम कल्याणि नमस्ते षष्ठि देवते ।।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
ब्रह्मविष्णु शिवै: सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे ।।

सप्तचिरजीवि पूजा—ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषण: ।
कृप:परशुरामश्च सप्तैते चिर जीविन: ।
सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथामम् ।
जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जित: ।।

मार्कण्डेय पूजा—ॐ मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे ।
चिरजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने ।।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिर जीविनम्
नराणामायुरारोग्यैश्वर्य सौख्य यश: प्रद: ।
सौम्यमूर्ते नमस्तुभ्यं भृगुवंशवराय च
महातपो मुनिश्रेष्ठ सप्तकल्पान्त जीवित ।
मार्कण्डेय नमस्तुभ्यं दीर्घायुष्यं प्रयच्छमे
मार्कण्डेय महाभाग प्रार्थये त्वां कृतांजलि: ।।

गुड़तिलदुग्धपानम्—ॐ सतिलं गुड समिश्रमञ्जल्यर्द्धमितं पय: ।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये ।।
दक्षिणान्ते देवविसर्जनम् ।।

नामकरण मुहूर्त्त:— शुभतिथि एवं शुभवार के दिन । नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे । लग्न—२,४,६, ७, ९, १२ शुभ हैं नाम चार प्रकार के कहे गये हैं

(१) **देव नाम**—अपने इष्टदेव कुलदेव महापुरुष आदि के अनुकूल यथा विष्णुभक्त, वैष्णव प्रसाद ।

(२) **मासनाम**—जन्म मासानुसार चैत्रादिक्रम से (१) कृष्ण (२) अनन्त (३) अच्युत (४) चक्री (५) वैकुण्ठ (६) जनार्दन (७) उपेन्द्र (८) यज्ञ पुरुष (९) वासुदेव (१०) हरि (११) योगीश (१२) पुण्डरीकाक्ष (१३) पुरुषोत्तम एवं कन्याओं के (१) श्री (२) लक्ष्मी (३) कमला (४) पद्मा (५) सीता (६) सत्य (७) रुक्मिणी (८) माधवी (९) इन्दिरा (१०) देवी (११) तुलसी (१२) जाम्बवती (१३) पुरुषोत्तमा नाम रखें । देश भेद से यही नाम मार्गशीर्षादि क्रम से भी रखे जा सकते हैं ।

(३) **नाक्षत्रनाम**—जन्म नक्षत्रानुसार शतपद चक्र में जो नक्षत्र के चरण में अक्षर आता हो उसी को आदि में रखकर नाक्षत्र नाम होता है जैसे रोहिणी के प्रथम पाद में "ओ" अक्षर होने से ओंकार शर्मा ।

(४) **प्रसिद्ध नाम**—यह नाम समाक्षर पुत्र का किन्तु छ: अक्षर का न हो । । विषमाक्षर कन्याओं का किन्तु सात अक्षर का न हो और न ही पक्षी या नदी संज्ञक आवे । नाम करण मधुर होना चाहिए । इसमें सभी गणेश मातृका पूजा नान्दी पुण्याह वाचन के पश्चात् प्राजापत्य पञ्चाङ्गाधिष्टातृ देवता होम के पश्चात् ब्राह्मणों को सन्तुष्ट कर कांस्य पात्र

में तण्डुल फैला कर स्वर्ण शलाका से शिशु का नाम लिख कर "अस्य शिशोर्वह्नायुष्य प्राप्त्यर्थं नामदेव पूजनमहं करिष्ये । मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य (श्रीश्चतेति) मन्त्रेण अक्षर पूजनान्त नाम देवनामादि चारों प्रकार के नामों का उच्चारण करें १. हे कुमार त्वं देवनाम्ना विष्णु भक्तोऽसि २. हे कुमार त्वं पुण्डरीकाक्षोऽसि ३. हे कुमार त्वं नाक्षत्रनाम्ना ब्रह्मदत्तोऽसि ४. हे कुमार त्वं प्रसिद्ध नाम्ना देवराजोऽसि । इसके अनन्तर ब्रह्मण "मनोजूति" इस मन्त्र के पश्चात् "बालस्य नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु" फिर प्राजापत्य व्याहुति होम के पश्चात् पञ्चाङ्गाधिष्ठातृ देवताओं का होम एवं प्रायश्चित होम के पश्चात् शंख में दूध भर कर शिशु को अपनी गोद में रखकर शंख से दूध पिलावें ।

दुग्धपान मन्त्र—आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् । भवावाजस्य संगथे ।

निष्क्रमणमुहूर्त्तः—शुभतिथि वार एवं लग्नों में वा शुभ नक्षत्रों में १२वें दिन या चतुर्थ मास में निष्क्रमण मुहूर्त्त शुभ माना गया है ।

कृत्यम्—अद्य गणमातृका पूजा नान्दी पुण्याह वाचन पूर्वक शिशोः निष्क्रमण कृत्यं करिष्ये । प्रायश्चित होम के पश्चात् वस्त्राभूषणादि से सजाकर शकुन पूर्वक पिता शिशु को बाहरलाकर सूर्य का दर्शन करावें ।

भूम्युपवेशन मुहूर्त्तः—शुभ तिथि, वार, नक्षत्र एवं स्थिर लग्नों में पृथिवी, कूर्म एवं वराह का पूजन करके वस्त्रादि से अलंकृत करधनी पहन कर शुद्ध भूमि पर बिठावें ।

उपवेशन मंत्र—रक्षैणं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शिशुम् ।
आयुः प्रमाणं निखिलं निक्षिपस्व हरि प्रिये ॥ ब्रह्मपुराण

जीविका परीक्षा—भूम्युपवेशनानन्तर बालक के समक्ष अन्न, वस्त्र, लेखनी, मसीपात्र, पुस्तक, मुद्रा, स्वर्ण, रजतादिधातु, मशीन, मोटरादि सभी खिलौने रखें । जिस वस्तु को बालक सर्वप्रथम स्पर्श करे वही बालक की जीविका का साधन समझें ।

अन्नप्राशन मुहूर्त्तः—कन्या का ५, ७, ९ आदि विषम मासों में और पुत्र का ६, ८, १० आदि सम मासों में अन्नप्राशन करें । शुभ तिथि, वार, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. श्र. ध. रे. नक्षत्रों में मीन, मेष, वृश्चिक, वर्जित लग्नों में १, ४, ७, ९, ५ वें शुभ ग्रह हों ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों । दशम शुद्ध, चन्द्रमा २, ३, ४, ५, ७, ९, १२वें स्थानों में हो जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश न हो, १, ६, ८ वें चन्द्रमा न हो ।

कृत्य विशेषः—संकल्पः—ममास्य शिशोर्मातृगर्भोत्पन्नप्राशनशुद्ध्यर्थमन्नाद्यब्रह्मवर्चस्तेज-इंद्रियायुर्बल सिद्धि बीज गर्भजन्यदोष मार्जन द्वारा गणमातृका पूजन पूर्वकं नान्दी पुण्याहवाचन पुरस्सरं अन्नप्राशनं कर्म करिष्ये । प्राजापत्य होमान्ते ।

अन्न होमः—ॐ देवी वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सानो मन्द्रेष मूर्जंदुहानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वाहा ।
ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशावाजपतिर्जयेयं स्वाहा

स्थाली पाक होमः—ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा । ॐ अपानेनगन्धानशीय स्वाहा । ॐ चक्षुषारूपाण्यशीय स्वाहा । ॐ श्रोत्रेणयशोऽशीय स्वाहा । जन्मतिथि वार नक्षत्र योग करणाधि देवेभ्यः स्वाहा । ४ प्रायश्चित तथा पूर्णाहुति कृत्यों के पश्चात् शेष दिव्य पायस स्थाली पाक से पाँच बार शिशु को खिलावें ।

अन्नप्राशन मन्त्रः—ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातरं तारिषऊर्जंनोधेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

सप्तप्राग्येन बालस्यतुलादानम्—ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृत मायुष्पा आयुर्मेपाहि ।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां
पूष्णोहस्ताभ्यामाददे ॥

चूडाकरणमुहूर्त्तः—विषम वर्ष, जन्म मास, चैत्र मास पर्व का दिन, विपत्, प्रत्यरि, वध तारा न हो माता गर्भिणी न हो । उत्तरायण सूर्य में ।

तिथिः—रिक्ता, प्रतिपदा, षष्ठी, गलग्रह तिथियों को छोड़ कर शेष तिथियों में चं. बु. गु. शु. वारों में अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. इन वेध रहित नक्षत्रों में । १, ४, ५, ७, ९, १०वें शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों, जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो,

अष्टम शुक्र हो। पूर्व रात्रि में श्वेत सरसों द्वारा जूटिका बंधन कर लें।

संकल्प:—ममास्य कुमारस्य बीजगर्भ जन्य दोष निराकरणार्थं शिशोर्बलायु-र्वर्चोऽभिवृद्ध्यर्थं गणमातृका नान्दी पुण्याहवाचनपूर्वकं चूड़ाकरणमहं करिष्ये प्रायश्चित होम के अन्त में—

उष्णशीतोदकदधिनवनीतमिश्रणम्—ॐ उष्णेनवाय उदके नेह्यदिते केशान्वप। बालक के सिर के दक्षिण पश्चिम और उत्तर तीनों ओर बालों के तीनों जूड़ों को पृथक् पृथक् पूर्व मिश्रित नवनीत दही शीतोष्ण जल से भिगोएँ।

नवनीतादिना जूटिका सेचनम्:—ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनुम्। दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे।

नापित दर्शनम्—ॐ आयमगन्त्सविताक्षेरेणोष्णेन वाय उदके नेहि।

शीतोष्ण जल मिश्रणम्:—ॐ उष्णेन वाय उदकेनेह्यदिते केशान्वप।

शीतोष्ण नवनीतदध्ना केशक्लेदनम्—ॐ अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा। चिकित्सतु प्रजापति दीर्घायुत्वाय चक्षसे॥ सर्वत्र छेदनादौ जूटिका क्लेदनम् कर्तव्यम्।

शल्लकी कण्टकेन कुशत्रयेण वा जूटिकापृथक्करणम्—ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनुम्। दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे॥

कुशत्रयेणदक्षिण जूटिकां करेण स्पृष्ट्वा—ॐ विष्णोर्दे ँ ष्ट्रोसि।

क्षुर दर्शनं पूजनञ्च—ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते मा माहि ँ सीः।

दक्षिण हस्ते क्षुरग्रहणम्:—ॐ स्वधिते मैन ँ हि ँ सीः

जूटिका समीपे क्षुरनयनम्: ॐ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय। रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥

कुश सहित केशवपनम्—ॐ येनावपत्सविताक्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्यम् जरदष्टिर्यथासत्॥ गोमयोपरि केश स्थापनम्।

जूटिका छेदनम्—ॐ येन धाता बृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य चायुषेऽवपत् तेन त ऽआयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये॥ गोमयोपरि निधानम्।

द्वितीय जूटिका छेदनम्—ॐ येन भूयश्च रात्र्यं ज्योक् च पश्यति सूर्यम्। तेन त आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये।

तृतीय जूटिका छेदनम्—ॐ येन पूषा बृहस्पतेर्वायोरिन्द्रस्य चावपत। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय॥

अग्रवर्ति केश छेदनम्—ॐ येन भूरिश्चरादिवं ज्योक् च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये।

समस्त शीर्षोपरि पिता हस्तं भ्रामयेत्—ॐ त्र्यायुष जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषम् तत्तोऽस्तु त्र्यायुषम्॥

नापितायक्षुर समर्पणम् समस्तकेश छेदनञ्च—ॐ यत् क्षुरेण मर्चयता सुपेशसा वप्ता वपसि केशान शुन्धि शिरोमाऽस्यायुः प्रमोषीः।

ईश्वरं स्मृत्वा आशीर्वाद:—ॐ त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त:—उत्तरायण सूर्य में, गणेश, सरस्वती लक्ष्मी नारायण का पूजन करके जन्म से ५वें वर्ष में अक्षरारम्भ करे। शुभ तिथि, वार, अश्वि. आ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वाती अनु. ज्ये. श्र, रे इन नक्षत्रों में २, ३, ६, ९, १२ लग्नों में अष्टम भाव ग्रह रहित होवे।

सरस्वती पूजा—ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं सर्वज्ञे सर्वसाक्षिणि।
सर्व शास्त्रेषु विज्ञानं देहि मे परमेश्वरि॥

कर्ण वेध मुहूर्त्त:—जन्म से १२वें, १६ दिन या ६, ७, ८वें मास या ३, ५वें वर्ष में बालक का कर्णछेदन प्रशस्त माना गया है। शुभ तिथि शुभ वारों में पुष्य. चि. श्र रे नक्षत्रों में पूर्वाह्न में बच्चे को मधुरान्न खिला कर कर्ण वेध करें।।

कर्ण वेध मन्त्र:—भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ँ सस्तनु भिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥ ततो ब्राह्मण भोजनं कारयेत्।

उपनयन मुहूर्त्त:—शुभ तिथि वार अश्वि. मृ पुष्य. पूर्वा ३ उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श रे इन नक्षत्रों में २, ३, ४, ५, ६, ९, इन लग्नों में ६, ८, १२ वां भाव शुद्ध २, ४, ५, ७, ९, १०वें शुभग्रह ३, ६, ११वें पापाग्रह।

विशेषः—भद्रादि कुयोग सर्वत्र त्याज्य, आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, ११, माघ शुक्ल १२ और संक्रान्ति के दिन न हों मध्याह्न के पूर्व प्रदोष, अनध्याय शनिवार गलग्रहतिथियाँ :—

कृष्णपक्षे चतुर्थीति सप्तम्यादिदिन त्रयम् ।

चतुर्दशी चतुष्कं च अष्टावेते गल ग्रहाः । ८, १७, २६ सूर्यगतांशों में रोगबाण होता है जो व्रतबन्ध में विशेष त्याज्य है ।

संकल्पः—अस्य कुमारस्य द्विजत्वसिद्धि द्वारा वेदाध्ययनाधिकार सिद्ध्यर्थं नान्दी गणमातृका पूजन पुरस्सरं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं उपनयनकर्म करिष्ये ।

प्रातः काल मुण्डनादि के पश्चात् उद्वर्तनादि के द्वारा स्नान करायें फिर मिष्ठान्नादि भोजन के पश्चात् अष्टभाण्ड दान करावें ।

संकल्प—अद्य उपनयनाधिकार सिद्ध्यर्थं अमुकगोत्रेभ्यः अष्ट विप्रेभ्यः । भाण्डाष्टकं स यज्ञोपवीतं सद्क्षिणाक दातुमहमुत्सृजे ।

भाण्ड दान दान करावे ।

ब्रह्मचारी—ब्रह्मचर्यमागाम्, ब्रह्मचार्यसानि

कटिसूत्रकौपीनादि वस्त्र परिधानम्—

ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम् ।

तेनत्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥

मेखलादानम्:—ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनतीम ऽआगात् ।

प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ॥

आपो हिष्ठेत्यादि से यज्ञो पवीत को जलाभिषिंचित करें ॐ ब्रह्म यज्ञान॰ ॐ इदं विष्णु विचक्रमे॰ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव॰ इन तीन मन्त्रों से अँगूठे पर आचार्य यज्ञोपवीत घुमाकर ब्रह्मविष्णु रुद्रात्मक ग्रन्थियों की पूजा करें ।

तन्तु पूजाः—१. ॐ कारं प्रथमे तन्तौ २. अग्निं द्वितीये ३. नागान् तृतीये ४. सोमं चतुर्थे ५. इन्द्रं पंचमे ६. प्रजापतिं षष्ठे ७ वायुं सप्तमे ८ सूर्यं अष्टमे ९. विश्वेदेवान नवमे तन्तौ विन्यसामि ।

दशवार गायत्री मंत्र से यज्ञोपवीत को अभिमंत्रित करें

सूर्याय यज्ञोपवीतदर्शनम्:—ॐ उपयाम गृहीतोऽसिसावित्रोऽसि च नोधा श्च नोधा असि च नो मयि धेहि ।

जिन्व यज्ञ जिन्व यज्ञ पतिं भगाय देवाय त्वा सावित्रे ॥

यज्ञोपवीत परिधानम्—ॐ यज्ञो पवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

यज्ञो पवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

उत्तरीयधारणम्—युवासुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान्भवति जायमानः ।

तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ।

मृगचर्मोपधानम्—ॐ मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविरं समिद्धम् । अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुपरीदं वाज्यजिनं दधेऽहम् ॥

दण्डधारणम्:—ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् ।

तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

जलाञ्जलिमादाय सूर्यायर्घदानम्—ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे । ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेह नः उशतरिवमातरः । ॐ तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ।

सूर्यदर्शनम्—तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत पश्येम शरतः शतं जीवेम शरतः शतं ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतं मदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

हृत्स्पर्श—ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु ।

मम वाचमेकमनाजुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

वटु—ॐ ब्रह्मचर्यमागामुपमानयस्व ।

आचार्यः—को नामासि ?

बालकः—अमुक शर्माहं भोः

आचार्यः—कस्य ब्रह्मचर्यसि ? वटुः—भवतः ।

आचार्यः—ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तव (अमुकशर्मणः)

पूर्वोपस्थानम्—ॐ प्रजापतेते त्वा परिददामि ।

दक्षिणोपस्थानम्—ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि ।

पश्चिमोपस्थानम्—ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि ।

उत्तरोपस्थानम्—ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि ।

अधः पश्यन् प्रणमंश्च—ॐ विश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि ।

उर्ध्वं पश्यन् प्रणमंश्च—ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि ॥

तदनन्तर प्राजापत्य प्रायश्चित्त आहुतियों के पश्चात्

आचार्यः—ब्रह्मचार्यसि । **वटुः**—भवानि । **आचार्यः**—आपोशान । **वटुः**—अशानि । **आचार्यः**—कर्म कुरु । **वटुः**—करवाणि । **आचार्यः**—मा दिवा सुषुप्थाः । **वटुः**—न स्वपानि । **आचार्यः**—वाचं यच्छ । **वटुः**—यच्छानि ।

आचार्यः—अध्ययनं सम्पादय । **वटु**—सम्पादयानि । **आचार्यः**—समिधामाधेहि । **वटुः**—आदधानि । **आचार्यः** । आपोशान । **वटुः**—अशानि ।

संकल्पः—ओमद्यमग ब्रह्मवर्चस वेदाध्ययनाधिकार सिद्धयर्थं गायत्र्युपदेशांगविहितं गायत्री सावित्री सरस्वती पूजन पूर्वकमाचार्य पूजनं करिष्ये ।

गायत्री सावित्री सरस्वती एवं आचार्य पूजा के पश्चात्

विप्राय गायत्र्युपदेशः पदपाठः—ॐ भूर्भुवः स्वः—तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः—भर्गोदेवस्यधीमहि । ॐ भूर्भुवः स्वः—धियो योनः प्रचोदयात् । इति प्रथमावृत्तिः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः—तत्सवितुर्वरेणयम्—भर्गोदेवस्य धीमहि ।

ॐ भूर्भुवः स्वः धियो योनः प्रचोदयात् । इति द्वितीयावृतिः

ॐ भूर्भुव स्वः—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् इति तृतीयावृत्तिः

क्षत्रियायगायत्र्युपदेशः त्रिष्टुब्गायत्री—ॐ देव सवितः प्रसुवयज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतनः पुनातु वाचस्पतिवाचं स्वदतु

वैश्याय गायत्र्युपदेशः जगती गायत्री—ॐ विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चतेकविः प्रासवीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे । विनाकमरुयत् सवितर्वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति ॥

समिदाधानम्—गोबर के सूखे अरण्य उपलों को घी में भिगो करके पाँच आहुतियां देवें ।

पञ्चाहुतयः—ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु स्वाहा ॥१॥

ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा ॥२॥

ॐ एवं मा ँ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा ॥३॥

ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा ॥४॥

ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् स्वाहा ॥५॥

जल—जल पात्र लेकर ईशान से प्रदक्षिण क्रम से अग्नि का उत्तर तक जल अभिषिचन करें । प्रादेशमात्र तीनसमिधाएँ निम्न मन्त्रों से अग्नि में छोड़ता जाए ।

समिधादानम्—ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसऽएवमह मायुषा मेधया वचसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीव पुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुः यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासम् ॥१॥ ॐ एषा ते अग्ने समित्तया वर्द्धस्व-चाप्याय वर्द्धिषीमहि च वयमाप्यासिमहि स्वाहा ॥२॥

फिर पूर्वोक्त पञ्चाहुति घृतावत आरण्यक उपलों से देवे । फिर पूर्ववत् अग्नि का ईशान से उत्तर तक प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण करे । फिर मन्त्रोच्चारण के बिना ही अग्नि पर हाथ तपा तपाकर निम्न सात मन्त्रों से मुख पर हाथों का स्पर्श करे ।

सप्तधा वह्नि तप्त हस्ताभ्यां मुख स्पर्शनम्—ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ॥१॥ ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मेदेहि ॥२॥ ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ॥३॥ ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्मऽआपृण ॥४॥ ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ॥५॥ ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ॥६॥ ॐ मेधां मेऽश्विनौ देवाबाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥७॥

तत्पश्चात् शिर से पादपर्यन्त सभी अङ्गों का स्पर्श करें ।

अङ्गन्यासः—ॐ अंगानि च मऽआप्यायन्ताम् ॥१॥ शीर्षात् पादान्तम्

ॐ वाक् च मऽआप्यायन्ताम् ॥२॥ इति मुखम्

ॐ प्राणश्च मऽआप्यायन्ताम् ॥३॥ इति नासाम्

ॐ चक्षुश्च मऽआप्यायन्ताम् ॥४॥ इति चक्षुषी युगपत्

ॐ श्रोत्रं च मऽआप्यायन्ताम् ।।५।। इति श्रोत्रम्
ॐ यशोबलं च मऽआप्यायन्ताम् ।।६।। इति बाहू

भस्म धारणम्—ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ।।१।। इति ललाटे ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं ।।२।। इति ग्रीवायाम् ।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् ।।३।। इति दक्षिणांसे ।
ॐ तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ।।४।। इति हृदि ।

अग्नेरभिवादनम्—अमुक गोत्रो-अमुक शर्माहं वैश्वानर देव त्वामभिवादये ।।१।।
सूर्यस्याभिवादनम्—अमुक गोत्रोऽमुक शर्माहं सूर्य देव त्वामभिवादये ।।२।।
आचार्याभिवादनम्—अमुक गोत्रोऽमुक शर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये ।।३।।

भिक्षाचरणम्—ब्राह्मण:—भवति भिक्षां देहि ।
क्षत्रिय:—भिक्षां भवति देहि ।
वैश्य:—भिक्षां देहि भवति ।

भिक्षा पात्र लेकर मातादि बन्धुओं से मांग कर 'स्वस्ति' कहता जाए प्राप्त भिक्षा आचार्य को पात्र सहित समर्पित करे ।

आचार्य:—भैक्ष भुङक्ष्व । आज्ञा पाकर वटु भोजन करे सूर्यास्त होने तक मौन धारण कर खड़ा रहे, न बैठे, न लेटे, अशक्त हो तो आचार्य की आज्ञा से बैठ जाए । फिर सायं सन्ध्योपासन करे तत्पश्चात् सूखे आरण्यक उपलों को घी में भिगोकर पाँच आहुतियां पूर्ववत् डाले । तीन दिन तक अखण्ड अग्नि जलती रहे तत्पश्चात् संस्कारोपरान्त आचार्यादि विप्रवर्ग "ॐ आब्रह्मन्" इत्यादि मंत्र द्वारा आशीर्वाद देते हुए "ब्रह्मवर्चसी भव" ऐसा कहें उसके पश्चात् हर प्रकार आचार्यादि को प्रसन्न करे ।।

वेदारम्भमुहूर्त्तः—उपनयन मुहूर्तंएव वेदारम्भमुहूर्त्तः ।
संकल्प:—ऋग्वेद व्रतादेशं यजुर्वद व्रतादेशं वा करिष्ये ।

उपनयन संस्कार में समग्रविधि को सम्पादित करके फिर निम्न दो आहुतियाँ देवें । आहुतियाँ अन्तरिक्ष और वायु के निमित्त देवें । तत्पश्चात् ब्रह्मादि की नौ आहुतियाँ देवें यजुर्वेदारम्भ में आहुति विशेष निम्न प्रकार से है ।

आहुतिद्वयम् :—ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा ।।१।। ॐ वायवे स्वाहा ।।२।।

ब्रह्मादिहोम:—ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।।१।। ॐ छन्दोभ्य: स्वाहा ।।२।। ॐ प्रजापतये स्वाहा ।।३।। ॐ देवेभ्य: स्वाहा ।।४।। ॐ ऋषिभ्य: स्वाहा ।।५।। ॐ श्रद्धायै स्वाहा ।।६।। ॐ मेधायै स्वाहा ।।७।। ॐ सदसस्पतये स्वाहा ।।८।। ॐ अनुमतये स्वाहा ।।९।। ऋग्वेदारम्भ में आज्य भागान्त होने पर पृथिवी और अग्नि की दो आहुतियां ।

आहुतिद्वयम्—ॐ पृथिव्यै स्वाहा ।।१।। ॐ अग्नये स्वाहा ।
सामवेदारम्भ में आज्य भागान्त होने पर । और सूर्य की दो आहुतियाँ
ॐ दिवे स्वाहा ।।१।। ॐ सूर्याय स्वाहा ।।२।।
अथर्ववेदारम्भ में दिशाओं और चन्द्रमा की दो आहुतियाँ देवें
ॐ दिग्भ्य: स्वाहा ।।१।। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा ।।२।।

समावर्तन—शेष कृत्य उपनयन की तरह भस्मान्त धारण करके "यान्तु मातृगणा: सर्वे" कहता हुआ मातृगणों का विसर्जन कर देवें ।।

केशान्त संस्कार—यह संस्कार चूड़ाकरणवत् किया जाता है इसमे पहले मुण्डन यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ की समग्र विधि करके समाप्ति है तत्पश्चात् सूखे आरण्य उपलों की आहुतियां और अङ्गन्यासादि पूर्ववत् करने के पश्चात् तत: आचार्य द्वारा अभिषेक की विधि निम्न है ।

जल ग्रहण मन्त्र:—ॐ ये अप्स्वन्तरग्नय: प्रविष्टा गोह्य ऽ उपगोह्यो मयूखो-मनोहास्खलो विरुजस्तनूदूषुरिन्द्रियहा तान् विजहामि योरोचनस्तमिह गृह्णामि ।

अभिषेक मन्त्र:—तेन मामभिषिचामिश्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ।।
आगे की आपोहिष्ठा इत्यादि नौ ऋचायें भी पढ़ लें ।

शिरोमार्गेण मेखला अवतारणम्— ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मद्वाधमं विमध्यम ँ् श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ।।

सूर्योपस्थानम् :—ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्था-द्दशनिरसि दशसनिं माकुर्वाविदन्मागमय । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिर स्थाद् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं माकुर्वाविदन्मागमय

उतान्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरु द्भिरस्यात्सायं यावभिरस्यात्सहस्रसनिरति सहस्रसनि माकुर्वाविदन्मागमय ।

थोड़ा दही और तिल खा लें फिर दातुन करें ।

उदुम्बरदंतधावन मन्त्र—ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वं सोमो राजाऽयमागमत् ।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ।।

फिर उबटन लगा कर गर्म जल से स्नान करना चाहिये । स्नानान्त में दो आचमन करके चन्दन और केसर निम्नमन्त्रों से नाक, नेत्रों और कानों को लगावे ।

नासिकयोः—ॐ प्राणापानौ मे तर्पय

चक्षुषोः—ॐ चक्षुर्मे तर्पय

श्रोत्रयोः—ॐ श्रोत्रं मे तर्पय

तत्पश्चात् धरती पर घुटने टेक कर दक्षिण की ओर मुख कर तीन कुशाओं को लेकर त्रिगुना करके धरती पर रख कर बाँये हाथ में तिल और जल लेकर "ॐ पितरः शुन्धध्वम्" कहता हुआ जल छोड़ दे । तत्पश्चात सव्य होकर आचमन कर केशर युक्त चन्दन को पुनः नेत्र, मुख तथा कानों को लगावें ।

चक्षुषोः—ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्याम्

मुखे—ॐ भूयासं सुवर्चा मुखेन

कर्णयोः—ॐ सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् ।। उसके बाद शाटिका वस्त्र धारण करे

वस्त्र धारण मन्त्रः—ॐ परिधास्यै यशो धास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ।
शतं च जीवामि शरदः पुरुचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये ।।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।। ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

उत्तरीय परिधानम्—ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पतिः ।
यशो भगश्चमा विन्दद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ।।

पुष्प माला—ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय ।
ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ।।

कर्णभूषणादि धारणम्—ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्सउश्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।
ॐ अलंकरणमसि योऽलं करणं भूयात् ।

कज्जलाञ्जनम्—ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि ।

दर्पणमुखावलोकनम्—ॐ रोचिष्णुरसि ।

छत्र धारणम्—ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि । तेजसो यशसो मान्तर्धेहि ।

उपानद् ग्रहणम्—ॐ प्रतिष्ठेस्थोऽपि विश्वतो मापातम् ।

वैणवदण्डधारणम्—विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः ।

आचार्यः—कुत्र गच्छसि ?

बटुः—काशीम् ।

आचार्यः—किमर्थम् ?

बटुः—पठनार्थम्

आचार्यः—हे बटो त्वमिहागच्छ अत्रैवाहं पाठयिष्ये । स्नातकस्य नियमाः—

कामादितरस्यापि गानवादित्र नृत्य त्यागः, न तत्र गमनम् । क्षेमे सति न रात्रौ ग्रामान्तरं गच्छेत् । न च धावेत् । न कूपे वेक्षेत, वृक्षारोहणं फल त्रोटनं च न कुर्यात् अमार्गेण न गच्छेत्, नग्नो न स्नायात् । न सन्धिवेलायां शयीत । न विषम भूमिं लंघयेत् । अश्लीलं वाक्यं नोपवदेत् । उदितास्त-मयकाले सूर्यं न पश्येत् । जलमध्ये सूर्य छायां न पश्येत् । देवे वर्षति न गच्छेत् । उदके नात्मानं पश्येत् । अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं षण्ढां च स्त्रियं दृष्ट्वा नोपहसेत् ।

पूर्णाहुति भस्म धारण के पश्चात् आचार्यादि पूज्य गुरुजनों को दक्षिणा-दिद्वारा पुरस्कृत करके आशीर्वाद ग्रहण करे ।।

विवाहसंस्कारः

जीवन कीपूर्णता की सिद्धि के लिए चारों आश्रम आवश्यक हैं

ब्रह्मचर्याश्रम—जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय कर्तव्य तथा अकर्तव्य का विचार पूर्वक यथार्थ जान लेना अर्थात् मस्तिष्क का उन्नति करना

अथवा बुद्धिजन्य ज्ञान को प्राप्त करना होता है बुद्धिजन्य ज्ञान के लिए शारीरिक उन्नति भी आवश्यक है।

गृहस्थाश्रम—जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय विषयों का राग विचारपूर्वक त्याग न कर सके उसराग का यथार्थ ज्ञान करने के किए नियम पूर्वक (जो काम जिस के लिए करना चाहिए) अर्थ और काम का न्याय पूर्वक संचय करना और शेष आश्रमों की अर्थादि से सेवा करनी होती है।

वानप्रस्थाश्रम—जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय विषयों में अरुचि हो जावे अर्थात् दुःख मालूम हो फिर मन इन्द्रिय आदि का तपश्चर्यापूर्वक संयम करना और पारिवारिक जीवन का त्याग करना विश्व के साथ एकता करना ही वानप्रस्थाश्रम हैं।

संन्यासाश्रम—अवस्था भेद मिटाकर सभी प्रकार से अभय हो जाना अर्थात् अपने में स्थायी भाव से सत्य का अनुभव कर लेना ही संन्यास आश्रम है। जीवन की पूर्णता सिद्ध करने के लिए सन्यास परम आवश्यक है। आश्रमों का बाह्य स्वरूप भले ही मिट जावे परन्तु आन्तरिक स्वरूप उन्नति के लिए परम आवश्यक है अर्थात् अन्तःकरण की रुचि की पूर्ति के लिए चारों ही आश्रम अधिकारी के लिए परम आवश्यक है। जिसको कर्तव्य का ज्ञान नहीं हुआ वह बुड्ढा ही क्यों नहीं हो उसे ब्रह्मचारी होना ही पड़ेगा। जिस को भोग वासना है उसे गृहस्थ होना ही पड़ेगा चाहे कोई भी क्यों न हो। जो अभय होना चाहता है उसे त्याग करना ही पड़ेगा चाहे कोई क्यों न हो। उक्त च

"कृष्णभोगी शुकत्यागीराजानौ जनकराघवौ।
वशिष्टः कर्मकर्ता च पंचैते ज्ञानिनः स्मृताः" ॥ आश्रममंजरी

विवाहे मेलापकम्—तत्रादौ कुण्डलीविचारः—नक्षत्र मेलापक से पहले कुण्डली का भली भाँति विचार करना चाहिए उसमें यद्यपि उच्चकोटि के विद्वानों का विचार है कि संहितादि उच्चकोटि के ग्रन्थों में—

माङ्गलिकयोगः—लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चा अष्टमे कुजे।
पत्नी हन्ति स्वभर्त्तारं भर्ता भार्यां विनाशयेत् ॥
इति उत्तरभारते प्रसिद्ध श्लोकः

धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या पत्युः विनाशाय पतिः कन्या विनाशकः ॥
इतिदक्षिण भारते तेलगु पंचाङ्गेषु प्रसिद्ध श्लोकः

उक्त श्लोक मान्य नहीं है किन्तु उच्चकोटि के ग्रन्थों में न होने पर भी इसका त्याग करना भी असम्भव है। मङ्गल आधुनिक लोगों के मत से भी तोड़-फोड़ कारक है और प्राचीन ग्रन्थों में भी इसे चण्ड प्रचण्ड क्रूर उग्रादि संज्ञाओं से स्मरण किया जाता है "धन भाव विजानीयाद् दाराकारक मेव च" इस वृद्ध कारिका के अनुसार धन भाव में मङ्गल का होना भी माङ्गलिक योग का सूचक है। किन्तु विचारणीय विषय यह है कि मङ्गल कभी कभी पुरुष को सुमङ्गल एवं कन्या को सुमङ्गली बना देता है एवं कुयोगकारक हो तो पुरुष को अमङ्गल एवं कन्या को अमङ्गली बना देता है उसमें शनि के लिए लिखा है "यत्रभौमस्तत्र सौरिः भौम दोश विनाशकृत्" इस वाक्य पर विद्वानों में परस्पर महान् मतभेद है कई लोग इसका अर्थ यह करते हैं पति या पत्नी की कुण्डली में यहाँ भी भौम दोष कारक कहा गया है उन भावों में से कहीं भी शनि महाराज विराजमान हों तो भौम दोष नहीं होता इति प्रथम पक्षः। अथवा जिस भाव में जिस राशि में भौम हो उसका सहचारी होकर शनि का एक राशि सम्बन्ध हो तो भौम दोष नहीं होता। कन्या की कुण्डली में उक्त माङ्गलिक घरों में कहीं भी मङ्गल विद्यमान हो एंव वर की कुण्डली के माङ्गलिक घरों में कहीं भी शनि चला जाए तो माङ्गलिक दोष निवृत्त हो जाता है इति तृतीय पक्षः। कन्या की कुण्डली में जिस भाव का मङ्गल माङ्गलिक योग बना रहा हो उसी भाव में यदि वर की कुण्डली में भी शनि उसी भाव में आ जाए तो शनि द्वारा भौम दोष निवृत्त हो जाता है जैसे :—वर की कुण्डली में यदि मङ्गल लग्न में है तो कन्या की कुण्डली में भी लग्न में ही आए तो भौम दोष निवृत्त होता है। इति चतुर्थः पक्षः। वर की कुण्डली में या कन्या की कुण्डली में जैसे शनिकृत् परिहार कहा है उसी प्रकार शनि के सदृश ही कोई भी क्रूर ग्रह आ जाए तो भौम दोष निवृत्त समझो एवं सबसे उत्तम परिहार कन्या की कुण्डली

में जिस स्थान में माङ्गलिक योग बनता हो उन्हीं स्थानों में वर की कुण्डली में आ जाए तो पूर्ण मिलान माना जाता है। राहु यदि मङ्गल के साथ हो तो भी मङ्गल दोष कारक नहीं होता है "न मङ्गलीमङ्गल राहुयोगे" इति पंचम पक्षः। वृहस्पति की मङ्गल पर दृष्टि, मङ्गल से या लग्न से केन्द्र कोण में गुरु हो, चन्द्रमा से केन्द्र कोण में गुरु, मङ्गल से केन्द्र में चन्द्रमा शुभ ग्रहों की भौम पर दृष्टि हो तो दोष कारक मङ्गल योग कारक बन जाता है इति षष्ठः पक्षः। इन छः पक्षों के अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने एक ऐसा श्लोक लिखा है जो अद्भुत ढंग से भौम दोष को निवृत्त करता है वह है भौम का माङ्गलिक घरों में राशि विशेष सम्बन्ध

'अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।। साथ ही एक विशेष माङ्गलिक योग का उत्तम परिहार है जो कि जिस राशि व नवांश राशि में कन्या को या वर को माङ्गलिक योग बन रहा हो उसी राशि या उसी नवांश में मङ्गल दूसरे की कुण्डली में किसी भी भाव मे स्थित हो चाहे वह भाव माङ्गलिक हो या न हो तो माङ्गलिक दोष हट जाता है जैसे कन्या की कुण्डली मे मङ्गल लग्न में कर्क राशि में बैठा हो तो वर की कुण्डली में वह चाहे पंचम नवम षष्ठ एकादश द्वादश तृतीयादि में भी कर्क राशि में आ जाए तो भौम दोष निवृत्त हो जाता है।

"अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।'

मङ्गल ही केवल लोगों की दृष्टि में दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है यद्यपि अन्य ग्रहों को गौण समझा जाता है तो भी दूसरे ग्रह भी मङ्गल से कम नहीं उदाहरण रूप में आप सबमें शुभ शुक्र को ही लीजिए यदि यह कन्या या पुरुष के लग्न अथवा सप्तम भाव में पड़ा हो तो प्रथम तो विवाह ही नहीं होगा यदि हो भी जाए तो प्रौढ़ावस्था में या अवैध ढंग से। अतः यदि पुरुष को सप्तम भौम का दोष हो एवं कन्या को सप्तम या लग्न में शुक्र हो तो मङ्गल के साथ अनुपम सन्तुलन का अनुभव किया गया है एवं यदि वर को मङ्गल शुक्र किसी भी भाव में एकत्र दिखाई दें तो कन्या को भी उनका एक राशियोग सम्बन्ध होना परमावश्यक है इन दोनों का एक राशि सम्बन्ध प्रेम विवाह Love Marriage का सूचक है। यदि एक की कुण्डली में मङ्गल शुक्र का योग हो और दूसरे की कुण्डली में योग न बनता हो तो दोनों का दाम्पत्य जीवन दुःखमय हो जाता है यदि दूसरे की कुण्डली में मंगल शुक्र के स्थान पर शुक्र राहु का योग पाया जाए तो सोने पर सोहागे का काम करता है। अर्थात् जीवन सुखमय बीतता है। लगे हाथ दो चार योग और बता कर विद्वज्जनों की प्रसन्नता हेतु अविवाह या विवाह प्रति बन्धक योग भी प्रस्तुत करेंगे। यद्यपि भौम परिहारार्थ वृहस्पति का मङ्गल के साथ केन्द्रकोण दृष्टि व राशि योग सम्बन्ध अत्युत्तम कहा है। इस विषय में मेरा मतभेद है क्योंकि वृहस्पति विवाह में संयोजक हुआ करता है कन्याओं के लिए तो "पतिरेको गुरुस्त्रीणाम्" "कन्यायाश्च गुरोर्बलम्" यह दो वाक्य समस्त कुण्डलियों में ध्यान रखने योग्य है कन्या या वर की कुण्डली में लग्नेश और सप्तमेश का परस्पर षडष्टक द्विर्द्वादश बनता हो तो वृहस्पति उन दोनों को एक ही समय गोचर में आकर दृष्टि पात नहीं कर सकता यदि एक पर गुरु की दृष्टि होगी तो दूसरे पर नहीं होगी यह योग मड़ा प्रतिबन्धक योग कहलाता है। एवं सप्तमेश का किसी भी ग्रह के साथ अन्योऽन्याश्रय सम्बन्ध भी दाम्पत्य जीवन में कण्टक का रूप धारण कर लेता है। यदि कन्या की कुण्डली गुरु मङ्गल युक्त, राहु युक्त, शनि युक्त, सूर्य युक्त या केतु युक्त हो तो अनेक बार वर वरण में बाधा उपस्थित करता है यदि विवाह हो भी जाए तो समस्त जीवन दुखमय, विवाहोच्छेद, और मुकद्दमा आदि का सूचक होता है उसमें यदि मङ्गल गुरु सम्बन्ध शनि द्वारा दृष्ट या युक्त भी हो तो योग कुछ शान्त हो जाता है। कन्या के सप्तम सूर्य लग्न से या वृहस्पति से देखा जाए तो वह भी विवाहोच्छेद न भी करें किन्तु परस्पर वैमनस्य विवाह में विलम्ब एवं पति के त्याग की सम्भावना उपस्थित कर देता है। सप्तम सूर्य का मिलान सप्तम सूर्य वाले वर से ही सम्भव है। कन्याओं का सूर्यास्त समय जन्म होना ही दुर्भाग्य सूचक

है उसका परिहार सूर्यास्त समय में उत्पन्न वर ही हो सकता है। द्वितीय, सप्तम, पञ्चम, द्वादश व लग्न में मङ्गल, बुध, शुक्र तीनों का योग आयु भर कुमारावस्था में रखने वाला हुआ करता है। गुरु भौमादि क्रूर ग्रह सम्बन्ध के विषय में एक उक्ति इस प्रकार प्रसिद्ध है—

"संयोज को गुरुः प्रोक्तो भौमाद्याश्च वियोजकाः।
तेषां सम्बन्धमात्रेण उच्छेदः स्यात् करग्रहे ॥"

वर कन्या नक्षत्र मेलापकम्—मेलापक में पहले निम्न बातों का विचार करना परमावश्यक है।

आत्मोर्जिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता।
स्वयमेवागताकन्या नैवास्तां शुद्धिमेलकौ ॥
बह्वीनामेकजातीनां कन्याकानां करग्रहे।
ज्येष्ठाया मेलकं वीक्ष्यलब्धीनां नैव चिन्तयेत् ॥
आसुरादि विवाहेषु राशिकूटं न चिन्तयेत्।
तथा व्यङ्गातिवृद्धानां दुर्भगानां पुनर्भुवाम् ॥
मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन् बरे यस्यां च योषिति।
संतोषो जायते यत्र नान्यत् किंचिद् विचिन्तयेत् ॥

इन श्लोकों से सिद्ध होता है कि प्रेम विवाह Love Marriage में मिलान की आवश्यकता नहीं होती। शास्त्रों में दोनों के मन का परस्पर मिलान करने के लिए कई प्रकार के कूट कहे हैं जिनमें गर्गोक्त अष्टादश कूट, नारदोक्त दशकूट एवं वसिष्ठोक्त अष्टदश कूट देखने में आते हैं जिनमें अष्टादश कूट दाक्षिणात्यों में प्रसिद्ध हैं।

॥ अष्टादशकूटविवरणम् ॥

पहले हम अष्टादश कूट का संक्षिप्त विवरण करने के पश्चात् विशद् रूप से अष्टकूट का वर्णन करेंगे।

(१) माहेन्द्र कूट:—स्त्री नक्षत्र से वर नक्षत्र ४, ७, १०, १३, १६, १९, २२, २५वां हो तो दोनों का विवाह परम प्रीतिदायक होता है।

(२) गणकूट :—अश्विन्यादि नक्षत्रों के गण जानने के लिए ज्योतिषरत्नमाला का एक श्लोक उद्धृत है—

दे म रा म दे म दे दे रा रा म म द रा द रा।
दे रा रा म म दे रा रा म म दे ति ग ण त्र य म् ॥

गण कूट में देवता देवता गण उत्तम, प्रीतिप्रद, देव मनुष्य मध्यम। शेष नेष्ट जानना।

(३) दिन (तारा) कूट :—स्त्री पुरुष की परस्पर एक दूसरे से १, ३, ५, ७ तारा निषिद्ध हैं शेष ताराएँ अनुकूल जानें।

(४) योनि कूट :—अग मे स स श्वा मा मे मा मू मू गो म चि म चि।
मृ मृ श्वा वा न नौ वा सिं अ सिं गो गर्क्षयोनयः ॥
ये अश्वादि योनियाँ अष्टकूटों में भी प्रयुक्त होंगी।

(५) स्त्री दीर्घ (स्त्री दूर) कूट :—स्त्री नक्षत्र से प्रथम नवक में नीचता पूर्वक वैर, द्वितीय में मध्यम तृतीय नवक में पुरुष का नक्षत्र आए तो उत्तम मिलान होता है

(६ रज्जु कूट :—

१ शिरः	अश्वि	ऽश्ले	म	ज्ये	मू	रे
२ कण्ठः	भ	पुष्य	पूफा	ऽनु	पूषा	उभा
३ नाभिः	कृ	पुन	उफा	वि	उषा	पूभा
४ उरुः	रो	ऽऽर्द्रा	ह	स्वा	श्र	श
५ पादः		मृ		चि		ध

(मौलि)	शिरः	१	स्त्रीमरणम्	पतिमरणम्
(गल)	कण्ठः	२	वैधव्यम्	स्त्रीमरणम्
(उदर)	नाभिः	३	अनपत्यत्वम्	सन्ततिदोषः
(कटि)	ऊरु	४	दारिद्रयम्	धन हानिः
(पाद)	पाद	५	जीवनाशः	पतिप्रवासः

एक रज्जु होने पर यह दोष कहे गये हैं भिन्न हों तो अतिसुखद एवं पुत्र पौत्रादि के देने वाले कहे गये हैं।

(७) वश्य कूट :—मेष की वश्य सिंह वृश्चिक। वृष की कर्क तुला, मिथुन की कन्या। कर्क की धनु वृश्चिक। तुला की सिंह। कन्या की मिथुन मीन। तुला की मकर कन्या। वृश्चिक की कर्क। धनु की मीन। मीन

की मकर । कुम्भ की कन्या, मेष की मीन इस प्रकार के वश्य योग में उत्तम प्रीति होती है। वश्याभाव में विवाह कलह प्रद रहे।

(८) वर्णकूट :—मीनादि से विप्रादि संज्ञक वर्ण होंगे। उत्तम वर्ण वर श्रेष्ठ है। हीन वर्ण वर नेष्ट होता है।

(९) राशिकूट :—सम सप्तक, विषम सप्तक, द्विर्द्वादश, षडष्टक, नव पञ्चम, चतुर्थ दशम, तृतीयैकादश इनमें द्विर्द्वादश, षडष्टक, नवपंचम नेष्ट हैं।

(१०) ग्रहमैत्री :—प्रसिद्ध है—नैसर्गिक।

(११) वेधकूट :—

अ	भ	कृ	रो	मृ.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	ऽश्ले
↑	↑	↑	↑	↑	↑	↑	↑	↑
ज्ये.	ऽनु	वि	स्वा	चि	ह	पू.फा	पूफा	म
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
मू	पू.षा	उषा	श्व	ध	श	पू.भा	उ.भा	रे

॥ अन्यमतेन बेध चक्रम् ॥

पूषा — अश्विनी | पुष्य — स्वाती
याम्य — मैत्र | मू — ऽश्ले
विशा — कृत्तिका | रे — मघा
स्वा — शतभिषा | पूफा — उभा
उषा — मृग | शत — उभा
चित्रा — पूभा | पूभा — उफा
कृ — श्र
उषा — पुन

(१२) नाडी :—(क) चतुष्पाद नक्षत्रोत्पन्न कन्या के लिए अश्विन्यादि त्रिनाडी चक्र प्रसिद्ध है।

(ख) त्रिपाद नक्षत्रों में उत्पन्न कन्या के लिए कृत्तिकादि चातुर्नाड़ी

आद्या	कृ	म	पू.फा	ज्ये	मू	पू.भा	उ.भा
द्वितीया	रो	ऽश्ले	उफा	ऽनु	पूषा	श	रे
तृतीया	मृ.	पुष्य	ह	वि	उषा	ध	अश्वि
चतुर्थी	ऽऽर्द्रा	पुन	चि	स्वा	ऽभि	श्र	भ.

(ग) द्विपाद नक्षत्रों में उत्पन्न कन्या के लिए मृगशीर्ष से पञ्चनाड़ी

आद्या	मृ	ह	चि	श्र	ध	रो
द्वितीया	आ	उफा	स्वा	उषा	श	कृ
तृतीया	पुन	पूफा	त्रि	पूषा	पू.भा	भ
चतुर्थी	पुष्य	म	ऽनु	मू	उ.भा	अश्वि
पंचमी	ऽश्ले		ज्ये		रे	

देशकूटानि :—माहेन्द्रे गौड देशे मालवे च रज्जुसंज्ञकम्।
लाटे विदेहे नाडी स्याद वश्यं काश्मीरमण्डले।
वेधः सौराष्ट्र विषये राशि कूटं च दक्षिणे।
योनिर्वै सिन्धुदेशे च ग्रहमैत्रं विदर्भके।
पाञ्चाले गण कूटं स्या ताराकूटन्तु मागधे।

(१३) भूतकूट—

पृथिवी =	अ	भ	कृ	रो	मृ	
जल =	ऽऽर्द्रा	पुन	पुष्य	ऽश्ले	म	पू फा
अग्नि =	उफा	ह	चि	स्वा	वि	
वायु =	ऽनु	ज्ये	मू	पूषा	उषा	श्र
आकाश =	ध	श	पू भा	उभा	रे	

इनमें जल अग्नि का ही वैर है शेष सामान्य शुभ कूट माना जाता है ।

(१४) लिङ्गकूटः—ध, पूषा, उषा, रे, आर्द्रा चि. स्वा वि. भ, ज्ये ऽश्ले म, पू.फा उफा स्त्रीलिङ्ग
मू मृ शत श्र नपुंसक
अश्वि, कृ, रो, पुन पु, ह, ऽनु, श्र
पू. भा. उभा पुलिङ्ग

स्त्रीलिङ्गे प्रीतिरुतमा । स्त्री पुलिङ्ग, पुरुष स्त्रीलिङ्ग में हो तो कलह । नपुंसक में समानता ।

(१६) जातिकूटः—ब्राह्मण=अ भ कृ रो पूभा
क्षत्रिय=मृ ऽऽर्द्रा पुन पुष्य उभा
वैश्य =ऽश्ले म पूफा उ फा रे
शूद्र =ह चि स्वा वि
संकर =ऽनु ज्ये मू पूषा
म्लेच्छ=उषा श्र ध श

एक जाति में प्रीति, पुरुष जाति से हीन कुल स्त्री समता में रहे । स्त्री जाति से हीन कुल पुरुष या विलोम जाति में वैर रहता है ।

(१६) पक्षीकूट—

भेरण्डः =	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	
पिङ्गलः =	ऽऽर्द्रा	पुन	पुष्य	ऽश्ले	म	पू. फा
काकः =	पूफा	ह	चि	स्वा	वि	
कुक्कुटः =	ऽबु	ज्ये	मू	पूषा	उषा	श्र
मयूरः =	ध	श	पूभा	उभा	रे	

एक पक्षि में संपत्ति तथा प्रीति वृद्धि । भिन्न पक्षिओं में हानि एवं कलह

(१७) योगिनी कूट :—

ब्रह्मणी =	कौमारी	वाराही	वैष्णवी	माहेन्द्री	चामुण्डा	महेश्वरी	रमा
अभिजित् =	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	ऽऽर्द्रा	पुन
अभिजित् =	पुष्य	ऽश्ले	म	पू फा	उफा	ह	चि
अभिजित् =	स्वा	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पूषा	उषा
अभिजित् =	अभि	श्र	ध	श	पूभा	उभा	रे

दोनों की एक योगिनी शुभ, भिन्न योगिनी नेष्ट जानें ।

(१८) गोत्रकूटः —

मरीचि.	वसिष्ठ	अङ्गिरा	अत्रि	पुलस्त्य	पुलह	क्रतु
अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन
पुष्य	ऽश्ले	म	पूफा	उफा	ह	चि
स्वा	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पूषा	उषा
अभि	श्र	ध	श	पूभा	उभा	रे

भिन्न गोत्र में उत्तम एक गोत्र में कलह होवे ।

वमिष्ठो रज्जु वर्णयोः स्थाने आय सुधांशयुजौ द्वौ कूटौ वदति ॥

(१९) आयकूटः—ध्वज, धूम्र, सिंह, वृषभ, खर काक गज । अश्विन्यादि नक्षत्रों क्रम से गिनने पर तीन आवृत्तियों के पश्चात् तीन नक्षत्र बच जाते हैं । प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय के साथ रखलें ।

आय कूट बोधक चक्रम्

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	काक	गज		आया: नक्षत्राणि
अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	ऽऽर्द्रा	पुन	पु		
आश्ले	म	पूफा	उफा	ह	चि	स्वा	वि		,,
ऽनु	ज्ये	मू	पूषा	उषा	श्र	ध	श		,,
पूभा	उभा	रे							

स्ववर्गात्पञ्चमः शत्रुः (प्रद्वेषमेषां खनु पंचमेन) अपने वर्ग से पंचम शत्रुता जाननी

(२०) सुधांश युक् (सुधांशजुष) कूटम्—प्रतिपदादि तिथियें आठों दिशाओं में लिख कर सू. म. गु. श. चं. बु. रा. भी क्रमशः स्थापित कर दिगधीश भी लगालें तदुपरान्त अश्विन्यादि आठ नक्षत्रों की आवृत्ति करता जाये। दम्पत्ती के दिगधीश ग्रह एवं तिथीश्वर ग्रहों की मित्रता होने पर मित्रत्व, शत्रुता होने पर शत्रुत्व जाने। शेष चक्र में देख लें।

ति ८।१० राहुः ईशः	ति १।९ सूर्यः इन्द्रः	ति २।१० मंगलः अग्निः
ति ७।१५ बुधः कुबेरः	सुधांश युक्	ति ३।११ गुरुः यमः
ति ६।१४ चंद्रः वायुः	ति ५।१६ शुक्रः वरुणः	ति ४।१२ शनिः निऋतिः

अत्र समस्त भारत प्रसिद्ध अष्ट कूट के विषय में प्रतिपादन करते हैं।

अष्टौकूटाः—वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥

क्रमशः एकोत्तर गुणवृद्धि वर्णादि की श्रेष्ठता सूचक है जैसे वर्ण का एक गुण, वश्य के दो, तारा के तीन, योनि के चार, ग्रह मैत्री के पांच, गण मैत्री के छः, भकूट के सात, नाड़ी के आठ गुण समझें।

(१) वर्णकूटः—मीनादि राशियों के क्रमशः विप्रादि चारों वर्ण निश्चित है हीन वर्ण के वर के साथ उत्तम वर्ण की कन्या का विवाह वर्जित है उसके विपरीत हीन वर्ण या समवर्ण के वर के साथ विवाह उत्तम कहा गया है।

परिहारः—वर की राशि का वर्ण यदि कन्या की राशि से हीन वर्ण का हो तो उसका स्वामी यदि उत्तम वर्ण का हो तो विवाह में उत्तम मिलान समझना। सूर्यादि के वर्ण क्रमशः क्षत्रिय वैश्य क्षत्रिय शूद्र ब्राह्मण ब्राह्मण शूद्र माने गये हैं उक्तं च

हीन वर्णो यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तमः।
तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत्॥

फलित नवरत्न संग्रहे

(२) वश्य—अष्टादश कूटों में वश्य विचार देख सकते है।

परिहार—वश्य का परिहार राशि मैत्री से हो जाता है।

(३) तारा—कन्या या वर से ३, ५, ६ तारा निषिद्ध है।

परिहार—एकाधि पत्य राशि मैत्री हो तो विरुद्ध तारा जन्य दोष नहीं होता।

(४) योनि—योनिओं की सज्ञाएँ अश्व, गज, मेष, सर्प, श्वान, मार्जार मूषक गौ, महिष, व्याघ्र (चित्रा) मृग, वानर, नकुल. सिंह ये अकारादि क्रम से अश्विन्यादि नक्षत्रों से जानी जाती हैं सूत्र पीछे अ ग मे इत्यादि लिख चुके हैं इनका वैर अश्व महिष, गज सिंह, मेष वानर, नकुल सर्प, मृग श्वान, मार्जार मूषक, व्याघ्र गौ, का प्राकृत वैर प्रसिद्ध है।

परिहार—ग्रह मैत्री, एकाधिपत्य वा नवांशेश मैत्री होने से योनि दोष नहीं होता।

(५) **ग्रहमैत्री**—नैसर्गिक मैत्री सर्वत्र प्रसिद्ध है इसी कूट का प्रभाव सब कूटों पर बलवत्ता प्रगट करता है।

(६) **गणकूट**—देमराम इत्यादि वर्णात्मक सूत्र अश्विन्यादि नक्षत्रों के क्रमशः देवता मनुष्य राक्षस का द्योतक है। अष्टादश कूटों में व्यक्त है

परिहार—कृत्तिका रोहिणी स्वातिर्मघा चोत्तरफाल्गुनी।
पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े न क्वचिद् गण दोष दे॥

वृहद्दैवज्ञरंजने मुहूर्त्तकल्पद्रुमः

गणदोषो योनिदोषो वर्ण दोषः षडष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥

(७)**भकूट**—एक राशि, द्विर्द्वादश, तृतीयैकादश, दशम चतुर्थ, नव-पंचम, षड्ष्टक, सम सप्तक, विषम सप्तक भेद से आठ प्रकार का राशिकूट कहा गया है। एक राशि (एकाधिपत्य) समसप्तक यह तीन कूट प्रशस्त हैं। अन्यकूट नेष्ट जानें।

परिहार—मीनादि युग्म राशियों में द्विर्दादश ग्राह्य है। यद्यपि चतुर्थ दशम शुभ कहा गया है किन्तु निम्न श्लोक में इसका अपवाद है—

तुलामृगेणाथ वृषेण सिंहो मेषेण कीटो मिथुनेन मीनः।
चापेन कन्या घटभेन चालिर्दौर्भाग्यदैन्ये दशतुर्यकेऽस्मिन्॥

मुहूर्त्त दीपके

अशुभद्विर्द्वादश—कन्याहरौ कीट तुलाधरौ वा चापे मृगे वा झषगे च कुम्भे।
कुलीर युग्मे वृषभे च मेषे द्विर्द्वादशेवै निधनं करोति॥

शुभद्विर्द्वादशे—चापे फणीन्द्रे घटभे मृगे च अजे झषे सिंह कुलीर के च।
कन्या तुलायां वृषभे च युग्मे द्विर्द्वादशेचाथ करोति वृद्धिम्॥

विशेषतः एकाधिपत्य एवं राशीशमैत्री वा नवांशेश मैत्री पूर्णतः परिहारक मानी जाती है।

द्विर्द्वादश में दारिद्र्य, षड्ष्टक में मृत्यु एवं नव पंचम में अपत्यहानि फल कहा गया है। अशुभ नव पंचम निम्नलिखित है

मेषे च चापे मकरे वृषे च कुम्भे च युग्मे झषकर्कटे च।
कुम्भे तुलायां झष कीटयोश्च शत्रु त्रिकोणं बहुदुःखहानिः॥

चण्डेश्वरः।

यह चण्डेश्वरोक्ति द्वयर्थक सी लगती है अतः बहुदुःखहानि का अर्थ अत्यन्त दुःख की निवृत्ति जानना। वस्तुतः ऐसे बहुत से श्लोक हैं जो मनः कल्पित घड़े गये हैं शुभ नवपंचम निम्न प्रकार से है

मेषे च सिंहे वृषभे च कन्ये युग्मे घटे वृश्चिक कर्कटे च।
सिंहे च चापे मकरे युवत्या मित्र त्रिकोणं बहुपुत्र लाभः॥

शुभ षडष्टक :—तुलावृषभयोर्मीनसिंहयोः कुम्भकन्ययोः।
धनुःकर्कटयोर्नक्रयुग्मयोश्चालिमेषयोः॥
प्रीतिषट्काष्टकं चैतदन्यत्संत्याज्यमेव हि॥ मुहूर्त्तगणपतिः

अशुभ षडष्टक :—शत्रुषट्काष्टकं मेष कन्ययोर्धटमीनयोः।
चापोक्षयोर्नृयुक् कीटभयोर्घटकुलीरयोः॥
पञ्चास्यमृगयोर्जन्मराशेः प्रोक्तोऽशुभः सदा॥

(८) **नाड़ी** :—सर्वत्र त्रिनाड़ी कूट ही प्रसिद्ध है। यह सब कूटों का शिरोमणि कहा गया है यथा—

नाड़ीकूटं तु संग्राह्यं कूटानां हि शिरोमणिः।
ब्रह्मणा कन्यका कण्ठे सूत्रत्वेन विनिर्मितम्॥

त्रिनाडीचक्रम् :—

आदि	अ	आ	पुन	उफा	ह	ज्ये	मू	श	पू.भा
मध्य	भ	मृ.	पुष्य	पूफा	चि	ऽनु	पूषा	ध	उभा
अन्त्य	कृ	रो	ऽश्ले	म	स्वा	वि	श्रुषा	श्र	रे.

"एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योः मरणं ध्रुवम्" मुहूर्त्त प्रकाशे"

इसमें चरणवेध मुख्य है जो स्वरोदय में इस प्रकार वर्णित हैं

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
एवं भांश व्यधो यत्र जायते वर कन्ययोः।
तत्र मृत्युर्न संदेहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

स्वरोदय शास्त्रानुसार प्रथम पाद का चतुर्थ पाद से एवं चतुर्थ पाद का प्रथम पाद से बेध, द्वितीय का तृतीय से तथा तृतीय का द्वितीय से वर कन्या के नक्षत्रों का वेध जानना। अवशिष्ट चरणों का परस्पर स्वल्प से स्वल्प दोष होने से उपेक्ष्य जानें।

परिहार :—एक राश्यादि योगे तु नाड़ी दोषो न विद्यते।
अन्यत्र तु विचार्यैषा स्वभावाच्छोभनाश्च ते ॥
सुहृदेकाधिपयोगे तारावले वश्य राशौ वा।
अपिनाड्यादि विरोधे विवाहो भवति हितार्थाय ॥
ज्योतिष तत्व सुधार्णवे

अतः ज्योतिस्तत्व एवं श्रीपतिनिबन्ध में भी एकाधिपत्य एवं राशिमैत्री नाड़ी प्रभृति समस्त कूटों में पाए जाने वाले दोषों में परिहारक माने गये हैं इसी प्रकार एक राशि भिन्न नक्षत्र एवं एक नक्षत्र में भी राशिभेद तथा चरण भेद होने से नाड़ी दोष निवृत्त हो जाता है।

उक्तं च

ज्योतिर्विदाभरणे :—एक राशिरुभयोर्भिन्नभं चेदभिन्नभमुतान्य राशिता।
पुंस्त्रियोरतिरतीव नो यदारोहिणी शुचि भनाडी कोडुवत् ॥

इसी प्रकार :—एक नक्षत्र जातानां नाड़ी वेधो न विद्यते।
भिन्नांशश्चैकराशीनां दम्पत्योः प्रीतिहेतवे ॥

बृहस्पति :—एक राशौ पृथग्धिष्ण्ये पृथग् राशौ तथैकभे।
गणनाडी नृदूरं च ग्रहवैरं न चिन्तयेत् ॥

ज्योतिर्निबन्धे :—दम्पत्योरेक राशिश्चेद् भिन्नमृक्षं यदा तदा।
गण दोषोऽप्येकनाड्यां विवाहः शुभदः स्मृतः ॥

रत्न कोशकार तो एक नक्षत्र गत दोनों के एक चरण होने पर भी मिलान शुभ मानते हैं तद यथा—

केचिन्नेच्छन्ति चैकांशे केचिदिच्छन्ति मेलकम् ॥

निम्नलिखित प्रमाणों द्वारा सिद्ध होता है कि निम्नोक्त नक्षत्रों में वर कन्या का जन्म होने से नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होता।

रत्नकोशे—वैश्वानरद्र् हिण्योरदितीशयोश्च तद्वत्करार्यमभयोर्द्वयधिपानिलेन्द्वोः।
छागैकपादवरुणयोः श्रुतिवैश्वयोश्चस्यादभिन्नभवने न हि नाडीदोषः ॥

कृतिका, रोहिणी नक्षत्रों में पुनर्वसु आर्द्रा में, उत्तरा फा. हस्त में, स्वाती विशाखा में, शतभिषा पूभा. में, उषा. श्रवण में इन नक्षत्र युग्मों में जन्म होने पर चाहे वे एक पाद हों या भिन्न पाद में हों। चाहे अभिन्न राशि ही क्यों न हों नाड़ी दोष नहीं हो सकता।

काल निर्णयेऽपि —विशाखिकार्द्रा श्रवणः प्रजेशतिष्यान्त्यतत्पूर्वमघा प्रशस्ता।
स्त्रीपुंसतारैक्यपरिग्रहेऽपि शेषा विवर्ज्या इति संगिरन्ते ॥

भृगु :—रोहिण्यार्द्रा मघेन्द्राग्नी तिष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यमथाष्टौ च शुभ भवति नान्यथा ॥

यही श्लोक ज्योतिषचिन्तामणि में है किन्तु उसमें मघेन्द्राग्नी के स्थान पर मृगेन्द्राग्नी पाठ विचारणीय है। अन्त्य पाद निम्न है—

नाड़ी दोषो न विद्यते

मुहूर्त्तगणपतौ—विशाखार्द्राश्रवः पुष्योरोहिण्युत्तरभाद्रपात्।
रेवती च मघा श्रेष्ठा नेतरश्चैकभे द्वयोः।

विधिरत्ने भृगु :—रोहिण्यार्द्रामघेन्द्राग्नितिष्य श्रवण पौष्णभम्।
उत्तराप्रोष्ठपाच्चैव नक्षत्रैक्येऽपि शोभनम् ॥

लल्ल :—प्रीतिवित्त सुखदः करग्रहेस्त्वेकराशिषु च भिन्नभं यदि।
वारुणाज पादभं भवेद्यदा नाड़ीदोषगणजो न विद्यते ॥
नाड़ीगणौ नैकराशौविन्त्यो भिन्नभयोर्यथा।
कृत्तिकाकभयोर्द्वीशस्वात्योः पूभाजलेशयोः ॥

लल्ल भट्ट ने भी नन्दी के रत्नकोश की तरह कृत्तिका रोहणी, विशाखा स्वाती, पूभा शतभिषा इन नक्षत्रों में भी नाड़ी दोष का पूर्ण परिहार मानते है। इसी प्रकार ज्योतिर्निबन्ध में भी विवाह वृन्दावन का प्रमाण मिलता है

तद यथा :—नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योर्यदि भिन्नमृक्षम्।
प्रीतिस्तदानीं निविडा नृनार्योश्चेत् कृत्तिकारोहिणीवन्न नाडी ॥

एक नक्षत्र उक्त नक्षत्रों में से वर या कन्या का आ जाए जिसका

परिहार कहा गया है और दूसरे का नक्षत्र ऐसा आए जिसका परिहार नहीं कहा गया। जैसे कन्या का ज्येष्ठा नक्षत्र है जिसकी आदि नाडी है एवं वर का आर्द्रा नक्षत्र है जिसकी आदि नाडी होने से यद्यपि एक नक्षत्र का परिहार मिलता है और दूसरे का परिहार वाक्य नहीं मिलता वहाँ "निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः" इस परिभाषा से एक का परिहार होने पर दूसरे का स्वयं ही हो जाता है। इसके अतिरिक्त एक ऐसा वाक्य मिलता है जिसमें ओर भी नक्षत्रों का समावेश किया है उक्तं च

बृहद्दैवज्ञरंजये:—अजैकपान्मित्रवसुद्विदैव प्रभंजनाग्न्यर्क भुजगभानि।
मुकुन्द जीवान्तक भानि नूनं शुभानि योषिन्नरजन्मभैक्ये ॥

पूर्वाभद्रपदा अनु, धनि, विशा, स्वा, कृत्तिका, हस्त, आश्लेषा, श्रवण पुण्य, भरणी इन नक्षत्रों में से कोई भी दो नक्षत्र वर कन्या के आ जाएं और नाड़ी दोष हो तो उसका परिहार होकर स्त्री पुरुष के लिए शुभ कहे गये हैं। एक राशि में भी दो नक्षत्र हों और नाड़ी भेद भी हो जाए तो भी विवाह में वर्जित जानना।

उक्तं च:—एक राशौ द्विनक्षत्रे कृत्तिकायाम्यतारके।
धनिष्ठा शततारे च पुष्याश्लेषौ च वर्जयेत् ॥

सभी के परिहार के विषय में राजयोग ही एक मुख्य परिहार है जो ज्योतिष तत्व सुधार्णव में राजमार्तण्डोक्ति रूप में ग्रहण किया गया है वस्तुतः राजमार्तण्ड में यह श्लोक उपलब्ध नहीं है तो भी प्रमाण रूप में नीचे दे रहे हैं

न राजयोगे ग्रह वैरिता च न तारशुद्धिर्नगणत्रयं स्यात्।
न नाडि दोषो न च वर्ण दुष्टिर्गर्गादयस्तं मुनयो वदन्ति ॥

विवाह कुतूहले:—शुक्रेजीवे तथा सौम्य एक राशीश्वरे यदि।
नाड़ी दोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

दूसरे ढंग से परिहार इस प्रकार है

ज्योतिःप्रकाशे:—निषिद्ध मेलापके शान्तिं कृत्वा दानं यथोदितम्।
दत्त्वोद्वाहं प्रकुर्वीत प्रशस्तं शौनकादिभिः ॥

मुहूर्त्तमार्तण्डे—द्वयर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मथङ्के

रौप्यं कांस्यमर्थकेन डी युग्जिगोस्वर्णादि दत्त्वोद्वहेत् ॥

गुरु—दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युंजयजपादिकम्
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् काञ्चनादिना ॥
हिरण्मयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके।
गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम् ॥

उद्वाहतत्वे—ताम्रं हेमवने व्यये रजतयुक् कांस्यं शराङ्कैवृषम् ॥
गांदद्याच्च षडष्टके द्विज भुजिः स्वर्ण च नाडी युता ॥

भिन्न भिन्न जातिओं के लिए भिन्न कूट निश्चित किए गए हैं इन पर विचार करना चाहिए तथा—

मुहूर्त्त कल्पद्रुमे—नाडी योनी द्विजस्योक्ते गणवर्णो च बाहुजे।
वैश्यानां राशिकूटं स्याद्योनिवर्गस्तु शूद्रजे ॥

शीघ्रबोधे—नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजे ॥
एवमपि ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा।
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा ॥

अत्रिः—राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वेथांश नाथयोः।
गणादिदौष्टयेऽप्युद्वाहः पुत्र पौत्र प्रवर्धनः ॥

जिन वर कन्याओं की जन्मकुण्डली न हो उनके प्रसिद्ध नाम के आदिम अक्षर के अनुसार नक्षत्र मिलान उक्त पद्धति से ही किया जाता है किन्तु इसमें नाड़ी विचार अश्विन्यादि त्रिनाड़ी चक्र के स्थान पर स्वर शास्त्रोक्त पद्धति से कृत्तिकादि नाड़ी चक्र में आदि मध्य अन्त्य, अन्त्य मध्य आदि के क्रम से अश्विन्यादि वत् ही विचार करना चाहिए। कई लोग विवाह के समय ग्रहगोत्र मिलान करते समय शेष समस्त कूटों के विचार को छोड़ कर केवल

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः।
एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्र पौत्र सुखावहम् ॥

इसी श्लोक के अनुसार वर कन्या के नाम परिवर्तन की परम्परा चली आ रही है। जिसका ग्रामीण समाज में परित्याग अत्यन्त

दुष्कर है।

वरवरणम् :—इस प्रकार पूर्ण रूप से कन्या वर मेलापकीय पद्धति के अनुसार मिलान के पश्चात् वर कन्या दोनों ओर के बन्धु परस्पर कन्या वर की योग्यताओं के अनुसार वर वरण का निम्न प्रकार से मुहूर्त्तादि निश्चित करके उसके अनुसार कन्या के भाई एवं अन्य पुरोहितादि द्वारा वर वरण करें।

वरवरण मुहूर्त्त :—पूर्वा ३, उत्तरा ३, रो. कृ एवं सभी विवाह नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभवार शुभ लग्नों में भद्रादि दोष वर्जित किसी भी वैवाहिक मास में यज्ञोपवीत, द्राक्षा, नारियलादि शाकुनिक फल वस्त्रादि द्वारा वर-वरण करें। कन्या का भाई या पुरोहित उत्तराभिमुख वर को पूर्व मुख बिठाएं।

वरवरण विधानम् :—आत्म पूजा के पश्चात् प्रतिज्ञा संकल्प कर गणेशमातृ, नवग्रह पूजा के अनन्तर वर वरण कृत्य किया जाता है।

प्रतिज्ञा संकल्पः—ॐ अद्यामुकगोत्रोऽमुक शर्माहं अमुकी देव्या भगिन्याः (यजमान कन्यायाः) विवाहाङ्गी भूतवर वरण विधौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं श्री गणपतिवरुणाऽऽदित्यादि ग्रहाणां पूजनं करिष्ये। स्वस्तिवाचन पूर्वकं गणेशमातृका वरुण ग्रहादीन् संपूज्य वरपूजनं च कुर्यात्।

केसरतिलकम् :—सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्।

अक्षतार्पणम् :—ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः सुषदापश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मेदाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषम्मे दाः। विधृतिरुपरिष्ठाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्टाभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥

रुमाल (उष्णीषम्)—ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयउन्नयन्त स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

यज्ञोपवीतम् :—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजम्पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यम्प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

पुष्पमाला :—ॐ याऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मे यै कामायेन्द्रियाय। ताऽअहं प्रति गृभ्णामि यशसा च भगेन च ॥

पुष्पमालार्पणम् :—ॐ यद्यशसोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलपृथु।
तेन संग्रथिताः सुमनसऽआबध्नामि यशोमयि ॥

अलङ्कारार्पणम् :—ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽअलङ्करणं भूयात्।

सुगन्धतैलम् :—ॐ वसोः पावत्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।

वरण संकल्पः—ॐ तत्सद्द्यास्मिन् वरवरण कर्मणि गन्धाक्षत पुष्प वस्त्र यज्ञोपवीत नारिकेल द्राक्षावाताद खार्जूरकैलाफलर्तुफलादि सहितैर्मुद्रादि द्रव्यैश्चामुक गोत्रमुकशर्म वर्म गुप्त दास वा वरं करिष्यमाण भगिनी (यजमान) कन्या दानार्थं त्वामहं वृणे।

वरः—"ॐ वृतोऽस्मि" इति वदेत्।

कङ्कणबन्धनम् :—ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

शकुन पात्रदानम् :—ॐ तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नातेह्यरोगिणि।
अव्यङ्गेऽपत्तितेऽक्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति ॥

शकुन पात्राभिवन्दनम् :—ॐ ऋतवस्थऽऋतावृधऽऋतुष्ठास्थऽऋतावृधः।
घृतश्च्युतोमधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुघाऽअक्षीय माणाः।

तदनन्तर शकुनपात्र की बन्दना करके उसको मात-पिता, गुरु तथा बन्धुबान्धवों के सामने रखे इसके बाद आचार्यादि को दक्षिणा देकर देवताओं को विसर्जन करके जूठन करें फिर गुरु माता पिता बन्धु बान्धवों को नमस्कार करें यदि विवाहपत्रिका लाई हो तो आचार्य सब बन्धुबान्धवों को सुनावें ॥

कन्यावरणम्

कन्या वरण मुहूर्त्तः—कृ. रो. मृ. म. पूर्वा३, उत्तरा ३, ह, स्वा, अनु, मू, श्र, रे. इन नक्षत्रों में शुभतिथि एवं भौम रहित वारों में, भद्रादि वर्जित समय में शुभ ग्रहों के लग्नों केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह होने पर एवं त्रिषडाय में क्रूर ग्रह तथा उपचय में बृहस्पति, लग्न में शुक्र चन्द्र तारानुकलता देखकर कन्या के घर कन्या को वस्त्रादि द्वारा नारिकेल द्राक्षादि

फलों द्वारा गौरीहर लक्ष्मी ओंकार, कुबेरादि की पूजा करवा कर कन्या की गोद में सफल शकुन डाल दें।

वरपितुः पठनीय मंत्रः—वाचादत्तात्वयाकन्या पुत्रार्थं स्वीकृता मया।
वरावलोकन विधौ निश्चितस्त्वं सुखी भव॥

यह विधि देशभेद एवं कुलाचार के अनुसार अनेक ढंग से की जाती है किन्तु हमारे द्विगर्त देश में विवाह से पूर्व विषम दिनों में वर के पक्ष में सभी बन्धु एकत्रित हो आचार्य को बुला कर वर द्वारा निम्न प्रकार से पूजा कराकर मांङ्गलिक ग्रंथीकृत्य के पश्चात् एक नारियल पञ्च मेवे नकद रुपया लेकर उसमें से कुछ मेवा गण मातृका ग्रह पीठ पर एवं कुछ कुलदेवता के लिए दान करके पुरोहित को दिया जाता है शेष एक बड़ी गाँठ में शकुन द्रव्य डाल कर कन्या वालों के घर पूजादि के पश्चात् कन्या की गोद में डाला जाता है।

संकल्पः—ॐ अद्यामुकगोत्रोऽमुक शर्माहं सपत्नी को ऽमुक वालस्य (कन्यायाः) विवाहात्पूर्वं ग्रंथि मङ्गले दहराश्रये कुलदेव स्थापन विधौ च समस्त ग्रहमण्डपाधिष्ठातृ देवानां पूजन पूर्वकं समातृकं गणेश पूजनं करिष्ये। गणेश ग्रहमण्डपाधिष्ठातृदेवान्सम्पूज्य दहराश्रये कुलदेव स्थापनान्ते।

कुलदेवप्रार्थनाः—कुलानां शुभदः शान्तः सर्वदा कुलवर्धनः।
आयुर्बलं यशो देहि कुलदेव नमोऽस्तुते॥

इसके बाद सब देवताओं को द्राक्षा खार्जूर मधुर फलादि दक्षिणा सहित दानकरें।

संकल्पः- ॐ तत्सबद्ध ग्रन्थि मङ्गलकर्मणि समस्तग्रहमण्डलाधिष्ठातृ देवानाँ कुलदेव सहितानां प्रीत्यर्थं सदक्षिणकं द्राक्षाखार्जूरकादिनैवेद्यं वनस्पति दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। इसके बाद विवाह में जितने दिन शेष रह गये हों उसके अनुसार मंगलसूत्र में गाँठे लगावें।

ग्रन्थि मन्त्रः—ग्रथिताः सततं देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
ततोऽत्र मंगलानि स्युर्ग्रन्थिकरणं मंगलात्॥

इसके बाद वंशपात्र में रखे गये द्राक्षाफलादि पर मंगल सूत्र रखकर गन्धादि द्वारा पूजा करके निम्नलिखित प्रार्थना करें।

प्रार्थनामन्त्रः—यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥
मङ्गलं भगवान विष्णुर्मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनो हरिः॥

इसके बाद दक्षिणादि द्वारा आचार्य को सन्तुष्ट कर देवताओं का विसर्जन करके बालक को जूठन करवाकर ग्रन्थि द्रव्य को पुरोहित द्वारा कन्यावरण करने के लिए लड़के के ससुराल भेजनी चाहिए।

विवाहकाल एवं ग्रह शुद्धि

कन्याओं का विवाह शास्त्रोक्त पद्धति के अनुसार छः वर्ष के पश्चात् सम वर्षों में एवं वर का आठ वर्ष के पश्चात् विषम वर्षों में शुभ कहा गया है—कलौ तु सर्वशास्त्रोक्तं पूजाद्यं त्रिगुणं भवेत् तदेव फलदं भूयाद् अन्यथा दुःखमेव हि॥ इस पराशर के वचनानुसार १८ वर्ष के पश्चात् कन्या एवं २४ वर्ष के पश्चात् वर का विवाह राजकीय अधिनियम एवं आयुर्वेदिक रजोवीर्यादि पुष्टयनुकूल समय में पुरुषों के लिए विषम वर्ष स्त्रियों के लिए सम वर्षों में, २२ वर्ष के पश्चात् कन्या २८ वर्ष के पश्चात् वर के लिए कोई वर्ष प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता इसके पहले महर्षियों ने रजोवीर्य पुष्ट्यर्थं कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिए थे जैसे विवाह में वर्जित वर्षों के लिए बहुत से श्लोक है जिनमें से एक उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जाता है यथा—

आद्ये (अब्दे) चतुर्थे वसु षोडशे च एकोनविंशे च द्विविंशतौ च।
माङ्गल्य क्षौरं च विवाह कृत्यं कर्मोदितं यस्य यमेन तुल्यम्॥

२५ वर्ष के पश्चात् गृहस्थाश्रम में प्रवेश शास्त्र विहित हैं। उसमें सम विषमादि वर्षों की समस्याओं के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए। ज्योतिष के छोटे मोटे मुहूर्त ग्रन्थों को छोड़कर किसी भी ग्रन्थ में २५ वर्ष के पश्चात् शास्त्रीय प्रतिबन्ध दृग्गोचर नहीं होता। प्राचीन शास्त्रों में तो कन्या के लिए एवं वर के लिए निम्न श्लोक पढ़ें जाते थे—

दशवर्ष व्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धि विवर्जिता।
तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धौ पाणि ग्रहोमतः॥

द्वादशाब्द परे कन्या षोडशाब्द परे वरे ।
व्यये वेदाष्टमे सूर्ये गुरौ चैव न दोषभाक् ॥

अन्य मनुस्मृति प्रभृति धर्मशास्त्र ग्रन्थों में षोडशाब्द या अष्टादशाब्द के पश्चात् कन्या एवं द्वाविंश वा चतुर्विंश वर्ष के पश्चात् वर का यदि माता पिता विवाह न कर पाए तो वर कन्या दोनों ही अपने विवाह के लिए स्वतन्त्र हैं ।

विवाह के लिए यद्यपि उत्तरायण के चैत्र वर्जित मास ही ग्राह्य हैं परन्तु राजमार्तण्ड के अनुसार चैत्र पौष वर्जित अन्य मास शुभ हैं यथा—

मङ्गलेषु विवाहेषु कन्याया वरणेषु च ।
दश मासाः प्रशस्यन्ते चैत्र पौष विवर्जिताः ॥

धर्म शास्त्रानुसार निर्णय सिन्धु में तो चैत्र पौष भी विवाह में उत्तम माने गये हैं और गुरु शुक्रास्तादि का भी धर्म शास्त्रों ने विवोहोपनयनादि में कोई दोष नहीं माना यह केवल ज्योतिष शास्त्र के वचन ही लेकर धर्मशास्त्र के वचनों का त्याग किया जाता है । माघ, फाल्गुन तो वहाँ बौधायन कात्यायन इत्यादि धर्म शास्त्र कारों ने शूद्र नीचादियों के लिए विवाहोपयुक्त मास माने हैं जिन्हें ज्योतिष के मुहूर्त्त ग्रन्थ उत्तमात्युत्तम स्वीकार करते आ रहे हैं । इस विषय में ज्योतिष रहस्य द्वितीय खण्ड पर ४२ पृष्ठ में "विवाह मुहूर्त्त पर धर्मशास्त्रीय विचार" (शीर्षक का लेख धर्म निर्णय मण्डल लोना वाला द्वारा प्रस्तुत पढ़ सकते हैं।) यदि वर और कन्या प्रौढ़ हो गये हों अथवा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध उपस्थित हो जाए या कहीं विदेश यात्रा ही करनी पड़े, राष्ट्र विप्लव वा माता पिता के आसन्न मृत्यु प्रतीत हो रही हो तो ऐसे धर्म संकट काल में वृहद्दैवज्ञरंजनकार एवं लल्ल भट्ट के अनुसार गुरु शुक्र के मौढ्यावस्था (अस्तत्व वालवृद्धत्वादि) का ज्योतिष के अनुसार भी पूजादि शान्ति विधान से विवाहादि कृत्य सम्पन्न कर लेना धर्म शास्त्र सम्मत है । प्रयोग पारिजात के विवाह प्रकरण में आचार्य लल्ल भट्ट का निम्न श्लोक प्रमाण रूप में उपस्थित कर रहे हैं—

यद्येकस्यापि मूढत्वे शुभकर्म न दोषकृत् ।
द्वयो र्मूढत्वमेवोक्तं दोषदं गुरुशुक्रयोः ॥
—ज्यो. रत्न कोषे

आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्मकारिणाम् ।
विवाहादीनि कुर्वीत मौढ्येऽपि गुरुशुक्रयोः ॥
शान्तिं कृत्वा तयोस्तद्वच्छुक्रदेवेन्द्र मन्त्रिणः ।
होमैर्दानैर्जपैर्वापि तयोरुक्तैश्च मन्त्रकैः ॥
— वृहद् दैवज्ञरंजने

अतः वर प्राप्त कन्या के लिए अत्यधिक समय शुद्धि को महत्व नहीं देना चाहिए क्योंकि पहले ही वर प्राप्ति के लिए समयातिक्रान्त हो चुकी हो समय शुद्धि का विचार व्यर्थ है । जन्म मास आद्यगर्भजात पुत्र पुत्री के लिए ही निषिद्ध है न कि द्वितीय तृतीय गर्भादि के लिए। मुहूर्त्त चिन्तामणि में प्रमाण निम्न प्रकार से उद्धृत है—

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदा ॥

यदि वर कन्या आद्य गर्भ ही हों तो उसकी अवधि जन्म प्रविष्ट से आरम्भ करके गणना करें न कि उसके पीछे की प्रविष्टें भी ग्रहण की जाएँ । उसमें भी वसिष्ठ के अनुसार जन्म प्रविष्ट ही दूषित है । गर्ग के अनुसार पाँच दिन, अत्रि के मत में तीन दिन, भागुरि के मत में केवल एक पक्ष ही विवाह मुण्डन एवं यात्रा में निषिद्ध है समग्र मास नहीं। उक्तं च—

जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पंचैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः ।
तज्जन्म पक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षरे च ॥
—जगन्मोहने

इसी प्रकार ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठवर ज्येष्ठ कन्या तीनों का योग त्रिज्येष्ट कहलाता है जो विवाह में निषिद्ध है । उनमें वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो विवाह कर लेना चाहिए । यदि लड़के के माता पिता हठी हों तो कृत्तिका नक्षत्र में से सूर्य निकल जाने पर त्रिज्येष्ठ विवाह भी शुभ माना जाता है । कृत्तिका नक्षत्र में से सूर्य वृषके ११वें अंश में

आते ही निकल जाता है यथा—

दशाहं चैव गर्गस्तु त्रिदशाहं बृहस्पतिः ।
अर्क भोग्यानग्नि भयं मुनिप्राह पराशरः ॥

भरद्वाज के मत में मार्गशीर्ष भी ज्येष्ठ बालक बालिका के लिए निषिद्ध है ।

मार्गशीर्षे तथा ज्येष्ठे क्षौरं परिणयं व्रतम् ।
आद्य पुत्र दुहित्रोश्च यत्नतः परिवर्जयेत् ॥

सम विषम के विषय में भ्रान्त व्यक्तियों के लिए ध्यान रहे कि तीन मास त्याग कर सम वर्ष में वर का एवं विषम में कन्या का विवाह कर लेना चाहिए क्योंकि शास्त्रकारों ने वर्षो गणना "आधानाज्जन्म कालाद् वा "आधान से ही बतायी है :—

मास त्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मेतु मासत्रयमेव यावत् ।
विवाहशुद्धि प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः ॥ श्रीपतिबन्धे

पुत्र विवाह के पश्चात् पुत्री का विवाह—

पुत्र विवाह के पश्चात् सौर गणना से छः महीने तक कन्या का विवाह उपनयन या मुण्डन आदि नहीं करने चाहिए । उक्तं च :—

"पुत्रोद्वाहान्नेव पुत्र्याः कदाचिदाषण्मासात्कार्य्यमुद्वाहकर्म" वसिष्ठ

किन्तु कन्या के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह कर देना चाहिए क्योंकि पुत्री का विवाह पुत्र के उपनयन के तुल्य माना गया है यदि करना ही हो तो सम्वत्सर के भेद से पुत्र के विवाह के पश्चात् कन्या का विवाह कर सकते हैं जैसे माघ में पुत्र का विवाह हो तो वैशाख में कन्या का विवाह करने में कोई दोष नहीं तथैव उक्तं

"भेदादब्दस्य कुर्वीत नर्त्तुत्रय विलंघनम्" ज्योतिर्निबन्धे

एक उदर से उत्पन्न वर कन्या का निर्णय— (कात्यायनः)

सहोदर दो भाईयों को सहोदर दो कन्याएं नहीं देनी चाहिए । किन्तु यदि सर्वप्रथम मुण्डन के पश्चात् लघु संस्कार के पश्चात् लघु संस्कार निषिद्ध हैं आवश्यक हो तो मातृ भेद से अर्थात् उनकी माँ एक न हो तो तब हो सकता है माँ एक हो तो कदापि नहीं

"एको:र प्रसूतानां नात्र कार्य्यत्रयं भवेदिति" वसिष्टः
"आदौ चौलं ततो मौञ्जी विवाहश्च शुभप्रदः" च्यवनः

माता के भेद होने पर भी अथवा मण्डप भेद, आचार्य भेद से भी शास्त्र की आज्ञा से दो तीन विवाह एक ही घर में हो सकते हैं यथा—

द्विशोभनेत्वेकगृहेऽपिनेष्टं शुभन्तु पश्चान्नवभिर्दिनैश्च ।
आवश्यकं शोभनमुत्सवो वा द्वारेऽथवाचार्य्यविभेदतोऽपि ॥

किन्तु दो भांई या दो बहने यमल उत्पन्न हुए हों तो एक ही वर्ष मास दिन में एवं एक ही मण्डप में विवाही जाएँ तो कोई दोष नहीं यथा—

"एकस्मिन् वत्सरे चैव वासरे मण्डपे तथा ।
कर्तव्य मंगलं स्वस्त्रोर्भ्रात्रोर्यमलजातयोः ॥"

॥ भट्टकारिका ॥

यमल कन्या व पुत्र में ज्येष्ठत्व ज्ञान के लिए देवल एवं मनु के प्रमाण मिलते हैं कि यमल में से जिसका मुख दर्शन में प्रथम आए वही ज्येष्ठ माना जाता है अर्थात् जो प्रथम उत्पन्न हो वही ज्येष्ठ होता है यथा—

यस्य जातस्य यमयोः पश्यति प्रथमं मुखम् ।
सन्तानः प्रथमश्चैव तस्मिञ्ज्येष्ठ्यं प्रतिष्ठितम् ॥
जन्म ज्येष्ठेन चाह्वानं सुब्रह्मण्यास्वपि स्मृतम् ।
यमयोश्चैवगर्भेषु जन्मतो ज्येष्ठतामता ॥

विवाह के आगे पीछे कोई श्राद्धादि आता हो तो विवाह आरम्भ के पश्चात् वर्ष के भीतर उसके सम्पन्न करने से विवाहित वर एवं कन्या के लिए अशुभ सूचक माना गया है । अतः उसे नान्दी श्राद्ध के पूर्व ही समाप्त कर देना चाहिए यद्यपि प्रेत कार्य भी सपिण्डी के पश्चाद्वर्ती बीच में आते .ों उनको भी पहले ही समाप्त कर लेना अनिवार्य है यथा—

सपिण्डीकरणादर्वागपकृष्य कृतान्यपि ।
पुनरप्यपकृष्यन्ते वृद्धयुत्तरनिषेधनात् ॥
प्रेत कार्य्याण्यनिर्वर्त्य चरेन्नाऽभ्युदयक्रियाम् ।
[illegible] पञ्चमे शुभदं भवेत् ॥

नान्दी श्राद्ध के पर्याय वृद्धि श्राद्ध, आभ्युदयिक श्राद्ध, ऋषि श्राद्ध, मातृका श्राद्ध, देव श्राद्ध इत्यादि हैं तो वृद्धि श्राद्ध के बिना प्रेत कृत्य पितृकृत्य आदि का अपकर्ष (पहले कर लेना) अत्यन्त अनर्थकारी माना गया है।

वृद्धिश्राद्ध विहीनस्य प्रेतश्राद्धानि यश्चरेत्।
स श्राद्धी नरके घोरे पितृभिः सह मज्जति ॥

विवाह निश्चय के पश्चात् वधूवर के तीन पुरुषों के अन्दर कुल में यदि कोई दिवंगत हो जाए तो एक मास के पश्चात् अथवा अशौच समाप्ति होने पर विनायक शान्ति करके विवाह कर लेना चाहिए वर कन्या के पिता या माता के मरने पर शास्त्र में अशौच निवृत्ति का विधान निम्न प्रकार से है प्रमाण प्रस्तुत है—

पितुरब्दमशौचं स्यात्तदर्धं मातुरेवहि।
मासत्रयं च भार्यायास्तदर्धं मातृपुत्रयोः।
अन्येषां तु सपिण्डानामाशौचं मास सम्मितम्।
तदन्ते शान्तिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते ॥

ऐसी प्रतिकूलता आ जाने पर भी यदि दुर्भिक्ष राष्ट्रभंग माता पिता के प्राण संशय अथवा कन्या की प्रोढ़ावस्था उपस्थित हो प्रातिकूल्य में भी दोष नहीं होता अतः शान्ति कर के भी विवाह कर सकते हैं यथा—

दुर्भिक्षे राष्ट्र भंगे च पित्रोर्वा प्राणसंशये
प्रोढ़ायामपि कन्यायां प्रति कूल्यं न दुष्यति।
दीर्घरोगाभिभूतस्य दूर देश स्थितस्य च।

शान्ति के बिना संकट में भी विवाह नहीं करना चाहिए।

संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना।
शान्तिश्चोक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत् ॥

वृद्धिश्राद्धनिर्णयः—एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहेदशवासराः।
त्रिषट्-चौलोपनयने कार्यारम्भः प्रचक्षते।
(नान्दी श्राद्धं विधीयते) संस्कारकौस्तुभे

गोचर विचारः—विवाह निश्चित करने के लिए वर और कन्या की जन्म राशि से गोचर बल में केवल तीन ग्रहों का बल विचार करना शास्त्र सम्मत है वर के लिए सूर्यबल कन्या के लिए गुरुबल एवं दोनों के लिए चन्द्रबल का विचार कर लेना चाहिए।

प्रमाणम्—वरस्य भास्कर वलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलंग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥ (काशीनाथः)

वरस्यभास्करबलम् वर की जन्मराशि से सूर्य	३,६,१०,११	में अतिश्रेष्ठ	
,, ,, ,,	२,५,९	मध्यम (पूज्य)	
,, ,, ,,	१,७	में न्यून मध्यम (द्विगुणितपूजया)	
,, ,, ,,	४,८,१२	में अशुभ	

विशेष :—सूर्य के उच्च होने पर वैशाख में १, ७ में द्विगुण पूजा ४, ८, १२ में त्रिगुण पूजा से विवाह कर सकते हैं ॥ ज्योतिर्निबन्धे

कन्यायाश्चगुरोर्बलम्—

कन्या की जन्म राशि से गुरु	२,५,७,९,११	में अतिश्रेष्ठ
,, ,, ,, ,,	१,३,६,१०	में मध्यम (पूज्य)
,, ,, ,, ,,	४,८,१२	में अशुभ

द्वयोश्चन्द्रबलंग्राह्यम्—

वर और कन्या दोनों की जन्मराशि से चन्द्रमा	२,३,५,९,१०,११	में शुभ
,, ,, ,, ,,	१,६,७	में मध्यम (पूज्य)
,, ,, ,, ,,	४,८,१२	में अशुभ

यद्यपि उपरोक्त श्रेष्ठ मध्यम नेष्टादि निर्णय शास्त्रों में सामान्य रूप से कहे गये हैं तो भी गोचर के विषय में निम्न प्रकार के प्रमाण शास्त्रों में विशेष रूप से उपलब्ध होते हैं उसमें सर्वप्रथम सूर्यबल के विषय में कुछ आपत्तियाँ दृग्गोचर होती हैं जैसे शास्त्रोक्त श्रेष्ठ मासों में तुला राशि वाले का विवाह असम्भव होगा क्योंकि पूज्य सूर्य में कई लोग मानते ही नहीं अतः वहां ज्योतिष रत्नमाला में निम्न प्रकार से उक्ति द्वारा श्रेष्ठ विवाह स्वीकार किया जाता है

गर्गाङ्गिरो गौतम कश्यपाद्या: पराशराद्या मुनयो वदन्ति ।
द्वितीय पञ्चाङ्कगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात् परत: शुभावह: ॥
॥ श्री पतिनिबन्धे ॥

यहाँ पाठान्तर "त्रयोदशाब्दात् परत:" भी देखने में आता है। एवं दूसरे, पांचवे, नौवें सूर्य में विवाह की प्रशस्ति के लिए एक अन्य वाक्य केवल तुला राशि के लिए उपलब्ध होता है "धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलि राशि जनितस्य सुशोभन:" एवं यदि वर १६ वर्ष से ऊपर और कन्या द्वादश वर्ष के ऊपर हो तो उसके लिए निम्न प्रकार से ज्योतिष महार्णव में प्रमाण उपलब्ध होता है तद् यथा—

द्वादशाब्द परे कन्या षोडशाब्दपरे वरे ।
व्ययवेदाष्टमे सूर्ये गुरौ चापि न दोषभाक् ॥

यहाँ पर राजकीय अधिनियम Law के अनुसार १८ वर्ष के ऊपर कन्या एवं २५ के ऊपर वर के लिए ऊह कर लेना चाहिए।

जिस प्रकार वर के लिए सूर्य के परिहार वाक्य मिलते है उसी प्रकार कन्या की गुरु शुद्धि के लिए भी बहुत से वाक्य उपलब्ध होते हैं। जैसे— झषचापकुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचर: ।
अतिशोभनतां याति विवाहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पति:

अत्यावश्यकतामें चतुर्थ द्वादश सूर्य होने पर द्विगुणितजपपूजा एवं अष्टम में त्रिगुणित पूजा से विवाह कर सकते हैं। चन्द्रमा से अष्टम सूर्य उच्च में या उच्च नवांश में हो तो अष्टम सूर्य में भी विवाह कर सकते हैं किन्तु नीच एवं नीच नवाँशक के सूर्य में तीसरे षष्ठ एवं लाभादि में भी गोचर शुद्धि अशुभ मानी गई है यथा—

द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽयाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् ।
उच्चे उच्चांशके ग्राह्य: चन्द्रादष्टमगो रवि: ॥ ॥ज्योतिर्निबन्ध॥

इस प्रकार मासादि निर्णय के पश्चात् विवाह के एक विंशति महादोषों का विवरण इस प्रकार है :—

(१) पंचाङ्ग शुद्धि (२) उदयास्त शुद्धि (३) मासादि (४) पक्षगत पापग्रह (५) अष्टमभौम (६) त्रिविधगण्डान्त (७) भृगुषट्क (८) कर्तरी (९) षष्ठाष्टमद्वादशस्थ पापयुतचन्द्र (१०) अष्टम लग्न (११) विषघटी (१२) दुर्मुहूर्त्त (१३) वारदोष (१४) क्रान्ति साम्य (१५) ग्रहणोत्पात दूषित नक्षत्र (१६) खार्जूरिक (एकार्गल) (१७) क्रूरविद्ध नक्षत्र (१८) क्रूरयुत नक्षत्र (१९) कुनवांशक (२०) महापात (२१) वैधृति। इनमें से किसी का भी होना विवाह में अमङ्गलकारी माना गया है इनमें दस दोष जगत प्रसिद्ध हैं जो रेखाओं के द्वारा विवाह मुहूर्त्तों में निर्दिष्ट होते है वे निम्न प्रकार से प्रसिद्ध हैं यथा—

लतापातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपचकम् ।
एकार्गलोपग्रहोऽथ कान्तिसाम्य तथैवच ।
दुग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबला:
एनान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेत् सुधी:

(१) लतादोष—जिस नक्षत्र में विवाह हो उससे आगे या पीछे चक्र में निर्दिष्ट नक्षत्रों पर ग्रह होने पर लत्ता दोष होता हैं—

ग्रह नक्षत्र से	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
पूर्व विवाह नक्षत्र	१२	७	३	२२	६	२४	८	२०
विवाह नक्षत्र से आगे ग्रह नक्षत्र	१७	२२	२६	७	२३	५	२१	९

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्न प्रकार से लत्ता का ज्ञान सुगम ढंग से हो सकता है उसके लिए चक्र नक्षत्रों के नाम निदशन पूर्वक बनाकर नीचे दे रहे हैं।

ग्रह नक्षत्र	विवाह नक्षत्र	रो	मृ	म	उफा	ह	स्वा
१७ वें	सू	पूषा	उषा	उभा	अश्वि	भ	रो
२२ ,,	चं	पूभा	उभा	रो	आर्द्रा	पुन	श्ले
२६ ,,	मं	भ	कृ	पुष्य	म	पूफा	ह
७ ,,	बु	म	पूफा	वि	ज्ये	मू	उषा
२३ ,,	बृ	उभा	रे	मृ	पुन	पुष्य	म
५ ,,	शु	पुष्य	श्ले	चि	वि	अनु	मू
२१ ,,	श	श	पूभा	कृ	मृ	आ	पुष्य
९ ,,	रा	उफा	ह	ज्ये	पूषा	उषा	ध

अनु	मू	उषा	उभा	रे	ऽश्वि	चि	श्र	ध
आर्द्रा	पुष्य	म	स्वा	वि	ऽनु	कृ	पूफा	उफा
पूफा	ह	स्वा	पूषा	उषा	श्र	पुष्य	वि	ऽनु
स्वा	अनु	मू	श	पूभा	उभा	उफा	पूषा	उषा
ध	पूभा	रे	मृ	आर्द्रा	पुन	पूषा	ऽश्वि	भ
उफा	चि	वि	उषा	श्र	ध	श्ले	ऽनु	ज्ये
उषा	ध	पूभा	कृ	रो	मृ	ज्ये	उभा	रे
म	उफा	चि	मू	पूषा	उषा	पुन	स्वा	वि
पूभा	रे	भ	पुन	पुष्प	ऽश्ले	श्र	कृ	रो

यथा यदि किसी का रोहिणी नक्षत्र में विवाह हो तो सूर्यादि अष्ट ग्रह क्रम से पूषा. पूभा. भ. म. उभा. पुष्य. श. उफा में होने पर लत्ता दोषहोगा।

(२) पातदोष:—शूल, गण्ड, हर्षण, व्यतीपात, साध्य तथा वैधृति इन छ: योगों के अन्त में यदि विवाह नक्षत्र होवे तो वह नक्षत्र पात द्वारा दूषित हो जाता है। अन्य प्रकार से भी पात दोष का ज्ञान किया जाता है यथा सूर्य नक्षत्र से आरम्भ कर आश्लेषा, मघा, चित्रा अनुराधा श्रवण और रेवती तक जितनी संख्या पड़े वही संख्या अश्विनी से विवाह नक्षत्र तक पड़े तो पात दोष होता हैं।

विवाह नक्षत्र	रो	मृ	म	उफा	ह	स्वा	अनु
सूर्याधिष्ठित नक्षत्र	आर्द्रा	मृ	अश्वि	कृ	भ	कृ	अश्वि
	पुन	आर्द्रा	मृ	पुन	आर्द्रा	पुष्य	आर्द्रा
	पूफा	म	श्ले	पूफा	मघा	ह	पूफा
	स्वा	चि	ह	वि	स्वा	श्र	पूषा
	मू	ज्ये	ज्ये	पूषा	श	ध	उषा
	श	ध	रे	उभा	पूभा	रे	पूभा

मू	उषा	उभा	रे	अश्वि	चि	श्र	ध
रो	भ	भ	अश्वि	ऽश्ले	ऽश्वि	श्र	उषा
श्ले	पुन	पूफा	म	म	मृ	ऽश्वि	रे
ज्ये	वि	उफा	पूफा	चि	श्ले	द्री	मृ
मू	अनु	वि	स्वा	ऽनु	चि	स्वा	चि
ध	उषा	पूषा	मू	श्र	ध	वि	स्वा
रे	पूभा	श	ध	रे	श	पूषा	मू

(३) **युतिदोष:**—विभिन्न ग्रहों के साथ चन्द्रमा का साहचर्य होना ही युति, संग्रह अथवा संयोग दोष कहलाता है विभिन्न ग्रहों की चन्द्रमा से होने वाली युति विभिन्न प्रकार का फल दिखाती है तद्यथा—

चं सू	चं मं	चं बु	चं गु	चं शु	चं श	चं रा	चं के
दारिद्र्य	अपघात रोग	अपत्य हानि	सौभाग्य	सापत्न्य भाव	गृहत्याग	कलि:	क्लेश दारिद्र्य

शास्त्रान्तर में बुध गुरु युति क्रमश: शुभ एवं अशुभ जाने विशेषत: क्रूर अथवा शुक्रयुति ही अनिष्ट कारक हुआ करती है। चन्द्रमा एक से अधिक क्रूर ग्रहों से युक्त होतो दम्पति के आयुष्य के लिए नितान्त हानि कारक हुआ करती है।

(४) **वेध दोष:**—वेध जानने के लिए पंच शलाका एवं सप्तशलाका नामक दो चक्र ही प्रसिद्ध हैं जिसमें सप्तशलाका वेध तो मुण्डन केशान्तादि में ग्राह्य है किन्तु पञ्च शलाका चक्र निम्न कार्यों में उपयुक्त होता है

वधू प्रवेशे दाने च संवरणे पाणिपीडने।

वेध: पंचशलाकाख्योऽन्यत्र सन्तशलाकक:॥ श्रीपति:

सौविध्यार्थवेधज्ञान चक्र

अश्वि	रो	मृग	म	उफा	ह	चि	स्वा	अनु	मू
पू.फा	अभि	उषा	श्रवण	रे	उभा	पूभा	शत	भर	पुन

उषा	श्र	ध	रे
मृग	मघा	श्ले	उफा

(५) **जामित्रदोष:**—लग्न से या चन्द्रमा से सप्तम स्थान में कोई ग्रह स्थित हो तो जामित्र दोष होता है। अथवा चन्द्रमा के नक्षत्र से यदि चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है।

(६) **बाणदोष**—बुध का चिन्ह बाण होने से यह बुध पंचक भी कहा जाता है। सूर्य के गतांश की नोक पर से आगे आरम्भ जाना जाता है। इस का सूत्र इस प्रकार है—"मृ. अ. सि. रा. सि. चो. सि. रो. सि।

भुक्त अंश पर बाण जु होसि॥"

सि (सिद्ध) बाण रहित का सूचक अक्षर है।

(१) सौरांशों द्वारा (२) शुक्ल प्रतिपदादि तिथि संख्या एवं लग्न की राशि संख्या जोड़कर ९ का भाग देकर शेषाङ्कों द्वारा उपरोक्त बाण पंचक ज्ञात होते हैं। (३) शुक्ल प्रतिपदादि से गत तिथि सख्या में लग्न संख्या जोड़कर प्राप्त संख्या पाँच स्थानों में रखकर क्रमश: १५, १२, १०, ८, ४ जोड़कर ९ से भाग दें प्रथम स्थान में ५ शेष बचे तो रोग द्वितीय स्थान में अग्नि, तृतीय में राज चतुर्थ में चौर पंचम में मृत्यु बाण। इस तृतीय प्रकार में बाणों को काष्ठ शल्य एवं लौह शल्य के भेद से दो प्रकार का माना गया हैं पाँचों स्थानों में शेषाङ्कों का योग करके ९ से भाग देने पर ५ ही शेष बचें तो लौह शल्य अन्यथा काष्ठ शल्य बाण जानना। लौह शल्य सर्वथा क्लेश दायक होता है एवं काष्ठ शल्य इतना दोष कारक नहीं समझा जाता।

बाण पंचक बोधक चक्रम्

सौर भुक्तांशोपरि	बाण:	कृत्य
१।१०।१७।२८	मृत्यु	विवाहे
२।११।२०।२७	अग्नि	गृह कार्ये
४।१३।२१	राज	सेवायाम्
६।१५।२३	चौर	यात्रासु
८।१७।२५	रोग	व्रतबन्धे

तिथि लग्न योग नवहत शेषाङ्क द्वारा वाण बोधक चक्रम् ॥ (२)

अवशेष	१	२	४	६	८
वाण	मृत्यु	अग्नि	राज	चोर	रोग

(७) **खार्जूरकदोष:**—विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात परिघ, वैधृति इन दुर्योगों के दिन सूर्याश्रित नक्षत्र से चन्द्राश्रित नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना यदि विषम संख्या में हो तो खार्जूरक अथवा एकार्गलदोष विवाह में वर्जित है। सम संख्या की गणना आवे तो उपरोक्त विष्कम्भादि दुर्योग होने पर भी उक्त दोष नहीं होता।

खार्जूर दोष बोधक चक्रम्

योग	विष्कम्भ	अतिगण्ड	शूल	गण्ड	व्याघात	वज्र	व्यतीपात	परिघ	वैधृति
शीर्षगत नक्षत्र	अश्विनी	अनुराधा	मृगशिरा	मूल	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	चित्रा

उपर्युक्त चक्रानुसार जिस दिन जो कुयोग हो उसके नीचे का नक्षत्र खार्जूरक चक्र में शीर्षक रूप में विन्यास करने के पश्चात् उसके आगे के नक्षत्र प्रदक्षिण क्रम से खजूर वृक्ष जैसे चक्र में स्थापित कर एवं सूर्य चन्द्र परस्पर सम्मुख आ जाएँ तो उनकी दृष्टि सम्पात से ही एकार्गल कहा गया है। सूर्य चन्द्र एक ही चरण में होने पर पूर्णकार्गल समझना अन्यथा वेध दोष (एकार्गल दोष) नहीं होता।

(८) **उपग्रह दोष:**—सूर्याश्रित नक्षत्र से यदि वैवाहिक चन्द्र नक्षत्र ५ म, ७ म, १० म, १४ म, १५ म, १८ म, १९ म, २१ म, २२ म, २३ म, २४ म, २५ म संख्या का हो तो वह नक्षत्र उपग्रह दोष दूषित होता है। यहाँ भी सूर्य नक्षत्र के जिस संख्या के चरण में हो उसी संख्या के चरण में यदि चन्द्रमा भी संयोग वश आता हो तो उक्त दोष तभी सम्भव होगा अन्यथा नहीं।

(९) **क्रान्ति साम्य दोष:**—यह दोष गणित द्वारा लाई गई स्पष्ट क्रान्तियों की समता पर आधारित है किन्तु सूक्ष्म गणित से अन्य सुगम प्रकार महर्षियों ने लोकोपकार हेतु निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया हैं।

क्रान्ति साम्यबोधक चक्रम्

किसी भी राशि में चन्द्रमा हो तो उक्त चक्र में परस्पर सम्मुख आने वाली राशि में सूर्य आ जाए तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है।

(१०) **दग्धा तिथि दोष:**—धनुष राशि गत सूर्य से तृतीय विषम मासों में शुक्लद्वितीयादि सम तिथिएँ क्रमश: दग्धा कही जाती है एवं चैत्रादि सममासों के क्रम से कृष्ण द्वितीयादि तिथियां उन उन मासों में दग्धा मानी जाती है। उक्तं च—

या: प्रोक्तास्तिथयो दग्धा मेषादिषु च राशिषु।
शुक्लास्ता विषमे राशौ समे कृष्णा: प्रकीर्तिता: ॥ ज्योतिस्तत्वे

विषम / सम

दग्धा तिथि द्योतक चक्रम्

सूर्य संक्रमा:	(१) वैशाख	(३) आषढ़	(५) भाद्रपद	(७) कार्तिक	(९) पौष	(११) फाल्गुन
शुक्ल तिथय:	षष्ठी	अष्टमी	दशमी	द्वादशी	द्वितीया	चतुर्थी
सूर्य संक्रमा:	(२) ज्येष्ठ	(४) श्रावण	(६) आश्विन	(८) मार्गशीर्ष	(१०) माघ	(१२) चैत्र
कृष्ण तिथय:	चतुर्थी	षष्ठी	अष्टमी	दशमी	द्वादशी	द्वितीया

दशदोषपरिहार:—(१) "लत्ता मालवके देशे" इति काशीनाथ:

"सौराष्ट्र शाल्वेषु च लत्तितं मं त्यजेत्" राम:

(२) "पातश्च कुरुजाङ्गले" कलिङ्ग (उड़ीसा), वाह्लीक, बङ्ग, कुरुक्षेत्र में ही पात दोष वर्जित है अन्यत्र नहीं।

(३) "युति दोषो भवेद् गौड़े" बराह

चन्द्र और पाप ग्रह एक नक्षत्र में होने पर भी राशिभेद से शुभ होता है यथा—

एकस्मिन्नपि धिष्ण्ये भिन्ने राशौ खलग्रहे शशिनि।
तद्गतर्क्षे कुर्याद् विवाहयात्रादिकं सर्वम् ॥ ज्योतिर्निबन्ध

(४) आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयन्तु तृतीयेन द्वितीयकम् ॥ स्वरोदये

आदिम चतुर्थ का द्वितीय तृतीय चरण का ही परस्पर वेध वर्जित है। शुभ ग्रह का वेध होने पर बिद्ध चरण का त्याग कर शेष चरणों में विवाह कर लेना चाहिए। किन्तु कई आचार्य वेध मात्र से ही समस्त नक्षत्र को ही दूषित एवं सर्वस्वघातक मानते हैं।

(५) "वेध दोषस्तु विन्ध्याख्ये दोषो नान्येषु केषु च" बराह

लग्न शुभ युत, लग्नेश लाभ में शुभ युत दृष्ट शुभ ग्रह की होरा में चन्द्रमा सबल होने पर बिद्ध नक्षत्र भी विवाह में ग्राह्य है!

(५) **जामित्र :**—"जामित्रस्य तु यामुने" वराह:

यमुना तटवर्तिदेश मे ही जामित्र दोष वर्जित है। सूर्य चन्द्र सबलत्व में भी जामित्र दोष निरस्त हो जाता है।

(६) **बाणदोष:**—बाण दोष दाक्षिणात्य महाराष्ट्रादि देशों मे ही त्याज्य है।

(७) **एकार्गलदोष:**—"एकार्गलं तु काश्मीरे" वराह:

(८) **उपग्रहदोष:**—"कुरु वाह्लिकयोर्देशे त्यजेदुपग्रहर्क्षकम्" गणपति:

(९) **क्रान्तिसाम्यदोष:**—क्रान्ति साम्य सर्वत्र वर्जित है किन्तु गणितागत क्रान्ति साम्य न हो तो विवाह होना सम्भव है॥

(१०) **दग्धा :**—"मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे बिवर्जिता:" कश्यप:

यदि लग्नसबल केन्द्र कोण शुभग्रह एवं त्रिषडाय में क्रूर ग्रह सूर्य चन्द्रमा पूर्ण बलवान हों तो लग्न मे गुरु शुक्र या बुध के योग से दशदोषों के होने पर भी विवाह हो जाता है।

विवाहमुहूर्त :—पभीवार, रिक्ता अनङ्गचतुर्दिन वर्जित तिथिएँ अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. श्र. ध. रे. इन नक्षत्रो में कुयोग पातदोष दूषित दिन को छोड़ कर शुभ ग्रहों के लग्नों में शुभ षड्वर्ग युक्त क्रूर ग्रहों की राशियों में भी निम्न स्थानों में ग्रहों के सम्बन्ध विशेष होने पर विवाह करना श्रेयस्कर होता है।

लग्नशुद्धि :—लग्न से द्वितीय में क्रूरवक्र, द्वादश में क्रूर मार्ग ग्रह कर्त्तरी योग सूचक होते हैं जो पतिपत्नी घातक माने जाते हैं।

लग्नभंङ्ग:—"त्याज्या लग्नेऽब्धयो मन्दात् षष्ठे शुक्रेन्दु लग्नपा:।
रन्ध्रे चन्द्रादय: पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ" ॥ त्रिविक्रम: ॥
व्यये शनि: खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता:।
लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौलग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥ राम:

अनङ्ग चतुर्दिन:—कृष्ण त्रयोदशीत: स्यात् शुक्लप्रतिपदावधि।
विवाहे सर्वदा वर्ज्यं कृष्णानङ्गचतुर्दिनम् ॥

॥ अथ विवाह लग्नाद् विंशोपक बल बोधक चक्रम् ॥

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	रा	के
१ मस्थाने	०	०	०	२	३	२	०	०	०
२ ,,	०	५	०	२	३	२	०	०	०
३ ,,	३ ॥	५ -	१ ॥	२	३	०	१ ॥	१ ॥	१ ॥
४ ,,	०	०	०	२	३	२	०	०	०
५ ,,	०	०	०	२	३	२	०	०	०
६ ,,	३ ॥	०	१ ॥	२	३	०	१ ॥	१ ॥	१ ॥
७ ,,	०	०	०	२	०	०	०	०	०
८ ,,	३ ॥	०	०	२	०	०	१ ॥	१ ॥	१ ॥
९ ,,	०	०	०	२	३	२	०	०	०
१० ,,	०	०	०	२	३	२	०	०	०
११ ,,	३ ॥	५	१ ॥	२	३	२	१ ॥	१ ॥	१ ॥
१२ ,,	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोपकाः	३ ॥	५	१ ॥	२	३	२	१ ॥	१ ।	१ ॥
अशुभ	१।७	१।६	७।८।	७।८	२।७।	६।८।	१।७।	१।७	१।७
स्थानानि		।७।८	१०		८	७	१२		

गोधूलिलग्निवमर्शः—लग्न शुद्धिर्यदानास्ति कन्या यौवन शालिनी ।
तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥
दैवज्ञमनोहरे

घटीलग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलिकं शुभम् ।
शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन ॥ ज्योर्तिनिबन्धे

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयगः ।
गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषा धूलिमुखाः स्मृता ॥ ज्योतिर्निबन्धे

प्रायेण गोपाः सह हीनवर्णैः प्राच्याश्च संध्या समये त्रिवाहम् ।
शंसन्ति यावत्समुपैति शान्ति न गोखुरोत्खातरजोवितानम् ॥
ज्योतिषरत्नमाला

गोधूलिप्रमाणम् : (१) सूर्यार्द्धविम्ब के अस्त होने से पूर्व पश्चात् छः छः मिनट के अनुसार १२ मिनट के मध्यान्तर का गोधूलिक लग्न माना गया है तथाहि—

''अर्धास्तात्पूर्वमप्यूर्ध्वं घटिकार्धं तु गोरजः''
मुहूर्त्त गणपतिः

पिण्डी भूते दिनकृति हेमंतर्त्तौस्यादर्द्धास्तेतप समये गोधूलिः ।
सम्पूर्णास्ते जलधरमाला काले त्रेधायोज्या सकल शुभाख्येकार्ये ॥ मू. चि.

मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन में सन्ध्या काल में सूर्य गोलक समान दिखाई देने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य के आधा अस्त होने पर, श्रावण आश्विन कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न माना जाता है ।

गोधूलिके त्याज्याः—कुलिकं क्रान्ति साम्य च मूर्तौषष्ठाष्टमः शशी ।
पञ्चगोधूलिके त्याज्यास्त्वन्येदोषाः शुभावहाः ।
॥ दैवज्ञमनोहरे ॥

गोधूलिक नाशक दोषाः—अष्टमेजीव भौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे ।
लग्ने षष्ठाष्टमे चन्द्रस्तदागोधूलिनाशकः ॥

तैल संख्याः—वधूवरयोस्तैमलङ्गल (कड़ाही) चक्रम्

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैसं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

विवाह से पूर्व तृतीय षष्ठ नवम दिन के अतिरिक्त किसी शुभ दिन में गणेशादि षोडश मातृकाओं की पूजा करके चावल माष चने का आटा और घी लेकर दोने में रखकर शकुनवाली स्त्री संकल्प करे।

संकल्पः—ॐअद्यामुक कुमारस्य (कुमारिकाया) कुलदेव सहित गणेशादि ग्रहमण्डपाधिष्ठातृ देवानां प्रीत्यर्थं इद गोधूममाषचणकादि सगुडं प्रजापति दैवताकं तद्भिन्नपुटकस्थ घृततैलाद्युत समस्तरसान्नादिक विष्णुदैवताकं सदक्षिणकं च यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहामुत्सजे।

इसके अनन्तर चावलों पर कड़ाही रखकर दूर्वा और मङ्गलसूत्र कड़ाही में बाँध कर शकुनवती कुमारी द्वारा सात सौभाग्यवती स्त्रियाँ दूर्वाङ्कुर लेकर कड़ाही में तेल डालें।

मन्त्रः—इयं कुमारिकादेवी शुभगाः सप्तसादराः।
तैलं सिञ्चन्ति शान्त्यर्थं सत्याः शच्याः समा इमाः॥

तदनन्तरं लघुकटाह चुल्लिकोपरि संस्थाप्यापूपवटकादीनां पक्वं नैवेद्यं कुलदेव ग्रहादीन् समर्प्याऽऽचार्यादीन् दक्षिणां दत्वा देवान् विसर्जयेत्॥

उद्वर्त्तनविधिः-ग्रह शान्ति से पूर्व स्वस्तिवाचन पूर्वक गणेश मातृका की पूजा के पश्चात् शकुनवती दीपक जगाकर या फूलवत्ती जलाकर दो जज्जलियों में रखकर ऊपर से चपनी द्वारा ढक कर वर या कन्या का दायें हाथ का अगूंठा रखवा लेवे तत्पश्चात् पचोपचार द्वारा पूजाकरे

जज्जलिमुद्रणम्—लत्ता च पातश्च युतिश्च वेधो जामित्रखार्जूरक क्रांतिसाम्यम्।
उग्रग्रहो योगदशाभिधा ये दग्धा विषाख्याश्च मुहूर्तकाश्च॥
पंचांगजाता महदल्पकाश्च शरादि पञ्च प्रतिवज्र संज्ञकाः।
वक्रेपु कालेपु तथैव चोल्का आयान्तु सर्वेऽभिमदर्थ सिद्धयै॥
मुद्राभिधाने किल सन्तु निद्रिता अवज्जदाः सन्तु भवन्तु तुष्टाः।
दुष्टाः सुतुष्टाः सकला भवन्तु कुर्वन्तु नित्यं वहमंगलानि॥

उसके पश्चात् उबटन, भीगे चने, पूड़े, बड़े आदि गुड़ सहित द्रोणपुटक में डालकर संकल्प करे—

उद्वर्त्तन दानसंकल्पः—ॐ अद्याहममुकी देवी स्वपुत्रस्य (कन्यायाः विवाहोत्स वाङ्गी भूत नवग्रहशान्ति कर्मणि कुल देवसहितानामादित्यादि ग्रहाणां प्रीत्यर्थमुद्वर्तनं स्विन्नचणकापूपानि सदक्षिणकानि यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमामुत्सृजे।

अन्नपात्रदानम्:—ॐ अद्याहममुकी देव्यहं स्वबालस्य विवाहे शान्तिक र्मणि समस्त मण्डलाधिष्ठातृ देवानां प्रीत्यर्थं सगुडं गोधूम माषान्नपात्रं सदक्षिणक दातुमहमुत्सृजे। इसके बाद कुमारीके हाथ से बालक (कन्या) के दक्षिण कंधे पर वुटना लगाये। वहाँ ही सिर में दूर्वाकरक रखकर कन्या हाथ से दूर्वाङ्कुर द्वारा तिलायी करे।

तिलायीमन्त्रः—क्षेत्रपालाः सलोकेशा मातृकाः कुलदेवता।
राशयो भनि योगाश्च कलाः काष्ठाः मुहूर्त्तकाः॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च साध्या विश्वे मरुद्गणाः।
तैला भ्यंगेन तुष्यन्तु बालस्य कन्यायाः) सर्वतो ग्रहाः॥

वुटना मलने के बाद स्नान करके चौकी पर बालक (कन्या) को कंकण (कौडी, छल्ला-सफेद सरसों-सुपारीयुक्तमङ्गलसूत्र) बाँध कर मामा आदि अभिषेक करे। अभिषेक के बाद पूजा मण्डप में आकर बालक (कन्या) अक्षत डाले हुए मिट्टी की चपनी द्रोण पुटक को देहली में रखे हुए को दक्षिण पाद से उल्टा कर दे। तत्पश्चात् मण्डप में प्रवेश करके तोरण, यज्ञमाला एवं कुल देवता की पूजा करे।

तोरणमन्त्र :—बिल्व त्व रुद्ररूपोसि महाकाय महाप्रभो।
अस्माकं द्वारमाश्रित्य रक्षयज्ञनिकेतनम्।

यज्ञमालामंत्रः—यज्ञमाले महामाले सर्वदा यज्ञरक्षिणि।
शत्रुसंहरिणी देवी मित्राणां हर्षवर्द्धनी॥
यज्ञमाले नमस्तुभ्यं यज्ञरक्षां कुरुष्व मे।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च॥
सङ्कटो विकटो दुष्टो भूतप्रेत पिशाचकाः।
दुष्टा ये दानवा दैत्याः क्षुद्रा यज्ञविनाशकः॥
ते सर्वे निष्फलायान्तु यज्ञं भुञ्जन्तु देवताः॥

कुलदेव पूजनम् :—ॐ कुलानां शुभदः शान्तः सर्वदा कुल वर्द्धनः।
आयुर्बलं यशो देहि कुलदेव नमोऽस्तुते।

इसके पश्चात् षोडश मातृका सप्तमातृका पञ्चोङ्कार एवं लक्ष्मी पूजा करके कुलदेव के दहराश्रय के ईशान कोण की ओर कलश की पूजा करके ईशान कलश के ऊपर ॐ अग्निज्योति इत्यादि मंत्र से रुद्र नेत्र (दीपक) स्थापन करके प्रार्थना करें।

प्रार्थनामन्त्रः—ॐ पूर्णाशः पूर्णसंकाशः पूर्णाः सर्वे मनोरथाः।
पूर्णकुम्भप्रसादेन सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥

इसके पश्चात् स्थण्डिल पर पंचभूः संस्कार पूर्वक अग्नि स्थापन कर विधिवत् अग्नि पूजा के पश्चात् नवग्रह अधिदेव, प्रत्यधिदेव दश-दिक्पात्र पञ्चलोक पाल वास्तु, क्षेत्रपाल, चतुःषष्ठियोगिनी एवं अरुन्धती सहित सप्तर्षि, अगस्त्य, ध्रुव की पूजा के पश्चात् कुशकण्डिका के पश्चात् प्राजापत्यव्याहृतिहोम, स्थापितदेवताहोम के पञ्चाङ्गा-धिष्ठातृ देवहोम उत्तरांग पूजा व्यहृति प्रायश्चित होम, बलि, पूर्णाहुति, पूर्णपात्रदान संस्रवप्राशन प्रणीता विमोक के पश्चात् विनायक पूजन

प्रार्थनाः—वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

तदनन्तर पूर्वोक्त लत्ताश्च पातश्च युतिश्च मंत्र से अवशिष्ट तृतीय जज्जलि को भी पूर्ववत् उवटन से मुद्रण करें। तत्पश्चात् कन्या के विवाह मे गजदंत भूषण (चूड़ा) नासिका भूषण (नत्थ) इत्यादि का दान करने के लिए कन्या का मामा संक्षिप्त आत्म पूजा एवं गणेश पूजा करके एक पात्र में चावलों के ऊपर हाथीदाँत का चूड़ा स्वर्णनासावतंस (नत्थ) नारिकेलोपवद्ध कबड्डी मंगल सूत्र में ग्रंथित कलीरा नामक मांगलिक भूषण अन्य अलंकार यथा सम्भव उपस्थित कर संकल्प करें।

चूडाकलीरा नासावतंस दान संकल्पः—ॐ तत्सदद्य गोत्रोऽमुकगोत्रोऽमुकशर्मा शर्म्मा श्रुत्याद्युक्त फल प्राप्तये स्व भगिनेयीमलङ्कर्तु काम इदं सौवर्ण नासावतंस गजदंतमया वलयावली संज्ञकानि प्रकोष्ठ भूषणानि च उत्तानाङ्गिरो दैवतानि यथा नाम गोत्रायै भागिनेय्यै दातुमहमुत्सृजे।

इसके बाद आचार्यादिकों को दान प्रतिष्ठा दक्षिणा देवें। चूड़ा धारण करने से पहले कन्या अपने सौभाग्य की सिद्धि के लिए एक कङ्कण ब्राह्मण को दे देवें।

संकल्पः—ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रा अमुकी देव्यहं श्री गोरी प्रसाद पूर्वकं स्व सौभाग्य सिद्धयें एतद् बलयं सतण्डुलं दक्षिणा सहितं च यथानास गोत्राय ब्राह्मणाय संप्रददे।

इसके बाद नासावतंस वलयावली (चूड़ा) सौभाग्य वती स्त्रियाँ या कुमारियाँ कन्या को पहनावें। इसके पश्चात् समस्त ब्राह्मणों को दक्षिणादि द्वारा पुरस्कृत करके देव विसर्जन अग्नि प्रार्थना एवं छायापात्र भूयसी दक्षिणादि देकर सूर्यार्घ्य आसन वन्दनादि के पश्चात् वर या कन्या का मुखोच्छिष्ट (जूठन) घृत पूरादि द्वारा करवावें।

कन्या प्रद कर्तृक सङ्कल्पः—अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा स्वीय कन्यायाः निर्विघ्न विवाहोत्सवे अन्तर्वेदिकायां गणेशादि मण्डापधिष्ठित देवानां पूजन वर पूजन चाहं करिष्ये।

वराय धौत वस्त्र दान संकल्पः—अद्यामुक गोत्रोऽमुक शर्मा निज कन्यायाः विवाहोत्सवे लघु वेदिका मध्ये वर पूजन निमित्तिकां स्वोत्तरीयाम् उपवीत सहितां इमां शाटिकां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे विष्णु स्वरूपिणे वराय कन्या सहोदर द्वारा दातुमहमुत्सृजे न मम।

यदि उससे बड़ा पहला जामाता हो तो उसके लिये भी संकल्प करके धौत वस्त्र रख देना चाहिए।

वराय शाटिका दान मन्त्र—ॐ अस्मिन् कालेग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणि अव्यंगेऽपतिते क्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति। तत्पश्चात् वर आत्म पूजा के पश्चात् प्रतिज्ञा संकल्प कर ले तो वर एव दाता दोनों समस्त मण्डपाधिष्ठातृ देवताओं की पूजा करें। द्वादश राशि सहित लग्नाधिष्ठातृ देवता की पूजा भी करें।

लग्नपूजनम्— मेषाद्यो झषान्ताश्च ये वै द्वादशराशयः।
क्षेत्राणि भास्करादीनां भवन्तु वरदा मम ॥
लग्नराजा ग्रहोमन्त्री नक्षत्रं द्वारपालकम्।
तिथि वाराश्च दासास्ते लग्नराज नमोऽस्तुते ॥

दाता—ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।

वर—अर्चय ।
सर्वे—विष्टरो विष्टरो विष्टर:
दाता—विष्टर: प्रतिगृह्यताम् ३
वर—विष्टरं प्रति गृह्णामि ३
विष्टरोपवेशनम्—ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्य: ।
इमन्तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ।।
सर्वे—पाद्यम् पाद्यम् पाद्यम्
दाता—पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ।
वर—पाद्य प्रतिगृह्णामि ।
पादप्रक्षालनम्—ॐ विरोजो दोहोसि विराजो दोहमशीय ।
मयि पाद्यायै विराजो दोह: ।
सर्वे—ॐ अर्घ: अर्घ: अर्घ:
दाता—अर्घ: प्रतिगृह्यताम् ।।३।।
वर—ॐ अर्घं प्रति गृह्णामि ।
अर्घधारण मंत्र—ॐ आप:स्थ युष्माभि: सर्वान्कामानवाप्नवानि ।।
अर्घजल प्रवाहणम्—ॐ समुद्रं व: प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ।
अरिष्टाऽस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पय: ।।
सर्वे—आचमनीयम् आचमनीयम् आचमनीयम् ।
दाता—आचमनीयं प्रतिगृह्यताम् ।।३।।
वर—आचमनीयं प्रतिगृह्णामि ।।३।।
आचमन ग्रहणम्—ॐ आमागन्य शशास ँ सृज वर्चसा तं मा कुरु ।
प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम् ।।
सर्वे—मधुपर्क: मधुपर्क: मधुपर्क:
दाता—मधुपर्कं प्रतिगृह्यताम् ३
मधुपर्क दर्शनम्—मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ।।
मधुपर्क ग्रहणम्—ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्या पूष्णो
हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ।
मधुपर्कालोडनम्—नम: श्यावास्यायान्नशने यत्त ।

आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ।।
चतुर्दिक्षु लेपनम्—ॐ वसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा भक्षयन्तु इति पूर्वे
ॐ रुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु इति दक्षिणे
ॐ आदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा भक्षयन्तु इति पश्चिमे
ॐ विश्वेदेवास्त्वाऽनुष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु इत्युत्तरत:
उर्ध्व क्षेपणम्—अन्तरिक्षस्था देवा भक्षयन्तु
अधो भुवि क्षेपणम्—भूस्था देवा भक्षयन्तु ।।
मधु में से कुछ मधुपर्क निकाल कर मधुपर्क शुद्धि के लिए तथा कन्या के प्राशन के लिए भेज दें ।
मधुपर्क प्राशनम्—ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ँ रूपमन्नाद्यम् ।
तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नन
परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ।।
मुख शुद्धयर्थमाचमनम्—ॐ अमृतोपस्तरणमसि
ॐ अमृतापिधानमसि
ॐ सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री: श्रयतां यश:
अङ्गन्यास:—१. ॐ वाङ्म आस्येऽस्तु इति मुखे
२. ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु इति नसो:
३. ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु इति नेत्रयो:
४. ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु इति कर्णयो:
५. ॐ बाह्वो र्मे बलमस्तु इति बाह्वो:
६. ॐ उर्वोर्मऽ ओजोऽस्तु इति ऊर्वो:
७. ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्त्वा मे सह सन्तु ।।
सर्वे :—ॐ गौं गौं गौं:
दाता:—गौ: प्रतिगृह्यताम् ।।३।।
वर:—गामहं प्रतिगृह्णामि
गोदान संकल्प:—वरार्चन नैमित्तिक षडर्घ्य पूजने षष्ठार्घ्यरूपमिदं गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय विष्णु स्वरूपणे वराय दातुमहमुत्सृजे ।

मन्त्र:—माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाम् । अमृतस्य नाभिः प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदिति वधिष्ट ॥

विशेष—गो नाम वाणी का है वाणी समस्त देवताओं की माता वहनादि सम्बन्ध धारण करने वाली है यहाँ पर दाता वाग्दान द्वारा वर को पुरस्कृत करता है और वहाँ पर वाणी देकर पीछे से मुकर जाना ही गो घात वाग् हननादि शब्दों द्वारा वेदों में कहा गया है ।

वरवरण में लिखे मंत्रों द्वारा वर का विधिवत् पूजन करे तत्पश्चात् दाता वर को अंगूठी घड़ी अथवा वर दक्षिणा प्रदान करें ।

संकल्प—अद्यामुक शर्माहं कन्या विवाहे वरार्चन नैमित्तिक मिदं स्वर्णाङ्गुली-यकम् यथा संख्यं राजकीय मुद्राद्रव्यं समय बोधक यन्त्रं वा यथा नाम गोत्राय विष्णुस्वरूपिणे वराय तुभ्यं सम्प्रददे । तत्पश्चात् पंञ्च भू: संस्कार पूर्वक अग्नि स्थापन करने के पश्चात् कौतुकागार से कन्या को मण्डप में लायें कन्या ॐ श्री गणेश गौरीशंकर कुबेर एवं इन्द्राणी की पूजा करें ।

गुह्यराज नमस्तुभ्यं यक्षराज शिवप्रिय ।
देहि सौभाग्यमारोग्यं कुबेर वरदो भव ॥

शचीपूजनम् :—देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनि ।
वरं सौभाग्यं आरोग्य पुत्र लाभं च देहि में । धान्यं देहि सर्वकार्यकरी भव ॥

गौरहर पूजनम् :—सिंहासनस्थां देवेशीं सर्वालंकारसंयुताम् । पीताम्बर धरं देवं चन्द्रार्धं कृत शेखरं करेणाथ सुधापूर्णं कलशं दक्षिणे न तु । वरदं चाभयं वामेनाश्लिष्य च तनु प्रियामिति ध्यात्वा गौरिहर महेशान सर्वं मङ्गल-दायक पूजां गृहाण देवेश सर्वदा मङ्गल कुरु ॥

अथवस्त्र चतुष्टयी :—दाता मौलि रक्त वस्त्रादि के रूप में वस्त्र चतुष्टय वर को प्रदान करता है । उन चार वस्त्रों में से दो वस्त्र कन्या को पहनाता है एवं दो वस्त्र स्वयं पहनता है ।

उत्तरीय वस्त्र परिधानम् :—ॐ जरांगच्छ परिधत्स्ववासो भवाकृष्टीनाम भिशस्ति पावा । शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिंच पुत्राननु संव्ययस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः । इत्यनेन मंत्रेण वरः कन्यायै उत्तरीयं परिधा-पयति ।

अधोवस्त्रपरिधानम् :—ॐ या ऽअकृन्तन्नवयन् याश्च देवीस्तन्तूनभितोततन्थ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इत्यनेन मंत्रेण वरः कन्यायै अधो वस्त्रं परिधापयति ।

स्वयमुत्तरीयपरिधानम्:—परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोष मभि संव्ययिष्ये ॥ इति मंत्रेण वरः स्वयं उत्तरीयं परि दधाति ।

स्वयमधो वस्त्र परिधानम्:—ॐ यश सामा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा वृहस्पती । यशो भगश्च मा विन्दद्यशो मा प्रतिपद्यताम् । इति मंत्रेण वरः स्वयमधो-वस्त्रं परिदधाति ।

वधूवरयो: सम्मुखीकरणम्:—ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ सम्मातरिश्वा सन्धाता समुद्वेष्ट्री दधातु नौ ॥

युगल वस्त्र बंधनम् (जोल)—कन्यका सुदेशे पार्श्वे द्रव्य पुष्पाक्षतानि च ।
निक्षिप्य तानि सम्बद्ध्वा वरवस्त्रेण संयुजेत् ॥
वस्त्रैः संयोज्य तौ पूर्वं कन्यादानं समाचरेत् ।
दानेनयुक्तयोः पश्चाद्धिद्यात्पाणि पीडनम् ॥
याज्ञवाल्क्य:

याज्ञवाल्क्य महर्षि के अनुसार कन्या उपरि वस्त्र के कोने में वस्त्र चतुष्ट्य वाली मौलि एव (जोल) रक्त वस्त्र में द्रव्य पुष्पाक्षत डालकर कड़ी गांठ देकर वर वस्त्र के साथ बाँध दें उसके बाद कन्या दान करें । दाता शंख में दूर्वाक्षत फल पुष्प चन्दन जल लेकर—

प्रतिज्ञा करणम्—दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्य दैवतम् ।
विप्रोऽसौ विष्णु रूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधि: ॥

जल नीचे कुशा पर छोड़ कर कन्यादान करें ।

संकल्प:—अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशतितमे युगे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे पुण्य प्रदेशे संवत्सरायण ऋतु

मास पक्ष तिथिवासर नक्षत्र योग करणाद्युपेते शुभ मुहूर्ते अमुक शर्माहं अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्य अमुक शाखाध्यायिनो अमुक शर्मणः प्रपौत्राय एवं अमुक गोत्रामुक प्रवर अमुक शाखाध्यायिनो अमुक शर्मणः पौत्राय एवं अमुकगोत्रामुक प्रवर अमुकवेदिकामुक शाखाध्यायिनः पुत्राय आयुष्मते अमुक शर्मणे विष्णुस्वरूपिणे वराय अमुकगोत्रामुक प्रवर अमुक वेदान्तर्गतामुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पौत्रीं अमुकगोत्रामुक प्रवरामुक वेदान्तर्गतामुक शाखाध्यायिनो अमुक शर्मणः पुत्रीम् आयुष्मतीं श्री रूपिणीं वरार्थिनीं अमुक नाम्नीमिमां कन्यां सुस्नातां यथा शक्त्यलंकृतां गन्धाद्यर्चितां वस्त्रयुग्माच्छन्नां प्रजापति दैवताकां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे विष्णु स्वरूपिणे वराय पत्नीत्वेन ब्राह्म विवाह विधिना तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

यह पढ़ कर के कन्या का हाथ वर के दायें हाथ पर रख दें ।

वर—स्वस्ति । इत्युक्त्वा

न्या कर ग्रहणम्—द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥

कन्यादान प्रतिष्ठा—अद्येतत् कन्याहान प्रतिष्ठार्थमिदं यथा सम्भवं द्रव्यं अमुक शर्मणे विष्णुस्वरूपिणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे ।

वर सूचक द्रव्य (वरासूई) प्रदर्शनम—मंगलं भगवान् विष्णु... ...

वर कन्ययोः निष्क्रमणम्—ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशो नु पवमानो वा ।
हिरण्य पर्णो वैकर्णः सत्वा मन्मनसां करोतु श्री
अमुकी देवि ॥

॥ अथ बहिर्वेदिका क्रमः ॥

वर—अद्य आत्मीय विवाहोत्सवे बहिर्वेदिका मध्ये गणपत्याद्यखिल मण्डलाधिष्ठातृ देवानां पूजनं करिष्ये ।

वेदिका के दक्षिण की ओर जल पूर्ण कलश कन्धे पर उठाये एक मौन प्रिय दृढ़ पुरुष को नियुक्त कर दें जो विवाह के अभिषेक पर्यंत निश्चल होकर खड़ा रहे ।

वधूवरयोः परस्परसमीक्षणम्—ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चा वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ सोमः

प्रथमो विविदे गंधर्वो विविदउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः । सोमोऽददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् । सा नः पूषाशिवतमामैरयसान ऊरूऽउशती विहर । यस्या मुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामुकामाबहवो निविष्ट्यै ॥ परस्पर निरीक्षण के पश्चात् वर वधू के साथ अग्नि की प्रदक्षिणा करके वस्त्र वेष्टित तृण पूलक या चटाई पर बायाँ पैर और वधू के द्वारा दायाँ पैर रखवा कर आसन पर बैठ जायें । इसके बाद चारों ऋत्विजों का वरण करके कुशकण्डिका के पश्चात् प्राजापत्य होम करें । तत्पश्चात् प्रायश्चित होम के अनन्तर अन्वारम्भ के बिना राष्ट्रभृद्धोम करें ।

राष्ट्रभृद्धोम—(१) ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वः स नऽइदं ब्रह्मक्षत्रम्पातु स्वाहा वाट् ॥१॥ ॐ ऋताषाडृतधामाग्नि गंधर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥२॥ ॐ स ँ हितो विश्व सामा सूर्यो गन्धर्व स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥३॥ ॐ स ँ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसोऽआयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥४॥ ॐ सुषम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥५॥ ॐ सुषम्णः सूर्य रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयोनामताभ्यः स्वाहा ॥६॥ ॐ इषिरोविश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥७॥ ॐ इषिरोविश्वव्यचावातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरसऽऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥८॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः सनं इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥९॥ ॐ भुज्यु सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावानाम ताभ्यः स्वाहा ॥१०॥ ॐ प्रजापतिविश्वकर्मा मनो गन्धर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥११॥ ॐ प्रजापतिविश्वकर्मा गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरसऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥१२॥

जया होमः—ॐ चित्तञ्च स्वाहा ॥१॥ ॐ चित्तिश्च स्वाहा ॥२॥ ॐ आकूतं च स्वाहा ॥३॥ ॐ विज्ञातं च स्वाहा ॥५॥ ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा ॥६॥ ॐ मनश्च स्वाहा ॥७॥ ॐ शक्वरीश्च स्वाहा ॥८॥ ॐ दर्शश्च

स्वाहा ॥९॥ ॐ पौर्णमासश्च स्वाहा ॥१०॥ ॐ बृहच्च स्वाहा ॥११॥ ॐ रथतरंच स्वाहा ॥१२॥ ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु तस्मै विशः समनमन्तसर्वाः सऽउग्रः सऽइहव्यो बभूव स्वाहा ॥१३॥

अभ्यतान होमः—ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिःस मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्या माशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देव हूत्या ँ स्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम ॥१॥ ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः० ॥२॥ ॐ यमः पृथिव्याऽअधिपतिः० ॥३॥ अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः ॥ ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः० ॥४॥ ॐ सूर्यो दिवा अधिपति० ॥५॥ ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः० ॥६॥ ॐ बृहस्पतिः ब्रह्मणोऽधिपतिः० ॥७॥ ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः० ॥८॥ ॐ वरुणोऽपामधिपतिः० ॥९॥ ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः० ॥१०॥ ॐ अन्न ँ साम्राज्यानामधिपतिः० ॥११॥ ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः० ॥१२॥ ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः० ॥१३॥ ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः० ॥१४॥ अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः ॥ ॐ त्वष्टारूपाणामधिपतिः० ॥१५॥ ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः० ॥१६॥ ॐ मरुतोगणानामधि पतिः० ॥१७॥ ॐ पितरः पिता महा परेवरेतता स्ततामहा इहमावंत्वस्मि न्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरो धायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः ॥

आज्य होमः—ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवताना ँ सोस्यै प्रजां मुंचतु मृत्यु पाशात् । तदय ँ राजावरुणोनुमन्यता यथेय ँ स्त्री पौत्र मधन्नरोदात्स्वाहा ॥१॥ ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्यो पस्था जीवतामस्तु मातापौत्रमानन्दमभिप्रबुध्यतामिय ँ स्वाहा ॥२॥ स्वस्तिनोऽग्नि दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथायजत्रा यदस्यामहि दिविजातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र ँ स्वाहा ॥३॥ ॐ सुगन्नु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्न आयुः । अपैतुमृत्युरमृतं न आगाद्वैवस्वतोनोऽभयं कृणोतु स्वाहा ॥४॥

परं मृत्योऽअनुपरेहिपंथां यस्तेऽअन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ब्रवीमि मानः प्रजा ँ रीरिषोमोत वीरान् स्वाहा ॥ अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः

गोत्राचारः—कश्यपोऽत्रि भरद्वाजो विश्वामित्राऽथ गौतमः ।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते गोत्र कारकाः ॥

अमुक गोत्रा कन्या अमुक गोत्रो वरः गोत्रो गोत्रेण वर्धताम् ॥ सप्तम वारे कन्यायाः गोत्रं कन्यायाः गोत्र स्थाने वर गोत्रमेव पठेत् अमुक गोत्रा कन्या अमुक गोत्रो वरः गोत्रो गोत्रेण वर्धताम् पितुः गोत्रं परित्यज्य भर्तृगोत्रानुगामिनी पुत्र पौत्र प्रपौत्रश्च गोत्रो गोत्रेण वर्धताम् ॥

अथ लाजा होमः—ततो वधु मग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः ततो वराञ्जलि पुटोपरि संलग्नवध्वञ्जलि पुटोपरि संलग्नवध्वञ्जलि घृताभिघारित वधू भ्रातृदत्तशमी पलाश मिश्रैर्लाजैर्वधू कर्तृकोहोमः ।

मन्त्रः—ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत सनो अर्यमा देवोः प्रेतो मुञ्चतुमापतेः स्वाहा ॥१॥ इयं नार्युपब्रूतेलाजानावापंतिका आयुष्मानस्तुमेपति रेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥२॥ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धि करणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामिय ँ स्वाहा ॥३॥

हस्त ग्रहणम्—ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्याजरदष्टिर्यथासः भगोऽर्यमासविता पुरंधिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्यायदेवाः ॥४॥ अमोहमस्मि सात्व ँ सात्वमस्यमोऽहम् । सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवीत्वम् ॥५॥ तावेव विवहावहै सहरेतो दधावहै प्रजां प्रजानयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् ॥६॥ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतमिति ।

अश्मारोहणम्—ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व ँ स्थिरा भव । अभि तिष्ठ पृतन्यतोऽव बाधस्व पृतनायतः ॥८॥

गाथागानम्—सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति । याँ त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजा यामस्याग्रतः । यस्यां भूत ँ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् तामद्य गाथा गास्यामियास्त्रीणामुत्तमं यशः । इति । ॥९॥

अग्ने प्रदक्षिणम्—ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यांवहतुना सह । पुनः पतिभ्यो जायांदा अग्ने प्रजयासहेति पठन् परिक्रामेत् ॥१०॥ एवं वारत्रयं लाजाहोमः साङ्गुष्ठ ग्रहणं अश्मारोहण गाथागानं च कृत्वा स्व स्थासनोपरिपरि दम्पतो तिष्ठतः समुपविश्यताम् पुनरुत्थाय शूर्पकोणेन लाजा होमः

भगाय स्वाहा ततो अग्रे वरः पश्चाद वधू मौनमेव प्रदक्षिणी कृत्य स्व स्व आसगो परि समुपविश्य सप्तपदीं कुर्यात्—

सप्तपदी—ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु

धनं धान्यं च मिष्टान्नंव्याञ्जनाद्यं च यद् गृहे ।
मदधीनं च कर्त्तव्यं मानसंरक्षणाय च ॥ ॥१॥

ॐ द्वे उर्ज्जे विष्णुस्त्वानयतु
कुटुम्बं रक्षयिष्यामि सदा ते मंजुभाषिनी ।
दुःखे धीरा सुखे हृष्टा द्वितीये सा वदेद्वचः ॥२॥

ॐ त्रीणिरायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु ।
पतिभक्तिरतानित्यं क्रीडिष्यामि त्वया सह ॥३॥
नाहं परं गमिष्यामि तृतीये कन्यका वदेत् ।

ॐ चत्वरि मयोभवाय विष्णुस्त्वानयतु ।
लालयामि च केशान्तो गन्धमाल्यानुलेपनैः ।
काञ्चनैर्भूषणेस्तुभ्यं चतुर्थे कन्यका वदेत् ॥४॥

ॐ पंचपशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।
आर्त्ते आर्त्ता भविष्यामि सुखःदुखविभागिनी ।
तवाज्ञां पालयिष्यामि पंचमे कन्यका वदेत् ॥५ ।

ॐ षड्कृतुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु
यज्ञे होमे च दानादौ भविष्यामि त्वया सह ।
धर्मार्थकामकार्येषु वधू षष्ठे पदे वदेत् ॥६॥

ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रताभव विष्णु स्त्वानयतु ।
अत्रांशे साक्षिणो देवा मनो भाव प्रबोधिनः ।
वंचनं न करिष्यामि सप्तमे सा पदे वदेत् ॥
तदनन्तर वर को दाँए और कन्या को वाँएबिठा लेवें

मार्जनम्:—ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानउर्ज्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे । योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिव मातरः तस्माऽअरङ्गमाम-वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा च नः ॥

दिवा सूर्यदर्शनम्:—तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् । पश्येमशरद्र शत ँ् शृणुयाम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्प्रब्रवामशरदश्शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥

रात्रौध्रुवदर्शनम्:—ॐ ध्रुवमसिध्रुवं त्वा पश्यामिध्रुवैधिपोष्येमयि मह्यंत्वादाद्वृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीवशरदः शतम् ।

सुमङ्गली मन्त्रः—सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ँ् समेंत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा ययास्तं विपरेतन ॥

स्विष्टकृद्धोमः—ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा ।

पूर्ण पात्र दानम्:—अद्यकृतैद्विवाह होमकर्मणि आचार्य कर्म प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतद्रव्यं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः

पूर्णाहुतिमन्त्रः—ॐ मूर्द्धानं दिवोऽ अरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतऽ आजात मग्निम् । कवि ँ् सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ।

तिलक मन्त्रः—ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाटे
ॐ कश्पपस्य त्र्यायुषम इति ग्रीवायान्
ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम् इतिदक्षिणवाहुमूले
ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि

विसर्जनमन्त्रः—देवागातु विदोगातुवित्वागातुमित ।
मनसस्पतऽ इमं देवयज्ञ ँ् स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

वधू प्रवेश मुहूर्त्तः—नव विवाहित कन्या जब प्रथम पतिगृह में आती है उसी को वधू प्रवेश (वध्वागमन) कहा जाता है। विवाह के दिन से आरम्भ कर १६ दिन के भीतर सभी सम दिनों में एवं ५, ७, ९ विषम दिनों में वधूप्रवेश सौभाग्य शाली होता है तदुपरान्त विषम मास एवं वर्षों में निम्न मुहूर्त्त में वधू प्रवेश करें ।

मासाः—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन (शुक्ल) कार्तिक मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ॥ तिथि, १, २, ३, ५, ६, ८, १०, ११, १५ वारा :

च. बु. गु. शु, नक्षत्र :—अश्वि, रो, मृ, पु, उत्तरा ३, ह. चि, स्वा अनु, मू, श्र ध, रे, नक्षत्रों में, २, ४, ६, ९, १२ लग्नों में आजकल विवाह होते ही वधू वर के साथ उसी समय पति के घर में चली जाती है जो सबसे उत्तम है किन्तु यह एक ही नगर में सम्भव हैं। पर दूर होने पर भी दूसरे या तीसरे दिन तो पति गृह में पहुँच ही जाती है तो उसी समय भद्रारहित स्थिर या द्विस्वभावलग्न में प्रवेश कर ही लेते हैं यह मुहूर्त्त उनके लिए है जिन प्रान्तो में कन्या के विवाह के पश्चात् वर को श्वसुरालय में ही मासों तक रहना पड़ता है। किन्तु ध्यान रहे वधू प्रवेश रात्री को ही शुभ माना जाता है।

यथा:—वधूप्रवेशों न दिवा प्रशस्त: राज प्रवेशो न निशा प्रशस्त:।
दिवा च रात्रौ च गृह प्रवेश: सत्कीतिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश: ॥

वृहद्वास्तुमाला

अत्यावश्यक होने पर ही नगर में किसी कारण रात्री प्रवेश सुलभ न हो सके तो शुभ ग्रहों के स्थिर या द्विस्वभावलग्नों में वधू प्रवेश दिन में भी करलें तो कोई दोष नहीं।

द्विरागमन मुहूर्त्त:—कन्या वधु प्रवेश तत्पश्चात् पुन: पिता के घर चली जाती है तत्पश्चात् दूसरी वार पुन: पति के घर में वधूप्रवेश का नाम द्विरागमन है। विवाह के बाद विषम दिन: मास एवं वर्षों में वैशाख, मार्गशीर्ष, फाल्गुन इन मासों में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, ७, १०, ११ तिथियों में चं. बु. गु. शु. वारों में, अश्वि रो, मृ. पुन, उत्तरा३, ह, चि, स्वा, अनु, मूल, श्र, ध, श. रे इन नक्षत्रों में २, ३, ६, ७, १२ स्थिर लग्नों में द्विरागमन शुभ है।

नववध्वा शाकुनिक पाककर्म मुहूर्त्त:—नववधू का रसोई घर में खाने पकाने के कृत्य में शकुनारम्भ १, २, ३, ५, ६, ७,१०, १३, १५ इन तिथियों मैं, चं, बु, गु, शु, श रे नक्षत्रों में २, ५, ८, ११ इन लग्नों में पाकारम्भ शुभ है।

प्रथमस्त्री सङ्गम मुहूर्त्त :—रजोदर्शनोपरान्त १६ रात्रि पर्यन्त चाररात्रियाँ छोड़ कर सम रात्रि में रो, मृ, ह, चि; अनु, ध, उत्तरा ३रे, रिक्ता तिथियों को छोड़कर चं. बु. गु. शु. वारों में रात्री के प्रथम पहर को छोड़कर स्त्री सङ्गम करें।

गृहारम्भ मुहूर्त्त :—वैशाख, श्रा, मार्ग, माघ, फाल्गुन इन मासों में २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ इन तिथियों में चं. बु. गु.शु श इन वारों में, रो, मृ, पुन, पु उत्तरा ३, ह, चि, स्वा अनु श्र उ रे. इन नक्षत्रों में यद्यपि पंचक में गृहारम्भ निषिद्ध समझते हैं वहाँ केवल गृहाच्छादन एवं काष्ठ संग्रह ही वर्जित है। विष्कुम्भ, अतिगंड, शूल, गण्ड, व्याधात, वज्र, व्यतिपात, परिघ, वैधृति इन दुष्ट योगों को छोड़कर शेष योगों में, वव, तैतिल, गर वणिज शकुनि करणों में २, ३, ५, ६, ९, १२ इन लग्नों में शुभ ग्रह दृष्टलग्न ३, ६, ११ भावों में पाप ग्रहों के होने पर ८, १२ भाव ग्रह रहित होने पर गृहारम्भ शुभ है।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो वहाँ से आरम्भ कर अभिजित् नक्षत्र सहित गृहारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थानानि	न	फलानि
शीर्ष	३	अग्निदाह:
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
द. कुक्षौ	४	लाभ: शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश:
वाम कुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत् ॥

भूशयन ज्ञानम्—संक्रान्ति से लेकर ५, ७, ९, १०, ११, २४ इन प्रविष्टों को छोड़कर गृहारम्भ करें ॥

खातारम्भदिशा निर्णयः

निम्नलिखित संक्रान्तियों में जब सूर्य नारायण जी चल रहे हों

राहुमुखदिशा	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशान
सूर्य राशि	२,३,४	११,१२,१	८,९,१०	५,६,७
खात दिशा	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशाने	आग्नेय

एवं देवालय, गृहारम्भ, एवं जलाशयारम्भ में निम्न चक्र मुहूर्त्त चिन्तामणि में बताया गया है।

राहोर्मुखम्	ईशान्ये	वायव्ये	नैर्ऋत्ये	आग्नेये
देवालये	१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११
गेहविधौ	५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४
जलाशये	१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९
कोणाः	आग्नेये	ईशाने	वायव्ये	नैर्ऋत्ये
खातशुभ	खाताशुभ	खात शुभ	खात शुभ	खात शुभ

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्त :—५, ७, ८, ९ इन तिथियों में चं. बु. गु. शु. वारों में अश्वि, रो, मृ, पु, उत्तरा ३, ह, स्वा, श्र, रे इन नक्षत्रों में द्वार शाखा स्थापन करें। निम्न चक्रशुद्धि भी देख लें।

॥ द्वारदेहली चक्रम् ॥

सूर्य भात्	४	८	८	३	४
फल	श्रीप्राप्ति	निर्जनता	सुखप्राप्ति	निधन	सौख्य
वास	शिर	चतुष्कोण	चतुः शाखा	देहली	अवकाश

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त्त :– वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन इन मासों में श्रेष्ठ एवं कार्तिक मार्गशीर्ष मास गृहप्रवेश में मध्यम हैं। १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ इन तिथियों में चं. बु. गु. शु. शनि वारों में, अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ६, ८, ११, १२, इन लग्नों में, ३, ६, ११वीं राशि शुभ, चतुर्थाष्टम भाव शुद्ध ३, ६, ११वें पाप ग्रह, १, २, ५, ७, ९, १०, ११, भाव शुभ ग्रह युत हो।

॥ गृह प्रवेशे सूर्यभात् कुम्भ चक्रम् ॥

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१ अग्निदाह	४ उद्वेग	४ लाभ	४ कीर्ति	४ कलह	४ नाश	३ स्थिर	३ स्थिर

जलाशयारम्भमुहूर्त्त :—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ फाल्गुन इन मासों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रे इन नक्षत्रों में २, ४, ७, ९, १०, ११, १२ इन लग्नों में जलाशयारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है

सूर्य भात् कूप चक्रम्

नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्य	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
प्राप्य जल	स्वादु	खंड	स्वादु	अभाव	स्वादु	स्वादु	अभाव	मधुर	क्षार

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तः - मास--वैशाख, श्रा, आश्वि, कार्तिक, मार्ग, माघ, फाल्गुन मासों में, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल पक्ष की इन तिथियों में, सू, वृ, शु वारों में। अश्वि, रो मृ, पुन, पु, उत्तरा ३, ह, स्वा, वि, अनु, ज्ये, श्र, ध, श, रेवती इन नक्षत्रों में शिव की आराधना १, ४, ७, १० इन लग्नों में विष्णु का अनुष्ठान २, ५, ८, ११ लग्नों में, देवी का अनुष्ठान ३, ६, ९, १२ में, बलहीन चंद्र एवं कुयोग त्याज्य हैं।

पुरश्चरण मुहूर्त - चैत्र, वैं, ज्ये, आषा, माघ तथा फाल्गुन मासों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५,७, १०, १३, १५ इन तिथियों में सू. चं,कु. वृ, शु इन वारों में, हो,आ, पु, उत्तरा ३ श्र, ध, शतभिषा नक्षत्रों में, २, ३, ४, ६, ७,९, १३ इन लग्नों में

रामायणादिकथा मुहूर्त—वै, ज्ये, आषा, का, मार्ग, माघ, फाल्गुन इन मासों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ इन तिथियों में, सू. चं, वु. वृ, शु इन वारों में। अश्वि, रो, मृ, पुन, पू पूर्वा ३, ह, चि, स्वा अनु, श्र, ध, श, रेवती इन नक्षत्रों में, १, ४, ७, १० इन लग्नों में बृहस्पति के नक्षत्र से आरम्भ कर आठ नक्षत्र धर्म लाभ, ८ नक्षत्र अर्थ लाभ एवं कामना पूर्ति तत्पश्चात् आठ नक्षत्र नेष्ट एवं शेष तीन नक्षत्र मोक्ष प्राप्ति के सूचक जानें।

सर्व देवप्रतिष्ठा मुहूर्त—वै, ज्ये, माघ; फाल्गुन इन मासों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ इन तिथियों में. सू, चं, कु, गु, शु, शनि वारों में आश्वि, रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३, ह' चि, स्वा, अनु श्र, ध श रेवती इन नक्षत्रों में, २, ३, ६, ९, १२ इन लग्नों में श्री विष्णु प्रतिष्ठा सब लग्नों में जब बृहस्पति लग्न में, कन्या लग्न शुभ श्री कृष्ण की प्रतिष्ठा में, १, ३, ५, ७, ९, ११ यह लग्न श्रेष्ठ हैं। श्री शिव की प्रतिष्ठा में २, ३, ५, ८, ११ यह लग्न श्रेष्ठ हैं। श्री दुर्गा की प्रतिष्ठा में ३, ६, ९, १२ यह लग्न श्रेष्ठ हैं। श्री राम की प्रतिष्ठा में १, ३, ५, ७, ९, ११ सूर्य के लिये सिंह स्कन्द गणेश की प्रतिष्ठा ३, ५, ८, ११ हनुमान् की २, ५, ८, ११ लग्नों में लोक पालों की २, ५, ६, ८, ११ लग्नों में ऋषियों की स्थापना ९, १२ लग्नों में कुलदेव २, ५. ८, ११ इन लग्नों में प्रतिष्ठित करें॥

होमे अग्नि वास—होमारम्भ के दिन चैत्र शुक्लादि से तिथि संख्या एवं रविवारादि वार संख्या जोड़ कर एक मिला कर ४ का भाग देवें यदि १ बचे तो अग्नि वास आकाश में २ बचें तो पाताल में ३, ४ (०) बचें तो पृथिवी पर अग्निवास जानें। ग्रह मुख में, नेष्ठ, ३ नक्षत्र, बुध मुख में श्रेष्ठ, ३ नक्षत्र शुक्र मुखी श्रेष्ठ, ३ नक्षत्र शनिमुखी. नेष्ट, तीन नक्षत्र चन्द्र मुख में श्रेष्ठ ३ नक्षत्र भौम मुख में नेष्ट, ३ नक्षत्र गुरु मुखी श्रेष्ठ, ३ नक्षत्र राहु मुखी नेष्ट, ३ नक्षत्र केतुमुखी नेष्ट होते हैं। शुभ ग्रह के मुख में आहुति विचार अनावश्यक है :

> यात्रा विवाह व्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु।
> दुर्गा विधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम्॥
> महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा।
> नित्ये नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥
> दिग्दाहेप्यथवा घोरेग्रहेऽस्ते भूमि कम्पने।
> केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥
> लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ।
> देवखातभवने सुरालयेह्यग्नि चक्रमवलोकयेत्सुधी॥

दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ इन तिथियों में, सू,च कु,गु,शु शनि वारों में अश्वि, रो, मृ, पुष्य, उत्तरा ३, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, अभि, ध, पूभा, रेवती नक्षत्रों में, कुम्भरहित लग्नों में चन्द्र बुध अष्टम द्वादश शुद्ध २, १०, ११, भावों में शुभ ग्रह होने पर गणेश नवग्रह, लक्ष्मी कुबेर पूजा एवं होम के पश्चात् कन्या पूजन के साथ दुकान खोलना शुभ है। सूर्य नक्षत्र से २ नक्षत्र मे शुभ ३ नक्षत्र विक्रय नाश, ४ नक्षत्र धनहानि, ६ नक्षत्र सुखाप्ति, ३ नक्षत्र श्रेष्ठ, ४ नक्षत्र चोरभीति, ४ नक्षत्र सर्वस्व हानि, ४ नक्षत्र शुभ फलदायक हैं।

वस्तु क्रय विक्रय मुहूर्त— शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२ १३, १५ इन तिथियों में सू, चं, बु, श, (मध्यम) गु,शु नारों में। अश्वि, मृ, पु. पूर्वा ३ म, चि, स्वा, वि, अनु, मू, श्र श, रे इन नक्षत्रों में शुभ लग्नों में एवं म, कृत्ति, नक्षत्र विक्रय में विशेष शुभ हैं।

गो महिषी एवं अश्व खरीदने क मुहूर्त—शु. २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ इन तिथियों में, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र से गिनने पर ३ नक्षत्रों में लाभ, ५, नक्षत्र में सुख ८ नक्षत्रों में लाभ, ५ नक्षत्र में सुख ८ नक्षत्र में लाभ एवं ९ नक्षत्र में भय प्राप्ति होवे। एवं अश्व के लिए सूर्य नक्षत्र से आरम्भ कर ५ नक्षत्र ऐश्वर्य प्राप्ति होवें। एवं अश्व के लिऐ सूर्य नक्षत्र स्त्रीहानि, ४ नक्षत्र धन प्राप्ति होवे।

कृषिकर्म मुहूर्त—३, ५, ७, १० ११, १३, १५ इन तिथियों में चं, मं, बु गु, शु, वारों में अश्वि, रो मृ पुन उत्तरा३ ह, चि, स्वा वि, अनु ज्ये, मू, श्र ,ध, श, रे, इन नक्षत्रों में शुभ होवे। सूर्य नक्षत्र से आरम्भ कर ३ नक्षत्र अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ ३ नक्षत्र शुभ होवें। बीज वपन के लिए जिस नक्षत्र पर राहु हो वहाँ से गिनने पर ८ नक्षत्र अशुभ, ३ नक्षत्र शुभ ९ नक्षत्र अशुभ, ३ नक्षत्र शुभ, ९ नक्षत्र अशुभ, ३ नक्षत्र शुभ, १ नक्षत्र अशुभ, ३ नक्षत्र शुभ, ४ नक्षत्र अशुभ होवें। ज्येष्ठा एवं शतभिषा इन नक्षत्रों को बीज वपन में त्याग देवें।

काष्ठ (गोट) संग्रह—सूर्य नक्षत्र से षट्भलो षट् खोटोशुभचार।
चार अशुभ शुभ चार हैं गोयटा चक्रविचार ॥

यात्रा मुहूर्त—वैशाख, भाद्रपद, पौष मास उत्तम
ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन मध्यम
कार्तिक, माघ, फाल्गुन अधम

तिथियाँ—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ९, १०, ११, १३

वार—बुध वृहस्पति, शुक्र श्रेष्ठ जो ग्रह गोचर दशा में अशुभ वक्रीया अस्तंगत हो उस ग्रह के वार में यात्रा न करें।

वारशूल—रवि शुक्र पश्चिम दिशा, शनि चन्द्रमा पूर्व दिशा, मंगल बुध उत्तर दिशा एवं वृहस्पति वार में दक्षिण दिशा में यात्रा करने से हानि होती है।

तिथि शूल—१। ९ पूर्व दिशा, ५। १३ दक्षिण दिशा, ६। १४ पश्चिम दिशा, २। १० उत्तर दिशा, ये तिथियाँ क्रम से पूर्वादि दिशाओं में यात्रा के लिये निषिद्ध मानी गई हैं।

वर्जित चन्द्रमा—नाम राशि से ६। ८। १२वाँ चन्द्रमा यात्रा में वर्जित है।

चन्द्रवास:—मेष, सिंह, धनु पूर्व। वृष, कन्या, मकर दक्षिण। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर दिशा में चन्द्रमा रहता है। यात्रा में सन्मुख एवं दायाँ चन्द्रमा शुभ वाम एवं पीछे चन्द्रमा अशुभ होता है।

योगिनी वास—प्रतिपदादि तिथियों में क्रमश: पूर्व, उत्तर, अग्नि नैर्ऋत्य दक्षिण पश्चिम, वायु ईशान दिशाओं में योगिनी का वास होता है पू उ अ नै द प वा ई। भूला पण्डित योगिनी बतायी ॥

उत्तम नक्षत्र—अश्वि, मृग, पु, पुष्य, हृ, अनु, श्र, ध रेवती—उत्तम
मध्यम नक्षत्र—रो, पूर्वा ३, उत्तरा ३, ज्ये, मू. शतभिषा —मध्यम
अधम नक्षत्र—भ, कृ, आ, श्ले, म, चि, स्वा विशाखा—अधम

नक्षत्र शूल—ज्येष्ठा, श्रवण में पूर्व, अश्वि, पूभा में दक्षिण, रोहिणी, पुष्य में पश्चिम, उफा, हस्त में उत्तर दिशा में नक्षत्र शूल में।

योग—विष्कम्भ, अतिगंड, गंड, व्याघात, वज्र व्यतिपात, परिध वैधृति योगों में यात्रा वर्जित है।

भद्रा—शुक्ल चतुर्थी में भद्रा पंचम प्रहर में पश्चिम, शुक्लाष्टमी दूसरे प्रहर अग्नि दिशा, शुक्लैकादशी सप्तम प्रहर में उत्तर दिशा, पूर्णिमा चतुर्थ प्रहर में नैर्ऋत्य में, कृष्ण तृतीया में, अष्टम प्रहर में ईशान दिशा, कृष्ण

सप्तमी तृतीय प्रहर में दक्षिण दिशा, कृष्ण दशमी षष्ठ प्रहर में वायु दिशा, कृष्ण चतुर्दशी प्रथम प्रहर में पूर्व दिशा गत भद्रा का वास जानना

घुजाटेणी सिते पक्षे गैंछिगूढ सितेतरे।
व्यञ्जनैस्तिथयो विष्टेमुंखे यामा दिशः स्वरः ॥
(लल्ल भट्ट सूत्रं रत्नकोषे)

विशेष :—पञ्चाङ्ग दोष परिहार :

(बिङ्नाग) तिथेर्न दोषोऽभ्युदये च काले न ऋक्ष दोषोस्त्वभिजिन्मुहूर्त्ते।
न योदोषोऽस्तमने च काले न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ ॥

निचुल—न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्।
दिवा शशाङ्कार्कज भूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥

लग्न—वृष, मिथुन, कन्या तथा धनु लग्न यात्रा में श्रेष्ठ हैं। कुम्भ एवं मीन लग्न तथा इनके नवांशों में यात्रा अनिष्ट फल देती हैं।

दिनमान या रात्रिमान को आठ से भाग देकर चतुर्घटिका मान सिद्ध कर लेना चाहिये। यात्रा के लिये चर, लाभ, अमृत तथा शुभ मुहूर्त्त श्रेष्ठ हैं।

दिवा चतुर्घटिका मुहूर्त:

घटी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
३॥।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७॥	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
११।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
१५	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
१८॥।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
२२॥	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
२६।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
३०	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्त: :

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
७॥	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
११।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१५	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
१८॥।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
२२॥	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
२६।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
३०	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिनमान या रात्रिमान को आठ से भाग देकर चतुर्घटिकामान सिद्ध कर लेना चाहिये। यात्रा के लिये चर, लाभ, अमृत तथा शुभ मुहूर्त्त श्रेष्ठ हैं।

॥ प्रसव लग्न विमर्श: ॥

मेष लग्न फलम्—मेंष लग्न में उत्पन्न बालक शरीर एवं मुख से श्याम वर्णाङ्कित, सुन्दर कांचरे नयन, वाचाल, प्रसूति काल में कर्कश रोदन एवं देह वामन रूप, श्लेष्म प्रकृति, पुराना घर माता का पूर्व की ओर शिर उप सूतिका ३ या ५ माता ने मीठा भोजन एवं लाल वस्त्र पहने हों।

वृष लग्न—वृष लग्न में जन्मा बालक गौर वर्ण, अतीव सुन्दर, कद्द मंझला रक्त पित्त प्रकृति। दक्षिण की ओर बहिद्वार, श्वेत वस्त्रतथा चान्दी के आभूषण धारण किए माता दक्षिणाभिमुखी एवं शाक भोजन किये हो। बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मिथुन लग्न—मिथुन लग्नोत्पन्न बालक मन्दाग्नि तथा क्षीण दृष्टि बात श्लेष्म

प्रकृति, प्रबुद्ध मति, चञ्चल स्वभाव, माता का पश्चिम की तरफ शिर, जीर्णवस्त्रयुक्त, शिशु के दक्षिणांग में तिल, माता ने प्रसवपूर्व नमकीन भोजन किया हो। उपसूतिका विषम संख्या में हों।

कर्क लग्न—कर्कलग्नोत्पन्न शिशु स्थूलाङ्ग, चञ्चल नेत्र, शरीर से गौर वर्ण, अतिकेश, वातश्लेष्मप्रकृति, मातृ-पितृ कष्ट। माता सुवर्णाभूषण युक्त तथा जीर्ण वस्त्र पहने हो। माता उत्तराभिमुखी एवं अल्प भोजन किए हो उपसूतिका ३ वा ५ हों।

सिंह लग्न—सिंह लग्न में उत्पन्न बालक बहुकेशी, दीर्घनासिका, कोमलाङ्ग, ह्रस्वकाय असुन्दर मुख, क्रूर, साहसी चञ्चल एवं सद्यः माता का स्तनपान करने वाला, माता ने रक्तवस्त्र तथा स्वर्णाभूषण पहने हुए हों, नवीन गृह, बालक की पीठ पर विलक्षण चिन्ह हो उपसूतिका विषम संख्या में हों।

कन्या लग्न—कन्या लग्नोत्पन्न जातक गौर वर्ण, जघा देश एवं कण्ठ में चिन्ह, पिता के परोक्ष में जन्म, माता उत्तराभिमुखी प्रवाल धारण किए, रक्त वस्त्र पहने हुए एवं सुभोजन किए हो। उपसूतिका ४ या ५ हों।

तुला लग्न—तुला लग्न में प्रसूत बालक पीत वर्ण, मातृ-पितृ कष्ट प्रद, कुटुम्ब में नित्य कलह, नेत्र विकारी रक्त विस्फोट से शरीर पीड़ित कृश गात्र। हाथ में स्वल्पाभूषण धारण किए, शीतल जल पिए, पश्चिमाभिमुखी माता। उपसूतिका विषम संख्या में, द्वार पश्चिम की ओर।

वृश्चिकलग्न—वृश्चिक लग्न में सद्यः प्रसूत शिशु दीर्घ केश वाला, माता भूषणयुक्त, ४ वा ५ उपसूतिका, कपिल केश, उन्नत शिर उत्तराभिमुख द्वार वाले घर में पूर्वाभिमुख माता के होने पर, दग्ध व रक्त वस्त्र धारण, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया ॥

धन लग्न—धन लग्नोत्पन्न जातक लाल गौर वर्ण आलसी एवं शाँत स्वभावी। ऊँचा मस्तक लम्बानाक माता उत्तराभिमुखी, चाँदी भूषणोपयुक्त, पक्वान्न भोजी उपसूतिका विषम। हृदयोपरि चिन्ह, बालक दीर्घ शब्द से रोया ॥

मकर लग्न—मकर लग्न में प्रसूत शिशु का ऊँचा मस्तक अतिकेशी, वात विकारी, आलसी, अविचारी, कृश शरीर दक्षिणाभिमुखी माता जीर्ण वस्त्र, दुग्ध एवं अल्प भोजन किए हुए। उपसूतिका ३, ५ वा ६ जातक थोड़ा रोया।

कुम्भ लग्न—कुम्भ लग्नोत्पन्न जातक कृश शरीर, चंचल नेत्र, मोटे होंठ, पित्त प्रकृति, साधारण केश, पश्चिमाभिमुखी माता शाकाहारी एवं शीतल जल पानकिए। पिता परोक्ष बालक का जन्म। बालक ने अल्प रोदन किया।

मीन लग्न—मीन लग्नोत्पन्न शिशु गौर वर्ण युक्त, स्थूल शरीर, ऊँचा मस्तक, तीरे नयन, श्लेष्म प्रकृति उत्तराभिमुखी माता, पिता घर में बालक जन्मोत्तर चिरकाल से रोया। उपसूतिका १, ३, ५ वा हों ७।

गण्ड विमर्श

गण्ड शब्द सन्धि का वाचक है। गण्ड तीन भागों में विभक्त किए गए हैं, १. तिथि गण्ड, २. नक्षत्र गण्ड, लग्न गण्ड।

तिथि गण्ड :—पूर्णा एवं नन्दा'की सन्धि में २-२ घड़ी तिथि गण्ड होता है, जो जन्म, यात्रा, विवाह, एवं उपनयनादि में मृत्यु सूचक कहा गया है यथा प्रतिपदा, पूर्णिमा या अमावस्या की बीच की २ घड़ी अर्थात् पूर्णिमा, अमावस्या की अन्तिम १ घड़ी और प्रतिपदा की आदि की १ घड़ी तिथि गण्ड कही गई है। ऐसे ही ५मी, ६ष्ठी, के मध्य में एवं १०मी, ११शी, के मध्य की १-१ घडी क्रमश: अन्त्य और आदि की गण्ड संज्ञक जाननी। चतुर्दशी एवं अमावस्या प्राकृत गण्ड में गिनी जाती हैं। चतुर्दशी के ६ भाग करके १-१ भाग में भिन्न-भिन्न फल कहा गया है। प्राकृत गण्ड पर्व संज्ञक माना जाता है अत: वह भी प्रसूति होने में सभी प्रकार के अरिष्ट एवं भय देने वाला कहा गया है, यथा शान्ति रत्ने—

"पर्वण्यपि प्रसूतौ च सर्वाऽरिष्ट भय प्रद: ॥"

चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या कृष्ण पक्ष में पूर्णिमा शुक्ल पक्ष में एवं संक्रांति यही पांच पर्व होते हैं। गण्ड एवं पर्व तिथियों के अतिरिक्त समग्र तिथियों की विषघटी भी प्रसूतिकाल में बालक के लिए घातक मानी जाती हैं।

इन सब की शान्ति परमावश्यक है।

नक्षत्र गण्ड :—नक्षत्रों में गण्ड दो प्रकार के हैं गण्ड और उपगण्ड। २७ नक्षत्रों को अश्विन्यादि से तीन नवकों में विभक्त कर लें। प्रथम नवक में आदिम अश्विनी की प्रथम ३ और आश्लेषा की अन्तिम ११ घड़ी। द्वितीय नवक में आदिम मघा की प्रथम ४ घड़ी अन्तिम ज्येष्ठा की छः ६ घड़ी। तृतीय नवक में आदिम मूल की ७ घड़ी अन्तिम रेवती की १२ घड़ी गण्ड संज्ञक कही हैं। इन उक्त घटियों में बहुत से मत भेद हैं, जो विस्तार भय से सब को न लिख कर संक्षेप से लिख रहे हैं।

अभुक्त मूल :—ज्येष्ठा की अन्तिम ४ घड़ी मूल के आदि की ४ घड़ी नारद के मत से। ज्येष्ठा के अन्त की १ मूला के आदि की २-वसिष्ठः। दोनों के अन्त्य आदि की १-१ घटी—बृहस्पतिः। अन्य मत से ज्येष्ठा की अन्तिम ५ और मूल के आदि की ८ घड़ी अभुक्त मूल कही जाती हैं। अभुक्त मूल में उत्पन्न बालक का त्याग कर देना चाहिए अथवा आठ वर्ष तक पिता बालक का मुख न देखे।

उपगण्ड : चित्रा, के आद्यर्ष (पूर्वार्ध) में, पुष्य के बीच के दो पाद में, पूर्वाषाढ़ा के तृतीय पाद में, तीनों उत्तराषाढा के प्रथम पद में, उत्पन्न बालक क्रमशः माता, पिता, भाई और अपने आप के लिए घातक कहा गया है। कइयों के मत से पुष्य प्रथम पाद पितृ कष्ट, द्वितीय भातृ कष्ट, ३ य आत्म कष्ट, ४र्थ मातुल कष्ट। पूर्वा षाढ़ा १ म मातृ कष्ट, २ य आत्म कष्ट, ३ य पितृव्य, ४ र्थ पितृ कष्ट।

चित्राऽऽद्यर्धे पुष्यमध्ये द्विपादे पूर्वाषाढाधिष्ण्यपादे तृतीये।
जातः पुत्रश्चोत्तराऽऽद्ये विधत्ते मातापित्रोर्भ्रातरञ्चाऽऽत्मनाशम् ॥

इनके अतिरिक्त विशाखा में उत्पन्न कन्या अपने देवर के लिए घातक होती है, विशेषतः ४ र्थ पाद में।

ज्येष्ठा में ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) के लिए घातक होती है।

धवाऽग्रजं हन्ति सुरेन्द्र जाता तथैव पत्न्या भगिनीः पुमांश्च।
द्विदैवजा देवरमाशु हन्याद्भार्या ऽनुजामाशु निहन्ति सूनुः ॥
कन्यका देवरं हन्ति विशाखाऽन्त्य समुद्भवा।

आद्यपादत्रये नैव आद्यभे तु पुमान् भवेत् ॥ निर्णय सिन्धौ।

नक्षत्र फल भोग के विषय में निम्न प्रकार का प्रमाण दृग्गोचर होता है—द्विमासञ्चोत्तरा दोषः पुष्ये चैव त्रिमासिकः।
पूर्वाषाढ़ाऽष्टमे मासिचित्रा षाण्मासिकं भवेत् ॥
नवमासन्तथाऽऽश्लेषा मूले चैवाऽष्टवर्षकम्।
ज्येष्ठा पञ्चदशे मासि पुत्रदर्शन वर्जिता ॥ शान्ति रत्ने।

नक्षत्रों में बालारिष्ट के लिए और भी लेख मिलते हैं हस्त मघा के तृतीय चरण में मातृ पितृ कष्ट, उत्तरा त्रय के प्रथम पाद में आत्म कष्ट, पूर्वा षाढ़ा, पुष्य के प्रथम पाद में पितृव्यकष्ट, चित्रा, विशाखा, हस्त क्रमशः १म, २य, ३य, चरणों में भ्रातृ मातृ पितृकष्ट। मृगशिरा के मध्य में मातृकष्ट। पुष्य, पूर्वाषाढ़ा, हस्त, मूला, आश्लेषा प्रथम चरण में आत्म कष्ट। गण्ड षट्क की नक्षत्र फल गत अवधि निम्न प्रकार से निर्धारित की गई है।

नक्षत्र—	अश्विनी	मघा	मूल	अश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती
वर्षावधि—	१६	८	४	२	१	१

उपरोक्त वर्षों तक बालकों के लिए अरिष्ट भय रहता है।

आश्लेषान्त्य मघादि "रात्रि गण्ड"
ज्येष्ठान्त्य मूलादि "दिवा गण्ड"
रेवत्यन्त्य अश्विन्यादि "संध्या गण्ड"

दिवा गण्ड में कन्या, रात्रि गण्ड में बालक उत्पन्न हो तो गण्ड दोष नहीं होता। संध्या गण्ड में दोनों को दोष हुआ करता है। यद्यपि ऐसा लिखा है तो भी गण्ड योग अपना फल दिखा ही देते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्रों में यदि बालक उत्पन्न हो तो वह कुल घातक माना जाता है। प्रयोग पारिजात में वसिष्ठ की उक्ति इस प्रकार है "कुलनाशोऽन्यभे भवेत्"

शिशु गण्ड :—घटिकैका च मैत्रान्ते ज्येष्ठादौ घटिकाद्वयम्।
तयोः सन्धिरिति ज्ञेयं शिशु गण्डं समीरितम् ॥ शान्ति रत्ने ॥

अर्थात् अनुराधा की अन्त्य की एक घटी और ज्येष्ठा आदि की २

घटी, उन दोनों के बीच की सन्धि ३ घटी शिशु गण्ड कहलाती है। जो उत्पन्न शिशु के लिए आत्मघातक मानी गयी है। अत एव इसको शिशु गण्ड कहा जाता है इसके अतिरिक्त प्रत्येक नक्षत्र की विष घटी अत्यन्त अरिष्टकारक पिता, मामादि एवं अपने लिए घातक तथा माता को विष-शस्त्रास्त्रादि द्वारा कष्ट प्रद होती है। यथा शान्ति रत्ने वृद्धगर्गः—

"विषनाडीषु सञ्जातः सर्वारिष्टभयप्रदः।
पितृमातुल मात्मानं घातयेन्नात्र संशयः॥
मातुश्च विष शस्त्रास्त्रैः क्रूर लग्नेऽशगे पिवा।
तद्दोषपरिहाराय शान्तिकर्म समाचरेत्॥

इसी प्रकार योगों के भी कुछ निषिद्धांश एवं दुष्ट तिथियों के निषिद्धांश भी प्रसूति काल में हानि कारक माने गए हैं। यथा धर्म सिन्धौ—

विष्कम्भवज्रयोस्तिस्रः, षट् च गण्डातिगण्डयोः।
परिघार्धं पंचशूले व्याघातेऽङ्कघटीस्त्यजेत्॥

दुष्टयोगों के विषय में जो फल कहे गये हैं, उनका उद्धरण भी आवश्यक है। यथा-प्रयोगपारिजाते वसिष्ठः—

यमघण्टफलं रुक्स्याद्रिक्तायां षण्ढतामियात्।
शूले समूल नाशः स्यात्कुल नाशोऽन्धभे भवेत्॥
विष्ट्यां दारिद्र्यमाचष्टे ॥ इति ॥

धर्म सिन्धौ—व्यतीपातेऽङ्गहानिः स्यात्परिघे मृत्युमादिशेत्।
वैधृतौ पितृहानिः स्यान्नष्टेन्दावन्धतां व्रजेत्॥
शूले समूलनाशः स्यात्कुल नाशी धृतौ भवेत्।
विकृताङ्गश्च हीनश्च सन्धयोरुभयोरपि॥

एवं शुक्र चन्द्र भिन्न सभी ग्रह राहु सहित एक ही राशि में आ जाएं तो वह कण्टक दोष सर्व कर्म नाशक कहा गया है। वारों की विष घटी भी बालक के लिए घातक मानी जाती है।

व्यतीपातवैधृति सक्रान्ति फलं शान्तिरत्ने—

कुमार जन्मकाले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः।
संक्रमश्च रवेस्तत्र जातो दारिद्र्यकारकः॥

सूर्य चन्द्रयोः ग्रहणे जन्म फलम् :—

ग्रहणे चन्द्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते।
व्याधिपीडा तदा स्त्रीणाभावो तु ऋतुदर्शनात्॥

गण्डनक्षत्रों में उत्पन्न बालकों के फल कथन विषय में अनेक प्रकार के विधानपुरुषांग विभागानुसार महिलाङ्ग विभागानुसार एवं आश्लेष, मूल के मूल से लेकर पत्तों तक घटी विन्यासानुसार फल लिखा है उसका विवरण भी निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाताहै।

अश्विनी पाद फलम् :—१ म पाद में पितृ कष्ट, २ य में सुख सम्पत् प्राप्ति ३ य में मन्त्रि सम, ४ र्थ में जात पुत्र राज तुल्य होता है।

रेवती पाद फलम् :—रेवती का फल अश्विनी के विपरीत होता है, अर्थात् १ म में राज तुल्य, २ य में मन्त्रि तुल्य, ३ य में सुख सम्पत् प्राप्ति, ४ र्थ में पितृ कष्ट के साथ ही स्वयं नाना प्रकार के कष्ट भोगता है।

मघा पाद फकम् :—प्रथम पाद में मातृ कष्ट, २ य में पितृकष्ट, ३ य में सौख्याप्ति, ४ र्थ में धन, मान, विद्या प्राप्ति।

ज्येष्ठा पाद फलम् :—१ म पाद में ज्येष्ठ भ्रातृ क्लेश, २ य में अनुज क्लेश, ३ य में मातृ कष्ट ४ र्थ में आत्म कष्ट।

आश्लेषा पाद फलम् :—१ म पाद में शान्त्या सुख, २ य में धन हानि, ३ य में मातृ कष्ट, ४ र्थ में पितृ कष्ट।

मूल पाद फलम् :—आश्लेषा के विपरीत १ म में पितृ कष्ट, २ य में मातृ कष्ट, ३ य में द्रव्य नाश, ४ र्थ में शान्त्या सुख प्राप्ति।

ज्येष्ठा फले विशेष—

घटिका	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
फलानि	मातामहीकष्टं	मातामहक्लेशं	मातुलहानि	स्वयंमातुः क्लेश	आत्मकष्टं	मातृकुल हानि	आस्मकुलहानि	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्टं	श्वशुर हानि	सर्वस्व हानि

आश्लेषा स्त्री पुरुषांग विभागानुसारि फलबोधक चक्रम्—

अङ्गानि	घटिका:	फलानि
मूर्ध्नि	५	पुत्र प्राप्तिः
मुखे	७	पितृहानिः
नेत्रयोः	२	मातृ हानिः
ग्रीवायां	३	स्त्री लम्पटः
स्कंधयोः	४	गुरुभक्तिः
करयोः	८	बलवान्
हृदि	११	आत्मघातक
नाभौ	६	चित्त भ्रान्तिः
पायौ	९	तपोधनः
पादयोः	५	धनहानिः

॥ आश्लेषा वृक्ष चक्रम् ॥

वृक्षाङ्गानि	घटिका:	फलानि
फलं	१०	श्रीः
पुष्पं	५	श्रीः
दलं	९	राजभीतिः
शाखा	७	हानिः
त्वक्	१३	मातृ कष्टं
लता	१२	पितृकष्टं
स्कन्धः	४	आत्महानिः

॥ मूल पुरुषांग विभाग चक्रम् ॥

अङ्गानि	घटिका:	फलानि
मूर्ध्नि	५	नृपः
मुखे	७	पित्रोर्मृत्युः
स्कंधयोः	४	महाबलः
बाह्वोः	८	बली
हस्तयोः	३	दाता
हृदि	९	राजमन्त्री
नाभौ	२	ब्रह्मज्ञानी
गुह्ये	१०	अतिकामा
जान्वोः	३	महापतिः
पादयोः	६	सुमतिः

॥ मूलोद्भूतायाः कन्यायाः अङ्गविभागानुसारि फलम् ॥

अङ्गानि	घटिका:	फलानि
शीर्षे	४	पशुनाशः
मुखे	३	धनहानिः
कण्ठे	४	धनागमः
हृदि	५	कौटिल्यम्
बाह्वोः	१०	धनागमः
हस्तयोः	८	दयाधर्मं
गुह्ये	४	अतिकामिनी
जंघयोः	४	ज्येष्ठमातुलनाशः
जान्वोः	४	ज्येष्ठभ्रातृ नाशः
पादयोः	१०	वैधव्यम्

॥ कृष्ण चतुर्दश्या विभागषट्कानुसारि फलानि ॥

घटिका:	फलानि
१०	शुभः
२०	पितृकष्टम्
३०	मातृकष्टम्
४०	मातुलकष्टम्
५०	कुलहानिः
६०	धनहानिः

कन्या जातके विशेष:—ज्येष्ठा में उत्पन्न कन्या पति के ज्येष्ठ भाई के लिए एवं विशाखा में उत्पन्न देवर के लिए, घातक मानी जाती है तो ज्येष्ठा का पुरुष बड़ी साली के लिए। इसमें भी विशेष स्मरणीय है कि कन्या विशाखा चतुर्थ पाद मे ही देवर हन्त्री होती है न कि पहले तीन पादों में एवं पुरुष पहले तीन चरणों में छोटी साली का घातक होता है। शान्ति रत्न में तो बड़ी साली एवं छोटी साली के स्थान पर बड़ा साला और छोटा साला ग्रहण किया गया है।

नारद संहिता—मूलजाश्वशुरंहंतिव्यालजा च तवंगनांम्।
ऐंद्री पत्यग्रजं हंति देवरं तु द्विदैवजा ॥

मूल में उत्पन्न कन्या श्वशुर को एवं आश्लेषा में उत्पन्न सास को, ज्येष्ठा में ज्येष्ठ को, विशाखा में देवर घातक जाननी। वसिष्ठ ने मूला में उत्पन्न पुत्र हो या कन्या अवश्य श्वशुर को नाश करते है, किन्तु उसके अन्तिम पाद श्वशुर के लिए घातक नहीं होते एवं आश्लेषा में उत्पन्न पुत्री या पुत्र सास के लिए घातक माने जाते हैं। प्रथम तीन चरणों में घातक नहीं अपितु आश्लेषा के चतुर्थ पाद में ही घातक जानें।

मूल निवास:—ज्योतिषार्णव के अनुसार वै. ज्ये मार्ग. और फाल्गुन में मूल पाताल में आषा. भाद्र. आ. और माघ में स्वर्ग लोक श्रा. का. पौ. और चैत्र में मूल का निवास भूमि पर होता है। पाताल एवं स्वर्ग में मूल का वास हो तो मूल दोष नहीं होता केवल भूमिगत मूल ही दोष बहुलता का द्योतक हैं। ज्योतिष रत्न में तो लग्नों के अनुसार मूल निवास वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ में पाताल गत, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, में भूमि पर। मेष, कर्क, तुला, मकर में, मूल निवास स्वर्ग में होता है।

चरे स्वर्गे स्थिरे लग्ने पाताले वसति ध्रुवम्।
द्विस्वभावे भवेद् भूमौ मूलवास: कुलान्तकृत्॥

दोनों प्रकार से मूल का वास भूमि से अन्यत्र हो तो मूल अत्यन्त स्वल्प दोष युक्त माना जाता है। एक प्रकार से भूमिगत और दूसरे मत से अन्यत्र वास होने पर मध्यम दोष युक्त एवं दोनों मतों द्वारा भूमि पर आ जाए तो कुलनाशक माना जाता है। नारद ने गण्ड दोष का फल एवं उसकी अवधि निम्न प्रकार से निर्धारित की है—

"वत्सरात्पितरं हन्तिमातरं तु त्रिवर्षत:।
द्युम्नं वर्ष द्वयेनैवश्वशुरं नववर्षत:॥
जात बालं वत्सरेण वर्षैः पंचभिरग्रजम्।
शालकं चाष्टभिर्वर्षैरनुक्तान् हन्ति सप्तभि:॥
तस्माच्छान्तिप्रकुर्वीतप्रयत्नाद्विधि पूर्वकम्।"

इसके अतिरिक्त एक नक्षत्र जननादि का विचार करते हैं।

एक नक्षत्र जननम्—एक नक्षत्र में पिता पुत्र दो भ्राता पुत्र-माता अथवा कन्या माता का जन्म होना एक की हानि के लिए सिद्ध होता है। शान्ति ग्रहमख याग स्वर्ण दानादि परमावश्यक हैं।

त्रीतर जात फलम्—तीन कन्यायों के पश्चात् पुत्र जन्म, अथवा तीन पुत्रों के अनंतर कन्या उत्पन्न हो जाए तो त्रीतर शान्ति कराने से कल्याण हो सकता है। इसी प्रकार कार्तिक मास में प्रसूता होना भी माता-पिता के लिए एवं शिशु के लिए हानि कारक समझना। इस के लिए कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति कराना आवश्यक है।

दन्तोत्पत्ति विचार:—सदन्त बालक उत्पन्न हो तो माता-पिता सहित स्वयं हानिकारक होता है। ऊर्ध्व दन्तपंक्ति सहित उत्पन्न हो तो स्वयं अरिष्ट कारक। सर्व प्रथम ऊर्ध्वदन्त उत्पन्न हो तो मातृ पक्ष में मातुल कष्टकारी। प्रथम मास में दन्तोत्पत्ति बालक के लिए अरिष्ट प्रद, द्वितीय में अनुज कष्ट, तृतीय में भगिनी नाश, चतुर्थ में मातृ कष्ट, पञ्चम में अग्रज कष्ट, षष्ठ में मन्त्र जीवी, सप्तम में पितृ सुखद, अष्टम में पुष्टि कारक नवम में धन लाभ, दशम-एकादश में सुखाप्ति, द्वादश में दन्तोत्पत्ति होने से सर्वविध सम्पत्प्राप्ति होना कहा गया है।

वार विष घटी ज्ञानम्—रवि वारादि क्रम से २०, ४, १२, १०, ७, ५, २५ घटिका विष संज्ञक कही गयी हैं। उक्त घटी संख्या से आरम्भ कर ४-४ घटी विष घटी मानी जाती हैं। दैवज्ञ मनोहर मतानुसार सोमवार के दिन ४टी के ऊपर न होकर २ घटी मे ही आरम्भ कर घटी चतुष्टय विष संज्ञक जानें।

तिथि विष घटिका—प्रतिपदादि क्रम से १५, ५, ८, ७, ७, ११, ४, ८, ७, १०, ३, १०, १२, ७, ८ घटिकाओं के आरम्भ से ४-४ घटिका तिथि घटिका मानी जाती हैं।

नक्षत्र विष घटिका—अश्विनी नक्षत्र से क्रमश: ५०, २४, ३०, ४०, १४, २१, ३०, २०, ३२, ३०, २०, १८, २१, २०, १४, १४, १०, १४, ५६, २४, २०, १०, १०, १८, १६, २४, ३०

उक्त घटिकाओं के आरम्भ से ४-४ घटिकाएं विष संज्ञक मानी जाती हैं।

विष घटिकानयनम्—तिथि नक्षत्रों की विष घटिकाएं तिथि एवं नक्षत्रों के मान को ६० घड़ी मान कर निर्धारण की गई हैं। अतः तिथि एवं नक्षत्रों के सर्वभोग का मान सदा न्यूनाधिक होने से उक्त मान सही नहीं उतरता और ना ही ज्येष्ठा का घटी विभाग एवं आश्लेषा, मूला के पुरुष स्त्री शरीराङ्ग विभाग व बृक्ष गत घटी विभाग सही उतरता है। इसलिए उसके ज्ञानार्थ निम्न प्रकार से विष घटिकादि का गणित करना चाहिए।

तिथि सर्वभोग एवं नक्षत्र का भभोग बना कर उसे विष घटिका संख्या से गुणकर ६० से भाग दें तो लब्धि वास्तविक विषघटिका आरम्भ मान होगी एवं तिथि के भोग व भभोग को ४ से गुणा कर ६० से भाग देने पर लब्ध घटी पल विषघटिका का आरम्भ मान के घटी पलों में जोड़ देने से विष घटी समाप्ति बोधक घटी पल होंगे। इसी प्रकार सर्वत्र मूला आश्लेषा वृक्ष पुरुषाङ्ग विभागादि घटिकाओं में भी साधन कर लेना चाहिए।

उदाहरण—प्रतिपदा तिथि तथा पुष्य नक्षत्र का पूर्ण भोग मान घट्यादि ५४। ०० हो तो विष घटिकाओं का आरम्भ एवं समाप्ति काल ज्ञात करना है यहां पर प्रतिपदा एवं पुष्य नक्षत्र की विष घटिका आरम्भ ६० मान कर २० बताया है, किन्तु प्रतिपदा या पुष्य नक्षत्र का पूर्णमान ५४ घटी है अतः ५४ घटी से २० को गुणकर ६० से भाग दिया तो लब्धि १८ आई, अतः नक्षत्र या तिथि मानानुसार विषघटिका आरम्भ काल १८ घटी जानना। इसी प्रकार ५४ से ४ घटी को गुणकर ६० से भाग दिया तो लब्धि ३ घटी ५६ पल आई। १८ घटी में जोड़ने पर २१ घटी ५६ पल तक विषघटिका रहेगी। इसी प्रकार आश्लेषा, मूला, ज्येष्ठा, आदि के चक्रों में वृक्षावयव या पुरुषावयव, कन्यावयव में भी मध्यम मान को स्पष्ट मान में बदल कर वास्तविक घटी मान को जान लेना चाहिए, अन्यथा अटकल पच्चू से ज्योतिष जगत् में उपहास होना सम्भव है।

लग्न गण्ड—नक्षत्र गण्ड की तरह लग्न गण्ड में भी तीन चतुष्क १२ राशियों में होने के कारण प्रथम चतुष्क मेष से कर्क तक होता है उसमें मेष के आदि की १/४ घटी, कर्क के अन्त की १/४ घटी, दूसरे चतुष्क में सिंह लग्न के आदि की १/४ घटी, एवं बृश्चिक के अन्त की १/४ घटी, तृतीय चतुष्क में धनुष के आदि की १/४ घटी एवं मीन के अन्त की १/४ घटी लग्न गण्डान्त कही गई है अर्थात् कर्क, सिंह के बीच कीं वृश्चिक धनुर्लग्नों के बीच की एवं मीन, मेष के बीच की, आधी-आधी घटी लग्न गण्डान्त जाननी। मुहूर्त मार्त्तण्ड के अनुसार १-१ घटिकात्मक लग्न गण्डान्त जिसके मत में प्रत्येक लग्न आद्यन्त सन्धि में आधी-आधी घटी ही लग्न गण्डान्त माना जाएगा। यथा शान्ति रत्ने—

> कुलीरसिंहयोः, कीटचापयोर्मीनमेषयोः ।
> गण्डान्तमन्तरालं स्याद् घटिकार्धं मृतिप्रदम् ॥

(अन्त्यस्य पञ्चदश पलानि पूर्वस्य च पञ्चदश पलानीत्येबमर्धघट्यात्मकं लग्न गण्डान्तमित्यर्थः ॥)

मुहूर्त्त मार्त्तण्डे—सार्पेन्द्रान्तिमभान्ततोऽब्धि घटिकं पूर्णान्ततोऽब्ध्यर्धकम् ।
कीटान्त्यालिविरामतः कुघटिकं गण्डान्तमूर्ध्वाधर मिति ॥

(अन्त्यपूर्वयोरर्धार्धा घटी लग्नगण्डान्तमित्यर्थः ।)

अथ गण्डान्त शान्ति विमर्शः—तिथि, नक्षत्र एवं योगों की शान्ति के बहुत से विधान शान्ति ग्रन्थों में लिखे गए हैं, उनका वर्गी करण निम्न प्रकार से कर लें।

१. गण्ड संज्ञक तिथि, नक्षत्र एवं लग्न।
२. पर्व दिन।
३. अन्ध नक्षत्र।
४. वार, तिथि नक्षत्रों की विष घटी।
५. नक्षत्र पाद दुष्टत्व।
६. तिथ्यंश दुष्टत्व।

जैसे—दोनों चतुर्थी की पहली आठ घटी, दोनों नवमी की प्रथम २५ घटी, शुक्ल चतुर्दशी की पहली ५ घटी तिथि दुष्टांशत्वदोष हुआ करता है। शुक्लाष्टमी की प्रथम १४ घटी दुष्ट तिथ्यंशत्व एवं कृष्णाष्टमी में जानना इत्यादि।

शान्ति प्रकार:—तिथि, नक्षत्र एवं लग्न गण्ड दोष में गोमुख प्रसव ग्रह, मल, एवं नक्षत्र गण्ड शान्ति परमावश्यक होती है वार, तिथि, नक्षत्र इनकी विष घटियों में जन्म होने पर रुद्राभिषेक, ग्रहयाग विष घटी शान्ति करानी चाहिए। नक्षत्रों के अंघत्व एवं पाद दोष होने पर रुद्राभिषेक एवं ग्रहयाग कराएं।

तिथि नक्षत्रों की शान्ति में उनके अधिष्ठातृ देवता की स्वर्ण प्रतिमा बना कर विधिवत् पूजा जपादि के पश्चात् दान की जाती है।

बालारिष्ट विचार— नक्षत्र गण्डों के अतिरिक्त निम्न प्रकार के ग्रहयोग बालारिष्ट कारक हुआ करते हैं।—

१. लग्न से १, ५, ७, ८, ९, १२ स्थानों में पापयुक्त पापदृष्ट चन्द्रमा बालारिष्ट कारक माना गया है।

२. लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा या बृहस्पति पापकर्त्तरी में आ जाये तो बालारिष्ट कारक हुआ करता है।

३. लग्नेश त्रिकस्थान में और त्रिकेश (६, ८, १२ भावों के स्वामी) लग्न में हो तो बालारिष्ट जानना।

४. लग्न से १, २, ५, ७, ८, ९ भावों में राहु या केतु का होना महदरिष्ट कारी माना गया हैं विशेषत: चन्द्र सूर्य के साथ राहु का सम्बन्ध इससे भी अधिक नेष्ट है। इसके अतिरिक्त और भी अरिष्ट योग ग्रन्थों में पाये जाते हैं।

बालग्रह दोष—बालग्रहा अनाचारात् पीडयन्ति शिशुं यत:।
तस्मातदुपसर्गेभ्यो रक्षेद्बालं प्रयत्नत:।। भावप्रकाशे

नवबालग्रहा—स्कन्द, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना (गन्धपूतना), शीतपूतना, मुखमुण्डिका (मुखगण्डिका) एवं नैगमय ये नौ ग्रह बालकों को सताया करते हैं। इन में कुछ स्त्री ग्रह एवं कुछ पुरुष ग्रह हैं।

बालग्रहदोषकारण—जिस वंश में देव, ब्राह्मण, पितृगण एवं अतिथिजनों का सत्कार न हो एवं कांसे के टूटे फूटे वर्तन घर में [illegible] उनके कुल में बालग्रहों द्वारा उपद्रव हुआ करते हैं। इनकी पूजा, बलिदानादि एवं औषधस्नानदि से शान्ति बताई गई हैं।

बालग्रह पीड़ित के विशेष लक्षण—

१. **स्कन्द**—दोनों नेत्र स्फीत, देह में रक्तगन्ध, मातृस्तनपान में द्वेष, मुख का टेढा होना, नेत्रों में स्तब्धता, स्वल्प रोदन, हाथों की मुट्ठी बन्ध जाना, मल में गाढ़ापन आदि।

२. **स्कन्दापस्मार**—कभी अचेतन, कभी सचेतन, हस्तपाद कम्प, स्वत: मलमूत्रनि:सरण, जम्भाई में सशब्दता मुख में झाग आना मन्दोद्गारादि।

३. **शकुनि ग्रह**—अङ्गशैथिल्य, भय से चौकना, देह पक्षिदुर्गन्धि, स्रावसहित वर्ण, स्फोटक पीड़ित देह।

४. **रेवतीग्रह**—मल हरा, देह में पाण्डु व श्यामलता, ज्वर मुखपाक, सर्वाङ्ग वेदना, कान में खुजलाहट।

५. **पूतना ग्रह**—सर्वाङ्ग शिथिल, निद्रा भङ्ग, मल का पतलापन. देह में काक गन्धि, वमन, लोमहर्षण. तृष्णा।

अंधपूतना ग्रह—मातृस्तन द्वेष, अतिसार, कास, हिक्का, वमन, ज्वर, विवर्णता, रक्त गन्ध।

७. **शीत पूतना ग्रह**—उद्विग्नता, अतिशय कम्प, रोदन, निद्रा अधिक, अन्त्र कूजन, अङ्गशिथिलता।

८. **मुखगण्डिका ग्रह**—अङ्गम्लान, हस्तपाद और मुख में लालिमा. बहुभोजी, शिराल उदर उद्वेग, देह में मूत्र गन्ध।

९. **नैगमय** झाग से युक्त वमन, देह का मध्य भाग विनम्र की उद्वेग, विलाप, ऊर्ध्वदृष्टि ज्वर, देह में चर्वी ली गन्ध।

असाध्य लक्षण—स्तब्ध भावापन्न, स्तन द्वेषी, बार-बार मूर्छा होने पर अन्य ग्रहों के लक्षणों के साथ होने पर रोगी शिशु का जीवन शीघ्र ही समाप्त हो जाता है।

बालग्रह के विषय में रावणकृत बालतन्त्र द्रष्टव्य है। यह ग्रह बालकों

को जन्म से (१२) बारह वर्ष तक पीड़ित करते हैं। ऊपर की अवस्था वाले को ग्रहों की शङ्का नहीं रहती।

पूतना—पूतना के विषय में विस्तार भय से संक्षिप्त विचार नीचे दिया जाता है।

पूतना (१२) द्वादश कही गई हैं। उनके लक्षण निम्न प्रकार से जाने।

१—प्रथम दिन, प्रथम मास, वा प्रथम वर्ष में जब नन्दा नामक मातृका बालकों पर आक्रमण करती है, तब ज्वर और आखें बन्द हो जाती हैं, शरीर सदा दुःखित रहता, जिससे बालक शयन नहीं कर सकता। सदा रोता ही रहता है, दूध अच्छा नहीं लगता और घुनट २ शब्द करता रहता है।

२—द्वितीय दिन, मास वा वर्ष में सुनंदा नामक मातृका के बालक पर आक्रमण करने से ऊपर की तरह लक्षण द्वितीय पूतना के जानना।

३—तृतीय दिन, मास वा वर्ष में पूतना नाम की मातृका के आक्रमण करने से ज्वर चक्षुउन्मीलन, गात्रोद्वेजन, मुष्टि बद्ध, क्रंदन ऊर्ध्व निरीक्षण आदि लक्षण होते हैं।

४—चतुर्थ दिन, मास वा वर्ष में मुख गण्डिका नामकी मातृका बालक पर आक्रमण करती है। जिससे प्रथम ज्वर, फिर चक्षुउन्मीलन, ग्रीवानमन और रोदन आदि लक्षण होते हैं। बच्चे को नींद नहीं आती और दूध नहीं पीता।

५—पंचम दिन, मास वा वर्ष में कट पूतना नामकी मातृका बच्चों को ग्रहण करती है, उससे ज्वर होते हैं

३—छठे दिन, मास वा वर्ष में शकुनिका नाम की मातृका बच्चों को पीड़ा देती है। उस समय बच्चों के शरीर में पीड़ा और ऊर्ध्व निरीक्षण

७—सप्तम दिन, मास वा वर्ष में शुष्करेवती नामकी मातृका बालकों को पीड़ित करती है, तब ज्वर गात्रोद्वेजन एवं मुष्टि बद्धता आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

८—अष्टम दिन, मास वा वर्ष में आर्यका मातृका।

९—नवम मास, दिन वा वर्ष में स्वस्तिका मातृका।

११—ग्यरहवें दिन, मास वा वर्ष में कामुका मातृका आक्रमण करती है।

१२—द्वादश दिन, मास वा वर्ष में उद्रुता नामक मातृका आक्रम, ज्वर, कम्पादि दोषों का द्योताक माना जाता है।

इन सब मातृकाओं के आक्रमण करने से इनकी पूजा या बलि देवें जिससे ये संतुष्ट हो बालक का परित्याग करें। ऐसा करने से बच्चा अपने आप ही अच्छा हो जावेगा।

नवबालग्रहं एवं द्वादश पूतना की शान्ति के लिए निम्नप्रकार की बलि निकालें।

१. खिचड़ी सवा १/४ सेर।
२. सात रंग की मिठाई।
३. सात दीपक आटे के तेल डालकर।
४. सात झण्डियां
५. सात पूरे सिन्धूर डालकर।

पुरुष बाल ग्रहों में चने के वेसन का पुरुष आकृति का पुतला बनाकर एवं स्त्री बालग्रह में स्त्री का पुतला बना कर धूप, दीपादि से पूजा करके एक छाबड़े में रखकर शेष समान डाल कर पुतले के चारो तरफ सातों झंडियें एवं सातों दीपक जला कर छाबड़ी को उठाकर बालक के सिर पर सात बार घुमाएँ तत्पश्चात सायंकाल निर्जन स्थान में छोड़ आएं तो बालक को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी।

अथ चातुर्वर्षिक शुद्ध श्राद्ध प्रयोगः।

तत्रादौ ब्राह्मण निमन्त्रण विधिः—श्राद्धदिनात्पूर्वरात्रौ तदसम्भवे श्राद्धदिन एवोक्तलक्षणान् ब्राह्मणान् सुसत्कृत्य सम्पूज्य च निमन्त्रयेत्। श्राद्धकर्त्ता शुद्ध भूमौ श्राद्ध सामग्रीं सम्पाद्या ऽऽत्म पूजान्ते प्रतिजानीयात्।

प्रतिज्ञा संकल्प (पितृ पक्षे) :—ॐ अद्यैतस्य वर्तमान मासे...पक्षे...तिथौ ...वासरे ऽमुकगोत्रस्य...शर्मणः युष्मत्पितुः श्वः करिष्य माण विश्वेदेव

पूर्वक शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धनिमित्तक त्रयोदश ब्राह्मण निमन्त्रणमहं करिष्ये ।

संकल्पः (मातृ पक्षे) :—ॐ अद्यामुक गोत्राया युष्मत् मातुरमुक देव्याः श्वः करिष्यमाण विश्वेदेव पूर्वक शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध निमित्तक त्रयोदश ब्राह्मणनिमन्त्रणं करिष्ये । तत्रा दौ लक्ष्मी नारायणौ सम्पूज्य विश्वेदेवार्थं चतुरो ब्राह्मणान् निमन्त्रयेत् । गन्धयवाक्षतादिभिः ब्राह्मणं सम्पूज्य ब्राह्मणस्य दक्षिणजानु दक्षिणहस्तेन स्पृष्ट्वा निमन्त्रयेत् । सव्येनैव

विश्वेदेवस्थाने १म विप्रनिमन्त्रणम्— ॐ भगवन् विप्र । अमुकगोत्राया युष्मन्मातु रमुकदेव्याः श्वः करिष्यमाणविश्वेदेवपूर्वकशुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुषश्राद्धनिमित्तकविश्वेदेवस्थाने एभिः पुष्पचन्दननैवेद्यतांबूल दक्षिणादिभिः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं निमन्त्रये । निमन्त्रितो ऽस्मीति प्रतिवचनं विप्रो वदेत । ततः कृता ञ्जलिः श्राद्धकर्ता नियमान् श्रावयेत् ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकर्मणि ।
सर्वायासविनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवर्जितैः ।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकर्मणि ॥

अनेनैव क्रमेण द्वितीय, तृतीय, चतुर्थं ब्राह्मणमपि निमन्त्र्य श्राद्धनियमान् श्रावयेत् ॥ ततोऽपसव्येन

मातुःस्थाने १म विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! अमुकगोत्राया मातुरमुक देव्याः श्वः करिष्यमाण शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे मातुः १म स्थाने भूरि भोजनार्थम् एभिः पुष्पाक्षतादिभिः अमुक गोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौच परैः० ।

मातुःस्थाने २य विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! अमुकगोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे मातुः २य स्थाने भूरितर भोजनार्थं एभिः पुष्पादिभिः अमुक गोत्रममुक शर्माणं त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

पितामही १म विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! अमुकगोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे पितामही १म स्थाने भूरि भोजनार्थम् एभिः पुष्पादिभिः अमुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

पितामही २य विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! अमुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे पितामही २य स्थाने भूरितर भोजनार्थम् एभिः पुष्पादिभिः अमुक गोत्रं शर्माणं त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियवाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

पितामही ३य विप्र निमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे पितामही ३य स्थाने भूरितम भोजनार्थम् एभिः पुष्पादिभिः अमुक गोत्रं...शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

प्रपितामही १म विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे प्रपितामही १म स्थाने भूरि भोजनार्थम् एभिः दक्षिणादिभिः अमुक गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं निमन्त्रये । निमन्त्रितो ऽस्मीति विप्रो वदेत् ।

श्राद्धनियमा;—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

प्रपितामही २य विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे प्रपितामही २य स्थाने भूरितर भोजनार्थम् एभिः दक्षिणाभिः अमुकगोत्रम् कमुक शर्माणं ब्राह्मण त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० ।

प्रतिमाही ३ विप्रनिमन्त्रणम्—ॐ भगवन् विप्र ! गोत्राया मातु रमुक देव्याः शुद्धचातुर्वार्षिक श्राद्धे प्रपितामही ३ यस्थाने भूरितम भोजनार्थम् एभिः दक्षिणादिभिः अमुक गोत्र अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं निमन्त्रये ।

श्राद्धनियमाः—अक्रोधनैः शौचपरैः० । ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य

विप्रापादप्रक्षालनम्— यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे ।
तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ ! विप्राणां पादशोधने ॥

ब्राह्मणानां परोक्षे कुशमय मोटकेषु निमन्त्रणं प्रोक्तम् ।

निमन्त्रण दक्षिणा—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमक देव्याः श्वः करिष्यमाण शुद्ध चातुर्वार्षिकत्रिपौरुषश्राद्धे त्रयोदश ब्राह्मणनिमन्त्रण सांगतार्थम् इदं प्राजापत्यं दक्षिणाद्रव्यं रजतं चन्द्र दैवतं यथानामगोत्रायामुक ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

कार्य समापनम्—ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

॥ इति ब्राह्मण निमन्त्रण विधिः ॥

अथ शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध विधिः

अपराह्णे स्नातः शुक्लद्विवासाः शुचिराचान्तः रेखावेष्टितं श्राद्धदेशमागच्छेत् । तत्र प्राङ्मुख उपविश्य सिद्धान्न सम्भवे सिद्धमिति पाचकं पृष्टवा पवित्रे धृत्वा श्राद्धमारभेत् ।

आत्माभिषिञ्चनम्—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतो ऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

त्रिकुशजलैः श्राद्धवस्तु सेचनम्—ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।
ततो भूमि सूर्य दीप धूपादि पूजान्ते सर्षप तिलकुशैः

दिग्बन्धनम्—ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्षतां सर्वतो दिशः ॥

ॐ प्राच्यै नमः, अवाच्यै नमः, प्रतीच्यै नमः, उदीच्यै नमः, अन्तरिक्षाय नमः, श्राद्ध भूम्यै नमः । इति दिक्षुतिलसर्षपविकरणादवशेषरक्षाद्रव्येण नीवी बन्धनं कार्यम् ।*

अपसव्येन नीविबन्धः—ॐ सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषि स्कृधि ॥ नीवीवत्तैव पितृ दैवत्यं कृत्यं कार्यम् ।

विष्णु ध्यानम्—ॐ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ।
प्रारम्भे कर्मणां विप्र पुण्डरीकं स्मरेद्धरिम ॥

गयागदाधरयोर्ध्यानम्—श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।
मनसा च पितृन्ध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभेत् ॥

सव्येन त्रिकुशतिलजलैः संकल्पः—ॐ तत्सदद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः विश्वेदेवपूर्वकं सपात्रिक शुद्ध चातुर्वार्षिकंश्राद्धमहं करिष्ये ।

लक्ष्मी नारायण पूजा—शालग्रामादि प्रतिमायां षोडशोपचारैः लक्ष्मीनारायणौ सम्पूज्य श्राद्धभुवः सन्निधौ संस्थाप्य गायत्रीं त्रिर्जपेत् ।

गायत्र्यास्त्रिर्जपः—ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः । ३॥

तत उत्तराभिमुखो दक्षिणोत्तरक्रमासादित कुशत्रयात्मकासन चतुष्टयं सयवमुत्सृजेत् । सव्यं कृत्वा

विश्वेदेवेभ्यः ४ आसनदानम्—ॐ अद्येत्यादि गत्रोाया मातुरमुक देव्या विश्वे देव पूर्वक शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामहीनाम् अमुकामुकदेवीनां त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा एतानि आसनानि चतुर्धा विभज्य वो नमः ॥ इति विश्वेषां देवानां चतुर्धासनानि सयव मुत्सृजेत् ततो ऽपसव्यं कृत्वा पातितवामजानुर्दक्षिणाभिमुखो द्विगुण भुग्न कुशत्रयतिलजलान्यादाय पूर्वपश्चिमासादित मोटकरूपाणि नवासनानि तिल जल प्रोक्षितानि त्रीणित्रीण्यासनानि मातृ पिता मही प्रपितामहीभ्यः पश्चिमत आरभ्य उत्सृजेत् ।

मात्रे३आसनदानम्—ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेविशुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एतानि आसनानि त्रिधाविभज्यते स्वधा ।

पितामह्यै ३ आसनदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुकदेव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे पितामहि अमुकदेवि एतानि आसनानि त्रिधा विभज्य ते स्वधा ।

---

*नीविबन्ध विधिः—नीविवासोदशान्तेन स्वरक्षार्थं प्रबन्धयेत् ॥ आश्वलायनः ॥
दक्षिणे कटिदेशे तु तिलैः सहकुशत्रयम् ॥ याज्ञवल्क्यः
द्वौदर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीण्यासने तथा ।
वामकुक्षौ शिखायां च सकृद्यज्ञोपवीतके ॥ हेमाद्रिः

प्रपितामह्यै आसनदानम्—ॐ अद्यामुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः शुद्ध चातुर्वर्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहि अमुकदेवि एतानि आसनानि त्रिधा विभज्यते स्वधा। ततः सव्येन

कृतांजलिः—ॐ विश्वान्देवानमहमावाहयिष्ये। इत्युक्त्वा

विश्वेदेवावाहनम्—ॐ विश्वेदेवासऽआगत श्रृणुता मऽइम ँ् हवम्।
एदं बर्हिर्निषीदत। इति विश्वान्देवानावाह्य

यवविकरणम्—ॐयवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः। इति यवान्विकीर्य।

विश्वदेवपूजनम्—ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुते इम ँ् हवम्। येमे ऽअन्तरिक्षे यऽउपद्य विष्ठयेऽअग्निजिह्वा उतवायजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥ इतिजपेत्।

पुराणपाठः—ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥
इति श्लोकं पठेत्। ततो ऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणाभिमुखः

कृताञ्जलिः—ॐ मातृरहमावाहयिष्ये। इत्युक्त्वा

मात्रादीनामावाहनम्—ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत ऽआवह मातृर्हविषेऽअत्तवे। इति मातृरावाह्य।

तिलविकरणम्—ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ँ् सि वे दिषदः। इति तिलान्विकीर्य।

मात्रादिपूजनम्—ॐ आयन्तु नो मातरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तुताऽ अस्मान् इति पठेत्। ततः सव्यं कृत्वा देवार्घपात्रचतुष्टये

देवार्घपात्रेषु पवित्रक्षेपः—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसंवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ इति पवित्रं घृत्वा

जलक्षेपः—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥ इति जलं निक्षिप्य

यवक्षेपः—ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः। इतियवान्प्रक्षिप्य ततोऽपसव्येन मात्रादि नवार्घपात्रेषु प्रत्येकंपवित्रजल तिलान्क्षिपेत्।

मात्राद्यर्घपात्रेषु पवित्रक्षेपः—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः०।

जलक्षेपः—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय०

तिलक्षेपः—ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृ (मातृ) ल्लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा। इतितिलान्। ततः सव्यंकृत्वा देवार्घ पात्रं वाम हस्तेकृत्वा तत्र स्थित पवित्रं देवभोजन पात्रे पूर्वाग्रंघृत्वातदुपरिकिंचिदुदकान्तरन्दत्वा।

देवार्घपात्रा भिमन्त्रणम्—ॐ यादिव्याऽआपः पयसासम्बभूर्याऽअन्तरिक्षाऽउत्पार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः श ँ् स्योनाः सुहवा भवन्तु॥ इति पठित्वा यवजलकुशान्यादाय

देवेभ्योहस्तार्घदानम्—ॐ गोत्रायामातुरमुकदेव्या विश्वेदेवपूर्वक शुद्ध चातुर्वर्षिक त्रिपौरुष श्राद्धमितित्तकानां अमुकामुकदेवीनां (त्रिपौरुषश्राद्ध सम्बन्धिनः पुरुरवार्द्रसंज्ञका विश्वेदेवा एष वो हस्तार्घश्चतुर्धा विभज्य नमः। इत्यर्घंददुत्सृजेत् ततोऽपसव्यं कृत्वा मात्राद्यर्घपात्रेषु (नवस्वपितृणीमेव गन्धपुष्पे प्रक्षिप्य मात्राद्यर्घपात्र वामहस्ते कृत्वा तत्रस्थितं पवित्रं मात्रादि भोजनपात्रेषु उत्तराग्रंधृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरंदत्वा

मात्रर्घपात्रा भिमन्त्रणम्—ॐ यादिव्याऽआपः पयसा सम्बभूर्याऽअन्तरिक्षा उत्पार्थिवीर्या। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान ऽआपः शिवाः श ँ् स्योनाः सुहवा भवन्तु। इति पठित्वा मोटकतिलजलान्यादाय

मात्रे हस्तार्घदानम्—ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेविशुद्ध चातुर्वर्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एष ते हस्तार्घस्त्रिधा विभज्यस्वधा

पितामह्यै हस्तार्घदानम्—ॐ अद्यामुकगोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वर्षिक त्रिपौरुषश्राद्ध निमित्तिकामुक गोत्रे पितामहि अमुक देवि एष ते हस्तार्घः त्रिधा विभज्य स्वधा।

प्रपितामह्यै हस्तार्घदानम्—ॐ अद्यामुकगोत्राया मातूरमुकदेव्याः शुद्ध चातुर्वर्षिक त्रिपौरुषश्राद्धनिमित्तकामुकगोत्रे प्रपितामहि अमुकदेवि एषते हस्तार्घः त्रिधाविभज्य स्वधा।" ततः सव्यंकृत्वा पवित्रसहितमवशिष्ट जलयुत देवार्घपात्रचतुष्टयं प्रत्येकं देवासनदक्षिण पार्श्वे

देवार्घपात्राणामुत्तानेनस्थापनम्ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्थानमसि। इत्युत्तानमेव

धारयेत् । **अपसव्यं कृत्वा** किंचित्प्रपितामह्यर्घपात्रेस्थित पवित्रादीनि पितामह्यर्घपात्रे कृत्वा तनि सर्वाणि मात्रर्घपात्रेकृत्वा मात्रर्घपात्रं पितामह्यर्घ पात्रोपरि तदुभयं प्रतिपामह्यर्घपात्रोपरि धृत्वा मात्रासनवामपार्श्वे

मात्रा द्यर्घपात्राणांन्यूब्जी कृत्यस्थापनम्—ॐ मातृ पितामही प्रपिता महीभ्यः स्थानमसि । इति मिलितान्येवन्युब्जी कुर्यात् तथा स्थापितानि च तानि-दक्षिणादान पर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत् । आवृतास्तत्रतिष्ठन्ति पितरः श्राद्ध देवताः ॥ ततः **सव्यं कृत्वा** यवकुशजलान्यादाय

देवेभ्यो गन्धादि (पदक) दानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्या विश्वे देवपूर्वक शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धनिमित्तकममुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनां त्रिपौरुष श्राद्धसम्बन्धिनो पुरुरवार्द्रसंज्ञका विश्वेदेवा एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमयकमण्डलु करपात्र स्वर्णमयांगुलीयककाष्ठपादुकोर्णासिन कार्पास धौतोत्तरीयानि चतुर्धा विभज्य वो नमः । इति यथा सम्भवमुत्सृजेत् । ततो ऽपसव्यंकृत्वा मोटक तिलजलन्यादाय ।

मात्रे गन्धादि (पदक) दानम्—ॐ अद्यामुक गोत्रे मातुरमुक देवि शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीतताम्बूल रौप्यमय कमण्डलु करपात्रस्वर्णमयाङ्गुलीयककाष्ठपादुकोर्णासन कार्पास धौतोत्तरीयानि त्रिधा विभज्यते स्वधा ।

पितामह्यै गन्धादि (पदक) दानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्रे पितामहि अमुक देवि एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमय कमण्डलुकरपात्र स्वर्णमयाङ्गुलीयककाष्ठपादुकोर्णासनकार्पासधौतोत्तरीयानि त्रिधाविभज्य ते स्वधा ।

प्रपितामह्यै गन्धादि (पदक) दानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्रे प्रपितामहि अमुकदेवि एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमय कमण्डलु करपात्र स्वर्णमयाङ्गुलीयक काष्ठपादुकोर्णा सनकार्पास धौतोत्तरीयानि त्रिधा विभज्य ते स्वधा । ततो जलेनासनानि भोजनपात्रसहितानि वेष्टयित्वा मण्डलानि-कुर्यात् ।

मण्डलकरणम्—ब्रह्मा विश्णुश्चरुद्रश्च श्रीर्हुताशन एव च ।
मण्डलानि प्रकुर्वन्ति तस्मात्कुर्वीतमण्डलम् ॥

ततः श्राद्धदेयान्नाग्रभागमादाय सघृतं तत्सव्येनैव प्राङ्मुखः पुटकादिस्थजले आहुतिद्वयंजुहुयात् ।

आहुतिद्वयम्—ॐ अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा । ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा । तृतीयं तूष्णीमेव क्षिपेत् । ततो जलतिल सहितव्यञ्जनयुतमन्नम् **अपसव्येन**

भूस्वामि पितृभ्य आहुतिः—ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामि पितृभ्यो नमः इदि दद्यात् । हुतशेषमन्नं सव्येन देवपात्र चतुष्टये परिवेष्य अपसव्येन मात्रादि पात्रेषु च परिवेष्य पिण्डार्थं किंचिदवशेषयेत् । तत उत्कृष्टमन्नंसिद्धम् आमं वा पुरुषाहार क्षमं परिविष्य यथा सम्भवमुपकरणं जलं घृतञ्च तत्रोपनीय सव्येन देवपात्र चतुष्टये अपसव्येन च मात्रादिपात्रेषु (नवस्वपि) मध्वन्नोपरि दद्यात् ।

मधुदानम्—ॐ मधुवाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥१॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥२॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः । माध्वी र्गावो भवन्तु नः ॥३॥ ॐ मधुमधु मध्विति जपेत् ॥ ततः सव्येन उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रं स्पृष्ट्वा

देवपात्रभिमन्त्रणम्—ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते ऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥२॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम् ॥ इति पठित्वा

ॐ इदमन्नमित्यन्ने ॐ इमा आपः इति जले ॐ इदमाज्यम् इति घृते ॐ इदं हविरिति पुनः अन्ने दक्षिणोत्तानकरस्याङ्गुष्ठमावेश्य

यवप्रक्षेपः—ॐ यवो ऽसियवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः । इतियवान् प्रक्षिप

संकल्पः—ॐ अद्यामुक गोत्रायामातरमुक देव्या विश्वेदेवपूर्वक शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुषश्राद्ध निमित्तक अमुक गोत्राणां मातृ पितामहीप्रपितामहीनाम-मुकामुक देवीनां श्राद्धसम्बन्धिनो पुरुरवार्द्र संज्ञकाविश्वेदेवा एतद् वोऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं चतुर्धा विभज्य नमः ।। इतियवकुश जलंरुत्सृजेत् ।। ततो ऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणाभिमुखः पातित वामजानुः मातृ पात्रं न्युब्जाभ्यां पाणिभ्यां स्पृष्ट्वा ।

पात्राभिमन्त्रणम्—ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौर पिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृतेअमृतं जुहोमि स्वाहा । ॐ इदं विष्णु० । ॐ कृष्णहव्य मिदंरक्षमदीयम् । ॐ इदमन्नम् इत्यन्ने । ॐ इमा आप इति जले ॐ इदमाज्यम् इतिघृते । ॐ इदं हविरिति पुनः अन्ने ।। दक्षिण करस्य न्युब्जमङ्गुष्ठ निवेश्य अप्रदक्षिण क्रमेण

तिल विकरणम्—ॐ अपहताऽअसुरा रक्षाँ ᳚ सि वेदिषदः ।। इति तिलान्विकीर्य मोटक तिलजला न्यादाय

मातृपक्षे संकल्पः—ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि शुद्धचातुर्वार्षिक श्राद्धे भूरि भूरितर भूरि तम भोजनार्थम एतत्तेऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं त्रिधा विभज्य स्वधा ।

पितामही पक्षे संकल्पः—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे पितामहि अमुक देवि भूरि भूरितर भूरितम भोजनार्थम् एततेऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं त्रिधा विभज्यस्वधा

प्रपितामही पक्षे संकल्पः—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुकदेव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहि अमुक देवि भूरि भूरितर भूरितम भोजनार्थम् एततेऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं त्रिधाविभज्य स्वधा ।। यद्येकं पात्र भवति तदा पृथिवी ते पात्र मितिमन्त्रः पुनर्न-पठनीयः । ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य

क्षमापणम्—अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु हरेर्नामानु-कीर्तनात् ।।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति गायत्रीं त्रिर्ज पित्वा कुशोपूपविश्य—ॐ मधु-वाता० इतितृचं पठित्वा ॐ रक्षोहणं० ॐ कृणुष्व० भूमौ तिलविकरणम्०
ॐ अपहताऽअसुरा रक्षा ᳚ सि वेदिषदः

मातृमन्त्रः—ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः (मातरः) सोम्यासः । असुंय्य ऽईयुर वृका ऋतज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो (मातरो)हवेषु ।। ततः ॐ सहस्रशीर्षा० इति पुरुष सूक्तम् ॐ आशुः शिशान० इति अप्रति रथ सूक्तं पुराणेतिहासादि पुण्य स्तोत्रादीश्च पठेत् ।। तत उच्छिष्ट सन्निधावा स्ततकुशत्रयां भुमि प्रोक्ष्यसर्वप्रकारमन्न मुद्धत्य सतिलमेकी कृत्य

बलिदानम्—ॐ अनग्निदग्धाये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम् ।

इतिकुशोपरि अन्नम् उत्सृजेत् । ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरि स्मृत्वा गायत्री मधुवाता इति तृचं मधुमधुमध्विति च जपेत् ।

पुराण पाठः— सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ ।
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसिमानसे ।।
तेऽभिजाताः कुरु क्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगा. ।
प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ।।

ततो ऽपसव्यं कृत्वा पिण्ड पातनार्थं हस्तमात्र चतुरङ्गुलोच्छ्रित दक्षिणप्लव (निम्नगा) वेदिका स्थाने सव्यहस्तधृतोपरिभागेन दक्षिणहस्त-धृतमूलेन पवित्रेण रेखा करणम्

पवित्रेण रेखा करणम्—ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ᳚ सिवेदिषद इति प्रादेशः । मत्रामुल्लिखेत् । पवित्रमेशान्यांदिशिक्षिपेत् ।

ज्वलदङ्गार भ्रामणं कुशत्रयास्तरणं च—ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परापुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँ ल्लोकान् प्रणुदात्य-स्मात् ।। इति मन्त्रेण ज्वलदङ्गारं दक्षिणतो निधाय ऽउपमूल सकृदाच्छि-न्नदक्षिणाग्र कुशत्रयं रेखायामास्तृणुयात् । ततः सव्यं कृत्वा । ॐ देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् । ततो ऽपसव्यं कृत्वा पुटकत्रये जलतिल गन्ध पुष्पाणि कृत्वा एकं पात्रं वाम हस्ते कृत्वा मोटकतिलजलान्यादाय

मातृ ऽवनेजनदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्रे मातरमुक देवि शुद्धचातुर्वार्षिक

त्रिपौरुष निमित्तक श्राद्ध पिण्ड स्थाने अत्रावने निक्ष्वते स्वधा। इत्यास्तृत दर्भमूले ऽ वनेजनं दद्यात्।

पितामह्यै अवजनेदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष निमित्तक श्राद्ध पिण्ड स्थाने गोत्रे पितामहि अमुक देवि अत्रावने निक्ष्वने स्वधा। इत्यास्तृत सेभंमर्ग्येऽवनंदद्यात्।

प्रपितामह्यै अवनेजनदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुषनिमित्तक श्राद्ध पिण्डस्थाने गोत्रे प्रपितामहि अमुक देवि अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। इत्यास्तृतदर्भाग्रे ऽवनेजनं दद्यात्। ततः सव्यञ्जन तिलजलमध्वाज्यहुत शेषान्नेन त्रीन् पिण्डान् निर्माय मधुघृताभ्याम‍भिघार्य दद्यात्।

प्रथमं मोटक तिलजक पिण्ड मादाय—ॐअद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा। इति प्रथमावनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात्।

द्वितीयं मोटकतिलजलपिण्डमादाय—ॐ अद्यामुक गोत्रस्यमातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुकगोत्रे पितामहि अमुक देवि एष ते पिण्डः स्वधा। इति द्वितीया वनेजनेस्थाने पिण्डं दद्यात्।

तृतीयं मोटकतिलजलपिण्ड मादाय—ॐ अद्यामुकगोत्रे मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहि अमुक देवि एष ते पिण्डः स्वधा। इति तृतीया वनजने स्थाने पिण्डं दद्यात्। पिण्डदानं च सव्योपगृहीत दक्षिण हस्तेनकार्यम्। ततः प्रपितामहीतऽऊर्ध्वं तिसृणां लेपभागभुजीनांतृप्तिमुद्दिश्य—ॐ लेप भागभुजस्तृप्यन्तु। इति पठित्वा मात्रादिक पिण्डाधारकुशमूले करं प्रोक्ष्य सव्यं कृत्वा त्रिराचम्यहरिं स्मृत्वा अपसव्यं कृत्वा दक्षिणा मुखः—ॐ अत्र मातरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम्। इति पठित्वा वामावर्तेनोदङ् मुखीभूय प्रीतमनाः श्वासं नियम्य तेनैव यथा परावर्तमानः मातुर्भस्विरमूर्तीर्ध्यायन्—ॐ अमीमदन्त मातरो यथा भागमावृषायिषत। इति जपेत्। पूर्ववदवनेजनावशिष्टजलयुतमवनेजन पात्रमादाय

मात्रे प्रत्य वनेजनदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्रे मातरमुकदेवि शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। इति प्रथमपिण्डोपरि प्रत्यवने जनं दद्यात्।

पितामह्यै प्रत्यवनेजनम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुकदेव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्रे पितामहि अमुक देवि अत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा॥ इति द्वितीय पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनम

प्रपितामह्यै प्रत्यवनेजनम्—ॐ अद्यामुकगोत्रायां मातुरमुकदेव्याःशुद्धचातुर्वार्षिकत्रिपौरुषश्राद्धे ऽमुकगोत्रप्रपितामहि अमुकदेवि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। तृतीयपिण्डोपरि। ततोनीवीं विस्रंस्य सव्येनाचम्य अपसव्यं कृत्वा वामेन

पणिनानीय दक्षिणकरे सूत्रं धृत्वा—ॐ नमो वो मातरो रसाय नमो वो मातरोशोषाय नमो वो मातरोजीवाय नमो वोमातरो स्वधायै नमो वोमातरो घोराय नमो वा मातरो मन्यवे नमो वो मातरो मातरो नमो वो गृहान्नो मातरो दत्तसतो वो मातरो देष्म। इति पठित्वा एतद् वो मातरो वासः इत्युक्त्का पिण्डेषु सूत्राणि धृत्वा

मात्रे सूत्रदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्रे मातरमुक देवि शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे पिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। इति सूत्रमुत्सृजेत्।

पितामह्यै सूत्रदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहि अमुकदेवि पिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। इति सूत्र मुत्सृजेत्।

प्रपितामह्यै सूत्रदानम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहि अमुक देवि पिण्डेएतत्ते वासः स्वधा। ततो गन्धपुष्प धूपदीप ताम्बूलानि प्रत्येकं पिण्डेषु दद्यात्।

अन्नपात्रेषु जलम्—ॐ आपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम्। ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु ते॥ ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम्

पुष्पाणि—ॐ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
लक्ष्मीर्वसति गोष्ठेषु सौमनस्यंसदास्तु मे॥

ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्

अक्षता:—ॐ अक्षतं चास्तुमे पुण्यं शान्ति: पुष्टिर्धृतिश्च मे ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतान् अन्न पात्रेषु क्षिपेत् ।

यवा:—ॐ यवो ऽसि यवयास्मद्० इति यवान् पात्रेषु क्षिपेत् ।

अपसव्यं कृत्वा ततो मोटक तिलजलान्यादाय

मात्रे ऽक्षयोदकम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्या: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे धूपदीपताम्बूलं दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु इति मात्रे अक्षयोदकमुत्सृजेत्

पितामह्यै अक्षयोदकम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुकदेव्या: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्राया पितामह्या अमुक देव्या: दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु । इति पितामह्यै अक्षयोदकम्

प्रपितामह्यै अक्षयोदकम् ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्या: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्राया: प्रपितामह्या दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु । इति प्रपितामह्यै० अक्षयोदकं दद्यात् ।

पिण्डोपरि पूर्वाग्र जलधारा—तत: सव्यं कृत्वा दक्षिणां दिशं पश्यन् सुमना: पिण्डोपरि ॐ अघोरा मातर: सन्तु । इति पठन् पूर्वाग्रां जल धारां पिण्डोपरि दद्यात् । तत: कृताञ्जलि: प्राङ्मुख: आशिष: प्रार्थयेत् ।

आशिषोग्रहणम्—ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नो ऽभिवर्द्धन्तां वेदा: सन्ततिरेवच । श्रद्धा च नो माव्यगमद् बहुदेयञ्चनो ऽस्तु ॥ अन्नञ्च नो बहु भवेद तिथीं श्चलभेमहि । याचितारश्च न: सन्तु मा च याचिष्म कचन एता: सत्या आशिष: सन्तु ॥ ततो ऽपसव्यं कृत्वा पिण्डोपरि सपवित्र कुशानास्तीर्य

पिण्डोपरि दक्षिणाग्र जलधारा—ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पय: कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ इति मन्त्रेण पवित्र कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । तत: स्वस्वस्थान स्थितानेव पिण्डान्नम्रो भूयाघ्रायोत्थापयेत् तत: पिण्डाधार कुशानुल्मकं च वह्नौ क्षिपेत् तत: सव्येन देवार्घ पात्र चतुष्टयं सञ्चाल्य अपसव्येन च मात्राद्यर्घपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्येन कुशत्रय यवजलं देवदक्षिणां दद्यात् ।

विश्वे देव दक्षिणा—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुर मुकदेव्या विश्वे देवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे ऽमुक गोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्ध प्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातुमहमुत्सृजे । ततो ऽपसव्येन मोटक तिलजलै: मात्रादि श्राद्धदक्षिणां दद्यात् ।

मातृ दक्षिणा—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्या: कृतैतच्छ्राद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदक्षिणां दातु महमुत्सृजे ।

पितामही दक्षिणा—ॐद्यामुक गोत्राया मातुरमुकदेव्या: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्राया पितामह्या अमुकदेव्या: कृतैतच्छ्राद्ध प्रतिष्ठार्थ इदं राजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्रेभ्यो विभज्य दक्षिणा दातुमहमुत्सृजे ।

प्रपितामही दक्षिणा—ॐ अद्यामुक गोत्राया मातुरमुक देव्या: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्राया: प्रपितामह्या अमुक देव्या: कृतैतच्छ्राद्ध प्रतिष्ठार्थ इदं राजतं चन्द्र दैवतं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे । एवं क्रमशो मातु: पितामह्या प्रपितामह्या वा स्थाने ब्राह्मणकरे दक्षिणां दद्यात् । हिरण्यरजता संपत्तौ यथा संभवम् अन्यदपि फल मूलादिकं दक्षिणां दद्यात् ।

***सर्वाऽऽहारसंकल्प:**—ॐ अद्यामुक गोत्राया, मातुरमुक देव्या शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं पुरुषत्रयाहार क्षमं सिद्धान्नं सदक्षिणाकं सोपकरणं मात्रादिकत्रय्या क्षय्य प्रीत्यर्थं त्रिभ्यो ब्रह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

मात्रादि विसर्जनम्—ॐ वाजेवाजे वत वाजिनो धनेषुविप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञा: । अस्यमध्व: पिबतमादयध्वं तृप्तायातपथिभिर्देवयानै: । इति मात्रादि विसर्जनम् ।

---

*दक्षिणा: सर्वभोगांश्च, प्रतिपिण्डं प्रदापयेत् ।
भक्ष्याण्यपूपानिक्षूंश्च व्यंजनान्यशनानि च ॥
[illegible] भक्ष्यं भोज्य फलादिकम् ।
अनिवेद्य न भोक्तव्यं पिण्डमूले कथञ्चन ॥ हारीत: ॥

सव्येन देवविसर्जनम्—ॐ विश्वे देवाः प्रीयन्ताम्। इति देव विसर्जनम्।
ततः सव्येन देवताभ्यः इति त्रिर्जपेत्। ततो ऽपसव्येन रक्षा दीपं पाणिना निर्वाप्य सव्यं कृत्वा हस्तौ प्रक्षाल्याऽऽचम्य

क्षमापणम्—ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
श्राद्धीय वस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत्॥ तदलाभे जले वा क्षिपेत्।
ततो बलिवैश्वदेवादि कर्म कुर्यात्।

सव्येन—देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धा सयक्षोरग दैत्य संघाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता येचान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
पिपीलिकाः कीट पतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्म निबन्धबद्धाः।
प्रयान्तु ते तृप्तिमिदंमयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥
येषां न माता न पिता न बन्धुर्न चान्नसिद्धिर्न तथान्नमस्ति।
तत्तृप्तयेन्नं भुविदत्त मेतत् ते चान्न तृप्ता मुदिता भवन्तु॥
वैश्वबलिर्नमः।

क्षेत्रपाल बलिः—यो ऽस्मिन्निवसते क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
तस्मै एनां प्रदास्यामि बलिं पानीय संयुताम्॥ क्षेत्रपालबलिर्नमः।

भूत बलि—शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप रोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निक्षिपेद् भवि॥
रौरवादि निषण्णानां प्रेतद्वार निवासिनाम्।
अर्थिनां याचमानानामक्षय्यमुप तिष्ठताम्॥ भूतेभ्योबलिर्नमः।

गोभ्यो बलिः—सौरभेय्यः स्वर्गहिताः पवित्राः पापनाशनाः।
प्रीतागृह्णन्तु मेग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः॥ गोभ्यो ऽन्नं नमः।

श्वभ्यो बलि—द्वौ श्वानौ श्याव श्यवलो वैवस्वत कुलेद्भवौ।
ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥
श्वभ्यो ऽन्नं नमः।

काकबलिः—ऐद्रवारुण वायव्या याम्या नैर्ऋतिकाश्च ये।
वायसा प्रतिगृह्णन्तु इमं पिण्डं मयोद्धृतम्॥ वायसेभ्योऽन्नं नमः।

१४ धर्मराज बलिः—यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्व प्राण हराय च॥
औदुम्बराय नीलाय दध्नाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः॥
पाश हस्त कृतांताय प्रेताधि पतये नमः। धर्मराजायबलिर्नमः।

सांकल्पिक शय्यादानम्—ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्राया मातुरमुक देव्याः कृतैतद् विश्वेदेव पूर्वक शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं तदङ्गत्वेन कृतैतच्छय्यादानादि सागता सिद्ध्यर्थं हिण्यमग्नि दैवतं यथानाम गोत्रायामुक ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

प्रार्थना—आयुः प्रजाधनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
सूर्यायार्घ्यं दत्वा आसन वन्दनम्॥

अथ शय्यादानम्

अङ्गन्यासः—ॐ वाङ् म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्र कर्णयोः।
अपलिताः केशा ऽअशोणा दन्ता बहु बाह्वो र्बलम्॥
ऊर्वोरोजो जंघयोर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा।
अरिष्टानिमे ऽअङ्गानि सर्वात्मानिभृष्टः॥

अथ सोपकरण शय्यादान प्रतिज्ञा—तत्सदद्येत्यादि अमुक गोत्राया मातुरमुक-देव्याः विश्वेदेव पूर्वक चातर्वार्षिक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे अमुक गोत्रायाः मातुरमुक देव्याः सकलदुरितक्षय पूर्वक षष्टि वर्ष सहस्रा वछिन्न स्वर्गलोक सहितन्तदुत्तरं श्री विष्णुलोकप्राप्ति कामो विश्वेदेवपूर्वक चातुर्वार्षिकत्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धसागतासिद्ध्यर्थंसोपकरणशय्यादानमहंकरिष्ये।

ततः शय्यामास्तीर्य विप्रवरणम्—ॐ तत्सदद्यामुक गोत्राया अमुकदेव्या मातुश्चातुर्वार्षिक विश्वदेव पूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्ध कर्मणि एभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिः अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणं भूदेवं शय्यादान प्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं गृहीत्वा विप्रं

सम्पूज्य ततः शय्योपरि लक्ष्मीनारायण प्रतिमां विधिवत् संपूज्य ॐ शान्ताकारमिति ध्यात्वा सांगशय्यायै नमः ॐ प्रामाण्यै देव्यै नमः इति शय्यां सम्प्रोक्ष्य गन्धादिना च समभ्यर्च्य ।

प्रार्थना:—ॐ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ।
शय्यामवाप्यशून्यास्तु भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
यथा न शून्यं शयनं केशवस्यं शिवस्य च ।
शय्या मवाप्यशून्यास्तु भवेज्जन्मनि जन्मनि ।

शय्यादान संकल्पः—ॐ अद्यामुक देव्या मातुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धाङ्गी भूतामिमां शय्यां तूलिकोपधानोर्णक्षौमकार्पासादि सौभाग्योपकरणालङ्कृतां छत्रचामरव्यजनपादुकोपानहाद्यन्वितां नानाविध भक्ष्यभोज्य लेह्य चोष्यपेयोपेत पक्वान्नाद्याधिकारणकां गोधूमव्रीहि यवमाषकुलित्थमसूरमुद्गचणकाद्यामान्नमूलफलशाकाद्युपस्कृतां रीतिमय कांस्यमय लोहमयपात्राद्यैः पुरस्कृतां निद्राकलशादि भाण्डेक्षुदण्डाद्यु पवितांप्रजापति दैवत्यां खट्वाङ्गिरो दैवत्यां समर्चित लक्ष्मीनारायण प्रतिमोपेतां सोपस्करां श्रुतिस्मृति पुराणोक्त मातुरक्षयस्वर्गोप भोगादि फलावाप्तयेऽमुकगोत्राया मुकशर्मणे भूदेवायतुभ्यंसम्प्रददेस्वस्तीति ब्राह्मणो वदेत् । ततः शय्यादान प्रतिष्ठान्ते विप्रं शय्यामारोप्य प्रदक्षिणी कृत्य च ॐ यथा न कृष्णशयनमित्यादिना शय्यां सम्प्रार्थ्य गोदानं कुर्यात् ।

अथगोदान प्रयोगः विप्रवरणम्—ॐ अद्यामुक गोत्राया अमुकदेव्या मातुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेव पुर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे एभिः पुष्पचन्दन वासोभिः अमुक गोत्रममुक शर्माणं भूदेवं गोदान प्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे । एवं विप्रं संपूज्य ततो यथाशक्ति वस्त्रालङ्कारादिभिः सवत्सांधेनुमलङ्कृत्यगोशृंगमूलादिपुच्छाग्रान्ताङ्गेषु देवत: पूजनीया: । अङ्गपूजा शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः ब्रह्मविष्णू पूजयामि एवं सर्वत्र शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः । शिरोमध्ये शिवाय नमः ललाटे देव्यै, मुखे राहवे, नासिकायां षण्मुखाय, नासापुटयोः कम्बलाश्वतरनागाभ्यां, कर्णयोः अश्विभ्याम्, दन्तेषु वायवे, जिह्वायां वरुणाय, हुंकारे सरस्वत्यै, गण्डयोः पक्षमासाभ्याम्, चक्षुषोः शशिभास्कराभ्याम्, ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयाय, ग्रीवायामिन्द्राय: कुक्षिदेशे रक्षोभ्यः, उरसि साध्येभ्यः, पादेषु धर्माय, जङ्घासु अर्यम्णे, खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यः, खुराग्रेपन्नगेभ्यः, खुरपश्चिमाङ्गे अप्सरोभ्यः, पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यः, सर्वसन्धिषु वसुभ्यः, श्रोणीतटे, पितृभ्यः, लांगूले सोमाय, गुह्ये आदित्यरश्मिभ्यः, गोमूत्रेगङ्गायै, गोमये यमुनायै, क्षीरे सरस्वत्यै, दध्निनर्मदायै, घृते अग्नये, रोमसु अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यः, रोमकूपेषु बालखिल्येभ्यः, उत्तरे पृथिव्यै, पयोधरेषु चतुः समद्रेभ्यः पुच्छाग्रे केतवे नमः केतुं पूजयामि एता देवता अंगेषु सम्पूज्य सव्यंकृत्वा देवतीर्थेन—

गोपुच्छंगृहीत्वातुर्पणम्—ब्रह्माविष्णु महेशाश्चवेदाश्छन्दांसिवत्सरा: । देवा: यज्ञास्तथानागागन्धर्वाप्सरसांगणा:क्रूरा:सर्पा:सुपर्णाश्चतरवोजम्भकादयः । विद्याधराजलधरास्तथैवाकाशगामिनः निराधाराश्चयेजीवापापेधर्मेरताश्चये । तेसर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात्

निवती (कण्ठीकृत्य) कायतीर्थेन—सनकश्च सनन्दश्च सनच्चैव सनातनः ।
कपिलश्चासुरी चैव वोढ: पंचशिखस्तथा ।।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गो पुच्छोदक तर्पणात् ।

सव्यं कृत्वा देवतीर्थेन—मरीच्यत्र्यङ्गिरा चैव पुलस्त्य पुलह: क्रतुः ।
वशिष्ठप्रचेताभृगुर्जावालिनारदादयः । तेसर्वेतृप्तिमायांन्तुगोपुच्छोदकतर्पणात्

अपसव्यं कृत्वा पितृतीर्थेन—कव्यवाडनल: सोमोयमश्चार्यम सञ्ज्ञका: अग्निष्वात्तस्तथा सौम्यो हविष्माश्चैव उष्मपा: । सुकाली बर्हिषच्चैवं आज्यपा: पितरश्चये ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात् ।
वसुरूप पितापूज्य: रुद्ररूप: पितामह: । आदित्यरूप: प्रपितामहस्तेभ्य: स्वधानम: गायत्रीरूपिणीमातासावित्री च पितामही । सरस्वतीमयी साक्षात्तृप्यतांप्रपितामही

त्रिकं मातामहाद्यं च मातामह्यादिकं त्रिकम् ।
ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छोदक तर्पणात् ॥
आचार्या मातुला: श्याला: पितृव्या: श्वशुरादय: ।

ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात् ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादयः ।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम् ।
आब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।
ये बान्धवाऽबान्धवा ये ये ऽन्यजन्मनिबान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात् ॥ यमायधर्मराजाय०
वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च ।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ॥

ततो गोदान संकल्पः—ॐ अद्यामुक गोत्राया अमुक देव्या मातुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे स्वमातुरक्षय वैकुण्ठधामनिवासकामः इमां प्रत्यक्षां सवत्सां गां सुपर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्र पृष्ठीं घण्टा ग्रैवेयकां मुक्ता लाङ्गूलां कांस्योपदोहनी सितवसनद्वयोपेतां सर्वाभरण भूषितां सोपस्करां रुद्र दैवत्यां अमुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम । इति तिलपात्रंघृताक्तां गोपुच्छं कृत्वा विप्रहस्तेऽग्नितीर्थे सतिलकुशोदकं दद्यात् ।

मन्त्रः—मन्त्रसाधन भूताया विश्वाघौघविनाशिनी । विश्वरूप धरोदेवः प्रीयतामनयागवा । ततोदाता दान प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं सुवर्णं दक्षिणां दद्यात् ।

गो प्रार्थना:—नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवं च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता । सुरभी हर मे पापं यन्मयादुष्कृतं कृतम् । गावो ममाग्रतः सन्तु गावोमे सन्तु-पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तुगवांमध्येवसाम्यहम् । धेनु दत्वा प्रदक्षिणी कृत्य किञ्चिदनुव्रजेत् । ततः पिण्डानादाय श्राद्धदक्षिणां दत्वा विसर्जनान्ते भूतबलिं च प्रदाय सूर्यायार्घ्यं समर्प्य प्रमादादिति कर्मसमापनम् ॥

शुभमस्तुतराम्

त्रयोदश पदकात्मक श्राद्धवेदिका

पूर्व

श्राद्ध सामग्री

उत्तर

यजमान आसन

पिण्डवेदिका

विश्वेदेव २

लक्ष्मीनारायण

माता ३ पितामही ३ प्रपितामही ३

दक्षिण

पश्चिम

अथ महा मृत्युञ्जय जप विधिः

अद्येत्यादि निज (यजमानस्य) शरीरेऽमुकग्रहदोषजनितारिष्ट निरसन पूर्वक दीर्घायुरारोग्य सिद्ध्यर्थं महामृत्युञ्जय देव प्रसादलाभार्थं च महा. मृत्युञ्जय जपमहं करिष्ये। अस्य महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषि र्निचृदनुष्टुप्छन्दो मृत्युञ्जयेश्वरोदेवता हौं बीजम्। जूं शक्तिः। सः कीलकम्। महामृत्युञ्जयेश्वर प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप्छन्दसे नमों मुखे। महामृत्युञ्जयेश्वर देवतायैनमो हृदि। हौ बीजाय नमो गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु। करन्यासः ॐ त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुक मिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्दन्यास—ॐ त्र्यम्बकं शिरसि ॐ यजामहे भ्रुवोः ॐ सुगन्धिनेत्रयोः। ॐ पुष्टिवर्धनम् मुखे। ॐ उर्वारुकं गण्डयोः ॐ इव हृदये। ॐ बन्धनात् जठरे। ॐ मृत्योः उपस्थे। ॐ मुक्षीय उर्वोः। ॐ मा जान्वो। ॐ अमृतात् पादयोः। वर्णन्यास. ॐ "त्रि" ध्रुववसवे नमः शिरसि "यम्" अध्वराय मुखे। ब सोमाय दक्षिण कर्णे। 'कम्' अद्भ्यो वामकर्णे। "य" अनिलाय शिखामूले। "जा" अनलाय दक्षिण बाहुमूले। "म" प्रत्यूषाय दक्षिण-बाहौ। "हे" प्रभासाय दक्षिण मणि बन्धे। "सु" वीरभद्ररुद्राय हस्ता-ङ्गुलिमूले। "गम्" शम्भवे हस्ताङ्गुल्यग्रे। "धिम्" गिरीशाय वाम बाहुमूले। "पु" अजैकपदे वाम हस्ते। "ष्टि" अहिर्बुध्न्याय वाममणि-बन्धे। "व" पिनाकिने वामहस्ताङ्गुलिमूले। "र्ध" भवानीश्वराय वाम हस्ताङ्गुल्यग्रे। "नम्" कपालिने दक्षिणोरुमूले। "उ" दिक्पतये दक्षिण जानौ "र्वा" स्थाणवेदक्षगुल्फे। "रु" भर्गाय दक्षपादङ्गुलिमूले। "क" धात्रे अदित्याय वामपादङ्गुल्यग्रे। "मि" अर्यम्णे वामोरुमूले। "व" मित्राय वाम जानौ "बं" वरुणाय वाम गुल्फे। 'ध' अंशवे वामाङ्गुलि मूले। 'नात्' वामाङ्गुल्यग्रे 'मृ' विवस्वते आदित्याय दक्षिणपार्श्वे। 'त्यो': इन्द्राय वाम पार्श्वे 'मु' पूष्णे पृष्ठे। 'क्षी' पर्जन्याय नाभौ। 'य' त्वष्ट्रे गुह्ये। "मा" विष्णवे भुजयोः। "मृ" प्रजापतये नमः कण्ठे। "तात्" वषट् काराय हृदये।

ध्यानम्—हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलास संस्थं शिव
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दु मुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।
चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रंवह—
द्धस्ताब्जेन दधत्सु दिव्यममलं हास्यास्यपंकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशा-
म्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे॥

मानसपूजा—ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं०। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं०। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं०। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मन्त्रोद्धार—ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ स्वर्भुव-र्भूरोम् जूं सः हौम् ॐ॥ उत्तरन्यासान्ते

गुह्यातिगुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥
मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि माम् शरणागतम्।
जन्म मृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।

अनेन महामृत्युञ्जय जप कर्मणा श्री महामृत्युञ्जयेश्वरः प्रीयतां नमम। जप सांगतार्थं यथाकामं द्रव्येण जपदृशांश होमतर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजनादीनि यथाविधि विदध्यात्।

मृत्युञ्जयविद्याफलश्रुतिः—आदौ प्रासादबीजं तदनुमृतिहरं तारकं व्याहृतीश्च
प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपतिमृतिहरं भूय एवं तथाघम्।

कृत्वान्यासं षडङ्गं स्ववदनत ऋचं मण्डलान्तः प्रविष्टं
ध्यात्वा योगीशरुद्रं सजयति मरणं शुक्र विद्याप्रसादात् ।

विवाहमुहूर्तविमर्श

विवाह विहित मासों के विषय में धर्म शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में मतभेद भरे दो चार श्लोक सिन्धुकार ने प्रस्तुत किये हैं—

आपस्तम्ब:—

"सर्व ऋतवो विवाहस्य शैशिरौ मासौ परिहार्य्योत्तमं च नैदाघम् ।

अत्र माघ फाल्गुनाषाढवर्जं नवमासा मुख्य काल: । इति सुदर्शन भाष्ये डविलायां ब्रह्मविद्यातीर्थैश्चोक्तम ।

बौधायन सूत्रे ऽपि "सर्वे मासा विवाहस्य शुचितपस्तपस्य वर्जम्" इत्येके ॥ इन दोनों श्लोकों में आषाढ़, माघ फाल्गुन, मासों के अतिरिक्त ९ मासों में आपस्तम्ब एवं बौधायन विवाह करना उत्तम मानते है । एवं कालादर्श ग्रन्थकार तो "निशि चेत्सर्वेषु द्वादशस्वपि मासेषूद्वहेद्इति कालादर्श: । रात्रि में यदि विवाह करना चाहें तो बारह मासों में ही विवाह कर सकते हैं । ऐसी धर्म शास्त्र की आज्ञा है । वहीं ज्योतिष में गृहीत, माघ, फाल्गुन के विषय में निर्णय सिन्धुकार निम्नादमुत निर्णय देते हुए दृष्टिगोचर होते है" ये तु ज्योतिषे माघादिविषयस्ते गृह्यसूत्राणां द्विजपरकत्वेन प्राबल्याच्छूद्रादिपर: अर्थात् ज्योतिष में जो माघादि को विधेय माना है गृह्य सूत्रों के प्रधान रूप से द्विज परक होने के कारण शूद्रादि के लिए ही विहित है न कि त्रैवर्ण्य के लिये अत: धर्म शास्त्र वर्जित माघ, फाल्गुन आषाढ़ का ग्रहण एवं धर्म शास्त्रोक्त चैत्र पौष का त्याग ज्योतिष का पक्ष है वही गृह्य सूत्रों में कहीं भी गुरु शुक्र अस्त व सिंहस्थ गुरु के निषेध का प्रमाण नहीं मिलता तो भी ज्योतिष के वाक्यों की हम अवहेलना नहीं करते किन्तु जब धार्मिक सज्जन अपने धर्म में प्रमाण मिलते हुए भी धर्म सूत्रोक्त मार्ग से वंचित होकर दूसरे धर्मों का द्वार झांकते हैं वे बेचारे ये नहीं जानते कि हमारे धर्म शास्त्रों में कितनी उदारता है वे बेचारे अपढ़ महात्माओं के पास या मतान्तरित प्रचारकों के पंजुल में फंस कर लग्नहीन नक्षत्र शुद्धि रहित दशदोष युक्त समय में विवाह करके सारा जीवन उद्विग्नता में यापन करते है । अत: हम न तो ज्योतिष को ही आंच आये, ना ही धर्म शास्त्र का विरोध हो न ही हमारे धर्मशास्त्रों पर आस्था रखने वाले सज्जनों को निराश होना पड़े । इसी विषय में यदि दोनों का विरोध हो तो उस में—

यस्मिन्काले विरोधोऽस्ति ज्योतिषोक्तागमोक्तयो: ।
ज्योतिषोक्तं परित्यज्य स्मृति चोदितमाचरेत् ।।

—१।१४८ बौधायन स्मृति मुक्ताफल

अत: हर प्रकार से सनातन धर्म के दो ही अनिवार्य संचालक चक्र है धर्म शास्त्र और ज्योतिष यहां कहीं दोनों का विरोधाभास हो वहां ग्राह्यता में धर्म शास्त्र को ही प्राथमिकता दी जाती है । गुरु शुक्र के मौढ्यादि सिंहस्थ गुरु व नीचस्थ गुरु में विवाहादि को हम महता नहीं देते तो भी धर्म संकट ग्रस्त जनता के लिए ज्योतिष के आधार पर बृहद्दैवज्ञरंजनोक्ति:—

आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्म कारिणाम् ।
विवाहादीनि कुर्वीत मौढ्येऽपि गुरु शुक्रयो: ।
शान्तिं कुर्यात्तयोस्तद्वच्छुक्र देवेन्द्र मन्त्रिणो: ।।
होमैर्दानैर्जपैर्वापि तयोरुक्तैश्च मन्त्रकै: ।।

अथवा आचार्य लल्लभट्टानुसार गुरु शुक्र यदि दोनों अस्त हो तो दोष समझे अन्यथा दोष कारक नहीं :—

यद्येकस्यापिमूढत्वे शुभकर्म न दोषकृत् ।
द्वयोर्मूढत्वमेवोक्तं दोषदं गुरुशुक्रयो: ।।

इन धर्म शास्त्रों को आधार रख कर अशुद्ध (अधम) विवाह मुहूर्तों में दशदोष प्रदर्शन पूर्वक विवाह मुहूर्त लगा दिए हैं । इस से यदि किसी भी महानुभाव को लाभ पहुंचे तो हमारा प्रयत्न सफल होगा । प्रामाणिकता के लिए द्रष्टव्य निर्णय सिन्धु मास निर्णय ३परिच्छेद

पाश्चात्य दृष्टया मुहूर्त्त विमर्श:

चन्द्रमा भूमण्डल के सन्निकटवर्ती है, अत: इसका भूवासी जीवों पर अत्यधिक प्रभाव रहा करता है । अत: चन्द्रमा का जिस ग्रह से दृग्योग बने,

उसी ग्रह के नाम पर वह दिन कहा जाता है। पाश्चात्य दृष्टि दो प्रकार की है शुभ एवं अशुभ। शुभ दृष्टि चन्द्र का किसी भी ग्रह से अन्तर यदि ६०°/१२०° का हो तो शुभ एवं ४५°/९०°/१८०° का हो तो अशुभ। एक ही राशि या एक ही अंश पर होना भी एक प्रकार की दृष्टि है जिसे योग, युति, समकलयुति इत्यादि नाम से पुकारा जाता हैं। जब चन्द्रमा से एक ग्रह १२०° के अन्तर पर एवं दूसरा ९०° के अन्तर पर हो तो अत्यन्त शुभ दृष्टि मानी जाती है जिसे तालमेल कहा जाता है। उच्च या स्वराशि में चन्द्र हो या बहुत ग्रहों से तालमेल हो तो उसे चन्द्र दिन ही कहा जाता है। अब चन्द्रमा जिस ग्रह से शुभ दृग्योग में हो उसी ग्रह के नाम पर वह दि। माना जाता है। उसके अनुसार निम्न कार्य उस दिन किए जाएं तो अत्यन्त सफलता मिलेगी।

सूर्यदिन :—स्वाभीष्ट सिद्धि, शुभावस्थान्वेषण, औषध सेवन, शरीरारोग्य, राजदर्शन, यात्रादि कार्यों का मुहूर्त्त शुभ जानना।

चन्द्रदिन :—आध्यात्मिक कृत्य, अनुसंधान, निर्भीकितोपयोगी कृत्य, किसी देवता के अनुष्ठानारम्भ में मुहूर्त्त शुभ होता है।

भौमदिन :—अग्नि, युद्ध, बिजली, शस्त्र, उग्र, अभिचार, इञ्जीनियरी, शल्यविद्या, कला, धातुद्रवी करण, भस्मनिर्माणादि कृत्यारम्भ के लिये शुभ है।

बुधदिन :—विद्यारम्भ, यात्रा, लिपि व्यवहार, बहीखाता, लेखाजोखा, गणित मुद्रण, सम्पादन, कानून, अध्ययनाध्यापन, चित्रकारीत्यादि कृत्यारम्भ में श्रेष्ठ है।

गुरुदिन :—अध्ययनाध्यापन, आत्मोद्धार, शास्त्रचर्चा, कोष, विपणि, क्रय, विक्रय द्रव्यादान लेखन, मुनीमी, यज्ञानुष्ठानादि आरम्भ करने के लिये प्रशस्त हैं।

शुक्रदिन :—विवाह, मित्रसमागम, दासदासीकृत्य, स्त्रीसमागम, भूषण, वस्त्र, निर्माण, गर्भाधान, सभा प्रवेश, राजसेवा, गीतवाद्याद्युत्सवारम्भार्थ श्रेष्ठ है।

शनिदिन :—कृषि, खनि, धातु, शिलान्यास, वास्तु, कूप तडागादिखनन, बीजवाप, हलप्रवहण, क्षेत्र व्यवहार, मल्लयुद्ध, मशीनी काम, चार्ज का लेन देन, विद्यारम्भादि कृत्य करना शुभ है।

सूचना :—पाश्चात्य लोग इन्हीं चान्द्र मुहूर्त्तों के अनुसार कार्यारम्भ सफल मानते हैं। यदि इनके साथ भारतीय मुहूर्त्त अपना लें तो सोने पर सुहागे की तरह कार्य में पूर्ण सफलता मिल सकती है।

।। समयशुद्धौ विचारणीय विषयाः ।।

संवत् २०४२ में शुक्र दो बार अस्त होगा प्रथम वक्रास्त पुनः मार्गास्त निम्नप्रकार से जानें।

शुक्रवक्रास्त—संवत् २०४२ चैत्र प्र० २० तदनु २ अप्रैल १९८५ को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। एवं चैत्र प्र० २४ तदनु ६ अप्रैल १९८५ ई० को पूर्व में उदय होगा।

शुक्रमार्गास्त—संवत् २०४२ पौष प्र० ४ तदनु २५ दिसम्बर १९८५ ई० को शुक्र पूर्व में अस्त होकर फाल्गुन प्र० १ तदनु १२ फरवरी १७८६ ई० को पश्चिम में उदय होगा।

गुरुप्रवास (अस्त)—संवत् २०४२ माघ प्र० २६ तदनु ८ फरवरी १९८६ ई०। गुरु अस्त होकर फाल्गुन प्र० ३० तदनु १३ मार्च १९८६ ई० को उदय होगा।

अधिमासदोष:—सौर श्रावण प्र० ३ से श्रा.प्र. ३१ तक अधिमास (मलमास) हैं।

ग्रहणशूलदोष:—सं. २०४२ वैसाख प्र० १९ तदनु १ मई १९८५ ई० से वै० प्र० २८ तदनु १० मई तक ग्रहणशूल होने से विवाहादि मुहूर्त्तों का अभाव होगा पुनः द्वितीय चन्द्रग्रहण कार्तिक प्र० ८ तदनु २५ अक्तूबर १९८५ ई० से १८ कार्तिक तदनु ३ नवम्बर १९८५ ई० का समय ग्रहण शूल होने से सभी शुभकार्यों के लिए वर्जित है।

पितृपक्ष:—स. २०४२ आश्विन प्र० १४ तदनु २९ सितम्बर १९८५ से आश्वि. प्र० २९ तदनु अक्तूबर १४ सन १९८५ तक पितृपक्ष (श्राद्ध दिन सभी शुभ कामों के लिए वर्जित है।

पंचभीष्म—संवत् २०४२ कार्तिक शुक्ल एकादशी मार्ग प्र० ८ तदनु २४ नवम्बर १९८५ से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तदनु २७ नवम्बर १९८५ तक पंच भीष्म व्रत होने से शुभ कामों में वर्जित है। ❀

❀ अन्य मुहूर्त्त तालिकाएँ प्रक्रमणिका से संलग्न पृष्ठों पर देखें।

पञ्चाङ्ग सम्पादन में प्रोत्साहनार्थ द्रव्यात्मक सहायता देने में अग्रगण्य विभूतियें :-

वैष्णव विरक्ताग्रगण्य, सर्वत्रपूज्य सिद्धस्वरूप
महन्त श्री १०८ श्री बलभद्रदासजी महाराज
श्रीरघुनाथ मन्दिर पुरानी मण्डी, जम्मू ११०१/-रु०

दशनामी अखाडा में लब्ध प्रतिष्ठ परमहंस
स्वामी श्री १०८ श्री लोकनाथगिरिजी महाराज
महन्त श्री रणवीरेश्वर मन्दिर, जम्मू ११०१/-रु०

इन दिव्य महाविभूतियों की आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रही है एवं आगे भी रहेगी अतः इन्हें मैं कोटिशः धन्यवाद देता हूँ।

इनके अतिरिक्त सहानुभूतिपूर्ण सहायतार्थ कटिबद्ध महानुभाव ये हैं :-

महन्त श्री बजरङ्गदासजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य बुर्जमन्दिर ५००/- रु०

वैष्णव कुलभूषण श्री यशपालजी भटोली महन्तां ७००/- रु०

श्री रामप्रकाशजी शर्मा ओवरसीयर जानकीपुर, जम्मू ११०१/- रु०

ज्यो. श्री शिवप्रकाश रैणा शिक्षा शास्त्री अखनूर २००/- रु०

आचार्य श्री पीताम्बरजी ५००/- रु०

गोस्वामी श्रीमुनशीराम शर्मा M.C. आफिसर गीताभवनसमीपवर्ती, जम्मू ३००/- रु०

श्री चिरञ्जीलाल मेंगीजी २००/- रु०

इनका मैं सर्वथा धन्यवादी हूँ।

❀ सूचना ❀

श्री वैष्णव विजय पञ्चाङ्ग प्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि इस पञ्चाङ्ग का सम्पादन दो भागों में विभक्त हो गया है। एक छायाचित्र की सहायता से नवीन ढङ्ग में अङ्कावतार एवं दूसरा साधारण ढङ्ग में। अङ्कावतार में १ से ६३ तक पृष्ठ संख्या एवं दूसरे में १ से १२८ तक पृष्ठ संख्या अंकित है। साधारण भाग के ६४ एवं ६५ पृष्ठ के मध्य में अङ्कावतार को समञ्जित किया गया है।

अतः साधारण भाग के आगे का शेष भाग अंकावतार के पश्चात् पढ़ा जाय। उसी प्रकार विषय सूची भी अंकित की गयी है।

—(विषयानुक्रमणिका शेष)

जयाम्बे ! मा ! जयाम्बे ! मा ! जपन्तस्त्वां जना यान्ति !
गुहास्था आरतिं मातः ! स्तुवन्तो यायिनो भान्ति !! जयाम्बे ! मा !

उदीच्यां जम्बुतस्तीर्थं द्विगर्तेष्वीक्ष्यतेऽरण्ये !
किरीटे भारतस्यास्मिंस्त्रिकूटे चित्रकूटेऽन्ये !! जयाम्बे ! मा !

त्वदीया भूर्यतोवन्या सदाऽऽपो ज्योतिषा पूता !
स्वनन्ती बालङ्गान्या भुवस्ते मेखली भूता !! जयाम्बे ! मा !

चरण्या पादुका त्वाऽऽद्याकुमारी हस्तिमस्तान्तः !
स सन्धिच्छत्तु सोपानैः सुमार्गो भैरवाऽऽस्यान्तः !! जयाम्बे ! मा

अवागात्पिडिका दृश्या प्रसिद्धाकन्दरान्तस्ते !
स्वयं त्रैयम्बकी भूता निसर्गान्मन्दिरान्तस्ते !! जयाम्बे ! मा !

महाकाली महालक्ष्मी महावागीश्वरी ख्याता !
प्रतीता श्रीधरप्रख्यैः सुपूज्यार्यैरथो ध्याता !! जयाम्बे ! मा !

समस्तै वैष्णवैलोके स्मृता त्वं वैष्णवी नाम्ना !
पवित्रा कीर्त्यते कीर्तिस्त्वदीया पुण्य सद्धाम्नः !! जयाम्बे ! मा !

चरण्या सूक्ष्मगङ्गाम्बे ! त्वदङ्घ्रि मूलजा गुण्या !
जनानां पावनं मन्ये स्वरूप बालस्वर्धुन्या !! जयाम्बे ! मा !

भवाब्धौ मज्जतां नृणां समुद्धर्त्री तरी रूपा !
त्वमेवैका जगन्मातः ! समेषामाश्रयी भूता !! जयाम्बे ! मा !

यरत्स्या गो गजैः सिद्धैर्यतिश्चद् वैष्णवच्छन्दः !
'बिहारी' प्रस्तुत मातः ! तवार्थे गज्जलं बन्धः !! जयाम्बे ! मा !